राजस्थानी महिला लेखन

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

अंक : जुलाई-सितम्बर, 2021

राजस्थली रै 45 बरस री अणथक यात्रा रै मंगळ टांणै तेवड़ीज्यै
महिला लेखन अंक सारु मोकळी बधाई

शोभाचन्द आसोपा

एडवोकेट

श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)

मो. : 94130 74385

हरीश कुमार कुलदीप आसोपा

आसोपा डेकोर प्रा. लि.

कोलकाता

मो. : 9831097616, 9836616666

कमल कुमार मोहित आसोपा

जगन्नाथ लेमिनेट्स

भुवनेश्वर (उड़ीसा)

मो. : 9937034969, 9861134969

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई-सितंबर, 2021

बरस : 44 अंक : 4 पूर्णांक : 152

संपादक
श्याम महर्षि

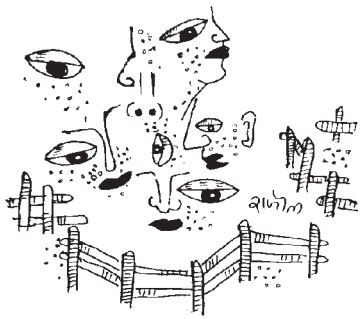

अतिथि संपादक
किरण राजपुरोहित 'नितिला'

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण
राजोल राजपुरोहित 'मुक्ता'

रेखाचित्राम
धनलक्ष्मी भट्ट, 'मुक्ता'

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

महिला लेखन रो विड़दजोग विशेषांक	*किरण राजपुरोहित 'नितिला'*	7

कहाणी

बेनाम रिस्तो	*डॉ. अनुश्री राठौड़*	13
सलाम, भोळा सैयद!	*तसनीम खान*	20
डकार	*प्रेम शर्मा*	24
साच होवतो सुपनो	*मंजू सारस्वत*	27
अंतस रा आखर मोती	*मनीषा आर्य सोनी*	31
मोतिया आब	*संतोष चौधरी*	38
सुगनां	*हेमलता दाधीच*	50

लघुकथा

गरम कचोऱ्यां / म्हूं कांई करूं	*डॉ. अनिता वर्मा*	53
इमरत धारा	*अनुपमा पाण्डे*	55
गणित / सवासेर	*इंजी. आशा शर्मा*	57
साच रो बोध / मौकै री तलास / दिल रो दौरो	*उर्मिला माणक गौड़*	58
दाय मां	*डॉ. कृष्णा आचार्य*	60
चिड़ी उड़	*डॉ. नीना छिब्बर*	62
निहिरा	*पुष्पा पालीवाल*	63
तिस्स	*मंजू शर्मा जांगिड़ 'मनी'*	64
बायरो / डोकरी / पेट री आग	*शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'*	65
प्रीत री भासा	*डॉ. संतोष बिश्नोई*	67
आजकाल / मिनकी	*सावित्री चौधरी*	68
किन्नी	*सुषमा राजपुरोहित*	69

बालकथा

अणव्हैती	*करुणा दशोरा*	71
वीज़ा	*दमयंती जाडावत*	73
पान सड़ै घोड़ो अड़ै, विद्या बिसर जाय	*डॉ. मीनाक्षी लक्ष्मीकांत व्यास*	75

लोककथा

ठणठण पाल ई ठीक	*शकुंतला सोनी*	76

संस्मरण

अपणायत रो गैरो मीठो रंग	*डॉ. अंजु*	77
आखातीज	*कंचन आशिया*	81
जात-पांत	*किरण बादल*	84
भूआ कैवती	*सुनीता बिश्नोलिया 'सुनीति'*	85

सबदचित्राम

चांद	*डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'*	87

रेखाचित्राम

मज्जन	*शकुंतला पालीवाल*	90
पन्नो बाबो	*सिया चौधरी*	94

जात्रा-वृत्तांत

किस्सो बडी बहू रो	*विमला भंडारी*	96
जगन्नाथपुरी री जात्रा	*सुशीला शर्मा 'कंचन'*	99

व्यंग्य

दंतकथा	*बसंती पंवार*	102

कागद

मां रो कागद बेटी रै नांव	*विमला नागला*	105

अेकांकी

टेम चोखो कोनी	*अरुणा अभय शर्मा*	109
लूंठो जलमदिन	*पूर्णिमा मित्रा*	112

आलेख

मध्यकालीन नारी रै अंतस री पीड़ रो गान	*डॉ. गीता सामौर*	116
संत नागरीदास अर विष्णुप्रिया (बणीठणी)	*दमयंती कछवाहा*	120
राजस्थानी कहाणी अर महिला रचनाकार	*डॉ. प्रकाश अमरावत*	126

ISSN : 2320-0995

राजस्थानी उपन्यासां मांय नारी–विमर्श *मोनिका गौड़* 135
परंपरा अर संस्कृति रै विकास में महिला लेखन री भूमिका *रेखा लोढ़ा 'स्मित'* 141
आधुनिक राजस्थानी महिला काव्य में प्रगतिवादी सुर *डॉ. शारदा कृष्ण* 146

कविता

रूंख भायलो / वीर दुर्गादास *अर्चना राठौड़* 153
थारी कविता *अनिला राखेचा* 154
पांखड़ल्यां / मिजमानी *अभिलाषा पारीक 'अभि'* 155
मन रै आंगणै / आंधल घोटो *अरुणा जी. मेहरू* 156
म्हारी प्रीत *इन्द्रासिंह* 157
जठै हर नारी दुर्गा / जद तूं खुद है ज्वाला *इन्दु तोदी* 158
के लिखूं म्हैं... ? *इला पारीक* 159
जगतो सवाल *डॉ. उषा श्रीवास्तव* 160
आयो आसाढ / प्रकृति में रमणी चावूं *ऐश्वर्या राजपुरोहित* 161
घर / साच / दुनिया *ऋतु प्रिया* 162
पणिहारी / आंधी *कविता शर्मा* 163
थे ई जाणो *डॉ. कृष्णा कुमारी* 164
कियां लिखूं कविता / थे अरथा दीजो *कृष्णा सिन्हा* 165
मजलां चालणियो ई पासी *कमला मारवाड़ी (जैन)* 166
हथाई आळी चूंथरी *कामना राजावत* 167
अंगरख्यो *डॉ. चेतना उपाध्याय* 168
बा बतळासी बगत अर आभै नैं *ज्योत्स्ना राजपुरोहित* 169
मन / देवो थे किणनैं दोस *ज्योति राजपुरोहित* 170
महेन्द्र–मूमल / जीवण री बातां *जयश्री कंवर* 171
गैली राधा *तरनिजा मोहन राठौड़ 'तंवराणी'* 172
सोना नो सूरज क्यारे उगेगा ? *दीपिका दीक्षित* 173
म्हारो बेरो *डॉ. धनञ्जया अमरावत* 174
माधवी *नलिनी पुरोहित* 175
मायड़ कैवै बेटी नैं *निर्मला राठौड़* 176
कोविड पर आपबीती *नीलिमा राठौड़* 177
कुबदी कोरोना / अबखाई अर औसर *पवन राजपुरोहित* 178
आंगण अब जोवैला बाट *प्रमिला चारण* 179
अनुभवां री लाठी / उठाया दोनूं हाथ *डॉ. प्रियंका भट्ट* 180
मुळक / मजूर / सरणार्थी कैंप / किसान अर मजूर *प्रियंका भारद्वाज* 181
प्रीत रै आंगणै / दोजक *बंशी यथार्थ* 182

 ISSN : 2320-0995

पूत भलांई लख कमाया होसी	*भावना शर्मा*	183
छाला / हरियल पान	*मधु वैष्णव 'मान्या '*	184
आंगणियै री चिड़कलियां	*मधुर परिहार*	185
वीरां रो वीर	*मयूरा मेहता*	186
सोच	*मानसी शर्मा*	187
महामारी रै दौर मांय / अब थे ईज	*मीनाक्षी आहुजा*	188
बस! इत्तो ईज चावै नारी	*मीनाक्षी पारीक*	189
आथण / बंधण / मानवी	*डॉ. मीनाक्षी बोराणा*	190
मरुनार	*मोनिका राज 'गोपा'*	191
लापसी / भतूळियो अर मिनख	*राजोल राजपुरोहित 'मुक्ता'*	192
म्हैं पाणी में ऊभी	*डॉ. लीला दीवान*	193
ठाडी चिंत्या / नैणां	*विमला महरिया 'मौज'*	194
हर आवै छै / भरम / जिंदगाणी	*श्यामा शर्मा*	195
पिछाण / करतूत	*डॉ. संजू श्रीमाली*	196
खसेरणी / त्यौंहारी अर भीख	*सपना वर्मा*	197
मां / कथावां	*सरोज देवल बीठू*	198
पीड़ / सूखती जड़ां / राजस्थान रो धीणो	*सुंदर पारख*	199
रिवाज री बुगची	*सुमन पड़िहार*	200
सवां बीच राजी हूं म्हैं	*डॉ. सुषमा सिंघवी*	201

गीत

औ जीवण जीणो पड़सी	*अवन्तिका तूनवाल*	202
सीख रो गीत	*आशा रानी जैन 'आशु'*	203
क्यूं गुणगुणायो रे भंवरा / पाणी में चांद दिखावै	*चंदा पाराशर*	204
मन में ले लूं सार / बिरछां रो प्रेम	*नगेंद्र बाला बारेठ*	205
ओळ्यूं	*प्रमिला शर्मा सनाढ्य*	206
अखबारां में	*प्रीतिमा 'पुलक'*	207
भ्रूणहत्या	*पुष्पा शर्मा*	208
घणो निराळो राजस्थान	*मंजु महिमा*	209
चिड़कली उडबो चावै	*डॉ. रानी तंवर*	210
मारवाड़ी ओळमो	*रानी सोनी 'परी'*	211
आयो बुढापो	*डॉ. रेनू सिरोया 'कुमुदिनी'*	212
परिवार नियोजन / बचपन री यादां	*लता पुरोहित*	213
गीत कस्यां गाऊंला	*विजयलक्ष्मी देथा*	214
तूं क्यांनै तरसावै रे!	*डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा*	215

मायड़ री पाती — *डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल* 216
पीड़ अेक विरहण री — *शकुंतला शर्मा* 217
क्यूं भेजी परदेस / सुणल्यो म्हारी बात — *शोभा चंदर* 218
अलबेलो मेवाड़ — *स्नेहलता कचोरिया* 219
म्हारो जैसाणो — *सपना यशोवर्धन व्यास* 220
मारवाड़ री मीठी बोली — *सरोज कंवर* 221
राग बसंती — *डॉ. सुमन बिस्सा* 222
रंगीलो राजस्थान — *सुमन राठौड़ झाझड़* 223

गजल
दो गजलां — *आशा पांडेय ओझा* 224
हर घड़ी हतास क्यूं — *उर्मिला देवी 'उर्मि'* 225
व्है मन घणो उचाट — *डॉ. तारा दीक्षित* 226
दो गजलां — *दीपा परिहार 'दीप्ति'* 227

दूहा
निज रा करम सुधार — *डॉ. उषाकिरण सोनी* 228
कळप — *छैल कंवर चारण 'हरिप्रिया'* 229
करलां मन री बात — *तारा प्रजापत 'प्रीत'* 230
शृंगार रस रा दूहा — *मान कंवर 'मैना'* 231
शृंगार रा दूहा / कहावतां रा दूहा — *डॉ. सुशीला शील* 232

कुंडळिया
चरूंठिया — *डॉ. साधना जोशी 'प्रधान'* 233

हाइकु
चवदा हाइकु — *डॉ. अनिता जैन 'विपुला'* 234
दस हाइकु — *चित्रा शर्मा 'काप्रेनी'* 235

बंतळ
राजस्थानी री सांवठी छिंयां में पढ़ूं जीवण-पोथी रा पाना — *आनंद कौर व्यास— जेबा रशीद* 236

 ISSN : 2320-0995

संपादकीय

महिला लेखन रो विड़दजोग विशेषांक

सौ सालां रै राजस्थानी महिला लेखन पर निजर न्हाखां तो मायूसी तो नीं होवै क्यूं कै जकी हालत राजस्थान राज्य अर भासा री रैयी उणसूं धुंआधार लेखन री आस दोरी ही। रियासत काल में ई मायड़ भासा री पोसाळां या गुरांसा नीं हा जका शिक्षित करनै लेखन री दिसा दिखावता। जको कीं हो केवल परंपरा में अर मौखिक ईज हो। फगत औ ईज आमजन री पूग में हो। राजस्थानी री दरजेवार शिक्षा बिना आम संवेदनसील मिनख साव गूंगो हो। आजादी सूं पैला ई हीणता रो जाडो परदो न्हाख दियो गयो हो। पोसाळां में शिक्षा जद सरू व्ही तो हिंदी सूं सरू व्ही तो लेखन हिंदी में ईज हो सकतो हो अर हुयो भी हिंदी में ईज। स्वचेतना परवाणै ईज कीं राजस्थानी वापरी अर पछै मायड़ भासा रो मान भी चेतै आवण लागो। इणी कारण राजस्थानी में लेखन मोड़ो सरू हो सक्यो।

आजादी सूं पैला राजस्थानी लेखिकावां रो साम्हीं नीं आवण मांय अशिक्षा खास कारण हो। उणरै मूळ में आ बात है कै जद आठवीं अनुसूची रो झुणझुणो नीं हो तद भी राजस्थान रै रियासती काल री स्कूल-कॉलेज में राजस्थानी विसय अर आखर ग्यान री भणाई नीं ही ।

सगळो ठीकरो भासा मान्यता पर ढोळणो तो ठीक नीं। आजादी पैलां रा आपणा आगीवाण इण पेटै ठाह नीं क्यूं ध्यान नीं दियो। दिनाजपुर सम्मेलन रै समै सूं केवल भासा मानता री मांग ईज पकड़नै राखीजी। 20 वीं सदी रै पैला सूं स्कूली शिक्षा री जरूरत मैसूस होवण लागगी ही अर राजा-दरबार हिंदी-अंग्रेजी स्कूलां री जरूरत समझ थापित भी करली ही। उणी सागै मायड़ भासा राजस्थानी विसय या उप भासावां री पोसाळ क्यूं अनिवार्य नीं करी जदकै वै इण सारू आज रै उलट उण समै खुद सरवेसरवा हा। रेल-हवाई जहाज रै पेटै तो विकास करयो पण वांरै मायड़ भासा नै दरकिनार करणै रो अजै खामियाजो भुगतां हां। रियासत काल में राजस्थानी नैं तवज्जो नीं देवण रा कारण विचारणीय है।

उण समै पोसाळां मांय राजस्थानी या उपभासा रूप मांय मायड़ भासा लागू कर दी होवती तो राजस्थानीभासी में आतमगौरव होवतो अर मायड़ भासा सारू हेज रैवतो तो हिंदी नैं पग पसारण री जगै नीं मिलती। पण भासा सारू चेतना ही कोनी अर खेत खाली हो तो पारकी भासा फसल नैं पांगरता जेज नीं लागी। राजस्थान सूं उलट राजस्थानी री मां जायी बैन गुजराती, गुजरात राज्य री पोसाळा में लागू ही अर मायड़ भासा री चेतना रै परवाणै पारकी भासा उठै बड़ ई नीं सकी। औ ईज कारण है कै गुजराती अर दूजै राज्य आळा आज गरब सूं माथो ताण्यां घूमै अर आपां जवान होवतै 21वैं सईकै में अजै ई मायड़ भासा में पैली शिक्षा रै अधिकार-हक री भीख ईज मांगां हां।

सी-139, शास्त्रीनगर, जोधपुर *मो. 7568068844*

इण बीच समय री पारखी लेखिकावां आस थामी राखी अर लक्ष्मीकुमारीजी रै 'मांझळ रात' अर 'मूमल' पछै 1972 में आशा शर्मा रो कविता-संग्रै 'चंदाबरणी बातां' आयो। पण जद तांई तो सरकारां राजस्थानी भासा नैं लारै करनै हिंदी पर वरदहस्त रख दियो हो तो पछै रोजगार रै लारै धावती पीढी नैं राजस्थानी छोड'र हिंदी री सरण में जावणो घणो लाभकारी लागो। भूखा रै रोटी अर रोजगार जरूरी व्है जको कै राजस्थानी रै नीं होवण सूं हिंदी रै कारण ईज मिल सकतो हो। पोसाळां बगर अेकदम सूं भासा री चेतना आवणी दोरी ही क्यूंकै प्राथमिक शिक्षा मांय तो कदैई राजस्थानी रैयी नीं ही, तो मायड़ भासा रै पेटै प्रेम री अलख नवी पीढी में कियां जागती। उण समै में कोई नै राजस्थानी भासा अर नारी शिक्षा री अणूती पीड़ ही भी कोनी।

आजादी सूं पैलां ई तो आपणा नेतावां रो ध्यान फगत कुरसी खोसण पर लागग्यो हो, क्यूंकै बै लोकतंत्र री आहट देखली ही अर आज तांई बा ईज बात है। लिजलिजा नेता आज भी फगत कुरसी बचावण लाग रैया है। भासा री ऊंडी पीड़ तो अजैई कोई नेता रै मन में कोनी।

इण बिचाळै स्वप्रेरणा अर विवेक सूं जको सिरजण होयो बो बिना खाद-पाणी रो हो। इणी कारण विसय अर विचार री ऊंचली उडाण नीची ई रैयी। पछै भी दूजी भासावां री लेखिकावां दांई वांनै हाथोहाथ नीं लेयनै दरकिनार भी करयो गयो। फेर भी आपणी लेखिकावां री दीठ नैं जस कै बै टुक-टुक सिरजण करती रैयी अर मायड़ भासा में कमती ई सही, पण पगल्या मांडती रैयी। हिंदी री फसल रै बीचै जद राजस्थानी नैं खरतपवार घोसित कर दी गई तो सींच मिलणो तो अळगो रैयो बल्कि राजस्थानी री निदाण भी करीजी अर हेय दीठ सूं भी देख्यो गियो।

औ ईज कारण हो कै राजस्थानी में किणी महिला लेखिका रो पैलो आधुनिक कहाणी संग्रै डॉ. सावित्री चौधरी रो 'मनचाही आजादी' मोड़ो आयो। राजस्थानी में लेखिका रो पैलो आधुनिक उपन्यास 'सौगन' बसंती पंवार रो 1997 में आयो जको राजस्थानी भासा री जूनी समरिधता देखतां थकां घणो मोड़ो हो। राजस्थान में राजस्थानी री माड़ी हालत देखतां जियां-जियां मायड़ भासा रो मान हिलोळा लेवण लागो, सिरजण बधतो गियो। हवळी गति सूं ई सही पण अमुक विधावां में छुट्टो सिरजण अर पोथियां साम्हीं आवती रैयी।

आज तांई राजस्थानी पत्रिकावां में लेखिका अंक निकाळणै रो कीं काम होयो, पण बो ई आंगळी गिणाव। महिला लेखन अंक अर लेखिका सम्मेलन 2013 में 'जागती जोत' अर 'राजस्थली' ईज साम्हीं लायी अर संजोग सूं जिण रा संपादक अर संयोजक रवि पुरोहित ईज रैया।

डॉ. शारदा कृष्ण री आलोचना री 'आंगणै सूं आभो' अेकली पोथी है जिणमें राजस्थानी महिला लेखन पर लेखिका री अेक सांवठी दीठ ही।

विसयगत बात करां तो बीसवीं सदी रै अंत अर इक्कीसवीं सदी में संचार साधन अर मीडिया सूं भासा रै खातर चेत वापरी अर विसयां में नवोपण आवण लागो। पारंपरिकता रै सागै नवी अबखायां पर बात साम्हीं आवण लागी।

राजस्थानी साहित्य रै इतिहास में लेखिकावां पर सदा सूं कम ईज ध्यान दिरीज्यो है। आलोचनात्मक या कूंत दोनूं ई दीठ सूं बांरो आकलन टाळ्यो गयो। जे कोई संकलन में दिखत रूप में भेळी ली तो भी भूमिका में कोई जगै नीं दी। पछै आ बात भी साच है कै घर रा सरावै जद ई दूजा कीं गिनार करै। जद घर रा ई कदर नीं करी तो दूजां रो ध्यान कियां जावतो अर कदर ई कांई करता!

समै खाताई सूं बदळ्यो अर लारला दस सालां मांय समाज में नैना-मोटा अणूता ई बदळाव आया। समाज री मानसिकता पर असर पड़्यो। कीं समै पैलां जकी सामाजिक घटनावां अजोगती लागती बै ईज दुर्दांत घटनावां अब आपणै आसै-पासै आराम सूं घटित हो जावै अर आपां मुचकां ई कोनी। आपोआप में सिमटियो मिनख संवेदनहीण हो रैयो है या भय सूं संग्यासून है। आ हालत चिंत सूं भरै। समाज रो पड़बिंब अर भविस साहित्य है अर साहित्य रो सामान समाज है। दोनूं अेक-दूजै नैं प्रभावित करै अर दोनूं अेक-दूजै रा पथ-प्रदरसक रै सागै पथ-भटकाऊ भी होवै। समाज में घट्योड़ै नैं अर भावी नैं साहित्य देखै अर साहित्य जकी कल्पना करै उणनैं समाज पूरो कर देखावै। औ चिंतण रो विसय है कै साहित्य अजोगती बातां समाज सूं सीखै या अजोगतै साहित्य सूं समाज सीखै अर रंग बदळै।

राजस्थान ई दुनिया री आधुनिक आबहवा सूं अछूतो नीं है अर ना ई लेखिकावां, क्यूंकै समाज री हर घटना अेक स्त्री नैं केई भांत सूं झकझोरै। औ असर लेखन पर आवणो लाजमी है। इणी असर नैं देखतां थकां खासै समै सूं आ दरकार ही कै बडेरी अर नवी पीढी री राजस्थानी लेखिकावां में लेखकीय दीठ सूं कांई असर आयो है? सोशल मीडिया अर अत्याधुनिक जीवन शैली जीवण आळी अर दुनिया भर रो साहित्य पढण आळी राजस्थानी लेखिकावां री कलम आजकालै कांई रच रैयी है? इण पर विचार अब होवणो जरूरी हो। अबार तांई अेक गलतफैमी आ भी ही कै राजस्थानी में लेखिकावां री संख्या सीमित है।

श्याम महर्षिजी अर रवि सर इण री जरूरत मैसूस कर रैया हा। जिक्र अर विचार चालतो रैयो अर अेक दिन कैयो कै लेखिकावां पर अेक अंक आवणो बोत जरूरी है। आप 'राजस्थली' रै इण अंक रो अतिथि संपादन कर सको।

मां वीणापाणि रै आसीस अर आपरै मारगदरसण सूं कीं कर सकूं तो आ म्हारै सारू बोत बडी बात होवैला। म्हनैं भी युवा लेखिकावां री केई विधावां पढण नै मिलसी। औ सुख कांई कम है। म्हारो जवाब इण सूं दूजो कीं हो ईज नीं सकै हो।

बेगो ई मीडिया, सोशल मीडिया रै जरियै 'राजस्थली महिला लेखन अंक' रो काम चालू होयो। मौलिक रचनावां री अरज करतां थकां औ सनेसो राजस्थान ई नीं बारै तांई पूगायो गयो। आज रै समय री रीत मुजब 'राजस्थली लेखिका अंक वॉट्सऐप ग्रुप' बणायो अर लिंक सूं लेखिकावां नै जुड़णै री अरज करीजी। हरेक लेखिका आपरी इच्छा अर हूंस सूं इणसूं जुड़ी अर सूचना रो विगसाव खाताई सूं हुयो। तुरंत ई रचनावां आवण लागी। जकी धारणा ही कै युवा पीढी राजस्थानी में सिरजण कम कर रैयी है, खासकर महिला लेखन पर, आ धारणा तुरंत ई धूड़ चाटती निगै आई। रचनावां आवण लागी तो बेगो ई आंकड़ो अस्सी पार पूगग्यो अर पछै सौ पार करनै अेक सौ बीस नैं पार करतो लखायो।

राजस्थानी रै इतिहास में औ रिकॉर्ड पैली बार हो कै सौ सूं बेसी लेखिकावां री सिरजण री हूंस देखण नै मिली।

कविता, कहाणी, लेख, साक्षात्कार, दोहा, गजल, हाइकू, लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र अर कथेतर विधा री रचनावां पूगती मिली। बडेरी अर समकालीन सिरजण रै सागै नवी लेखिकावां खाथाई सूं जुड़ी। अेकांकी, रेखाचित्र अर जात्रा-वृत्तांत ई आया। पछै अंक आपरी अैतिहासिक

जात्रा सरू करी। रचनावां पढती वेळा केई दिन भांत-भांत री लहरां मांय उबचूब रैयी। लेखिकावां नैं राजस्थली रै अंक सारू जोड़ण में सगळां रै सागै विजयलक्ष्मी देथाजी अर नलिनी पुरोहित जी रो जोगदान महताऊ रैयो। रचनावां री पूग जिण खाथाई सूं व्ही बा देखण जोग ही।

हरख री बात आ कै वरिष्ठ लेखिकावां में समाज नैं देखण री पारंपरिकता रै सागै नवी दीठ ही अर नवी लेखिकावां अछूता विसयां सागै पारंपरिकता रो भी पोखण करयो अर साची रूप में औ संतुलन होवणो घणो जरूरी है। परंपरा अर लोक सूं उखड़्यो समाज नस्ट व्है जावै। अतिआधुनिकता रो चक्कर लगायां पछै कटु अनुभवां लियां जियां कै भूलै नै पारंपरिकता खरी लखावै बियां ई आज लेखन में आंचलिकता रैवणो सुखद संकेत है। इण समै राजस्थानी लेखन सारू हरख री बात है कै बो आपरी जमीं नीं छोडी है। सोच आकास तांई है, पण पग जमीं में है।

अंजस इण बात रो है कै कूंपळ री कवितावां घणी ऊरमा सूं साम्हीं आयी। कूंपळ बगर रूंख कठै सूं आसी। इणी सोच सागै आं पैला पगल्यां री अंवेर अर दिसा-दरसण जरूरी हो।

इण अंक रै सार रूप में औ कैय सकां कै राजस्थानी रो महिला लेखन भासा, सौंदर्य अर शिल्प री दीठ सूं नवो रंग धारण करतां समै रै पसवाड़ै रा दोनूं रुख भलीभांत जाहिर कर रैयो है। इण दीठ में समै री ऊंडी पड़ताल है। अत्याधुनिक जीवन सैली में ढळी रचनाकारां रो जीव मायड़ भासा में है, आ बात हरख री है। राजस्थानी भासा रै गुलदस्तै रो हर पुसप आपरी सौरम सागै इण अंक मांय विराज्यो है।

रचनावां आवण री तय तिथि रै पैला तांई वॉट्सऐप रै भेळप मांय अेक सौ बीस लेखिकावां में लगोलग रचनावां खातर संवाद चालतो रैयो। छेकड़ तिथि नैड़ी आई तद रवि सर रो सुझाव आयो कै इत्ती लेखिकावां अेक मंच पर भेळी करणी दोरी है। राजस्थली रै कारण औ भेळप बण्यो है तो इणरो पूरा उपयोग होवै तो कीं बात है। नींतर सगळा बिखर जासी अर अंक रै अलावा और कीं फायदो नीं होवै।

चिंतन सूं औ सार निकळ्यो कै जकी मायड़ भासा में पैल परथम पग मांड्या है, जकी अेक-दो विधा रै अलावा दूजी विधा में हाथ नीं राखै या जकी हाथ राखै बांनै और पारंगत करण सारू क्यूं नी वॉट्सऐप ग्रुप में वर्कशॉप चलायो जावै, जिणसूं आं री ऊरमा रो उपयोग होवै, कीं नवो सीखै अर सीखोड़ै मांय सुधार कर सकै। औ पांवडो राजस्थानी सारू साचो योगदान होसी अर नवी लेखिकावां ठायी रूप सूं राजस्थानी सूं जुड़ जासी। इणी पेटै कीं सिखावण री लैण में सगळां सूं पैला 'दूहा' रो नाम आयो। आ विधा मैनत अर गुरु री सरण बगर नीं सीखिजै, सो इणी विधा रा गुरू सूं अरज करी कै भेळप नैं दिसा देवै।

तद इण कार्यशाला रो नाम 'राजस्थली गुरुकुल' राख्यो अर दूहां सारू आचार्य री पदवी पर श्री भंवरलालजी सुथार विराज्या। दूहा पर साला चालू व्ही। विधान बतायां पछै गृहकार्य दियो जातो। उणनै जांचनै सुधार अर दिसा दी जाती। हरख री बात 'क इण विधा मांय कवयित्रियां जोर-शोर सूं भाग लियो। दूहा लिखणा सीखणै री ललक बां मांय देखणजोग ही। भेळप में आचार्य अर ऊरमावान पढेसर्‌यां रो उल्लास दिन-दिन रंग ला रैयो हो। भंवरलालजी पूरै धीजै सूं टाबरां री कॉपी जांचता। इण तरै कीं समै मांय ई तीस नैड़ी लेखिकावां दूहा री पथ पर पूरै लगन सूं चाली। इण में खासी जण्यां पैली बार दूहा रचण री हीमत दिखाई। उण मांय सूं अेक म्हैं ई हूं।

गुरुकुल रो उल्लास इत्तो हो कै औ विचार आयो कै आं री इत्ती मैणत नैं कांई नांव दियो जा सकै। हर उमर री लेखिका आपरै घर-गिरस्ती में उळझी-पजी है, पण फेर भी टाबर बणनै उरमा सूं गुरुकुल में सीख रैयी ही। आ नारी रै सीखणै री ललक ही। युवा रै सागै सैकिंड इनिंग्स री लेखिकावां भी बालक बणनै पढाई करती। हूंस नैं नांव देवण सारू पोथी री कल्पना करीजी। जे दूहा सांवठा रचीज जावै तो 'राजस्थली वॉट्सऐप ग्रुप' सूं दूहा-पोथी अेक लाभ रै रूप में साम्हीं भी आ जासी। गुरुकुल में रचीज्या दूहा संग्रै सारू सात जुलाई छेकड़ तिथि राखीजी अर विविध रंगी दूहा आया भी। पण पोथी तो आसी जद री बात है। तुरंत ई इण जोश नैं जग कियां सराय सकै। तद प्रमाण-पत्र री सोची। जकी सिरजणकार कीं सांतरा दूहा रच दिया बांनै औ सम्मान मिलै। औ भी हुयो अर आचार्य रै हाथां सूं पंदरा सिरजणकारां नैं प्रमाण-पत्र दिरीज्या।

'दूहा कार्यशाला' पछै आशा पांडे ओझाजी रै आचार्य पद सूं हाइकु री कार्यशाला चालू व्ही। इणमें भी कुण चूकतो! दूहा सूं भी बत्तै जोश सूं हाइकु में सिरजण साम्हीं आयो। कीं जकी दूहां में सक्रिय नीं ही, बै भी साम्हीं आई अर गुरुकुल चाल पड़्यो। अणूती व्यस्तता रै बावजूद आशा जी हिलमिल'र सहजता सूं हाइकु नैं सधायो। लेखिकावां गद्गद होयगी। कोई जकी दूहा-हाइकु रो कदैई सोच्यो ई नीं हो, बै इण पर सुथरायी सूं चाल पड़ी।

हाइकु री दस दिन री कार्यशाला पछै आशाजी री आगीवाणी में चौपाई अर रेखा लोढ़ा 'स्मित' री आगीवाणी में 'सोरठा' लेखन रो गुरुकुल सरू हुयो अर इणी भांत दूजी विधावां चौपाई आद पर गुरुकुल चालतो रैयो अर सिरजण बधतो रैयो। सिखारां अर लिखारां री हूंस देखतां दूजी केई विधावां रोला, कुंडळिया, घनाक्षरी, गजल अर दूजी कथेतर विधावां में भी पोसाळ राखण री मंसा पाळी।

इणी बिचाळै संस्था औ विचार कर्‌यो कै भगवान री मेहर होवै अर कोरोना सूं मुगती मिलै तो 'राजस्थली महिला लेखन अंक' रै अेक और उपयोग रूपी लेखिका सम्मेलन भी तेवड़ियो जा सकै अर उण में ईज इण महताऊ अंक रो लोकार्पण होवै तो भलो।

इणी सोच रै सागै 29 अगस्त रो लेखिका सम्मेलन तेवड़ीज्यो है। कोरोना री अमूझ सूं निकळणै रो औ चोखो मौको हो। हरख सूं सहमतियां आवण लागी।

केई अबखायां सूं जूझतै इण समै में लेखिकावां रौ औ खास रिकॉर्ड अंक कीं थ्यावस देवै अर थ्यावस देवै लेखिकावां रो ऊरमा भर्‌यो सिरजण। मोकळी नवी लेखिकावां रो राजस्थानी सूं जुड़णो सुखद संकेत है। बांरी अंवेर जरूरी है। होय सकै, कीं रचनावां ईं अंक में सामल नीं करी जा सकी व्है, उणनैं पानां री सींव मानी जाय सकै।

राजस्थानी महिला लेखन नैं अजै घणा पड़ाव पार करणा है। मायड़ भासा री आज री हालत देखतां थकां बां पर फगत लेखन ई नीं, भासा रै प्रसार सारू भी खेचळ करणी है। आप ई नीं, नवी पीढी नैं भी राजस्थानी पढण अर लिखण सारू खाथाई सूं त्यार करणा है। विसयगत विविधता पर पूरो ध्यान देवणो है, सागै ई अकादमियां ई अेक लेखिका नैं समिति में लेयनै औपचारिकता नीं करै बल्कै घणी संख्या में बांनै जोड़नै बांरी दीठ अर अनुभव रो लाभ लेवै तो हूंस बधै।

कवयित्री-चित्रकार राजोल राजपुरोहित री कूंची सूं निकळ्यो चित्राम नारी री अर नारी खातर अेक असींव दीठ नैं दरसावै। स्रिस्टी सिरजक अर स्रिस्टी पाळणहार री साख भरतो कवर पेज अर रेखाचित्रामकार नलिनी भट्ट री कला सूं औ अंक सज-धज लियां आपरै साम्हीं है।

राजस्थली अर श्याम महर्षिजी सागै हर लेखिका नैं घणा रंग कै सागै चालनै इण अंक नैं सरावणजोग बणायो। बाकी तो आप जकी कूंत करसो, बा सिर माथै रैसी। मोकळो आभार।

-किरण राजपुरोहित 'नितिला'

आसाढी गुरु पूनम, वि. सं. 2078
24 जुलाई, 2021

◆◆

आवरण चित्रामकार

राजोल राजपुरोहित 'मुक्ता'

कविता, लघुकथा आद विधा रै सागै आप केई भांत री चित्रामकला में ई दखल राखै। तैल चित्राम ई नीं, वॉल पेंटिंग, रेखाचित्राम में ई निपुण। 'मारवाड़ री जायी थळी परणायी' राजोल आपणी संस्कृति रा गुमेजजोग निरत, कला अर कविता रै ओळावै इंस्टाग्राम रै सागै यूट्यूब चैनल पर ई छायोड़ा रैवै। राजस्थली रै आवरण सारू आपरो औ पैलो पळको। आवरण रै साथै इण अंक में आपरा केई रेखाचित्राम ई है।

मो. 9414470611

ठिकाणो :

नोखा रोड
पुराणी चूंगी चौकी रै साम्हीं, भीनासर
(बीकानेर) राज.

रेखा चित्रामकार

धनलक्ष्मी भट्ट

हाल अहमदाबाद रैवण वाळा धनलक्ष्मी भट्ट नैं श्रीनाथ जी री नगरी अर उदयपुर रै सागै कला रो त्रिवेणी संगम मिल्यो। आज आप स्वतंत्र चित्रामकार है। इण लारै चावा-ठावा चित्रामकार सुसरोजी श्री योगेन्द्र भट्ट रो आसीस है। सागै ई नानी सुसरोजी पं. विश्वेश्वर शर्मा नामी गीतकार अर मंच रा कुशल हास्य कवि अर चित्रामकार श्री अनेन्द्र भट्ट आपरा सायबजी सूं कला-साहित्य रै पथ नूंवी दीठ मिली।

मो. 7285006926

ठिकाणो :

एल-12, श्रीकृष्ण नगरी
वेजलपुर (अहमदाबाद)
गुजरात

ISSN : 2320-0995

डॉ. अनुश्री राठौड़

बेनाम रिस्तो

रेल टेसण छोड'र रफ्तार पकड़ चुकी ही। सुरजी खिड़की सूं बारणै देखण लागी। चवदस री काळी रात में घणघोप अंधारै नैं छोड कांई भी निजर नीं आय रैयो हो। आभै मांय टिमटिमावता तारां नैं देखतां-देखतां उणरी आंख्यां साम्हीं डाक्टर विनोद री सूरत घूमगी अर विचारां में बीत्यां बगत री अेक धुंधळकी तस्वीर उभर आई। उण माथो झटक'री बठीनै सूं ध्यान हटावणो चायो, पण नीं चावता थकां भी अतीत चलचित्राम री भांत दिमाग रै पट माथै चालण लाग्यो अर बा आंख्यां मूंद'र उणमें डूबगी।

टमाटर जिस्या राता गाल, हिरणी जिसी चंचळ चाल, गुलाब री पांखड़्यां-सा होठ, कमर तांई लैरावता केश, लांबी काठी अर कस्योड़ै डील री धणियाणी सुरजी नैं ठाह नीं हो कै उणरो ब्यांव कद व्हियो? हां, जिया (मां) रै मूंढै सूं सुण्यो हो कै उणनैं थाळी में बैठा'र फेरा कराया हा। जाहिर हो कै ब्यांव री टेम बा फगत बैठणो सीखी ही, पगै नीं चालती ही।

बापू री भी फोरी-फोरी-सी चितार ही कै वै गांव प्रधान रमाकांत सेठजी री गाडी चलावता हा। सुरजी पांच-छह बरस री ही जद सेठाणी कमला देवी नैं स्हैर ले जावता थकां गाडी दुरघटणाग्रस्त व्हैगी। उण दुरघटणा में कमला देवी दोनूं पगां सूं अपाहिज व्हैगी अर बापू हरिसरण।

बापू री मौत पछै पुश्तैनी जमीन काकै जूनी मांग-तांग पेटै हड़प ली तो आपरै अर बेटी रै पेट री लाय बुझावण खातर जिया जानकी प्रधानजी री हेली मांय अपाहिज सेठाणी री सेवा वास्तै नौकरी माथै लागगी। जानकी नैं बठै काम री अेवज में पईसा तो घणा नीं मिलता हा, पण दोनूं मां-बेटी नैं साल दो-तीन जोड़ी नूंवा-जूना गाभा अर दो बगत री रोटी बठै सूं मिल जावती ही, जिणसूं उणां रो गुजारो आराम सूं व्है जावतो। हेली में नौकरी करता-करता कद जानकी रो गोळ-मटोळ गोरो मूंडो पिचक'र सांवळो अर झुरीदार व्हैग्यो, कद उणरा काळा केशां में धोळी धारयां निकळ आयी अर कद सुरजी बाळपणै री उमर पार कर किशोरवय में पूगगी, ठाह ई नींपड़ी।

बाळपणै सूं ई खुदोखुद में मस्त रैवण वाळी भोळी सुरजी कदैई किणी सूं घुळ-मिल नीं सकी। उणरो बिना मतलब हर किणी सूं उळझ जावणो, बगीचै में फुदिया (तितलियां) रै पाछै

एस-1/34 नेला रोड, हिरण मगरी से. नं. 14, उदयपुर (राज.) मो. 9460342590

दौड़तो रैवणो कै पछै बकरी रा बच्चियां रै साथै मैं-मैं करतां उछळ-कूद करणो, जानकी नैं हमेस डरपावतो रैवतो।

डाक्टर विनोद कमला देवी रो भतीजो हो अर बिशनपुर गांव रै कनै वाळा स्हैर मांयहालही में उणरी नौकरी लागी ही। बिशनपुर में बो पैली बार प्रधानजी रै बेटै रविकांत रै ब्यांव में आयो हो। विदेस सूं डाक्टरी कर'र आयोड़ै विनोद नैं गांव री बा भोळी किशोरी घणी आछी लागती ही अरसुरजी भी घणी प्रभावित ही उण मोट्यार डाक्टर सूं। ब्यांव में रोज-रोज री मुलाकात सूं उणां दोनूं बिचाळै पक्को बेलीचारो हुयग्यो हो। सुरजी सूं बात करण रो कोई मौको नीं चूकतो विनोद। आपरी आदत सूं मजबूर सुरजी केई ताळ उणसूं भी बिना बात उळझ जावती, पण वाक्पटु विनोद सहज ही बात संभाळ लेंवतो अर दोनूं हंस पड़ता।

ब्यांव निपट्यां पछै जद विनोद स्हैर बावड़ग्यो तो सुरजी अेकलापो मैसूस करण लागी। पैली बार बा किणी सूं इत्ती घुळी-मिली ही। उणनैं लागण लाग्यो कै अबार तक बा कित्तो अेकलो जीवण जीवै ही। काकै रै परिवार सूं उणनैं कदैई अपणायत नीं मिली ही अर जिया आखो दिन सेठाणी री ड्यूटी बजा'र रात रा मोड़ी थाकी-हारी फगत सूवण नै ईज घरां आवती ही। ओ ईज कारण हो कै बा सरू सूं ई खुद में रमी मस्त री ही। पण अबै विनोद थोड़ो-सो प्रेम अर अपणायत देय'र उणरी सांत जीयाजूण में उथळ-पुथळ मचायग्यो हो। अबै उणनैं विनोद जिस्यै अेक साथी री जरूरत मैसूस होवण लागी, जिणसूं बा खुल'र मन री हरेक बात कर सकै।

उणनैं चितार आयो, बींद बण्या रविकांत नैं देख'र उण विनोद नैं पूछ्यो हो, ''डाक्टर साब, आपरो ब्यांव व्हैग्यो?''

''ऊंऽऽहूं।'' विनोद ना में माथो हिलावतो बोल्यो, ''कोई मिली ई कोनी।''

''भला मिनखां! आधो जगत घूम आया अर कोई छोरी ई नीं मिली ब्यांव जोगी?''

सुरजी अचंभै सूं बोली तो विनोद उणनैं छेड़तां थकां बोल्यो, ''मिली तो केई, पण थारै जिसी नीं मिली, ब्यांव तो थारै जिसी सूं ई करणो है अर बिसी तो थनैं ईज हेरणी पड़ैला।''

सुरजी रै मन में आयो कै पूछै—''क्यूं, अस्यो कांई है म्हारै मांय'' पण पूछती, इणसूं पैलां ई विनोद पूछ लियो, ''अच्छा, आ तो बता, थारो बींद किस्योक है?''

''ठाह नीं, म्हैं देख्या ई कोनी अबार तांई उणां नैं।''

''ओऽऽहो।'' विनोद अफसोस रै अंदाज में मूंडो बणावतो कैयो, फेर चिड़ावण वाळै अंदाज में बोल्यो, ''जरूर, बो रविकांत जिस्यो हुवैला।''

जबाब में बा मूंडो बिगाड़ती बोली, ''छी: काळो पाडो।''

विनोद नैं हंसी आयगी अर उण पूछ्यो, ''अच्छा चाल, थूं बता किस्योक व्हैला?''

''ऊंऽऽऽऽ।'' सुरजी थोड़ीक ताळ सोचण वाळै अंदाज में चुप रैयी अर पछै विनोद रै कानी देखती ठिठोळी करती बोली, ''कुछ-कुछ आपरै जिस्यो।'' कैवण रै साथै ई बा सरमा'र बठै सूं भाजगीअर विनोद ठठा'र हंस पड़्यो।

इण तरै बांरै बिचाळै अैड़ी केई बातां व्हैती ही जो पैलां सुरजी किणी रै भी साम्हीं नीं करी ही। नीं चावता थकां भी उणनैं बै सगळी बातां चेतै आवै ही। विनोद नैं गयां नैं दस दिन व्हैग्या हा,

सुरजी रै मूंडै माथै हमेस टिमटिमावतो रैवण वाळो नूर अबै फीको पड़वा लाग्यो हो। बा समझ नीं सकै ही कै उणनैं डाक्टर साब री इत्ती ओळूं क्यूं आय रैयी है, जदकै उणां रै बिचाळै तो कोई रिस्तो भी नीं है।

पंदरै दिन बीतग्या। सेठाणी री तबीयत वत्ती खराब होवण सूं दो दिन व्हेग्या, जानकी बिल्कुल भी घरै नीं आयी ही। समझ आयां पछै सुरजी हेली कम ई जावती ही। वजै ही रविकांत री घूरती निजरां। पण उण परभात घर में आटो खूटग्यो, इण वास्तै उणनैं हेली जावणो पड़्यो। बठै पूगतां ई उणरी आंख्यां फाटी री फाटी रैयगी। विनोद सब रै साथै बैठो नास्तो कर रैयो हो। जद सुरजी नैं ठाह पड़ी कै बो रात रो ई आयोड़ो है तो मौको मिलतां ई बा उण माथै बरस पड़ी :

''काल रा आयोड़ा हो, अेक बार ई जीव नीं करयो कै जाय'र सुरजी सूं मिल आवूं। लोग साची ई कैवै कै स्हैर रा मिनख निरमोहिला व्है अर म्हैं मूरख, जो पाछला पंदरा दिनां सूं आपनैं चितार-चितार'र दूबळी व्है रैयी हूं।'' कैवतां-कैवतां उणनैं रोवणो आयग्यो अर बां बठै सूं न्हाठगी। आ बात दूजी ही कै घड़ी भर पछै ई विनोद जाय'र उणनैं पाछी राजी कर ली। उण रा लायोड़ा उपहार देख'र सुरजी नैं ई औ विस्वास हुयग्यो कै बो उणनैं अजै भूल्यो तो कोनी।

स्हैर सूं विनोद रो आपरो गांव पांचसौ किलोमीटर छेटी हो, जदकै बिशनपुर पैंताळीस-पचास रै लगैटगै, इण वास्तै बो पंदरै दिन में अेक बार सप्ताहांत री छुट्टी मनावण सारू अठै ईज आय जावतो हो अर जद ई आवतो, पैलां सुरजी कनै आवतो, उणसूं मिलतो, पछै हेली जावतो। बै दोनूं केई-केई घंटा अेक-दूजै रै साथै रैवता, बातां करता, हंसी-ठिठोळी करता। कदैई सेठजी रै खेतां में जाय'र लीलवा अर गंऊ री ऊंबियां सेक'र खावता तो कदैई मक्किया। गांव भर में उणां रै हेज-हेत री चरचा व्हैती रैवती ही अर दबी-दबी कानाफुस्यां जानकी तांई भी पूगवा लागी ही।

हालांकै उणां दोनूं रै बिचाळै अैड़ो कीं भी नीं हो जिणनैं समाजू रूप सूं गलत कैयो जा सकै। विनोद रै मन में कांई चाल रैयो हो, औ सुरजी नैं नीं ठाह, पण बा आछी तरै जाणती ही कै बां अेक परणेतर है, उणरो अेक धणी है, सासरो है अर अेक दिन उणनैं बठै ईज जावणो है। आ बात अलग ही कै बा जद भी आपरै अणदेख्यै धणी री कल्पना करती, उणरी आंख्यां साम्हीं विनोद री धुंधळी-सी छिब उभर आवती ही। बा तो कदैई नीं समझ सकी कै उणरै मन मांय विनोद नैं लेय'र कांई चाल रैयो है, पण जानकी री अनुभवी आंख्यां सगळो भांप लीधो हो।

आगली बार जद विनोद आयो तो सुरजी घरै नीं ही। उणरो सामेळो से सूं पैली जानकी सूं व्हियो। विनोद जाणतो हो कै जानकी नैं उणरी अर सुरजी री मेळ-मुलाकात घणी दाय नीं आवती ही, पण मालिक रो रिस्तेदार होवण रै कारण बा खुल'र कदैई कीं कैय नीं सकी। उण दिन विनोद जानकी नैं नमस्ते कर'र ज्यूं ई सुरजी बाबत पूछ्यो, बा हिचकिचातवी थकी बोली, ''डाक्टर साब, आप बुरो नीं मानो तो अेक बात कैवणी चावूं।''

''हां-हां, कैवो नीं काकी।'' विनोद कैयो।

''साब, म्हनैं नीं ठाह कै आपरै मन मांय कांई है, पण मोट्यारपणै रा पगोथिया चढती सुरजी आप मांय उण मरद नैं देख रैयी है, जको इण उमर री छोर्‌यां रै सुपनां रो राजकंवर व्है। आ बात उणरै सुखी ससुराली जीवण रै वास्तै आछी नीं है, क्यूंकै उणरो धणी आपरै दांई स्हैरी बाबू

नीं, गांव रो करसाण है।'' जानकी हाथ जोड़'र बोली, ''साब, आगलै महीनै सुरजी रो मुकलावो है। म्हारी आपसूं अरज है कै आप म्हारी छोरी नैं आपरै मोहजाळ सूं मुगत करदो।''

जानकी री बात सुण'र विनोद छिण-भर रै वास्तै तो हकबक रैयग्यो। फेर बात री गंभीरता नैं भांप'र संभळतो थको बोल्यो, ''काकी, सुरजी म्हारी दोस्त है। म्हैं तो हमेस औ ईज चायो है कै बा हरदम खुस रैवै। जे महारी वजै सूं उणरो भविस्य काळो व्है सकै तो आज रै पछै म्हैं उणसूं कदैई नीं मिलूंला।'' कैय'र विनोद उणीज बगत स्हैर बावड़ग्यो।

इण बात सूं अणजाण सुरजी रोज उणरी बाट जोवती। अेक महीनो बीतग्यो। ज्यूं-ज्यूं मुकलावा रा दिन नैड़ै आय रैया हा, उणरी व्याकुलता बधती जाय रैयी ही। बा मान'र चालै ही कै मुकलावा रै पछै स्यात बा विनोद सूं कदैई नीं मिल सकैला। कांई ठाह उण रा सासरावाळा अर उणरो धणी उणां दोनूं रा रिस्ता नैं किण निजरां सूं देखै! फेर बिशनपुर तो विनोद इण वास्तै आवै है कै औ उणरी भूवा रो गांव है, सुरजी रै सासरै बो क्यूं आवैला। बठीनै स्हैर में विनोद रो मन भी अकुळा रैयो हो, रैय-रैय'र सुरजी रो भोळो मूंडो आंख्यां साम्हीं घूम जावतो, उणरी टाबरां जिसी चंचळता, भोळी मुळकाण घड़ी-घड़ी याद आवती ही उणनैं। बो भी मुकलावै सूं पैलां अेकर उणसूं मिलणो चावतो हो। जाणतो हो कै अेकर जे बा सासरै परी गई तो पछै जाणै कद मिलणो होवैला, पण जानकी नैं दीधा वचन रै कारण बो मजबूर हो।

अेक दिन अचाणचक उणनैं आपरै पर्स मांय सिणगार रै सामान री बा परची मिली, जो भोत पैली सुरजी आपरै मुकलावै सारू बणवायी ही। साज-सिणगार री सौकीन सुरजी काकियां-भाभियां अर सहेल्यां नैं पूछ-पूछ'र अेक हफ्तै तक लिस्ट अपडेट करावती रैयी ही।

उण दिन आखातीज ही। सुरजी रै मुकलावै री तय तिथि। विनोद सोच्यो कै औ सगळो सामान गांव में तो मिलै नीं अर स्हैर सूं उणनैं कुण जाय'र देवैला! बो तुरंत मणियारी दुकान माथै गयो अर सगळो सामान खरीद'र गांव रै वास्तै रवाना व्हैग्यो। उण सोच्यो कै जे जानकी काकी इजाजत देवेला तो सुरजी सूं मिल लेसूं, नींतर औ सगळो सामान काकी नैं सूंप'र पाछो आय जासूं। पण उणनैं आगै जको दरदनाक दरसाव देखण नै मिल्यो, उणरी तो उण सुपनै मांय ई कल्पना नीं करी ही।

बगत सूं पैलां बूढो व्है चुक्यो जानकी रो डील निरजीव खाटली माथै पड़्यो हो अर सुरजी भाटै री मूरत बण्योड़ी पथराई आंख्यां सूं उणनैं देखै ही। लोगां सूं ठाह पड़ी, मुकलावा वास्तै आवती गाड़ी दुरघटणाग्रस्त व्हैगी अर उणमें सवार सुरजी रै धणी री मौकै माथै ई मौत व्हैगी। खबर मिलतां ई सदमा सूं जानकी भी संसार छोडगी अर सुरजी उण बगत सूं ई मूरत बणी बैठी ही।

इण घटना रै पछै स्यात सुरजी वैंडी व्है जावती, जे विनोद नीं व्हैतो। बो सगळो काम छोड'र उण बगत उणरै साथै रैयो, जद तांई कै बा सदमै सूं नीं उबरगी। बा नीं खावती तो आपरै हाथां सूं खिलावतो। नींद नीं आवती तो थपक्या देय'र सुवाणतो। रोवती तो टाबरां री भांत हंसी-ठिठोळी कर'र हंसावतो।

समै रै साथै सुरजी संभळ तो गई पण उणरी हंसी, चंचळता अर मस्तमौलापणो साव बिलायग्यो। विनोद डाक्टर हो। बो जाणतो हो कै अबार सुरजी नैं फगत प्रेम अर अपणायत री

जरूरत ही। पण पैलां सूं ई उणां दोनुवां रै मेळजोळ नैं गलत निजरां सूं देखण वाळा अबै कानाफूसी री ठौड़ खुल'र आडा-डोढा बोल बोलण लागग्या हा। विनोद तो स्हैरी छोरो हो। अेक कान सूं सुण दूजै कान निकाळ देंवतो, पण सुरजी रै स्त्रीमन नैं उण टीका-टिपण्यां सूं पीड़ व्हैती ही अर अेक दिन मन रो दरद आंसुवां रै लारै फूट पड़्यो :

''सुरजी, जरूरी नीं है कै हरेक रिस्ता रो कोई नांव व्है, कीं रिस्तो अैड़ा भी व्है जो उमर भर बेनाम ईज रैवै अर निभता जावै।''

''अैड़ा बेनांव रिस्ता थांरै स्हैर में व्हैता व्हैला डाक्टर, म्हारै गांवां में तो छोरा-छोरी रै बिचाळै फगत नांव रा रिस्ता व्है है।''

अचाणचक दो-चार गांववाळा साथै सुरजी रो काको बठै आ पूग्यो अर आवतां ई बोल्यो, ''बाप-बेटी, काका-भतीजी, मामा-भाणजी, भाई-बैन, धणी-लुगाई या पछै रसियो-छिना...।''

''बस करो काका, जरा तो लाज राखो, बेटी रै बरोबर हूं थांरी।'' सुरजी तड़प'र बात काट दी, उणरो काळजो किरच-किरच व्हैग्यो हो। उणसूं पैलां कै कोई दूजो कीं और कैवतो, बा विनोद सूं मुखातिब व्है'र भरच्या कंठां सूं बोली, ''डाक्टर साब, साची तो कैय रैयो है काको, हरेक रिस्ता रो अेक नांव हुवै है बै अेक-दूजै रा सुख-दुख रा साथी व्है है। जद आपां रै बिचाळै नांव देवणजोग कोई रिस्तो ई नीं है तो क्यूं आप आपरो कामधंधो अर टेम खोटी कर'र म्हारै दुख रा बेली बण'र बैठ्या हो?''

''नांव रो रिस्तो तो श्रीकृष्ण अर पांचाली रो भी नीं हो, फेर भी कृष्ण उमर भर पांचाली रै दुख रा बेली बण्या रैया हा।'' विनोद कैयो तो सुरजी रै काकै रो छोरो बोल्यो, ''न तो थूं कृष्ण है डाक्टर, न आ पांचाली अर ना ई औ महाभारत वाळो जुग है। थां दोनुवां री भलाई इणमें ईज है कै अबै थूं अठै सूं चालतो बण! म्हे सगळा अबार तक फगत प्रधानजी रो लिहाज राख'र चुप बैठ्या हा। पण अबै पाणी माथै सूं ऊंचो आवण लाग्यो है। नाक रै हेठै औ पापाचार अबै और सैण नीं करांला।''

''म्हैं...।'' विनोद कीं कैवण लाग्यो, पण सुरजी उणरी बात काट'र बीच में ई बोल पड़ी, ''...म्हैं विणती करूं हूं डाक्टर साब, भगवान रै वास्तै म्हनैं म्हारा हाल माथै छोड द्यो अर जावो अठै सूं, अबै ओजूं फजीतो मत करवावो।'' उणरो रोज फूटग्यो।

विनोद नैं लाग्यो, अबार समझदारी इणमें ईज है कै चल्यो जावणो चाईजै। तो बो सुरजी रै कनै जाय'र बोल्यो, ''ठीक है सुरजी, म्हैं अबार जाय रैयो हूं तो सिरफ इण वास्तै कै अबै थूं आपरी देखभाळ खुद कर सकै है। म्हैं बेगो ई पाछो आवूंला, पण जे इण बिचाळै कदैई भी थनैं म्हारी जरूरत मैसूस व्है तो भूवा रै साथै म्हारै तांई संदेसो पूगा दीजै या पछै आपणै रिस्तै नैं जो भी नांव देय'र जद चावै बिना हिचक म्हारै बठै आय जाईजै, म्हारै घर रो दरवाजो सातूं दिन अर चौबीसूं घड़ी थारै वास्तै खुलो मिलैला।'' कैवा रै साथै ई बो आपरो बैग उठा'र रवाना व्हैग्यो, पण स्हैर जावण सूं पैली आपरी भूवा रै कनै जानकी री जग्यां सुरजी री नौकरी पक्की करवायग्यो ताकै उणरो गुजारो व्है सकै।

विनोद रै गयां रै दो-तीन दिन पछै ई सुरजी हेली में काम करवा लागगी। हालांकै बा जाणती ही कै रविकांत री नियत में उणनैं लेय'र खोट है। जानकी जीवती ही उणां दिनां में भी केई बार बो सुरजी नैं बहकावा-फुसळावा री आफळ करी ही, पण पापी पेट वास्तै काम करणो भी जरूरी हो। दूजी कानी उणरै सारू अेक सुखद अचंभो औ हो कै काका रो परिवार जको पैलां उणनैं कोड्यां रै भाव भी नीं गिणतो हो, आजकाल उण माथै खूब लाड उंडेल रैयो हो। उणनैं लाग्यो, स्यात बिना मायतां री अनाथ छोरी वास्तै उणां रै मन में दया पैदा व्हैगी ही।

बा काळी चवदस री रात ही। आज काम खतम व्हैतां-व्हैतां थोड़ो मोड़ो व्हैग्यो हो। रसोड़ादार भूरी काकी अर बरतण-बासण करण वाळो रामू दादो, दोनूं घंटा भर पैली निकळग्या हा। बै दोनूं रोज हेली सूं घर तांई उणरै लारै रैवता हा, पण आज बा अेकली ई घरै बावड़ै ही कै गेलै में रविकांत मिलग्यो। बो थोड़ी देर तो उणनैं बरगळावा रौ जतन करतो रैयो, फेर दाळ गळती नीं दिखी तो जोर-जबराई माथै उतर आयो। बडी मुस्कल सूं बा बच'र भाग तो निकळी, पण आपरै घरै जावतां डरपणी लाग रैयी ही, इण वास्तै काकै रै घरै जाय पूगी। दरवाजो खड़कावा लागी ई ही कै अचाणचक हाथ ठाम रा व्हैग्या। मांयनै सूं जो बात कानै पड़ी, उणरै पगां नीचली जमीं सिरकगी। काको-काकी अेक दलाल सूं उणरो सौदो कर रैया हा। आज रात रा ईज उणनैं घर सूं उठावण री योजना बणाय राखी ही उणां।

''सुबै गांववाळा हेरैला तो?'' बेटै पूछ्यो तो काकी बोली, ''औ थे म्हारै माथै छोड दो। डाक्टर सूं उणरी मासूकी आखो गांव जाणै है। कैय देवूं कै रातै आयो हो डाक्टर, न्हाठगी व्हैला उणरै सागै।''

छिण भर रै वास्तै हकबक-सी हालत आयगी। समझ नीं आयो कै कांई करै? आगै कूवो अर लारै खाडो वाळी हालत ही। अेक कानी रविकांत उणरी आबरू रै लारै पड़्योड़ो हो अर दूजी कानी काको-काकी। आज समझ में आयो कै अेकाअेक काको-काकी क्यूं उण माथै हेत उंडेलवा लाग्या हा, बस उणरो भरोसो ई जीतणो हो उणां नैं।

अेकर तो उणरो जीव कीधो कै बाको फाड़'र रोवा ढूकै, पण दूजै ई छिण उण आपरी सगळी हिम्मत बटोरी अर सैकंड रा सौवां भाग में अेक द्रिढ निरणै लेंवती झटपट घरै गई। कीं जरूरी सामान थैलै मांय न्हाख्यो अर आगतै-आगतै पगां टेसण कानी बधगी। रेल आवण वाळी ही। इंजन री सीटी सूं उणरो ध्यान टूट्यो। रेल स्हैर रै टेसण पूगगी ही। टेसण सूं बारणै आय'र रिक्सो पकड़्यो अर रिक्सावाळां नैं विनोद रै घर रै पतै री परची पकड़ाय दी।

रिक्सै में बैठी-बैठी बा सोचती रैयी कै जावतां ई कैय देवूंला, ''आप कैयो हो नीं डाक्टर साब, कै कोई मिली नीं है अबार तांई म्हारै जिसी अर म्हनैं ई हेरणी है। अबै म्हारै जिसी म्हैं दूजी कठै सूं हेरती, इण वास्तै म्हैं ईज आयगी हूं, सगळो छोड-छाड'र हमेस रै वास्तै। आप कैयो हो कै आपणै रिस्तै नैं जो चावै नांव देय'र जद चावै बिना हिचक आय जाईजै। पण रिस्तै नैं नांव देवणो म्हैं अणपढ गंवार कांई जाणूं! बस, आयगी हूं आपरै भरोसै, अबै आप चावो जो नांव देय दो इण रिस्तै नैं।''

लगाबगा रात री इग्यारै बज्यां सुरजी विनोद रै घर रो दरवाजो खड़कायो। दरवाजो विनोद ईज खोल्यो अर उणनैं देखतां ई अचुंभै सूं बोल्यो, ''थूं अठै, अबार, इण बगत?''

सुरजी कोई जबाब दियां बिना ई उणरी छाती सूं लाग'र फूट-फूट'र रोवा लागगी। रोवतां-रोवतां ईज उण रविकांत री करतूत अर काका-काकी री नीयत रै बारै में सो-कीं बताय दियो। पण बा और कांई कैवती, इण सूं पैलां ई मायलै कमरै सूं कोई स्त्री-सुर सुणीज्यो :

''कौन है वीनू?''

''सुरजी है निक्कू।'' विनोद बोल्यो तो मांयनै अचुंभै अर हरख रो मिल्यो-जुल्यो सुर फूट्यो, ''सुरजी! ओह माय गोड! तुम्हारी बिशनपुर वाली फ्रेंड! बहुत सुना है तुम्हारे मुंह से इसके बारे में। आज देखती हूं, क्या है इसमें ऐसा कि दिन में एक बार नाम न लो तो खाना नहीं पचता तुम्हारा।'' कैवण रै सागै ई अेक रूपाळो जनानो डील कमरै रा दरवाजा माथै प्रगट व्हियो।

सुरजी अबार तांई विनोद सूं अळगी व्है चुकी ही। विनोद उणरै कांधां माथै हाथ राख'र बोल्यो, ''देख लो निक्कू, ये है माय डियरेस्ट फ्रेंड सुरजी।''

फेर सुरजी सूं मुखातिब व्हैतो बोल्यो, ''अर सुरजी, इणसूं मिलो, आ है डाक्टर निकिता, माय लवली फिऑन्से, म्हारो मतलब है म्हारी मंगेतर।''

सुरजी री आंख्यां फाटी री फाटी रैयगी। कानां में विनोद रा पैली कैया सबद गूंजण लाग्या, ''सुरजी, कीं रिस्ता अैड़ा भी व्है जका उमर भर बेनांव ई रैवै...''

◆◆

तसनीम खान

सलाम, भोळा सैयद!

जद मारवाड़ रा सगळा ठिकाणां ई रियासत जियां ईज चालता हा। रजवाड़ां सूं बत्ती हाजरी तो अठै ठाकरां नैं ईज मिल जावती। ठाकर रो आपरो दरबार होवतो। हवेली ई महल सूं बत्ती होवती। हवेली माथै चाकरी करता लोग भी घणा सोरा-सुखी दीखता। मारवाड़ रा ई ठिकाणां रो दरबार माथै ई कित्ता ई गांवां री बस्तियां चालै ही। इण दरबार माथै घणा ई सेवक हुया करता। सेवकां में भी बडा ओहदां पर सैयदां रो घणो रुतबो रैया करतो। चपरासी सैयद, दरबान सैयत, खानसामा रै सागै मदद करबा आळो सैयद। ठाकर रै ओळै-दोळै चालबा आळो सैयद। ठाकर रै इसारै पर काम करता सैयद। ठाकर रै दरबार री चौकसी करता सैयद। घणा ई सैयत हा अठै। ठाकर हाकमां री भी सैयदां सूं कीं घणी ई पटरी बैठबो करती। इयां मानल्यो कै नरम दिल ठाकर हुकम री किरपा आं पर घणी बरसबो करती। कुणसी भी परेसानी आ जावै, मोकळी मुसीबत आ पड़ै, ठाकर हुकम तुरत-फुरत सूं आपणै दरबार रा मुलाजिमां री मदद कर देवै। इयां कोनी कै सैयदां पर ई सगळी किरपा बरसबो करती। सगळा दरबार ई ठाकर हुकम रै हाथ रो छाळो जियां हो, पण सैयदां रा भोळपण पर बै खास मैरबान हा।

तो हुयो इयां कै ठाकर हुकम अेक दिन सूरज ऊगतां-ऊगतां ई दरबार लगा लियो। अठै सगळा दरबारयां रै सागै दीवान भी बैठ्यो हो। ठाकर हुकम दरबारियां रै साम्हीं आपरै लांबै-चौड़ै पसर्‌योड़ै ठिकाणै मांय दो-चारेक गांव बख्सीस में देबा पर विचार करबा रो प्रस्ताव राख दियो। दरबार में बैठ्या सगळा जणा हैरत में पड़ग्या, कै ठाकर हुकम रै आ कांई जची ? पण सगळा औ भी जाणता हा कै ठाकर हुकम पैली भी इसी बख्सीस प्रजा नैं देय मेली ही। चिंता या ही कै इयां तो ठाकर हुकम सगळा ठिकाणा ई लुटा दैसी। पण कोई कांई कर सकै हो, ठाकर हुकम रै साम्हीं। धणी रो धणी कुण ?

दीवान मुळकता-मुळकता ठाकर हुकम रै साम्हीं आपरी मुंडकी हिलाय दी। पण काळजै मांय घणी बळत लागी, जाणै सगळो ठिकाणो उणां री ई जागीर हुवै। आ बात और ही कै काळजै माथै मण भर भाटो मेल'र बांरो मुळकणो जारी रैयो। जाणै जलमतां ई बै हंसता-मुळकता ई आया हा।

डी-156, ड्राईडन पब्लिक स्कूल रै कनै, हसनपुरा-ए, जयपुर 302006 मो. 9928036141

 ISSN : 2320-0995

खैर मरबा द्यो, आपणो कांई ! कहाणी रै बिचाळै म्हैं आ बात निगळगी ही, तो बता द्यूं कै बो तकियो कलाम है, जिको बरसां सूं नीं, सदियां सूं ई मारवाड़ री हर जुबान पर है। सगळी बसती, गांव, स्हैर री बातां, पंचायती कर, लोगबाग हथायां पर सूं उठती टैम, यो ईज कैवता उठ्या करै है कै 'मरबा द्यो आपणो कांई है।'

तो दीवान भी आपरो काळजो यो ईज सोच'र ठंडो कर्‌यो।

मुळकता दीवान नें ठाकर हुकम, हुकम कर्‌यो कै बेगी-सी दो-चार गांव बख्सीस करण रो मसौदो त्यार कर न्हाखो। आपरै इण हुकम रै बाद ठाकर री पीठ और सीधी हो मेली। आपरी चांदी रै पागां री कुरसी भी सिंघासण सूं कम नीं लागी। बां पर बै तण'र बैठ्या। दरबारियां री वाहवाही गूंजबो करी। तणियोड़ी पीठ अर गरदन सूं वाह-वाही लेंवता ठाकर हुकम री दीठ सिंघासण जियां लागरी कुरसी हाथ जोड़्यां ऊभै लांबै-डीगै सै सैयद पर पड़गी।

सैयत आपरी हाथ पर लांबी पीठ नैं झुकावतो दोलड़ो होय'र खड़ो हो। बित्तो ई हाथ पर लंबो मुळकतो चौखटो देख'र ठाकर हुकम रो काळजो जाणै ठंडो पड़्यो। साफो बांध्योड़ो सैयद दोनूं हाथां नैं जोड़'र इयां ऊभो हो कै ठाकर हुकम नैं आपरी शान और ऊंची होवती लागी। आपरी इत्ती इज्जत देख'र ठाकर हुकम रो मन झूम उठ्यो।

इयां भी ठिकणै में ठाकर हुकम री किरपा दीठ पड़ै जठै ई 'जेठ सूं सावण होय जाया करै', 'धोरां में भी पाणी रा सोता उमड़ पड़ै है।' तो अठै भी ठाकर हुकम सैयद पर आपरी किरपा-दीठ डाल चुक्या हा। अब सैयद री तकदीरी बदळतां नैं कोई नीं रोक सकै।

ठाकर हुकम दीवान नैं कनै बुलाय'र कैयो, ''इण सैयद सूं पूछलो कै कुणसो गांव कै स्हैर चावै है। इणरै पूरै कुनबै अर बस्ती नैं म्हैं अेक स्हैर बख्सणो चावूं हूं।''

यो सुणतां ई दीवान रो बळ्योड़ो काळजो औरूं राख हुयग्यो। पण मुळकता सो आपरी घांटकी हिलावतो बगल में बहीखातो दाब्यां हुकम री तामीर तांई दरबार सूं हाजरी देय'र निकळग्यो। ठाकर हुकम रा इशारा पर सैयद आपरी दोलड़ी देह लियां दीवान रै लारै चल्यो गयो। सगळा दरबारी जयकारो करबा लाग्या। जित्ता भी सैयत उठै ऊभा हा, सगळां री आवाज सबसूं ऊंची आवती रैयी। अब इण ठिकाणा मांय सैयदां रो आपरो स्हैर होसी, या सोच-सोच'र ई दरबार में ऊभा सैयद घणी देर जयकारा करता रैया। बाकी रो काळजियो बळतो रैयो।

अठै देखो जणां दीवान सैयद रै सागै फंसग्यो। जठै जावै, बठै ई सैयद सागै हाजर। बो हवेली री दीवान कोठरी रा सगळा कागज उठावै, बिठावै अर सैयद नैं देख'र आपरो काळजो ठंडो करण री आफळ ई करै, पण कांई करै? मुळकतो सैयद लारो नीं छोड रैयो हो।

''आं सैयदां रो स्हैर तो म्हैं कदैई नीं बणण द्यूं।'' दीवान मन ई मन विचार कर्‌यो।

घणा दिनां तांई इयां ई चालतो रैयो। सूरज ऊगतां ई सैयद दीवान रै कनै आय'र बैठ जावतो अर दीवान झूठी ई कागजां में सिर खपातो रैवतो। सैयद हाथ जोड़्यां आपरै स्हैर रो नक्सो अर पट्टो मिलबा नै उडीकतो रैवतो।

घणा दिनां तांई जद दीवान बांनै घुमावतो ई रैयो हो थक-हार'र सैयद हाथ जोड़्यां फेरूं ठाकर हुकम री हाजरी में जा खड़्यो हुयो। सैयद रो मूंडो लटक्योड़ो देख'र ठाकर हुकम पूछ लियो, ''कांई हुयो सैयद, हाल तांई तूं आपरो स्हैर कोनी बसायो?''

लटकतै मूंडै सैयद कैयो, ''रैबा द्यो हुकम, दीवानजी परेसान हो रैया है, म्हैं तो आपरी हाजरी माथै ई ऊभो ठीक हूं अर म्हारो बो कुनबो सैयदां री बस्ती में ईज ठीक है।''

ठाकर हुकम समझग्या। बै अेक दरबारी नैं भेज'र दीवानजी नैं बुलवाया।

बगल में बही दबायां दोलड़ा होवता दीवान ठाकुर हुकम रै साम्हीं हाजरी दी।

''कांई दीवानजी, सैयद रै स्हैर रो कांई हुयो। हाल तांई थे कागज कोनी दिया?''

''बस हुकम, कागज त्यार होयग्या। म्हैं सोचै हो कै सैयद री पसंद रो स्हैर ई बख्सणो चाईजै। इण खातर टेम लागग्यो।''

दीवान री बात सुण'र ठाकुर हुकम भी राजी अर सैयद भी राजी। पण दीवान रै मन री बात कोई जाण नीं पा रैयो हो। बठै तो और ई कीं चालै हो। जो भी हुवो, सैयद फेर दीवान रै लारै फिरतो रैयो। अब तो दीवान पक्को कागज लेय'र बैठग्यो। सैयद फेर मुळकणो चालू होयग्यो। सैयद री मुळक दीवान माथै बीजळी री गाज सूं कम नीं ही। दीवान आपरै साम्हीं सैयद नैं बिठाय'र पूछ्यो, ''बता, तनैं डीडवाणो गांव चाईजै कै शिमला स्हैर?''

स्हैर रो नांव सुणतां ई सैयद री आंख्यां मांय चमक बापरगी। पण बो दीवान साम्हीं दिखावो करतो केई ताळ सोचतो रैयो। बिचाळै दीवान फेरूं पूछ्यो, ''डीडवाणो गांव कै शिमला स्हैर?''

अब सैयद रो मगज चालबा लाग्यो। बो अंग्रेजां रै बसायोड़ै स्हैर शिमला रै बारै में सुण राख्यो हो। ठाकर हुकम घणी बार कैयो भी है गरम्यां तो शिमला री ई चोखी। बो सोच्यो, डीडवाणो तो घणी पीढ्यां सूं रैय लिया। ठाकर रो हुकम बजा लियो, बडो स्हैर हासल करण रो मौको चूकणो नीं चाईजै। फेर कुनबा में नांव ई होसी कै ठाकर री बख्सीस म्हारै खातर मिल सकी अर स्हैर रो नांव भी फेर सैयदां रै नांव सूं चमकसी। सैयइद स्हैर रा खयालां में इत्तो खोयो कै दीवान नैं झिंझोड़णो पड़्यो।

बस, पछै कांई, सैयद घणो सोच-विचार कर'र शिमला स्हैर सैयदां रै नांव करबा रो कैय दियो। दीवान रै साम्हीं हाथ जोड़'र बो बैठो रैयो। सगळा कागज-पत्र त्यार कर'र दीवान सैयद सूं दस्तखत करवा लिया अर शिमला रो नक्सो अर ठाकर साब कानी सूं पूरी सैयदां री कौम नैं बख्सीस रो कागद सैयद रै हाथां संभळा दियो।

अबै इण ठिकाणै रै डीडवाणा गांव में सैयदां री बस्ती में घणो ई जसन मनाईज्यो। कड़ाव चढ्या, घणा बकरा हलाल हुया। पूरी बस्ती सागै बैठ खायो अर आपरो अलग स्हैर होवण पर छाती घणी चौड़ी करी। सगळी बस्ती में शुकराना रा नफील पढीज्या।

दूजै दिन सूरज ऊगतां ई दीवान सा बस्ती माथै पूगग्या। बस्ती में अैलान कर्‌यो कै सैयदां नैं ठाकर हुकम शिमला बख्सीस में दियो है। बस्ती में अेकर फेरूं खुसी री लैर दौड़गी। बस्ती वाळा आपरो सामान बांधबा लागग्या।

सैयद साब शिमला रो नक्सो लेय'र घणै गुमेज सूं आपरै बेटा साम्हीं कर दियो। जयपुर री कॉलेज में पढ आयो बांरो बेटो नक्सै नैं घुमा-घुमा'र देख्यो। घणो सोच्यो, बिचार्‌यो। घर में पड़्या सगळा कागज-पत्र खंगाळ लिया। आखतो होय'र बाप नैं कैयो, ''अब्बाजी, थे तो गलत स्हैर बख्सवा लियो।''

सैयद साब रो मूंडो उतरग्यो।

''यो कियां हो सकै, दीवान कैयो कै शिमला स्हैर है, जणां ई तो म्हैं हांमी भरी ही।''

''पण यो शिमला स्हैर कोनी, आपणै डीडवाणै सूं 50 कोस दूर रो ठेठ ढाणी रो गांव है यो तो। शिमला ढाणी।''

''यो कांई कैवै है तूं। बावळो होयग्यो के?''

''अब्बाजी, बावळो म्हैं कोनी, बो दीवान थांनै बावळा बणा दिया। यो देखो नक्सो, डीडवाणै सूं यो रास्तो जाय रैयो लाडणूं अर फेर यो देखो अठै शिमला। जो म्हांकी बस्ती नैं बख्सीस कराय लाया आप।''

सैयद साब माथो पकड़'र बैठग्या।

''यो दीवान मूरख बणा दियो। म्हनैं तो कैयो कै शिमला स्हैर लेसी कै डीडवाणो गांव। म्हैं बापड़ो कांई जाणूं कै शिमला गांव री बात होयरी है।''

''अरे गांव होवतो तो ई कीं कोनी, बा तो खोड़ री ढाणी है। आपणी बस्ती में कच्चा-पक्का मकान तो है, अेक स्कूल भी है, पण बठै तो धूड़ उडण रै सिवाय कीं नीं है। गरमी इत्ती पड़ी कै रेत ई नीं, लोगां रा कंठ ई सूखा पड़्या रैवै। पाणी तो कोस-कोस तक कोनी।''

सैयद आपो खो दियो।

''देयदै अै कागज पाछा म्हनैं, दीवान रै मूंडै पर फेंक'र आवूं। म्हारै सागै इत्तो बडो धोखो?'' सिर पकड़्यां-पकड़्यां सैयद चौंतरी पर ई बैठग्या।

''म्हैं तो समझ्यो कै पीढ्यां सूं ठाकर हुकम री हाजरी बजा रैया हां, तो कोई इनाम तो मिल्यो म्हारी सगळी कौम नैं। आ तो शर्मिंदगी री बात होयगी। मूंडो दिखाबा लायक भी नीं छोड्यो इण दीवान तो।''

''अब्बाजी, अब कीं नीं हो सकै। थांका दस्तखत है कागजां पर। ठाकर साब नैं कैस्यो तो बै तो यो ही कैसी नीं कै थे ईज मांग्यो हो, सो दीवान आपनै देय दियो। थे कुणसै मुंह सूं ठाकर हुकम आगै सिकायत करस्यो?''

पूरी बस्ती में बात फैलवा लागी तो लोगबागां रो सारो भरम उतरग्यो। आपरो सामान बांध बैठ्या लोग पाछा राखबा में लागग्या। शिमला जाण कै सट्टै लोग आपरा ढोर-डांगर भी छोड दिया, तो अब घर रा टाबर बांनै ढूंढबा नैं चरगाह री ओर चाल दिया।

सैयदां री बस्ती खाली होवण री बजाय फेर आपरै काम में लागगी। पण सैयद साब दिन-रात दीवान नैं गाळ्यां काढ्यां बिना पाणी नीं पीवता।

सैयद साब आपरै चौंतरै पर बैठा होवता तो लोग बांनै 'सलाम, भोळा सैयद!' कैय'र निकळ जावता। अब लोगां नैं यो कुण कैवै कै 'भोळो' सबद सैयद साब रो काळजो बाळै है। यो सुण'र भोळा सैयद री देह दोलड़ी हुयां जावै ही, जियां कै ठाकुर हुकम रै कनै खड़्यां-खड़्यां हुया करती ही।

◆◆

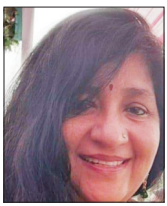

प्रेम शर्मा

डकार

सुखदेव अेक सरकारी स्कूल रो मास्टर है। औस्था में नीं मोट्यार गिणीजै अर नीं बडेरो ई। कोई पैंताळीस बरस री उमर पार करतां थकां काया नैं आछी तरै सांभ जरूर राखी है। स्कूल मास्टर रै रूप में बो आसै-पासै रा गांवां अर हलकै री मिनख-बिरादरी बिचाळै आपरी आछी इज्जत कमा राखी है। पण सगळां री निजरां में आपरै सुभाव लेखै इत्तो सूधो, जाणै रामजी री गाय। अेकरसी तो गाय ई लात या सींग मार दै तो ई सुखदेव चूं ई कोनी करै। सनेव रो सागर। औ इत्तो सीधो जीव है, इण रो अेक ही कारण है अर बा है सुखदेव री मां। उण बापड़ी आपरी जीयाजूण में घणा ई दुख झेल्या, धणी री मार खाय-खाय'र इण पूत नैं पाळ-पोस इत्तो बडो अवस कर लियो कै उणनैं देख बाप नैं ई कीं संको पड़ग्यो। मां री आछी सीख उणरै काळजै कीं इण भांत धंसी रैयी कै उण खुद आपरी घरवाळी सूं आज दिन तांई कदैई ऊंची आवाज में बात नीं करी। तीन टाबर-टींगर होयग्या। बहू अर सासू मांय घणी घुट्टै। सुखदेव री मां खुद रै पूत नैं फटकार देसी, पण बहू नैं काळजै सूं लगाय'र राखै।

आ साची बात है कै जिण घर मांय लुगायां बिचाळै अेको होवै, मिनख मत्तैई रामजी री गाय बण जावै। पण इण सीधै-सादै सुखदेव री पण अेक ई दूखती रग है—लुगायां। आंख्यां रै साम्हीं हरेक लुगाई नैं बैनजी, बाईसा बोलण री मजबूरी तांई बंध्योड़ो है, सेवट तो रामजी री गाय गिणीजै बडभागी।

यूं ऊपरवाळो सगळां रो कोई न कोई सतूनो अवस कर ई देवै। सुखदेव रो मोबाइल, जिकै उणरै सपनां खातर पांख्यां रो काम कर राख्यो हौ, उण मोबाइल रै बूतै उण केई सारी लुगायां सूं आछी सांठगांठ कर राखी ही। दिनूगै-दिनूगै भोळै भंडारी नैं पूजण सारू जावै जद ई मिंदर रै बारणै चबूतरा माथै पूठ टिकाय'र बैठ जावै अर लाग जावै हिवड़ै नैं उछाळण में—ब्यूटीफुल, पटाखा, पप्पियां री इमोजी, डियर फ्रेंड, सगळी लुगायां नैं, कोई बैनजी अर कोई भाभीजी!

सगळा कांड नीका चाल रैया हा। हिवड़ै मांय दब्योड़ा सगळा कीड़ा ई मोबाइल मांय डंक मारता। आछी भली गाड़ी गुड़कती जावै ही कै अेक दिन भूचाळ आयग्यो जीवण मांय। प्रवेश होयग्यो अेक औरूं टूनटुनै रो। अबकाळै राखी माथै सुखदेव रो साळो आपरी बैन सारू श्रीजी मोबाइल ले आयौ। साळां रै हाथां नैं तो औ जस मिल्योड़ो ई है काम बिगाड़ण रो।

346, कला हनुमान मिंदर रै लारै, चांदी री टकसाळ, जयपुर 302002 *मो. 8239939736*

 ISSN : 2320-0995

टाबर-टींगर पण उंतावळा घणा हुवै इसै सुखी जीव रा। बडो बेटो हनी नांव रो ई शहद है, बापखणी रो इत्तो तेज कै जाणै ततैयो मिरची। अपटूडेट कर दियो पूरो मोबाईल। मां रो खोल दियो अेफबी मांय अकाउंट अर सरू होयग्यो बापड़ै सुखदेव रो उल्टो बगत।

घरवाळी सारू फोन इण भांत रो होयग्यो जाणै पांचसौ रा नोटां री गड्डी। चोळी मांय हर बगत खास हिफाजत सूं सांभ'र राखै फोन नैं।

बापड़ो सुखदेव घर सूं बारै जद भी होवै, अेफबी खोल-खोल'र देखतो रैवै। उणरी धिराणी कोई बगत ई देखौ, ऑनलाइन ई दीखै। रीना, मीना, संगीता किणी माथै दीदा कोनी लागै। इमोजी रो मामलो ई ठप्प पड़ग्यो। घर सूं नीसरतां अर घुसतां पूरी निजर घरवाळी अर उणरै मोबाइल माथै। घरवाळी खाणो बणावती, बुहारी काढती, सिंझ्या पड़ी या दिनूगै, उणरो मोबाइल बाजतो ई रैवै। सनेसां री आवाजां इण भांत लगा राखी है कै जाणै पाणी री बूंदां टपकै—टप टप अर सुखदेव रै काळजै मांय खाटो पाणी बणतो रैवै। उणरी हालत तो इण भांत री हुयगी, जाणै आगै नाथ अर पाछै जेवड़ो। अेक ई तो लुगाई ही अर वा ई अेफबी मांय घुसगी, अबै किणनैं कैवै आपरै हिवड़ै रो हाल।

मां भी तो सासू कोनी बणी ढंग सूं, उणनैं तो सगळा मिनख रावण सरीखा दीखै अर सगळी लुगायां मांय सीता।

सुखदेव घरवाळी रो फोन उठाय'र छाणबीण भी कोनी कर सकै। थोड़ा दिनां पैली री बातां ध्यान में आ जावै, किण भांत बा पाड़ोस्यां रा लड़ाई-झगड़ां में उचक उचक'र छलांग लगाया करती ही। मोबाइल री बात माथै ई धणी-लुगाई में राड़ छिड़ी ही। खूब डींग हांकी जद तो, ''म्हैं तो म्हारी लुगाई माथै दर ई बैम नीं करूं, आज दिन तांई घरवाळी रै फोन रै हाथ तकात कोनी लगायो।''

पाड़ोसी कुणसो कमती हो, ''हां भाईजी, थांरी घरवाळी संस्कारी है, नोकियो फोन राखै, कांई करसौ बीं नैं खंगाळ'र?''

अब अेक ई उपाय बचग्यो हो उणरै कनै—ग्यान बांटण रो। सिंझ्या पड़्यां आज जद घरवाळी रो फोन बाज्यो, चोळी मांय सूं फोन निकाळ'र देखतां ई हंसी नाचगी बीं रै मूंडै पर। सुखदेव री तो हालत पस्त, कुणसै सुखदेव रो सनेसो आयो हुसी अर सुर फूट ई गयो मूंडै सूं :

''अरे सुणै है नीं, हनी री मां, इण मोबाइल नैं छाती सूं इत्तो चिपकाय'र मत राख्या कर, हानिकारक किरणां री खाण है औ टंडीरो, कैंसर हो जावै।''

''थांनै तो हार्ट-अटैक कोनी आयो इत्ता साल होयग्या राखतां, बुशर्ट री जेब छाती ऊपर ही बण्योड़ी है, यूट्यूब चैनल बणावण वाळी हूं म्हैं, म्हारी रेसिपी रा, देखता जाया थे, कियां नांव रोसन करस्यूं।''

''अरे इत्तो आसान काम कोनी औ, घणा पापड़ बेलणा पड़ै।''

''थे नीका रैवो, थांनै तो लोई बणावणी ई कोनी आवै, थे तो सरकारी स्कूल में जाय'र कुरसी तोड़ो, म्हारै सूं माथा-पच्ची मत करो।''

बस इत्ती-सी फटकार घणी हुवै, सुखदेव रै मूंडै ताळो लागण सारू।

''परोस दूं थाली!''

''अरे ना रे भागवान, गैस बण रही है छाती मांय, पैली ई झाळ लाग रही है।''

''तो ईनो पी लेवो या मीठो सोडो फांक लेवो।''

''अरे ना, तूं तो थारो मोबाइल दे दे बस'', मन मांय ई बोल'र रैयग्यो सुखदेव।

हाल तांई तो पखवाड़ो ई पूरो कोनी हुयो अर सुखदेव रै सुख नैं ग्रहण लागग्यो। भूख-प्यास सगळी मरगी बीं री तो।

आज तो मां ई लताड़ पाय दी, ''कियां फतैया री मां सो थोबड़ो बणाय'र घूमै, बैदजी नैं दिखाय'र चूरण-चटणी क्यूं खावै नीं? डकार आवणी बौत जरूरी है रे भाया, जद ई भूख लागसी थनैं।''

''अरे मां, अेक दफै औ मोबाइल हाथ लाग जावै, पण आ म्हारी धिराणी गुसळखानै में ई साथै लेय'र जावै फोन नैं...।'' मनो-मन में ई बोल'र रैयग्यो बापड़ो सुखदेव।

आज तो सांप ई लोटग्या सीनै पर, खाटो पाणी कमती हो कांई, न्हावतां-न्हावतां गुसळखानै मांय सूं गाणै री आवाज बारै आवै ही :

''अब करूंगा तेरे साथ गंदी बात...'' पेट मांय घुड़घुड़ सरू हुयगी सुखदेव रे... ''अरे कांई गंदी बातां करणी बाकी रैयगी हालतांई, तीन टाबरां री मां!'' सुखदेव मन मसोस नै रैयग्यो।

औ मिनख रो निजरियो कुण समझ सकै, त्रिया चरित्र री बातां करणवाळां सारू पूरै जगत में अेक बस खुद री लुगाई टाबरां री मां हुवै, बाकी तो पटाखा अर खुद शाहरुख खान। पण आज सूधी दसा आय ई गयी सुखदेव री। स्कूल सूं आधी छुट्टी लेय'र बो घरां आयग्यो अर इत्तो छानै-मानै मांयनै घुस्यो, जाणै मिनकी घुसी हुवै। मिनख रो चोर उणरै वैवार मांय ई दीखण लाग जावै। घरवाळी डागळै पर कपड़ा सुखावण तांई गयोड़ी ही अर औ टुणटुणो पलंग माथै ई धरयोड़ो हो। सुखदेव झट फोन हाथ में लियो अर उणरी छाण-बीण सरू करी।

''अरे, कीं भी तो कोनी मिल रैयो'', खंगाळ खंगाळ'र फोन नैं आछी तरै देख लियो।

अठीनै तो लुगाई रो कमरै में घुसणो हुयो अर सुखदेव रै गळै सूं जोरदार डकार निकळी। बो पेट पर हाथ फेरतो बोल्यो, ''आज जाय'र कीं जी-सोरो हुयो है, आज तो दाळ-बाटी चूरमो खावण जोगी भूख जाग्रत हुई है!''

◆◆

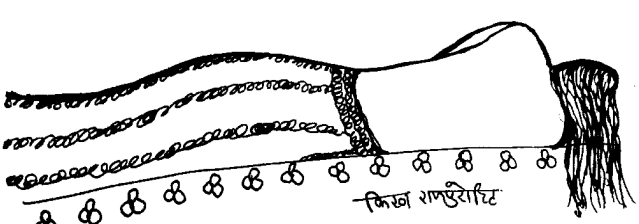

मंजू सारस्वत

साच होवतो सुपनो

छोटो सो'क अेक कमरियो, जिकै में घरेलू समान री अड़ा-भीड़। नैन्ही-सीक रसोवड़ी अर टूट्यो-फूट्यो आंगणो। औ ई रैवास रेंवती अर उणरै घर धणी मदन रो।

च्यार टाबरिया, जिणां में तीन टाबरां नैं ब्याव कर'र अेढै लगा दिया। अेक छोरो अजै कंवारो है, जिकै नैं बै चावै कै थोड़ो मोटो मकान बण जावै तो परणावै-पतावै।

बडोड़ो छोरो अर छोटोड़ी छोरी दादी-दादै कनै ई रैया। बांनै दादै-दादी ईज परणाया। पोतै री बीनणी अर दायजै पर बां ईज कब्जो कर्‌यो।

मदन रै पांच भाई अर दो बैनां। भाईड़ा आपरै मां-बापू नैं बातां में लेय'र सगळो हिस्सो-पांती हड़प लिया। उणरो बडोड़ो बेटो जिको दादै-दादी कनै रैवतो हो, उणनैं अेक रैवण लायक छोटोक मकानड़ो बणाय'र देयनै राजी कर्‌यो। बो बेटो भी अैड़ो निकम्मो निकळ्यो कै नौकरी लाग्यां पछै मां-बाप नैं कदैई भूल'र ई नी संभाळै।

मदन सुभाव रो तो दयालु, पण रीस आवै जणै इत्ती खारी कै रेंवती पर कळछ'र पड़ै। मूंडै में आवै ज्यूं बोल'र रोळा करै, पण रेंवती कांई ठाह किसी माटी री बण्योड़ी है। पाछी चेहरै पर दरद भरी मुळक लावती रैवै। कदैई भूल-चूक सूं ई सुर तीखा नीं हुवै। घर में कित्ती ई तंग-ताई चालो, बा तो जियां-तियां धाको धिका लेवै, पण किणी नैं लखाव नीं पड़ण देवै। रेंवती रै संतोष अर धीजै रो कांई कैवणो, आपरै मोट्यार या किणरै ई साम्हीं आपरै जीवण रो रोवणो नीं रोवै।

मदन दिनूगै री टेम चाय पीवतो-पीवतो अखबार में आयोड़ी खबरां बांचै हो। अेक खबर अैड़ी बांची कै मदन रा रूं खड़ा हुयग्या। अेक मिनख नैं उणरी लुगाई चाय में ज्हैर देय'र यमलोक पूगाय दियो, कारण कै उणरै आमद घणी नीं ही।

उणरी निजरां अखबार सूं हट'र विगत अर चाल रैया दिनां रै चीलां माथै रेलगाडी ज्यूं सिरकण लागी।

रेंवती मन रै आसै-पासै डोलण लागी। रेंवती, जिकरी आछै घर सूं पाळीज-पोसीज'र आई ही, उण सागै फेरा लेंवती बगत सात वचन दिया हा कै म्हैं तनैं सोरी-सुखी राखूलां, पण मन मुताबिक सोरी राख नीं सक्यो, कारण कै उणरा तकदीर सागै नीं हा। उणरै जाग्यां-जमीं बेचण रो काम, पण जद भी कोई आछी डील आवै उणसूं कूड़ो हेत राखणिया भायला बा पैली हथिया लेवै।

ट्रेक-ऑन कुरियर, वेद मार्केट, रानी बाजार, बीकानेर 334001 मो. 8619662544

उणरै हाथ पल्लै खुरचण ई नीं आवै। आखै टेम तोसो-मोसो कर'र घर चालै हो। आ तो रेंवती ई है जद टेमसर घर में खाणै-पीणै रो तोड़ो नीं पड़ण देवै। बा सिलाई रो काम करै। अड़ी-सड़ी, ब्यांव-सावा में कच्ची रसोई बणावण रो काम, जियां कै चावळ-दाळ, लापसी, रोटी साग आद-आद। ब्यांव सलट्यां पछै चोखा पईसा, नूंवा गाभा अर धपाऊ रो मीठो-चूंठो भी आवै। उणरै आछै-मधरै सुभाव रै कारण आगै सूं आगै रसोई री बुकिंग आवती रैवै। इत्ती मैणत करत्यां पछै भी उणरै चेहरै पर कदैई रीस रो नांव-निसाण ई नीं रैवै। हरमेस मुळक रो गैणो पैरत्यो राखै।

मदन नैं याद आवै—अेकर जमीं री कोई आछी डील उणरै हाथ में आवण आळी ही, पण भाग अैड़ो धोखौ दियो कै बीं दिन उणरो भयंकर एक्सीडेंट हुयग्यो। भगवान री किरपा सूं बच तो गयो, पण पग फेक्चर हुयग्यो। तीन-चार महीनां तांई ऊभो तकात नीं हुय सक्यो। कित्ता-कित्ता अपरेसन हुया। उण बगत रेंवती दिन-रात घणी सेवा करी। इन्नै-बिन्नै सूं उधारो-पारो कर'र डाक्टरां री फीसां भरी अर दवाई-पाणी रो जुगाड़ बैठायो। उणरी मन सूं करत्योड़ी सेवा रै पाण बो आज री घड़ी चोखी तरै चालै-फिरै अर अबै पाछो मोटरसाइकल चलावण रै लायक हुयग्यो। बा उणरै शरीर री तो सेवा करी ई ही, मनोबल बधायो जिको न्यारो। उण बीखै री टेम उण रा भाईड़ा तो कांई जलम देवाळ मां-बाप भी पूछण तकात नीं आया।

दूजी बार ई सागी बात हुई। भळै कोई जमीं री आछी डील आई। बो ई सागी रासो। पैलां आळै जियां भळै अेक्सीडेंट हुयग्यो। रेंवती री सेवा में पैलां सूं ई दूणी निष्ठा अर समर्पण भाव।

उणनैं याद आवण ढूकै—आखातीज रै मौकै रेंवती बीसूं लोगां नैं मोल-भाव सूं खीचड़ो छड़'र देवै। खीचड़ो इत्तो सांतरो कूटै कै अळी-गळी, आड़ौस-पाड़ौस रा लोगां री लैण लाग जावै। आजकाल घणकरी लुगायां नैं खीचड़ो कूटणो दोरो लागै, कोई रेंवती जिस्यो मिल जावै तो मौज हुय जावै। पैलां रै जमानै में दुपारै री टेम तीन-च्यार बजतां ई खीचड़ो कूटीजण रा धमीड़ सुणीजण लाग जावता। पांच बजी हांडी बेळा हुवतां ई घर-घर में चूल्है माथै हांडी में खीचड़ो खदबद करतो सीजण लाग जावतो। अबै केई जणां नैं भावै तो घणो ई पण कूटै कूण? बा कैबा है नीं कै 'तूं ई राणी, म्हैं ई राणी, कुण घालै चुल्है में पाणी!'

कोई मिक्सी में पीसै तो बो सुवाद नीं आवै जिको खीचड़ो हाथां रै जोर सूं कुटीज'र हांडी में सीजतो मधरी-मधरी आंच माथै। जीम्यां पछै जिको सुवाद आवतो बो आज कठै? बो खुद सूं ई बड़बड़ावण लाग्यो।

''कांई कठै? कांई कठै? कांई बड़बड़ावो हो थे?''

''हम्म, हां हां...'' कैवतो मदन अखबार सूं निजर ऊंची करी?

''ओऽऽ हां, ममता री मां, पैलां रै जमानै में जिको हांडी में खीचड़ो बणतो बो सुवाद याद आयग्यो।''

''बस इत्ती-सी बात? म्हैं आज ई चूल्है माथै हांडी में खीचड़ो बणाय'र जीमावूंला।'' कैवती थकी रेंवती मुळकण लागी।

बगत निकळतो रैयो। रेंवती रै जाण-पिछाण आळां रै अठै ब्यांव रै मौकै दस-पंदरै दिनां

री दिनूगै-सिझ्यां री रसोई बणावण रो काम आयो। उणरै हाथां में साख्यात अन्नपूरणा ई बिराजता हा। जीमण आळा आंगळ्यां चाट जावता।

ब्यांव आळै घर में कोई पईसै आळी पाल्टी रा बटाऊ आयोड़ा हा। बै जीमता जणै कैवता-थारै अठै खाणो घणो सुवाद बणै है, कुण बणावै है?

बटाऊ री जोड़ायत राधा भी रेंवती सूं घणी प्रभावित हुई। बा उण सूं सुख-दुख री हथाई करती रैवती। राधा नैं ठाह पड़ै कै रेंवती रै घरधणी सागै धोखा-धड़ी हुवण सूं बै पनप नीं सकै, इण कारण उणनैं मजबूरी में लोगां रै घरै रसोई बणावण रो काम करणो पड़ै।

अेक दिन राधा आपरै घरधणी श्यामसुंदर सूं बात-बात में कैयो, ''थांनै आपणै ड्रीम प्रोजेक्ट तांई जमीं री जरूत है नीं? रेंवती रो घरधणी प्रोपर्टी डीलर है। थे बां सूं बात कर'र बांरो कीं फायदो करावो, जीव री आसीस मिलैला। और भी कोई जग्यां-जमीं रो लेवाळ हुवै तो बांरै कनै सूं ई डील करावो। कदास रेंवती रा ई कीं दिनमान सुधरै।''

''ठीक कैवै राधा, काल ई म्हैं जमीं बाबत बात करूंला। जमीं तो म्हनैं बीसवाबीस लेवणी है। इणमें कोई दो राय नीं है।''

आगलै दिन श्यामसुंदर अर मदन रो मेळ-मिलाप हुयो। जमीं बाबत बात हुई।

बो मदन नैं धीमै सुर में कैयो, ''भाई! म्हनैं पचास बीघा जमीं चाईजै, जिकै में अेक बीघा जमीं माथै देसी रिसोर्ट खोलणो है। उणमें राजस्थानी स्टाईल रा झूंपड़ा, गारै रा कच्चा आंगणा, जिकै माथै धोळी माटी रा मांडणा अर चूल्है रा पकवान आद हुवैला। बाकी चाळीस बीघा बिकाऊ फारम हाऊस सारू। अबै समझ आई म्हारी बात?''

सुणतां ई मदन रै कानां नैं अचूंभो हुयो। बो पाछो चेतो कर'र बोल्यो, ''हां भाईजी, थांरी जरूत मुताबिक जाग्यां म्हारी जाण में है।''

''देख भाई मदन, तनैं लोगां घणो धोखो दियो है, म्हनैं जाणकारी मिली है। अबकाळै म्हैं थारै सागै हूं। बस चोखी ठौड़ जाग्यां दिराय दे। थारो लूंठो नफो होय सकै।''

छेकड़ केई जमीनां देख्यां पछै स्हैर सूं थोड़ी अळगी अेक जग्यां देखतां ई श्यामसुंदर नैं भायगी। सौदो तै हुयो। मदन रै आछो-खासो फायदो हुयो। इणरै पछै आपरै संपर्क आळां आगै प्रचार करवा'र मदन रै काम नैं खासो विगसाव दिरायो।

मदन-रेंवती रा ई दिनमान फुरण लाग्या अर अेक कमरियै सूं तीन तल्लां आळो फूटरो, आलीसान मकान चिणाईजग्यो। घर रो मौरत लॉकडाउन रै कारणै गिणती रा लोगां में, होमायत सागै संपन्न हुयग्यो।

श्यामसुंदर अर राधा मौरत रै कैयी दिनां पछै नूंवो घर देखण सारू जोड़ै सूं आया।

रेंवती अर मदन बांरो घणो कोड अर आवभगत करी। सागै ई मौरत माथै नीं आवणै रो ओळमो दियो।

''म्हे माफी चावां, पण उण टेम सरकार री गाइडलाइन नैं ध्यान राखता थकां निरवाळा ई आवणै रो मत्तो कर्‌यो।'' श्यामसुंदर मदन साम्हीं उथळो देंवतो थको बोल्यो, ''बाकी मौरत रो मोटो उपहार तो नीं लाय सक्या पण राधा आपरी बैन खातर अेक भेंट सोची है, जे थे स्वीकार करो

तो म्हां दोनूं नैं भोत हरख हुवैलो।'' कैवतां श्यामसुंदर राधा नैं लिफाफो काढण रो इसारो करयो।

राधा बैग सूं लिफाफो निकाळ'र रेंवती रै आगै बधायो।

''इण मांय कांई है जीजी?'' रेंवती अचूंभो करती पूछ्यो।

''बाई! थे कागद खोलो तो सरी, पछै म्हे बतावां।''

रेंवती लिफाफो खोल'र कागद बारै काढ्यो। ऊपर मोटा आखरां मांय लिख्योड़ो हो—'रेंवती रसोई'। उणनैं विस्वास नीं हुयो तो बा पानो दुबारा पढण लागी। बीं नैं कीं समझ में नीं आयो, जणै बा कागद मदन कानी कर दियो।

''बधाई हो रेंवती! अरे सॉरी मैडम जी, नूंवै काम खातर। अैड़ो अनूठो उपहार म्हैं आज तांई नीं देख्यो है।''

''रेंवती, इणमें छप्योड़ो है कै 'रेंवती रसोई' नांव रो प्रतिष्ठान जिण मांय पंदरै साथी कारीगर अर उणां री निर्देशक अर प्रबंधक है—रेंवती शर्मा। जिण मांय बणण आळा व्यंजन भाईजी रै रिसोर्ट रै सागै आखै स्हैर मांय पूग सकैला। बधाई हो मैनेजर साब!'' मदन कागद पढतो थको कैयो।

रेंवती नैं विस्वास नीं आय रैयो हो कै जिण सुपनै रै बारै में बा कदैई कोई रै आगै जिकर तक नीं करयो बो आज उणरै साम्हीं आय'र ऊभो है।

''राधा जीजी, अबखायां मांय डूबती-तैरती कैयी बार लागतो कै भगवान म्हारो हाथ तो कदैई छोड दियो, पण थांनै देख'र लागै कै बो मालिक आपरो हाथ कांई, समूचो आप ई म्हारै सागै ऊभो है। आज रै टेम में जद अेक लुगाई नैं दूजी री पीड़ घणी भावै, पण सुख कम, ईसको घणो चावै, पण दुख कम। अैड़ै में थे साबित करयो है कै हरेक लुगाई दूजी लुगाई री दुस्मण नीं हुवै, उणरी भाग-विधाता भी बण सकै। इण सुदामा कनै आपरै श्रीकिसन नैं आभार जतावण सारू आखर ई नीं है।'' रेंवती भरीज्योड़ै गळै सागै राधा रो हाथ आपरै हाथ में लेंवती थकी बोली।

''रेंवती! सुदामा तो म्हे हां कै श्रीकिसन-सी उदारता दिखावता थकां थे आ नान्ही-सी भेंट स्वीकार करी है। म्हैं अर थारा बैनोईजी आ कदैई तै करली कै थारै हाथ रो देसी सुवाद कूंट-कूंट तांई पूगै, जद असली मिसन पूरो हुवै। ईसको करती हुवैला पारकी लुगायां, पण म्हारी बैन रै काम रो नांव हुवै तो फूटरापो तो म्हारो ईज है नीं? बा सब छोडो। भलांई थारै कन्है आखर ना हुवो अर भलांई सुदामा कोई भी हुवो, पण चावळ री खीर तो थे ईज बणा'र खड़ाओला। मौको भी है अर दस्तूर भी।''

राधा री बात सुण'र सगळा लोगां सागै नूंवै घर रा कमरा, बंदनवारयां अर विंड चाइम ई हांसण लागगी।

◆◆

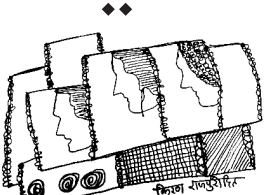

मनीषा आर्य सोनी

अंतस रा आखर मोती

दुपारै री मीठी गैरी नींद रै लैरकै मांय पसवाड़ो फोरयो तो नींद थोड़ीक उघड़ी। देख्यो कै अै दूर उभा, मधरा-मधरा मुळकता किणी सूं गैरै अर धीमै कंठ सूं बातां करता हा। नींद तो उचाट होयगी ही, पण म्हैं निरी देर तांई उणां नैं नींद आळी भारी पलकां सूं निरखती रैयी। बांरै होठां री मुळक म्हारै वास्तै सदा सूं ई मूंगो सौदो हो, जिको म्हैं कदैई नीं मोला सकी। मोबाइल पर बातां करता थकां बांरै चेहरै रा आवता-जावता मौळा भाव म्हारी निजरां नैं बांध लियो। मन काची कळी-सो कंवळो हुयग्यो। जी में आई कै जाय'र उणां रै कांधै पर माथो टिका'र घड़ी भर मांय सगळी जूण जी लूं। घर गिरस्थी री सगळी खैचळ अर दीन-दुनिया सै बिसराय बांरी बाथां मांय घड़ीक खुद नैं फूल मांय सुगंधी दायी समाय दूं। पण बै म्हारी निजरां सूं बेपरवाह आपरी धुन में बातां रै झौंक मांय सैंठै पेड़ आळै दांई झूम रैया हा। कदैई हंसता, कदैई मुळकता। कदैई आंख्यां रो फैलाव, कदैई पलकां रै भारी-भरकम मुखमली परदै नैं ऊंचोवता भेर नीचै करता। कदैई बादळ री गैरी गरज जिसो हुंकारो, कदैई बेग सूं आवती हंसी नैं मूंढै मांय माडाणी काठी दबावता—आह!

म्हैं पिलंग माथै आडी-तिरछीसीक ऊंधी पड़ी बांनै निरखती रैयी। अेक जबर रुबाब वाळै डील नैं चंचळाव री डोरी माथै सध्योड़े बाजीगर ज्यूं संभळ-संभळ'र चालतै देख रैयी ही। म्हारी पचास रै नेड़ै-तेड़ै री उमर, पण जी मांय अेक प्रेम री धूंकणी चेताय दीनी, जिकै री फुफकार कानां तांई सुणीजण लागगी। म्हैं मन मांय मुळकती सोचण लागी, वा अे रुक्मण! उमर री ढळती सिंझ्या मांय प्रीत रो किसो हगड़बोटियो चेतावण चाली है... ? अर खुद ही सरम सूं मुख मोड़'र पाछी पसवाड़ो फोर लियो।

जेठ री लांबी आळसी दुपारी मांय म्हैं सूती-सूती अेक उडीक सूं भरीजगी। आ बात जाणता थकां ई कै म्हैं जिकां नैं इत्ती देर सूं निरखूं हूं, अै म्हारा पति साहित्य-शिरोमणि श्री माधव प्रभाकर जी नैं कदैई म्हारै नीरस साथ री दरकार ई कोनी रैयी। म्हारो अर माधव प्रभाकर जी रो कोई जोड़ ई कोनी हो। म्हैं खेजड़ी सरीखी खोखी रूंखड़ी अर बै लकदक करता सौवणी मधु मालती री बेल। म्हारी पसवाड़ो फोरयोड़ी उणींदी उडीक अेकर फेर नींद री ओछी-मोछी पाळूंडी मांय डूबण री खैचळ करण लागी अर जाणै कद आंख्यां मींचीजगी। सुपनां अर खाली सुपनां री

'मधुबन', 2 ई 16, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राज.) मो. 9460173250

सोवन माछली नैं माडाणी पकड़ण री कोसिस मांय। चमक'र उठी तो देख्यो—सिंझ्या ढळण नै आई। कमरै मांय सागी सून्याड़ बापरयोड़ी ही। अठी-उठी निजर घुमाई तो समझगी कै माधवजी कठैई बारै जा चुक्या हा। म्हैं उठ'र पिलंग सूं नीचै पग धरती जित्तै ई म्हारै फोन री घंटी बाजी—''आज रात नै मोड़ो आवूंला, खाणो ई बारै ईज है। थे उडीकजो मतना...'' म्हैं बिना किणी भाव रै फोन धर दियो अर सिंझ्या रै काम काज मांय जुटगी।

कोई अलायदो दिन कोनी हो आज रो। इण घर री सूनवाड़ सागै म्हारो भायलापो हुयग्यो हो। म्हैं निसंग घर मांय कदैई गुणमुण गावती, कदैई कामकाज करती डोलती फिरती रैवूं। घर रा कामकाज ई म्हारो साहित्य हो। म्हैं नित नूंवा तरीकां सूं बरतन सजा'र धरूं तो भी औ लागै कै वाह! अै बासण तो छंद वाळी कविता जिसा बरोबट धरीजग्या अर मन मांय गुमान सूं भरीज जावूं। बस, इसा ई छोटा-मोटा कामकाज और इण घर रो सरणाटो ई म्हारा संगी-साथी है। घर रै हर कमरै रै मांय हर चीज रो अेक पोस्टल एड्रस जिसो ठांव-ठिकाणो म्हारै रटीज्योड़ो है, पण बांरै कमरै मांय जावती बगत म्हैं अेक अंजाण नगरी रै बासिंदै-सी लखावूं। छात तक ऊंची किताबां री अलमारयां सूं कमरो सैंठो भरीज्योड़ो हो। अेकै कानी पुरस्कार अर तस्वीरां सूं भींतां अटी पड़ी ही। किसो इस्यो पुरस्कार कोनी हो, जिको माधवजी नैं नईं मिल्यो हो। हां, आ बात और है कै म्हैं बांरी किणी हरख बेळा री कदैई सीर नीं कर सकी। पण नगर ई नईं, आखै मुलक मांय माधवजी रो नांव जिकै आदर सागै लरीजै उणरै आगै म्हारै हियै मांयली कसक री कोई गिनार कोनी। अर आ बात साची है कै कठै बांरो रुबाव अर कठै म्हैं! म्हैं तो खुद ई घणी बार उणां रै भाग माथै तरस खावूं कै विधाता नैं जोड़ ढुकाणो कोनी आयो, पण विधि रै विधान नैं घणै मान सूं निंवण करूं अर म्हारै भाग माथै गुमेज करूं।

आधी रात बीतण लागी, पण अजै तांई बै घरां कोनी ढूक्या। सोच्यो फोन करूं, पण फेर जाणै कांई सोच'र रोज री तरियां आंगणै मांय कुरसी ढाळ'र बैठगी। उडीक म्हारी आदत सूं परयां जाय'र म्हारो सुभाव हुयग्यो हो। म्हैं उडीकती बगत घड़ी नीं देख्या करूं। म्हारै उडीक री घड़ी म्हारै मन री अवस्था सूं हालै। पैली निरी ताळ बारणै पासी टकटकी लगा'र बैठूं, फेर अमूज'र चक्कर काटूं। पाछी थक'र बैठूं, फेर फोन नैं बीस बार खोलूं—बंद करूं, जित्तै कार रो होरन सुणीज ई जावै। ब्यांव रै सत्ताई बरस पछै ई बांनै देख'र अेक मीठी मुळक होठां माथै अजैई आवै।

आज कार सूं उतरया तो सागै अेक लुगाई भी ही। म्हैं हाथ जोड़'र अगवाणी करी तो बा भी आधी झुक'र म्हनैं नमस्ते करी। माधवजी बोल्या, ''अै सुषमाजी है, दिल्ली सूं पधारया है अर रात अपां रै अठै ई रुकैला।''

म्हैं सुषमाजी रै आवलां-चावलां मांय लागगी। बांनै गेस्ट-रूम लेजावण लागी तो सुषमाजी घणी अपणायत सूं बोल्या, ''नईं सा, आज तो आप लोगां रै सागै ई रैवणो है। रात री अेक तो बजगी है, अबै कित्तोक बगत बच्यो है।''

सुषमाजी अणूता फूठरा। डीगा। भरवैं डील रा। गोरो-ऊजळो दिप-दिप करतो रंग। मन मनमोवणा नाक-नकस अर ऊपर सूं ग्यान रा भंडार। लागै, मां भगवती, सुरसती अर लिछमी, तीनूं री अपरंपार आसीसां भाग मांय लिखा'र लाया हा। म्हैं राफ्यां काढती इत्तो ई बोल सकी, ''आप लोग करो बंतळ, म्हैं चाय बणा'र लावूं।''

सुषमाजी म्हारै आडा फिरता थका बोल्या, ''अरे अरे! आ कांई बात हुई, आज तो म्हैं चाय बणासूं, पैली थोड़ी देर अराम करलूं।''

म्हैं इण बात सूं घड़ीक अचकचाईजगी। पैली बार घरै आया है अर सीधा रसोई तक जाय पूग्या? माधवजी आपरो मून तोड़ता सुषमाजी सूं बोल्या, ''अरे! थे तो निरांयती राखो, आ बणावती रैसी चाय-पाणी सै, ल्यो आवो! थांनै म्हारो स्टडीरूम अर लाईब्रेरी देखाऊं।''

सुषमाजी टंकोरी-सी खणखणावती हंसी सागै माधवजी रै लारै टुरग्या अर म्हैं चाय-पाणी वास्तै रसोई कानी मुड़गी। ऊपर कमरै सूं हंसी-मजाक अर बातां री बोली सुणजती ही। माधवजी री हंसी बांरो सबसूं प्यारो रूप हो, जिकै सूं स्यात बौत कम लोग परिचित हा। हंसी इयां लागै ही, जाणै कोई गरजतै बादळ री आवाज किणी गैरी ऊंडी सुरंग मांय टकरा'र पाछी आवै। म्हैं आखो दिन मंतरीज्योड़ी माधवजी नैं टुक-टुक देखती मैसूस करती रैवूं, म्हारै मून री सींव रै सागै। चाय गैस माथै चरचरावती उफणन लागी तारे पाछो चेतो आयो।

म्हैं चाय अर नाश्तो-पाणी ऊपर स्टडी-रूम मे लेयगी। दोनूं जणा दुनिया-मुलक री किताबां री चरचा मे लाग्योड़ा हा। सुषमाजी खासा पढ्योड़ा लागता हा अर कम उमर मांय घणी बडी डिग्री लेय लीवी ही। म्हैं चाय-पाणी सूं निवड़'र बां दोनूं री बातां री मून श्रोता बण'र किनारै पड़्यै स्टूल माथै बैठगी। गजब रा पड़ूत्तर देंवता सुषमाजी। कठै-कठैई तो माधवजी ढकीज जावता सुषमाजी रै ओज सूं। म्हैं घणै इचरज मांय तो कोनी ही, पण अेक सोच में जरूर ही कै आपरी बात कैवण अर साबित करण री ताकत रै आगै सुषमाजी साम्हीं कोई कोनी टिक सकै। पण अेक बात समझ कोनी आय रैयी ही कै इत्ता गुणां री धणियाणी अर साव अेकली कियां! म्हैं बां दोनूं री चलती बात बिचाळै बीच मांय म्हारी छोटी-सीक जिग्यासा धरी, ''आप अेकला आया दिल्ली सूं अठै? सागै कोई... ?''

म्हारी बात नैं बिचाळै ई काटता सुषमाजी माथै मांय सळ घालता अर फणफणावता बोल्या, ''सागै कोई... मतलब? म्हारै सागै कोई रो होवणो जरूरी है?'' अर फेर जोर सूं ताळी पीटता ठठा'र हंस पड़्या। म्हैं फेरूं अचकचीजगी। ढीलो मूंडो कर'र माधवजी साम्हीं देखण लागी तो बै आपरी निजरां री भासा सूं म्हनैं समझाय दी ही कै दो घणा समझदार लोगां री बंतळ बिचाळै मूंडो काठो भींच'र बैठणो। माधवजी बात नैं सहज करण वास्तै बोल्या, ''ल्यो, अेक चाय और... सागै कीं नमकीन भी लियाओ...।''

इण बिचाळै म्हैं उडती निजर सूं सुषमाजी नैं फेरूं देख्या। बै म्हारै कानी निजरां गडा'र लगोलग देखता हा। जी मांय अेक अजब-सीक सळ पड़ग्यो। पण म्हनैं कोई खास फरक कोनी पड़्यो। म्हैं तीखी-सी निजरां सूं हड़कावणै री आदी हूं। म्हैं पाछी रसोई मांय आयगी चाय रै दूसरै दौर वास्तै।

दुपारै धाप'र नींद ले चुकी ही, तो नींद आंख्यां सूं दूर ही। दिनूगै सुषमाजी नैं बईर हुवणो है, तो सोच्यो कै कीं कोनी, आज रात जागण ई सही। सुषमाजी दिनूगै बगतसर त्यार हुय'र टुरग्या। जावता-जावता म्हनैं हाथ मांय आपरी लिखी अेक किताब देय'र गया। म्हैं किताब लेवण रो सऊर जाणूं हूं। किताब लेय'र अदब सूं माथै रै लगायली। बै माधवजी कानी देखता थका बोल्या, ''थे

मदद कर दिया कीं पढण में...'' अर जोर सूं सागी टणकारै-सी हंसी सागै म्हासूं बिना रामा-स्यामा करयां गाडी मांय बैठग्या।

सुषमाजी बईर हुयग्या, पण म्हारै चेतै मांय बांरी छिब तस्वीर मांय फोटू आळै दांई छपगी। आज छह-सात महीना हुवण नै आया है, पण म्हैं अजै ई कामकाज करती बगत बांरै बारै मांय सोचती रैवूं। माधवजी, सुषमाजी रै गयां पछै बांरो कोई जिकर म्हासूं कोनी करयो, बियां ई म्हासूं और किसा जिकर करया करै!

दिन बीतण लाग्या। माधवजी लारला दिनां सूं आपरी सेहत नैं लेय'र घणा लापरवा हुयग्या हा। हाथ मांय कलम री जग्यां फोन रैवण लाग्यो। फोन हाथ सूं धरै तो आंख्यां मींच'र सूय जावै। बोल-बतळावण तो सरू सूं ई कोई खास कोनी ही, पण अबै तो जाणै अबोलो-सो ई होयग्यो हो। म्हैं लारला सत्ताईस बरसां मांय कदैई उणां रै पढण री बगत नै आगै-लारै टळतां कोनी देखी, पण अबै तो ना लिखणो, ना पढणो। म्हैं मांय सूं घणी कसमसीजूं कै जाय'र हक सूं पूछूं कै कांई बात है? पण इत्तो काळजो कदैई रैयो ई कोनी। म्हैं ई आजकाल डरूं-फरूं रैवण लागगी।

आज ऊपर आळै कमरै सूं माधवजी रै फोन पर किणी सूं जोर-जोर सूं बात करण री आवाज सुणीजी, तो बरामदै सूं ऊपर देख्यो, पण कमरै मांय जावण री हिम्मत कोनी हुई। बै कमरै सूं ई जोर सूं बोल'र म्हनैं चाय रो तकादो करयो। म्हैं चाय बणा'र कमरै मांय गई तो देख्यो, बै सगळै कमरै नैं आखळ-बाखळ करयोड़ा कीं जोवता हा। म्हैं पूछयो, ''म्हैं मदद करूं आपरी?'' तो परेशान हुयोड़ा रीस मांय बोल्या, ''थे थांरी रसोई सांभलो जिकी ई घणी...''

म्हैं दो घड़ी चुपचाप ऊभी रैई। म्हारै वास्तै बांरै परेशान हुवण रो कारण जाणनो ज्यादा महताऊ हो, नीं कै बांरा म्हनैं दियोड़ा अकरा मैंणां। म्हैं कमरै मांय खिंड्योड़ी किताबां उठावण लागी तो बै फेर बरज दी। म्हैं बांरी परेशानी समझती थकी पाछी कमरै सूं बारै आयगी। पगोथिया उतरतां सोचण लागी कै लारलै साल-भर सूं माधवजी अेक ग्रंथ 'लोक आस्थाओं में दर्शन योग' त्यार करण मांय लाग्योड़ा हा अर जग्यां-जग्यां जाय'र बौत-सी जाणकारियां भेळी करी ही। निरा लोक देवतांवा रा भजन, पद, टीकावां रौ संग्रै अर बीजी घणी महताऊ जाणकारयां भेळी करी ही। बै जद कदैई फोन पर किणी सूं भी आपरै लेखन री बातां सीर करता, तो म्हैं बै सगळा गीत-कवितावां मन मांय है ज्यूं री त्यूं कोर लेंवती, कठैई बीं बाबत ई तो कोई अड़चन नईं आई हुवै। मन करयो कै अेकर फेरूं जाय'र बतळा लेवूं, पण जाणै कांई सोच'र मन मसोस'र रैयगी।

सुबै रो खाणो-पाणी निवड़्यो ई हो कै डोरबैल बाजी। बारणो खोलतां ई साम्हीं वकील रामप्रसादजी ऊभा दीस्या। अेक छिण वास्तै जी मांय भतूळियो-सो उठ्यो। बियां तो रामप्रसादजी माधवजी रा खास बेली हा, पण दोनां रै कामकाज री तासीर मांय आभै-जमीं रो फरक हो, तो कदै-कदास ई आवणो-जावणो हुवतो। बै घर मांय पग धरतां पूछ्यो, ''कठै है म्हारो माधो! आज म्हनैं फोन कर'र कियां बुलायो?''

म्हैं साव अणजाण ही—इण सगळी रामलीला सूं। म्हैं ऊपर स्टडी-रूम पासी इसारो करयो कै आप खुद ई जाय'र पूछलो। रामप्रसादजी पगोथिया चढता-चढता घणै हेत सूं बोल्या, ''भुजाईजी, थे जित्तै थांरै सूंठ रै मसालै वाळी इस्पेसल चाय तो बणावो...!''

म्हैं रसोई कानी मुड़ी जित्तै जोर रो धमीड़ो सुणीज्यो। म्हैं भागती ऊपर गई तो माधवजी अचेत पड़्या हा। रामप्रसादजी बांनै सांभण मांय लाग्योड़ा हा। म्हनैं देख'र जोर सूं बोल्या, ''स्यात हार्ट-अटैक आयग्यो आंनै, थे सांभो जित्तै म्हैं एंबुलेंस बुलाऊं। म्हैं हाक-बाक-सी हुयगी। कांई समझती, बांनै सांभती जित्तै माधवजी म्हारी बाथां मांय सरीर ढीलो नाख दियो। म्हैं बांनै फंफेड़ती रैयी। चीखती-चिरळांवती रैयी। कदैई हथाळी मसळती, कदैई छाती पर हाथ फेरती। थोड़ीक ताळ नै एंबुलेंस ई आयगी। रामप्रसादजी सगळी भागदौड़ कर'र माधवजी नैं अस्पताळ लेयग्या। म्हैं साव सूनी हुयोड़ी, घबरीज्योड़ी, कदैई माधवजी नैं देखूं, कदैई बांरी पगथळ्यां मसळूं, कदैई माथै पर हाथ फेराऊं।

अस्पताळ मांय जावतां ई डाक्टर इलाज सरू कर दियो। माधवजी नैं आईसीयू मांय भरती कर लिया। रामप्रसादजी सै व्यस्था कर दीनी ही अर इलाज सरू हुयग्यो। म्हे दोई जणा बारै बैठा हा, जद रामप्रसादजी म्हनैं पाणी री बोतल झिलावता बोल्या, ''भाभीजी, अबै घबराण जिसी बात कोनी, डाक्टर इलाज सरू कर दियो है। म्हारी डाक्टर साब सूं बात भी हुयगी है। थे ठावस राखो अर पाणी पीवो।''

इत्तै अपणायत रो ताप मिलतां ही म्हारा आंसू पिघळ पड़्या। म्हैं पल्लो मूंडै मांय दाब'र फफक-फफक'र रोवण लागी। रामप्रसादजी धीजो बंधायो अर म्हारै कनै खाली पड़ी जग्यां माथै बैठ'र पूछ्यो, ''भुजाईजी, आ सुषमा कुण है?''

म्हारै बैंवता आंसूड़ां माथै जाणै अचाणचक पाळ बंधगी। म्हैं आंख्यां पूंछ'र रामप्रसादजी रो मूंडो जोवण लागी। म्हैं हैरान होय'र पूछ्यो, ''सुषमा... ? क्यूं? सुषमाजी रो थे अबार कियां पूछ्यो? कांई हुयो?''

रामप्रसादजी नस नीची घाल'र बोल्या कै सुषमा, माधवजी सूं लंबै समय सूं जुड़्योड़ी ही। फेसबुक सूं हुई पिछाण आछी-खासी दोस्ती मांय बदळी अर फेर बा थांरै घरै भी आयी। जिकै दिन बा घरै आयी उण रात बा माधवजी री लाइब्रेरी सूं केई महताऊ दस्तावेज अर बांरा लिख्योड़ा केई आलेख अर कवितावां, जकी प्रकाशित होवण वाळी ही, बै सब चोर'र लेयगी अर अबै लारला केई दिनां सूं फोन करणो-उठावणो भी बंद कर दियो अर इत्तो ई नईं, बीं सगळै लेखन मांय सूं ज्यादातर बा आपरै नांव सूं छपवाय ई लियो है। माधवजी जद सुषमा सूं बात करणी चाई तो बै वाट्सऐप चैट नैं जगजाहिर करण री धमकी देय'र फोन माथै संपर्क ई खतम कर लियो। आज सुबै साणी अखबार मांय जद बांनै साहित्य अकादेमी रो पुरस्कार मिलण री अखबार मांय खबर बांची तो माधवजी औ धोखो सहन कोनी कर सक्या अर दिल रो दौरो पड़ग्यो। लारला केई महीनां सूं माधवजी डिप्रेशन री हालत मांय हा। म्हनैं बै सुषमा पर केस करण रै बाबत ई आज बुलायो हो, पण बांरी मानसिक हालत आज ठीक कोनी ही। बौत गहरै सदमै में हा। म्हनैं आ पूरी बात बतावती बगत ईज बांनै अटैक आयग्यो। म्हैं चिड़ी रै बचियै आळै दांई बाको फाड़्योड़ी सगळी रामकाहणी सुण रैयी ही। रोवतां-रोवतां होठां माथै मुळकाण आयगी। ठंडी सांस लेय'र मूंडो पल्लै सूं पूंछ्यो अर रामप्रसादजी पासी देखती बोली, ''भाईसाहब, थे तो केस करण री त्यारी करो, बाकी बात माधवजी रै ठीक हुयां पछै करसां।''

रामप्रसादजी म्हारै कानी बौत सम्मान भाव सागै देख्यो अर हाथ जोड़'र अस्पताळ सूं बईर हुयग्या। म्हैं माधवजी अर सुषमा रै मेळमिळाप सूं अणजाण कोनी ही, पण सुषमा रै कळूंठै मन री तो कल्पना ई कोनी करी ही। पण हाल री घड़ी मांय म्हैं पूरो ध्यान माधवजी री सेहत कानी लगा राख्यो हो। म्हैं आईसीयू रै बारै चक्कर काट रैयी ही, जित्तै ई डाक्टर अर नर्स री बधती हळचळ म्हारो ध्यान फुरायो। म्हैं नर्स नैं रोक'र पूछ्यो तो बा बतायो कै माधवजी नैं पैरालिसिस रो अटैक आयो है अर सरीर रो जींवणो हिस्सो काम करणो बंद कर दियो है। म्हैं भाखर ज्यूं जड़ होयगी। दो छिण मांय खुद नैं सांभ'र रामप्रसादजी नैं पाछो फोन लगायो। रामप्रसादजी ऊंधापगां दौड़ता ई आया। हालत गंभीर ही, पण जाणै कठै सूं आतमबळ आयो कै म्हैं कमर मांय पल्लो खसोल'र माधवजी कनै जाय ऊभी। बै अचेत हा, पण म्हैं मौत अर माधवजी रै जीवण रै बिचाळै आडी भींत ज्यां ऊभी ही। माधवजी इत्ती माड़ी-सीक घटणा सूं इयां हार कोनी सकै। अेक परबत नैं आवती-जावती बादळी इयां बैवा कोनी सकै, खतम कोनी कर सकै। हाल तो माधवजी रो सै सूं महताऊ ग्रंथ दुनिया साम्हीं आवणो बाकी है, अजै तो केई काज साजणा बाकी है। जीवण रै अेकाअेक पलटो खावणै सूं सो-कीं खिंडग्यो हो। बस, जी रो हौसलो म्हारै सागै हो। म्हैं दिन-रात माधवजी रै सागै ही—दवा-दारू, सेवा-चाकरी री सै सींवां तोड़ती बस अेकर फेर माधवजी नैं साजा-ताजा देखणा चांवती ही।

जिंदगी रा अजब-गजब खेल देख रैयी ही। मन नैं सैंमूदो निरमळ कोनी करयो जा सकै, आ लारलै दिनां मांय आछी तरियां समझगी ही। सगळी जूण बांझपणै रो दाळद धोयो, क्यूं कै माधवजी नैं बाळकां सूं कोई मोह ई कोनी हो। इयां रै वास्तै टाबर लिखण-पढण मांय बाधा रो अेक कारण भर हा। म्हारी प्रीत लगाव कदैई म्हनैं बां सूं आगै पग कोनी धरण दियो, हमेस बै ईज सबसूं पैली रैया। आजकाल मांय स्यात अस्पताळ सूं छुट्टी भी मिल जासी, पण मन रै कळसियै माथै पड़ी मोच पड़णी ही जकी तो पड़गी।

अस्पताळ सूं घरां आयां पछै माधवजी रो खाली स्वास्थ्य ई नईं, आतमबळ अर गुमेज सै ढळग्या। म्हैं सेवा-चाकरी मांय कसर कोनी छोडी, पण बै म्हनैं सैयोग कोनी कर सक्या। फोन कानी सैलंग देखता रैवता, जाणै किणी री अडीक ही। पण लकवै रै पछै बोली मांय हकलाव रै चालतां ना बोलीजतो अर ना ई कोई खास दूसरा फोन आवता। म्हैं सूप लेय'र जियां ई कमरै मांय मुड़ी कै फोन री घंटी बाजी। फोन रै दूसरी पासी सूं सुषमा री आवाज आई। बोली, ''म्हनैं नोटिस भेजायो है? म्हैं भी ईंट रो जबाब भाटा सूं देवणी जाणूं।''

म्हैं सुण'र हंसण लागी। म्हैं बोली, ''आप सक्षम हो, ग्यानी-ध्यानी हो, सो कीं भी कर सको हो, पण आप जिका पाना लेय'र गया, बै सगळा ई अधूरा हा, आपरी किताब अर पुरस्कार दोन्यां नैं चुनौती है। हर पानै रो आगलो पानो म्हनैं मुखजबानी याद है। या तो थे माफी मांगो, नईं जणै म्हैं साबित कर सकूं कै बै सब माधवजी री मौलिक लेखणी है अर बाकी कमी बेसी कोर्ट मांय पूरी कर लेसां।'' सुषमाजी रीसां बळता फोन पटक दियो। म्हैं माधवजी कानी देख्यो। बै सरम सूं निजरां फेरली अर म्हैं अंतस तांई चिरीजगी।

महीना बीतता रैया। कोर्ट केस री लंबी लड़ाई भी म्हैं जीतग्या। माधवजी अेकर फेर साहित्य जगत मांय आपरी आभ सागै पळकता हा, पण होळै-होळै म्हारै अर माधवजी बिचाळै

अबोलो और बधण लागग्यो हो। मन रै मांय बांनै लेय'र करुणा रो भाव हो, पण प्रेम री पांखड़ी पीळी पड़ण लागगी ही।

म्हैं आज निरा दिन बाद बांरै स्टडी-रूम मांय गयी। अेक-अेक किताब नैं सावळ निजर भर-भर देखी। अै ईज बै किताबां ही, जिकी म्हां दोनूं रै बिचाळै कोस भर री दूरी कर दीनी। कमरै मांय किताबां, किताबां मांय आखर, आखर अर आखर, पण कठै हा बै अढाई आखर जिका जूण सुधार सकता हा। बै आखर कांई खाली पोथ्यां मांय बंद हा? म्हैं जिण अढाई आखरां मांय जूण अलूणी करी, बै ईज अढाई आखर माधव जी कोरा कागदियां पर मांड मांड'र दुनिया मांय लूंठा लिखारा बणग्या। तिरस तो कोई री कोनी बुझी। म्हैं प्रेमजळ लियां उडीकती रैयी अर बै ठौड़-ठौड़ मिरगलै दांई भाजता रैया।

म्हारी निजरां साम्हीं माधवजी री लिख्योड़ी आधी-पुधरी केई कवितावां मेज पर धरी ही, जिकी बै सुषमाजी नैं अरपण करतां थकां लिखी ही। जिण मांय देह अर रूप नैं परोटता भारी-भारी सबद लिख्योड़ा हा। सुषमाजी अर माधवजी री ई दबी-लुकी प्रेमकथा रा अै आखर चुगली करै हा। म्हैं उण अधलिखी कवितावां नैं भरी आंख्यां सूं देखती गयी अर पसवाड़ै पड़ी कलम उठाय'र बां कवितावां रै पागती साची अर खरी पीड़ सूं म्हारा अंतस रा मोती लिखण लागी। म्हैं आगै सूं आगै प्रीत रा साचा अर छूट्योड़ा मरम कोरती गयी। पैली बार म्हैं माधवजी रा आखरां रै सायरै म्हारी हियै री हूंस रो मरम लिखती जाय रैयी ही। म्हैं लिखी—म्हारै सूनै आंगणै अर निपुताई री दंस री पीड़, म्हारी अलूणी रातां री खारी ज्हैर हुबाड़। म्हैं लिखी—म्हारै माथै लगायोड़े कळूंठै नासमझणी रै दाग री काळख। सै लिख'र कलम तोड़'र नाख दी—जियां मौत रै फरमान नैं लिख'र जज आपरी कलम तोड़ देवै। म्हैं ई अेक मजबूत रिश्तै री मौत रा आखरी आखर लिख्या हा। म्हैं स्टडी रूम मांय अेकली ऊभी म्हारै होवणै नैं अरथावण री खैचळ करती रैयी। सोचती रैयी—कोरा आखर बिना साचै प्रेमभाव रै मुरदै समान है जिण मांय आतमा रो वास ई कोनी। म्हैं सगळा कागद माधवजी रै हाथ मांय लेजाय'र धर दिया। बै म्हारी लिखी कवितावां नैं बांचता रैया, कदैई म्हनैं इचरज सूं देखता अर कदैई आंख्यां सूं आंसू ढळकावता। धूजता हाथां मांय पाना नईं, म्हारी पीड़ रा सवाल लिख्योड़ा हा, जिण रा उत्तर माधवजी कनै कोनी हा।

ग्यान रो सागर आज मून हो।

◆◆

संतोष चौधरी

मोतिया आब

आज करमसर ठिकाणै री बडी हेली मांय नूंवै उच्छब रो दरसाव दीखै हो। बारली पोळ सूं लेय'र हेली रै ऊणै-खूणै नैं नूंवी बींदणी-सो सजाईज्यो हो। हेली रा कामदार आप-आपरी ड्यूटी उछाव सूं निभावता निजर आवै हा।

''हाथ टूट्योड़ा है कांई थारा, बेगो-बेगो हाथ चला। हाल पोळ रै बारै पासै ई बुआरी काढणी है थनैं... !'' हाथां सूं अर होठा सूं सगळा री निगैदासती करता काकीसा आज उच्छब मांय हेली रै इण पासै सूं उण पासै तांई चकरी-सी फिरबा लाग रैया हा। बांरी मधरी मुळक अर चैरा री चमक आज जाणै सौ गुणा बध्योड़ी ही। पूरी हेली मांय चैळ-पैळ अर आव-जाव रो रेलमपोळो लाग्योड़ो हो। हेली रा सैंग कामदारां री आज बेजा ई सखती सूं भागदौड़ हुवण लागरी ही।

काकीसा रै हरेक हेलै सागै नायण मां रो जी ओकचोक हुवै हो। नायण मां बरसां सूं हेली री रसोई री सार-संभाळ करणियां हा। आज काकीसा नीं जाणै कित्ता तो पकवान बणावण री तैयारी करी है। आज ई क्यूं, लारलै हफ्तै भर सूं काकीसा नायण मां सागै लाग'र तरै-तरै री चटणियां, खीचिया, पापड़, दाळबड़ा, दहीबड़ा, लापसी, कैर-सांगरी री सब्जी, पुड़ियां, दाळ रै सीरै री पैलां सूं ई त्यारी मांय लाग्योड़ा हा। दो बारी तो छोटोड़ा काकोसा नैं नेड़लै स्हैर भेज-भेज'र तरै-तरै रा फळ-फ्रूट अर मिठायां मंगवाय'र राखली ही। साधन संपन्न हेली मांय किणी बात री कमी तो ही कोनी। ठिकाणै मांय ओछत ही तो मिनखां री, टाबरां री। चार भायां रै परिवारां बिचाळै फगत म्हे दो भाई-बैन।

आज आ सारी खैचळ काकीसा अक्षय सारू करता हा। अक्षय म्हारो बीरो, छोटो भाई, काकोसा रो बेटो। काकोसा-काकीसा रो गोदनांव रो बेटो, पण सगै सूं ई बत्तो लाडको अर जीव री जड़ी हो अक्षय। काकीसा री तपस्या रो फळ डॉ. अक्षयसिंह राठौड़।

आठ बरसां रै लांबै अर सूनै बरसां पछै आज हेली मांय अक्षय रो आवणो हो। म्हारै ब्यांव रै टाणै ईज अक्षय रै डाक्टरी री पढाई रा सेमेस्टर इम्तहान चालता हा जणै उणरै आवण रो संजोग बैठ्यो कोनी हो।

काकीसा रो रूं-रूं जाणै आज खुशियां मांय हळाबोळ हो। बांरी अैड़ी मुळक अर आवाज री उंतावळ मांय बिखरती हांसी में आखरी बार कदै देखी ही, म्हनैं चितार कोनी आई।

ए-11, सुभाष एन्क्लेव, पीएनपी बैंक री गळी, एयरफोर्स एरिया, जोधपुर (राज.) मो. 9571544250

 ISSN : 2320-0995

अक्षय नैं सागै लेय'र दोनूं काकोसा जियां ई आपरी स्कोर्पियो नैं पोळ री फाटक साम्हीं लाया अचाणचक पोळ सूं हेली रै आंगणै तांई जाणै सैंगां रै मन रा भावां रो मिल्यो-जुल्यो रूप ज्वार बण'र बारै आयग्यो। धोक, सलाम, भरी आंख्यां सू आसीसां री झड़ी सागै निजर उतारण सारू लूण-मिरच री सैंग खैचळ करत्यां पछै अक्षय नैं काकीसा अर नायण मां उपराथळी पुरसगारी कर-कर'र जिमायो। अक्षय रै मनभावती हरेक चीज उण सारू हाजर ही। आपरै लाडेसर सारू बरसां रै रोक्योड़ै लाड नैं काकीसा अेक ई दिन मांय जाणै पूरो कर लेवणो चावै हा। ब्यांव पछै जतिन, म्हारै पतिजी रै सासरै आवण री टेम भी बरस दो बरस मांय औ लाड म्हारै अर बांरै भी पांती आवतो हो, काकीसा तो जीव रा बियां ई व्हाला घणा हा। पण आज अक्षय री ओवर ईटिंग अर ढुळतै लाड माथै म्हैं घणी हंसती रैयी। अक्षय बस आपरी मा'सा रै लाड नैं निरखतो रैयो।

जीमा-जूठै सागै भरपूर हथाई रो दौर चाल्यो अर थकैलो उतारण सारू सैंग जणा दोपारी री नींद ई लेयली। सिझ्यां नैं चाय पियां पछै अक्षय आपरै बैग मायं सू सैंगां सारू लायोड़ा तौफा दिया। हेली रा मुखिया म्हारा काकोसा सूं लेय'र काम करण वाळै छोटै सूं छोटै नौकर नैं ई अक्षय कीं-न-कीं तौफो जरूर दियो। म्हनैं निजर आवै हो—काकीसा आपरै लाडेसर री भलमंसा माथै मन-ई-मन मांय थुथकारो घालै हा अर जोगमाया री मैर नैं निवण करै हा। धरती माथै पड़्यै बीज रो विगसाव कित्तो चोखो निखरसी, आ तो बीज री रुखाळी करणियै रै वैवार सूं ईज दिख जावै। म्हारै परिवार रा चोखा संस्कारां माथै मन-ई-मन म्हैं ई गर्वित भाव सूं भरीजगी ही।

अेक हळको गुलाबी रंग रो गरम शॉल निकाळतो अक्षय काकीसा साम्हीं जोवतो बोल्यो, ''मां, म्हैं औ शॉल आईमां सारू लायो हूं। म्हैं वां सूं अबार मिल'र धोक देय'र आवूं...।''

काकीसा रै चेहरै माथै रीस री लकीरां सागै पसाव पळकण लागग्यो। पैलां तो बै अक्षय नैं बरज दियो कै कठैई जावण री जरूरत कोनी... पण अक्षय री असमंजस देख'र काकीसा रीस मांय साफ-साफ ई कैय दियो, ''लाडेसर! कठैई जावण री जरूरत कोनी अर उण टूणा-टोटका करबा आळी डाकण रै अठै जावण री तो दर में ई जरूरत कोनी...।''

अक्षय हाकबाक हुयोड़ो शॉल हाथ मांय ई लियोड़ो कीं ताळ तो आंगणै मांय ऊभो रैयो, पछै बोलो-बोलो शॉल नैं पिलंग माथै धर'र डागळै माथै चढग्यो। उणनैं तो ठाह ई कोनी हो कै इत्ता बरसां मांय अठै कांई-कांई हुयग्यो है!

नायण मां ठाडै-ठाडै आमरस री गिलासां लेय'र आयग्या। काकीसा रै चेहरै माथै अजै तांई रीस री अणमणाट दीखै ही, पण लाडेसर सारू मन ममता वीण रीस माथै भारी पड़गी। म्हनैं गिलासां पकड़ावता बोल्या, ''जा शिवू, अक्षय नैं आमरस झिलाय आव। कित्ती देर सूं अेकलो डागळै माथै बैठो है!''

म्हैं गिलासां लेय'र डागळै गई। अक्षय मूंडो उतार्योड़ो छात माथै पड़्यै मुड्ढै माथै बैठो आईमां री हेली साम्हीं ई कातर निजरां सू जोवै हो। म्हारै आवण री आहट सू सीधो बैठ'र म्हारै मूंडै साम्हीं जोवतो बोल्यो, ''अठै सब नैं कांई हुयग्यो है जीजा, क्यूं सब अैड़ो ओपरो वैवार करै!...म्हैं आवती बगत ई आईमां सू मिल लेंवतो, पण छोटोड़ा काकोसा बांरी हेली आगै गाडी रोकी ई कोनी अर अबै मा'सा ई क्यूं अैड़ी अबखी बात करै हा...?''

''थूं घणा बरसां पछै आयो है नीं बीरा, जणै अठै औ सब देख'र थनैं ओपरो लागै, चिंत्या ना कर, कीं दिनां मांय आदत पड़ जासी, ले थारै पसंद रो ठंडो टीप आमरस पी!''

बेमन सूं गिलास हाथ मांय लेंवतो अक्षय बोल्यो, ''कोई और सूं बैसी म्हैं तो आपनैं जाणूं जीजा, बताओ कांई हुयो इत्ता बरसा मांय?''

म्हनैं चुप देख'र पाछो बोल्यो, ''जीजा, आईमां हमेस कैवता हा कै खुद सारू तो जीवां तो कांई जीवां, जीवो तो हजारू दूजां सारू जीवो! बै म्हारी प्रेरणा है। म्हैं कदैई नीं भूल सकूं कै गांव मांय कोई रै ई बीमार हुयां पछै बीस-बीस किलोमीटर रो कच्चो मारग पार कर'र स्हैर जावणो पड़तो हो अर नीम हकीमां रै फेर मांय ई कित्ता ई जणा आपरी जान सूं गया परा। इण सारू स्हैर री चकमक ई म्हनैं नीं भरमा सकी। म्हैं अठै ई अेक अस्पताल बणावणो चावूं, पण अठै रो सैंग माहौल इत्तो ओपरो क्यूं है जीजा?''

अक्षय रै इण सवाल सागै ई म्हारी चितार मांय बरसां पैलां रो गांव अर गांव रा हालात आयग्या। स्मृतियां म्हारै सबदां रो सहारो लेय'र बायरै ज्यूं बैवण लागी।

टेम रै अेक पसवाड़ै मांय म्हारा दादाजी अर आईमां रा ससुरोजी रो भायलापणो गांव मांय बाजींदो हो। दादाजी बडी हेली रा कुंवर हा तो बै छोटोड़ी हेली रा कुंवर हा। दोनुवां रै अेकै दांत रोटी टूटती ही, पण राजनीति रो चस्को अर कुरसी रो लालच भलां-भलां रै रिस्तै मांय ज्हैर घोळण रो काम करयो हो। आं भायला माथै ई परिवारां री गुटबाजी रो असर पड़्यो। प्रधानगी रै चुणाव मांय दोनूं आम्हीं-साम्हीं हुया अर आम्हीं साम्हीं ई अैड़ा हुया कै पछै कदैई सागै अेक थाळी में चळू कोनी करयो।

आईमां रै सुसरोजी आपरै बेटै नैं डाक्टर बणाबा सारू खैचळ करता हा अर इण आस मांय बेटै नैं स्हैर भणाई सारू भेज्यो। बै तो डाक्टर बेटै नैं अडीकता-अडीकता ई राम करग्या... अर दोयं बरसां पछै जद डाक्टर बाबू गांव आयोड़ा हा अर म्हारै दादाजी री ई तबियत खराब हुई तो समाचार हुयां पछै ई आपरी स्हैरी टिम-टाम मांय बै दादोसा नैं देखण आया जित्तै म्हारा दादोसा ई राम करग्या। दादीसा सुहाग दुख मांय कळपता-कळपता कैय दियो कै जको आपरै बाप रै मरणै माथै टेमसर कोनी आयो, बो म्हारै दुख मांय कठै सूं आडो आवैला। अर उण टेम सूं दोनूं परिवारां मांय हर तरै रा संबंधां रै खातमै री घोसणा हुयगी।

इणी बिचाळै डाक्टर बाबू रो सत्ताजोग सूं ई ब्यांव तय हुयग्यो, भणियै-गुणियै डाक्टर नैं कीं सोचण-समझण सूं पैला ई आपरै मा'सा रै आदेस री पाळणा करणी पड़ी अर भणी-गुणी बींदणी सुहासिनी शेखावत बांरै आंगणै मांय पाजेबां री रुणझुण सागै कुंकुं पगल्या मांड दिया।

नख लगावतां मैली हुय जावै, अैड़ी बींदणी रै रूप री चरचा आखै गांव मांय सैंगां रै मूंडै ही। आ तो पछै ठाह पड़ी ही कै सुहासिनी रै बाबोसा रो रूं-रूं दिखावटी ठकुराइ लारै करजै मांय आयग्यो हो, जणै उणरी अेक ऊंचै घराणा मांय तय हुयोड़ो सगपण छूटग्यो हो। उण रा मा'सा औ आघात नीं झेल सक्या अर मजबूरी मांय सुहासिनी रा मामोसा समझदारी सूं काम लेंवता आपरै सासरै रै अळगै लागता इण परिवार मांय जोड़-तोड़ बैठाय उणीज मौरत माथै ब्यांव रो जोग बैठाय दियो हो।

चम्पा-सी कंवळी कळी सुहासिनी पंदरा दिनां मांय ई सालिगराम भाटै जैड़ा डाक्टर सूं बंध'र छोटोड़ा कंवराणी रै नांव सूं गांव भर मांय सैंगां री जुबान माथै चढगी ही।

''रूप रो डळो है डळो कंवराणी सा तो...''

''आंख्यां जाणै मिरगानैणी...''

''शेखावाटी रो पाणी है बाईसा, रूपाळी पूणी ज्यूं...''

जित्ता मूंडा, बित्ती बातां।

आसीसां सागै मुंहदिखाई माथै सुहासिनी री झोळी मांय खोपरो अर अेक सौ अेक रुपिया धरता सरपंचजी री घरआळी बोली, ''नेड़ै-नेड़ै चोखळां मांय अैड़ी रूपाळी बींदणी कोनी आया सा, डाक्टरां रा तो भाग ई खुलग्या...!''

सरपंचणी सूं टेढी चालण वाळी अेक जणी इत्ती देर मांय ई सुहासिनी री सासू ठकुराणीसा सूं आंख्यां टमकारती बोली, ''सुणी है कै बीनणी रा बाबोसा माथै करजो घणो हुयग्यो हो जणा औ रूप थांरै पल्लै आय पड़्यो, साची है कांई ओ आ बात? दायजो दिरीज्यो है या लिरीज्यो है...?''

भरी लुगायां बिचाळै जाणै कोई बम रो धमाको कर दियो हो, क्रीत चीज हो या मिनख, जका रो मोल लाग जावै, पछै उणरो कैड़ो सन्मान, कैड़ी कदर! जका लोकचार, समाजू नियम आपरै समाज सूं निरवाळा या अबखा हुवै बांनै बिना सही गलत री पिछाण करयां नकार देवणो ई तो भारत रै आम जण-मन री रीत है।

ब्यांव रै कीं दिनां पछै ई डाक्टर प्रेक्टिस सारू पाछा स्हैर चल्या गया। डाक्टर रै हफ्तै-महीनै सूं गांव पाछो आवण रो सिलसिलो धीरै-धीरै मंधरो पड़तो गियो अर महीना कद बरस मांय बीतण लागग्या किणनैं ई याद कोनी रैयो। याचक ज्यूं कंवराणी भरयोड़ी आंख्यां सूं कागद-पत्री लिखती, पाछी ई अडीक राखती कै डाकियो कीं समाचार लावै, कदास डाक्टर नैं स्हैर सागै लेजावण सारू याचना करती, पण पाषाण हिरदै वाळै पुरुष रै अंतस तांई बा नीं पूग सकी।

कंवराणी सुहासिनी अबै हेली मायं अेकली रैयगी। सूनी हेली जाणै बटका भरती।

मूंडै जित्ती बातां कै स्हैर मांय डाक्टर कोई दूजी डाक्टरणी रै सागै गिरस्थी ठावी करली है। आं बातां मांय साच कित्तो हो, आ तो राम ई जाणै, पण हेली मांय सुहासिनी रो जीवण दूभर हुयग्यो हो। मोळी रैवती तो सासू रा बोल सुणना अर थोड़ीक बण-संवर जावती तो ई सासू रा मैंणा सुणना। बाकी कसर आड़ोस-पाड़ोस वाळी चाची-बायां पूरी कर देंवती।

दो-तीन बरसां पछै सुहासिनी खुद री सुध लेवणी सरू करी। खेतीबाड़ी री कमी नीं ही। कमी ही उणनैं संभाळण वाळा मिनखां री। पण सुहासिनी आपरी कमर कसी, ट्यूबवेल अर अनार रा बगीचा बटाईदारा नैं सूंप्या। रात-दिन आपरी निगैदासती मांय खेत, घर, बाड़ा, ध्रावां री सार-संभाळ सरू करी। बगीचै रो विगसाव कर'र गांव रा टाबरां सारू खेलण री जमीं त्यार करवाई। स्कूल री हर छुट्टी वाळै दिन टाबरां सागै रळमिल जावती, बां सूं बतियाती। बांरी स्कूल रा सबक पूछती, साफ-सफाई रो महत्त्व समझावती, टाबरां सारू नेड़लै कस्बै सूं ज्ञानवर्धक किताबां मंगवाती, टाबरा नैं खेलण सारू बैट-बॉल, फुटबॉल दिरवाती। हिंदी, अंग्रेजी अर संस्कृत रा सबद हुवो, लोक कहावतां हुवो या सिलोक अर सरगम हुवो, सैंग टाबरां नैं सिखावण री खैचळ

करती। टाबरा री मंडली ई सुहासिनी सूं घणी राजी रैवती। फळ-फूल, पंखेरू, जिनावर सैंगां रा नूंवा-नूंवा सबद अर भूगोल री नित नूंवी जाणकारी सूं टाबरियां आपरै ज्ञान री झोळी भरता जावता। टाबरां नैं गुड़-चिणा अर फळाहार करावती।

सुहासिनी रा सासूजी दिन लाग्यां बूढा होवता गिया अर अब बै फगत ठौड़ रो ठांव रैयग्या। बै ई देख लियो कै बांरो बेटो अबै स्यात ई पाछो आसी अर कदै-कदैई मन ई मन मांय अपणै आपनैं सुहासिनी री गुनैगार ई समझता, पण करमां माथै किणरो जोर चालै, जको बांरो चालतो।

अचुम्भो तो जद हुयो कै बालमंडली रो गणेसो अेक दिन पणघट सूं आवती आपरी बाई नैं रोक'र कैयो, ''अम्मा! प्लीज कम फास्ट, आई वोंट टू इट समथिंग, बिकोज आई एम हंगरी...'' गणेसा री अंग्रेजी मांय गिटर-पिटर सुण'र सगळी साथ वाळी लुगायां पल्लो मूंडै मांय लेय'र हाक बाक रैयगी अर गणेसा री बाई अंग्रेजी भासा नैं नीं जाणै कांई-कांई कैवण लागगी।

नैना-मोटा टाबरिया सारू सुहासिनी अबै आईमां बणगी ही।

आईमां रो सान्निध्य म्हां दोनूं भाई-बैन नैं ई खूब भावतो। म्हारा परिवारां बिचाळै रिस्ता सहज कोनी हा, तो ई म्हे दोनूं भाई-बैन बालमंडली मांय भैळा रळ ई जावता। बालमडंली रै खेल मांय ई अेक बार आईमां कुकरियै रै घाव माथै नीमड़ो घस'र लगावता अक्षय नैं डाक्टर बणबा रो सुपनो दिखायो हो। अक्षय री लगन नैं देख'र पछै काकीसा ई आपरै जीवण रो धेय ई इण बात रो बणाय लियो हो कै चायै कीं भी हुय जावै, अक्षय अेक दिन डॉ. अक्षय राठौड़ जरूर बणसी। इण धेय लारै काकीसा रो स्त्रीजनित ईसको ई हो कै जठै आपसूं कमती ठिकाणा रो टाबर यानी सुहासिनी रो धणी डाक्टर बण सकै तो म्हारो लाडेसर क्यूं नीं डाक्टर बण सकै!

कीं टेम पछै म्हारा पिताजी, जका सरकारी अधिकारी हा, बांरो तबादलो बडै स्हैर मांय हुयो जणै अक्षय बां सागै स्हैर मांय भणबा सारू म्हारी माईमां अर पिताजी सागै गयो, पण म्हैं गांव मांय ईज रैयी। माईमां सूं बेसी काकीसा री म्हैं लाडकी ही अर म्हारो ई मन बां सागै ईज घणो रळतो हो। काकीसा तो अक्षय नैं ई अळगो कोनी करता, पण अक्षय नैं डाक्टर बणावण सारू बै आपरै काळजा नैं वजर रो कर लियो हो।

आईमां म्हनैं अणूता ई मनभावता लागता हा। बांरी उठ बैठ, बातचीत रो लहजो, साधारण लहंगा-चूंदड़ी नैं इत्तै तरीकै सूं पैरणो कै म्हैं बस बांनै देखती जावती। बोली मांय अेक गैराई अर अदब अर बांरो मनपसंद मोतिया गुलाबी रंग, जको फगत म्हनैं ईज ठाह हो। बै म्हनैं अणूता ई व्हाला लागता हा।

आईमां मोतिया गुलाबी रंग री हरेक चीज नैं सहेज'र राखता। अेक दिन म्हैं पूछ्यो बांनै, ''आईमां, आपनैं औ मोतिया गुलाबी रंग इत्तो क्यूं पसंद है?''

बै बोल्या, ''जद ई म्हैं इण रंग रो कोई बेस पैरती, म्हारा मा'सा म्हारी निजर उतारता अर थुथकारो घालता कैवता कै पवितर मोती-सी सुहासिनी, मोतिया गुलाबी रंग री म्हारी परी।''

म्हैं अेक मोतिया रंग रो खिल्योड़ो गुलाब ई गमलै सूं तोड़'र आईमां री हथेळरी मांय रख दियो, गुलाब नैं आपरी हथेळी बिचाळै लेंवता आईमां री आंख्यां री कोरा आली हुयगी।

आईमां री देखरेख सूं ठाकुर काकोसा री घर, बाड़ी, खेत-खळां मांय लिछमी आपरो भरपूर वासो कर लियो हो। बा कैवै ज्यूं आईमां सागै ई लिछमी लावणै ई आई ही।

धान-चून, फळ-फ्रूट, साग-भाजी सूं खेत बगीचै री जमीन हरी-भरी दीखती। डावड़ी सागै जद सुहाग सिणगार कर आईमां आपरै खेत अर बागीचै मांय फेरो देवण जावता तो जाणै साख्यात लिछमी दीखता।

गांव-गवाड़ मांय इण रूप, गुण, ज्ञान अर वैभव सूं ईसको राखणिया ई कम नीं हा।

बैर राखणिया नैं मौको लाध ई जावै, कै कीकर ई कोई अेक गलती तो आईमां री साम्हीं आवै अर बै इण बात रो गूंगदो बणावै। नाडो-जाडो करण नै जावती आईमां री सासू नैं जहरीलो सांप लागग्यो। गांव भर मांय हाको मचग्यो हो। जित्ता मूंडा, बित्ती बातां कै बडी ठकराणी नैं तो डस'र तो सांप ई खोटी हुयो व्हैला, पण आईमां तो आपरा जतन करता ई हा। जित्तै ई कोई पान उतारणियै भोपे हरिनारायण रो याद दिरवायो कै काल ई तो गांव री कांकड़ माथै हरिनारायण नैं मंतर-जंतर बोलतां सुण्यो है। हरिनारायण मन लहरी मिनख हो। लोग कैवता हा कै उणरै हाथ नैं जस है, मरतै मिनख नैं बैठो कर देवै अैड़ी उण कनै विद्या है, पण हरिनारायण रो मन पाधरो हुवणो चाईजै। बिना मन बाढी पर ई नीं मूतै जैड़ो है। हर तरयां रो सांप-बिच्छू रो ज्हैर उतारण रो तो सिद्धहस्त हो। दान-दखिणा कीं नी मांगतो हो। देवै जिणरो भलो, नीं देवै उणरो ई भलो। भोळैनाथ रो पुजारी हो, सैंग उणनैं मानता देंवता हा।

पान लागण री खबर हरिनारायण नैं कोई कर दी ही। डीगै अर पतळै गठ्योड़ै सरीर रो धणी हरिनारायण ढाडी बधायोड़ो, गेरुआ गाभा पैरयोड़ो आपरी सध्योड़ी चाल सूं आंगणै मांय आयग्यो हो। जठै थोड़ीक देर पैलां आईमां री सासू नैं गंगाजळ मूंडै मांय देवण री खुसर-पुसर चालू हुयगी ही, बठै ई अबै भोपो मंतरयोड़ै पाणी सूं मन ई मन मांय कीं फुसफुसाट करतो सांप रो दंस उतारबा री खैचळ करै हो।

आध घड़ी पौर पछै आईमां रा सासूजी रो काळो पड़्योड़ो सरीर पाछो पीळी रंगत मांय दीखण लाग्यो। डोकरी आपरी आंख्यां खोली अर सैंग भैळा हुयोड़ा मिनख हरिनारायण भोपा री जै-जै कार करता पाछा बावड़ग्या।

इण सगळी खैचळ रै घड़ी भर पछै आईमां नैं चितार आयो कै भोपै नैं कीं दान-दखिणा तो दी ई कोनी! बै हेली री पोळ सू बारै निगै करी तो चौक रै चूंतरै माथै बैठ्यो आंख्यां बंद करयोड़ो भोपो अजै ई कीं मंतर-जंतर करता माळा फेरै हो। आईमां आखा सागै कीं रुपिया लेय'र खुद ई बां कनै गई अर दखिणा देंवती पूछ्यो, ''कांई मंतर धूणो हो बाबा?''

''सिद्धि मंतर है!'' गैरी आवाज मांय दखिणा स्वीकारतो भोपो पडूत्तर दियो।

''सिद्धि मंतर कैड़ा?'' आईमां उंतावळ मांय पूछ बैठ्या।

''संसार रो कोई भी काम अभिजीत होय सकै, अैड़ा मंतर...'' ठंडी अर गैरी आवाज सागै ई पाछो पडूत्तर मिल्यो।

कीं छिण रै अटकाव पछै, सोच मांय ई सोचता आईमां रै मुंडै सू निकळग्यो, ''कोई सिद्ध बसीकरण मंतर जाणो बाबा!''

भोपा री आंख्यां मांय अबखी-सी चिमक आयगी।

कीं दिनां पछै ई अमावस री रात नै आपरै डागळै री सूनी दुछत्ती माथै परदै री ओट मांय गोबर सूं आंगणो नीप'र आधी रात नै सिंदूर, सुपारी, धूप-दीप सजा'र आईमां मंतर जापण सारू बैठा हा।

मिनख नैं जद जींवता लोगां सूं संबळ नीं मिलै जणै बै पारलौकिक शक्तियां सूं आपरी पीड़ री पुकार करै। जीवण रै किणी छिण मांय आदमी अपणै आपनैं मानसिक रूप सूं इत्तो टूट्योड़ो अर हार्‌योड़ो-सो मैसूस करै कै उण पछै उणनैं सही-गलत री समझ खतम हुय जावै। विश्वास, अविश्वास सूं ऊपर उठ'र फगत अर फगत आपरै अभीष्ट री चिंत्यां करतो बो कदास अैड़ो ई कदम उठावै जको उणरै व्यक्तित्व सूं मेळ नीं खावै, पण आ चित्त री अेक दशा हुवै अर उण टेम जको चित्त करावै बो करै। टेम इण रा आछा-भूंडा परिणाम टेम आयां ई दिखावै।

डाक्टर तो आगला पांच बरसां तांई ई गांव साम्हीं मूंडो कोनी करयो। पण उण अमावस री रात पछै डावड़ी पाड़ोस वाळी नैं कैवती सुणीजी कै छोटी ठुकराणी कमरै सूं आधी-आधी रात नै जंतर-मंतर करती दीखै है।

बेगा ई बातां रा चटकार हुवण लाग्या। बात लुगायां मांयकर मोट्यारां तांई अर गांव री गुवाड़ी तांई दब्यै-छिप्यै मूंडै हुवण लागगी।

गांव-भर में आईमां सारू संशय रो माहौल बणण लागग्यो। बालमंडळी मांय जावता टाबरां री तो घरै पूग्यां पछै सामत ई ही, पण अगन मांय पूळो आगली बात सू नाखीजग्यो हो।

गांव रै रत्ती काकै रै घरां बेटी रो ब्यांव मंड्यो, सुणीज्यो कै खूब लाव-लश्कर वाळी जान अर जानी आया है। धूमधड़ाको, डीजे नाच सागै गाडियां री रेलमपेळ। जान अर बींद देखण रो कोड अर कन्यादान देवण रै लालच सूं आईमां ई रत्तीराम रै घरै दूजी लुगायां सागै आया। कंवर कलेवो करतै बींद नैं देख्यो, आंख्यां मांय अचुम्भो हुयो कै फगत पच्चीस साल री मीना रो पैंतीस-सैंतीस साल रो बींद। पण पछै गांव रै रीत-रिवाज अर रत्तीराम री आर्थिक दसा नैं याद कर नैछो करयो कै कीं नीं, बालविधवा छोरी नैं पाछो घर ई मिलै, आ ई सुख री बात है।

पण नीं, बै आपरी गलतफैमी मांय हा?

माया आगै पीढा माथै गाभा री कोथळी हुयोड़ी रत्तीराम री बारह बरसां री छोटी बेटी सीमा बैठी ही... काळजो निकळ'र हाथ मांय आयग्यो आईमां रो।

ठाह पड़्यो कै रजस्वला हुवण सूं पैलां जकी छोरी रो कन्यादान मायत कर देवै, बांनै हजार गऊ दान रो धरम हुवै अर मीना तो बालविधवा है, उणरो ब्यांव तो होय ई कोनी सकै! ...सागै ई बरात दिनूगै सूं पैलां ई रवाना करणी है, चूंकि लारै बींद रा दादोसा री हलक-चलक ठीक कोनी, बै ओछी सांसा लेवै है।

आईमां आया जका पगां ई पाछा बावड़ग्या। अेन फेरां सूं पैलां दस-बारह पुलिस वाळा चंवरीयां रै कनै हा।

बारह साल री छोरी रो छत्तीस साल रै मोट्यार सूं ब्यांव कोनी कराईजै, पंडितजी हरिनाम जपता कणां टेंट सूं बारै भाजग्या, किणनैं ई पतो कोनी लाग्यो। बराती ई आप-आपरो रस्तो नाप लियो। रत्ती काका अर बांरै ब्याईजी थोड़ीक तीन-पांच करी जणां बांनै थाणै लेजावतां पुलिस वाळा जैज कोनी करी।

घर भर मांय रोवण-पीटण सरू होयग्यो। रत्ती काकै री घरआळी पाणी पी-पी'र आईमां नैं कोसण लागी, ''काळौ मूंडो हुवै थारो, कठैसीक आई अर म्हारी छोरी रै करमां रै आडी फिरी, निरबंस रैवै थूं, थारी हेली मांय कबूड़ा बोलता रैवै...!''

अैड़ा अबढा बोलां सूं रत्ती काकी आपरो आफरो झाड़ण लागी। बठीनै छोटकी सीमा आपरो जरी वाळो बैस उतार फेंक्यो अर पेट मांय मिठाई ऊर'र मीना जीजी रै पासै बोली-बोली चिप'र सोयगी। अब बीं नैं भायल्यां सूं सुण्योड़ै पैली रात री अबखी बातां सूं डर कोनी लागै हो, ठाह नीं ब्यांव पछै छोरियां सागै कांई हुवै, उणरी मामा री छोरी रै तो कड़ियां कनी सूं लोच अैड़ी पड़ी कै बापड़ी बैंवती लचक खावै, कुसुमड़ी नैं तो ब्यांव रै तीजै दिन ई स्हैर रै अस्पताल लेजावणो पड़्यो, नीं तो लायण लोहीझाण हुयोड़ी बिस्तर सूं ई नीं उठ सकी। अर बा कमली, बा तो ब्यांव रै दूजै बरस जापा मांय ही! सोच'र ई सीमा रो रूं-रूं कांपग्यो अर बा मीना जीजी नैं बाथां मांय कस'र आपरी आंख्यां बंद करली।

मिनख कीं भी कैवै, आज आईमां उणनैं बैरा मांय पड़ण सूं बचायली, अर महीना भर पछै सीमा पाछी भणबा ई जावण लागगी।

गांव-गवाड़ मांय जित्ता मूंडा बित्ती बातां। कोई कैवतो कै थाणै रो थाणेदार सुहासिनी रै रूप जादू मांय आय'र आ कारवाई करी है, नीं तो अैड़ै कन्यादान नैं कुण गलत कैवै। आज सूं पैलां तो कोई ब्यांव रोकण सारू गांव मांय पुलिस आई कोनी? कोई कैवै भोपा कनै सूं टूणा-टोटका सीखगी है आईमां, याद कोनी, कीं बरसां पैली कियां अमावस री रात नै होम हवन करती ही। लूण-मिरच लगाणिया तो औ भी कैवण लागग्या कै आधी-आधी रात नै मसाणां मांय मंतर करण सारू जावती सुणीजै आ डाकण।

इण पछै अेक दिन आपरा खेतां नैं संभाळण सारू जावती आईमां रै गांव-गळी री लुगायां आडी फिरगी। बै बांनै ओळमा देवण लागी। कीं ताळ तो आईमां बां अणपढ लुगायां नैं समझावण री खैचळ करी, पण जद देख्यो कै कोई भाव बै लुगायां मानै कोनी अर गाळ काढणी अर ठोका-मारू करण नै संभगी जणां आईमां ई हाथ मांय लट्ठ लेय'र साम्हीं मंडग्या अर सैंगां नैं ललकारता बोल्या, ''खबरदार, कोई नैड़ी आई तो, अठैई भोगना दोय कर देवूंला अर म्हारै गांव मांय रैवतां जे कोई नाबालिग छोरी रो ब्यांव मांड्यो कै स्कूल भेजणो बंद करायो तो म्हारै सूं भूंडो कोई नीं व्हैलो...।''

आईमां रो अैड़ो रौद्र रूप देख'र सैंगां रै काळजां मांय धैळ बैठगी।

इणी बिचाळै अेक धमाको और हुयग्यो। नेम-धरम निभावण वाळी आईमां काती रै महीनै मांय पुष्कर सिनान करण सारू गई ही। अचाणचक बठै मंगतां री भीड़ मांय सोहनराम री मां नैं बैठी देखली। डोकरी अेक गांठड़ी बाथां मांय लियोड़ी बैठी ही। औ कांई चक्कर है! सोहनराम तो दो बरसां पैली गांव मांय आय'र कैयो हो कै मां नैं पुष्कर लेयग्यो हो, पण बठै दंगो हुयग्यो अर उण अफरा-तफरी मांय ई मां राम करगी। भगदड़ मांय ल्हास रो तो कादो हुयग्यो, जणां बठैई दाग देय'र घरै आयग्या अर बारह दिन कर दिया। सरकारी मुआवजो ई मिल्यो हो डोकरी री मौत रो, पण अठै डोकरी तो सैंद-रूप बैठी है। आईमां नैं अचुम्भो हुयो। डोकरी कनै जाय'र ओळखाण दी तो डोकरी झट्ट देणी छोटी हेली री बीनणी नैं ओळख ली। डुसका भरती डोकरी बांरै सागै गांव जावण री मंछा करी। डोकरी बतायो कै बेटो-बहू मिंदर रो पगोथियां माथै, 'अबार आवां' इयां कैय'र गिया जको अजै तांई कोनी आया, आज थनैं देखी जणै जी में जी आयो।

आईमां डोकरी नैं लेय'र सीधा सोहनराम रै बारणै पूग्या। सोहनराम रै घरवाळा अेक बार तो हाकबाक हुयग्या, पण पछै डोकरी नैं ओळखण सूं ई नटग्या। डोकरी गांव रै मिंदर मांय ई बैठी रैसूं, इयांन बोली, पण डोकरी रा बेटा-पोता इण सारू राजी नीं हा। बै डोकरी नैं गांव मांय ई राखणी कोनी चावै हा। सोहनराम रै घरआळी लुगायां काना रा कीड़ा झड़ जावै अैड़ी-अैड़ी गाळियां आईमां नैं देवण लागगी। पंचायत बैठी, पण पंचायत रो ई नकटां रै आगै कीं जोर चाल्यो कोनी। आईमां डोकरी नैं आपरी हेली मांय लेय'र आयग्या, पण आवतां-आवतां सोहनराम अर बीं री घरआळी नैं चेता'र आया कै मायतां री हाय भूंडी हुवै। पुरसै जैड़ो जीमणो पड़ैला, चेतै मांय सोच'र राखजै।

आगै पौ महीनो उतरतां ई सोहनराम री बेटी रो मुकलावो तय हुयोड़ो हो। डोकरी सागै करी जकी बातां गनायतां तांई पूरी पूगै उणसूं पैला बै छोरी रो मुकलावो कर'र घरै भेज देवणो चांवता हा अर दूजी बात आ ही कै छोरी ग्राम पंचायत मांय लाग्योड़ै अेक नीची जात रै छोरै रै चक्कर मांय चढगी ही। अैड़ा माड़ा समाचारां री खुसर-फुसर गांव मांय होवण लागगी ही। घर री साख माथै ओज्यूं बट्टो बैठै इणसूं पैलां सोहनराम आडी पाळ बांधणी चावै हो।

उंतावळ मांय गनायतां नैं बुलाय'र छोरी नैं चूड़ो पैराय दियो अर बिदाई कर'र सोहनराम नैछा री सांस ली। पण जोग टळणो सारे थोड़ी हुवै। समाचार आया कै जमाई पांवणा री मिनी बस रै पाछी बावड़ती टेम मारग मांय अेक बोलेरो आगी-पाछी, आडी-डोडी हुवती ही अर इणीज चक्कर मांय पुळियै माथै गाडी रो बैलेंस बिगड़ग्यो अर गाड़ी पलटगी। दो जणा तो बठैई राम करग्या अर बेहोस हुंवतै-हुंवतै जमाई अधमींची आंख्यां सूं लाडी नैं बरी फेंक दूजा गाभा पलट'र उणीज बोलेरो मांय जावती देखी।

अैड़ो अबखो काम आज सूं पैलां गांव मांय हुयो कोनी हो अर आपरी छाती ठोक-ठोक'र रोवती सोहनराम री लुगाई नैं नीं जाणै कुण आईमां रो सराप चेतै अणाय दियो हो अर दांत पीसती-पीसती सोहनराम री लुगाई सुहासिनी नैं बद्दुआ देंवती-देंवती बेहोस हुयगी अर सागै ई गांवआळां रै मन मांय औ तय हुयग्यो कै आईमां टूणा-टोटका करत्या जणा सोहनराम सागै अैड़ी भूंडी हुई।

अैड़ी बातां सूं नफो उठावणियां री इण संसार मांय कमी नीं है। आईमां रै खेत अर बगीचै रै आसै-पासै रैवण वाळा परसाराम, कमलसिंह अर भीखाराम आप-आपरै खेतां री मेड़ नैं आईमां रा खेतां मांय बधावणी सरू कर दी। कठैई बाड़ बांध'र रस्ता रोकण री बात, तो कठैई खेत री पाळ तोड़'र बांरी जमीन हड़पण री खैचळ। कोई खेत सूं रातूंरात खेजड़ी बाढ'र लेयग्यो, तो कोई बाड़ मांय सूं बळीतो ई चोरग्यो। आईमां आपरी हिम्मत सारू हुवण आळा नुकसाण नैं रोकण री खैचळ करती, थाणै मांय अेफआईआर तक करवाई। आरआई अर पटवारी नाप-चोप कर खेतां री बाड़ बंदी हटवाई पण तो ई गांवभर रै अेकै सागै विरोध रै कारण कीं दिनां पछै ई पाछी खेत-बाड़ै री जमीन पाछी हड़पण री आफळां हुवती रैयी।

सैंगां नैं लाग्यो, जाणै आईमां हारगी। सोहनराम री लुगाई हाथ नचा-नचा'र बोलती, ''भगवान रै घरै न्याव जरूर हुसी!'' रत्तीराम री लुगाई आपरो राग न्यारो उगेरती, ''टूणा-टोटका काम कोनी आवैला, म्हारी बापड़ी छोरी रो कन्यादान कोनी हुवण दियो नीं, डाकण कठैई री!''

पण सैंग अंदाजा धरग्या रैयग्या...

चेत रा नौरतां पछै परसै रै छौरै रै माता निकळी अर उणरी आंख्यां री रोसनी साव ई कम हुयगी। कमलसिंह नैं लकवे रो असर हुयग्यो अर भीखाराम रै घर री छान अचाणचक टूटगी! कोई री ऊभी खेती बळगी अर कोई रै नौकरी मांय तकलीफां हुवणी सरू होयगी।

गांव-घर-गवाड़ी, पणघट, सैंग जग्यां अेक ई बात री चरचा हुवती कै जको-जको आईमां रै आडी देवण री या बुरो करण री कोसिस करी, कै सैंग आज दुख पाय रैया है।

गांववाळा आईमां सूं अबै डरण लागग्या हा, कोई साम्हीं चला'र आपरै करमां री गलती कोनी मानी, पण मन-ई-मन मांय सैंग आ मानण लागग्या हा कै आईमां मांय कीं अणूती शक्तियां है। उण पछै गांव मांय कोई छोरी रो ब्यांव अठारह बरसां री हुयां पैली कोनी हुयो अर न ई कोई आपरा मायतां नैं पुष्कर मांय छोड'र आया। पण अपरोख रूप मांय आईमां गांव रै हरेक मांगळिक अर समाजू काम सूं अळगा करीजग्या हा। तीज-तिंवार माथै लुगाया मिंदर या पीपळ री पूजा माथै आईमां नैं देख'र डर सूं या रीस सूं बिदक जावती अर बां सूं अळगी-अळगी रैवती।

बांरी सासू, जकी गांव री लुगायां री पंचायतां री प्रमुख व्हैती, अब बांनै ई कोई कोनी पूछती। म्हनैं ई आईमां कदैई साम्हीं दिख जावता तो ई काकीसा री आंख्यां री रीस याद कर'र म्हारी हिम्मत कोनी पड़ती कै बां सूं कीं बात कर सकूं। बांरै मन री बेचारगी अर खदबदाहट म्हैं समझती ही, पण म्हैं ई मजबूर ही।

साल बीततां-बीततां बांरा सासूजी राम कर दियो, पण कुलजमा आठ-दस मिनखां सूं बेसी मिनख मरणै माथै कोनी गिया हा। खुद बांरा पति डाक्टर साब स्हैर सूं आया, पण तीजै रो छांटो देय'र बै ई स्हैर पाछा बावड़ग्या।

धरम-करम सूं आईमां आपरी सासू रा बारह दिन करिया। बांरै अडीकियां पछै ई न्यात जीमण सारू चिड़ी रो बिचियो ई कोनी आयो अर सैंग बणायोड़ो बारवा रो खाणो आईमां स्हैर रै अनाथ आश्रम सारू भेज दियो।

गांव मांय औ सब चालतो रियो हो अर कोई भी अबखी बात अगर गांव मांय हुंवती तो उणरी भूंड रो ठीकरो आईमां माथै ईज फूटतो।

गलती सूं बांरै बागीचै मांय खेलण वाळा टाबरां नैं छींक ई आय जावती तो इणरो दोस आईमां रै टूणै नैं दियो जावतो अर पंडितजी नैं इग्यारै रुपिया दखिणा देय'र निजर उतरारीजती। सगळै गांव सारू बै टूणो करणवाळा घोसित हुयग्या हा अर खुलेआम सगळा बांनै डाकण कैवा लागग्या। ईं अेक सबद लारै सुवारथी मिनख आपरो सुवारथ साधता अर बांरै बगीचै रै आसै-पासै ई बाड़बंदी कर दी, यूं कैय'र कै छोटा टाबरां सारू रुखाळी है, पण मूळ बात आ ईज कै आईमां नैं आपरै खेतां मांय जावण सारू ई घणो पैंडो करणो पड़ै।

आईमां कद तांई सैंगा रो सामनो करती, कद तांई सैंगां रो विरोध झेलती। अबै हेली मांय फगत आईमां अर अेक पुराणी डावड़ी रैयगी ही।

डाक्टर साब गांव रो मारग भूलग्या हा अर गांव-सरपंच री खोटी नीति रो विरोध आईमां करयो तो बै उल्टो बांरै हाळी सूं ई बांरो नांव जोड़'र बांनै बदनाम करण सारू पूरी ताकत लगाय दी।

बडी सूं बडी लड़ाई लड़ण वाळी आईमां जद आपरै पल्लै चरितर री बदनामी देखी तो बै अेकदम चुप हुयग्या, फगत ईश्वर साम्हीं दया रा हाथ उठावतां इत्तो ई बोल्या कै अबै म्हारो न्याव ईश्वर ई करसी, पण बै हार तो तोई कोनी मानी ही। मुकदमै री पेसी माथै जावता, गांव री किणी पण गलत बात रो विरोध जरूर करता। गरीब-गुरबां रै हक सारू आठूं पौर त्यार रैवता, पण निकम्मा अर सुवारथी मिनखां रै दंद-फंद सूं बै समाज रूप मांय तो जाणै न्यात बारै ई है, अब कीं बीमार ई सुणीजै, पण कोई बां सूं मिलण नै कोनी जावै है।

विगत री स्मृतियां मांय उतरतां ठाह ई नीं पड़ी कै कणै सूरज भगवान आपरै घरै आराम करण नै गया परा अर रातराणी री सौरम आंगणै मांय उतरगी ही। सगळी बात सुण'र अक्षय हाको-बाको रैयग्यो हो। म्हैं उणनैं उणरा विचारां सागै ई छोड'र काकीसा साम्हीं बावड़गी।

दूजै दिन दिनूगै ई अक्षय कीं काम रो कैय'र घर सूं निकळग्यो अर सांझ ढळ्यां पाछो आयो। म्हारै पूछण पर हंस'र बात टाळ दी, पण ब्याळू री बगत नीं जाणै नायण मां काकीसा नैं कांई कैयो कै बै अेकदम रीस मांय आयग्या अर अक्षय नैं कैवण लाग्या, ''अैड़ो थारै बा कांई कर दियो लाडेसर जको थूं आज उण डाकण कनै गयो। म्हारै मना करयां उपरांत ई आज पूरै दिन उण कनै ई हो, कांई म्हारी बात रो कोई काण-कायदो कोनी बेटा थनैं!'' अणूती रीस करण सूं काकीसा रो ब्लडप्रेशर बधग्यो अर बै बेचेत-सा हुयग्या। अक्षय बिना कीं बोल्या काकीसा रो इलाज करतो रैयो अर सारी रात बांरै पगांथियै ईज बैठो रियो।

हफ्तै बाद ई अक्षय अेक कागदां री फाईल काकीसा रै हाथ मांय रख'र बांरी आंख्यां मांय तिरता सवालां नैं छोड'र बारै बावड़ग्यो।

काकीसा सानी कर'र म्हनैं कागद बांचण रो इसारो करयो। म्हैं फाईल खोल'र देखी तो स्टाम्प माथै लिख्योड़ो हो कै श्रीमती सुहासिनी राठौड़ आपरै बगीचै रै कनै री पांच बीघा जमीन अक्षय राठौड़ नैं अस्पताळ बणावण सारू दान मांय देय दी है।

काकीसा जाणै सूना हुयोड़ा ऊभा ई रिया।

दोपारी मांय म्हैं पाछी सासरै जावण सारू ब्हीर हुयगी। आईमां रै बागीचै कनै सूं निकळती देख्यो, बांरै बगीचै रै आसै-पासै माडाणी बणायोड़ी बाड़ हटगी ही अर कनै वाळी पांच बीघा जमीन नाप'र जेसीबी सूं समतल कराई जावै ही अर बाउंड्री बणावण री त्यारी चालै ही। अक्षय नैं देख'र मजदूर भाई जोर सूं राम-राम करया अर म्हारो बीरो ई मुळक'र हाथ ऊंचो करतो बांरी राम-राम रो पड़ूत्तर दियो।

म्हैं अचुम्भै सूं अक्षय साम्हीं जोयो। अक्षय मुळकतो-सो म्हनैं आईमां री हेली साम्हीं सानी कर'र कीं देखण सारू इसारो करयो। म्हनैं हेली रै डागळै माथै मोतिया गुलाबी गाभा पैरयोड़ी अेक मूरती रो दरसाव हुयो। म्हारी आंख्यां मांय खुसी रो पाणी आयग्यो अर भीज्योड़ै अंतस सूं म्हैं मुळक'र दोनूं हाथ प्रणाम करण सारू जोड़ दिया अर आंख्यां सूं दिखी जित्तै उण मूरत रा दरसण लेंवती रैयी।

टेसण माथै म्हैं अक्षय नैं पूछ्यो, ''काकीसा कैवता हा कै अस्पताळ सारू आपां री जमीन ई काम ले सकतो हो नीं बीरा, औ सैंग क्यूं करो... ?''

अक्षय पडूत्तर दियो, ''क्यूं कै इण तरियां इण गांव सूं अंधविश्वास री बीमारी नैं आपां दूर कर सकां हा जीजा। आईमां आपांणी नीं है, पण आपां सारू आपा री मां री डोढ है। आपां कद तांई बां सारू अैड़ी अबखी बातां सुणता रैवांला, कोई नैं तो खैचळ करणी पड़सी नीं जीजा! आप जाणो हो, म्हैं अस्पताळ रो नांव कांई सोच्यो हूं...''

म्हैं फगत अचुम्भै मांय ही!

''सुहासिनी अस्पताल एंड हेल्थ केयर... अठै बिल्कुल मुफत इलाज हुसी। अेक-दो अेनजीओ सूं बात करली है। म्हारै सागै रा डाक्टर दोस्त भी इण प्रोजेक्ट सारू खूब उत्साही है। आप देखजो जीजा कै कीं टेम पछै अठै री सारी आबोहवा ई बदळ देणी है। अरे हां! आईमां आप सारू कीं भेंट दी है, आ लो...'' अर अक्षय म्हारै हाथ मांय अेक गोटो जड़्योडी कोथळी पकड़ाय दी।

अक्षय टेसण रै टिकट काउंटर कानी बावड़ग्यो। म्हारै सागै आया ड्राईवर अर अेक हाळी गाडी मांय सूं सामान उतारबा लागा। म्हैं जतिन नैं फोन करण सारू निकाळ्यो, इत्ती देर मांय म्हारै कानां मांय ड्राईवर अर हाळी री बातां रा सबद सुणिजिया :

''लागै है बन्ना माथै ई टूणो असर कर दियो है। डाकण रै असर सूं कोइ नीं बच सकै रे!''

''साची रे, उणरै टोटकां रो काट दोरो भाई!''

म्हारो मन कड़वाहट सूं भरीजग्यो। नीं जाणै आईमां नैं और कित्तो औ किरोध रो दंस झेलणो पड़सी। पण उणीज बगत साम्हीं सूं अक्षय आवतो दिख्यो—आतमविश्वास अर मजबूती सूं हळाबोळ।

म्हैं हाथ मांयली कोथळी नैं खोल'र देखी। उण मांय ताजा-ताजा मोतिया गुलाबी गुलाब आपरी पूरी रंगत सागै मुळकै हा। म्हारै उदास होठां माथै नैछा री अेक मुळक आयगी... आंख्यां साम्हीं मोतिया गुलाबी आभ सागै लिपट्योड़ै आईमां री निछळ मूरत तैरगी। कानां मांय बांरा सबद गूंजण लागगा :

''पवितर मोती-सी सुहासिनी, मोतिया गुलाबी रंग री परी...''

◆◆

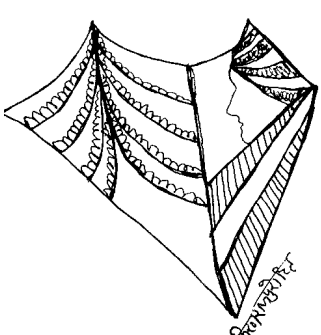

हेमलता दाधीच

सुगनां

लूमझूम गैंणां में झूमती बा रंगीली गणगौर, माथै ऊपर यूं भळका मारती मोटी सोना री रखड़ी, सूंटा जस्या तीखा नाक मांय नीचै लाल लटकती बा मोटी नथ बीं नैं मेळां री पदमणी रो रूप देवै। कानां रा कर्णफूल तो बीं री नानी री सैनाणी। कर्णफूल री करणां उणरी रूपाळी सूरत ऊपर सब नैं रिझावा रो काम करती। गळै रो मंगळसूत्र तो जाणै घर रो मंगळकळस हुवै, इतरो भारी कै उणरै आगै राणीहार भी पाणी भरै। उणरै लारै रूपाळी टूसी उणरी सारस जैड़ी नाड़ में चार चांद न्यारा उगावै। हाथां रा गजरा री सौरम न्यारी। गजरा रै मांय-बिचाळै रंगरंगीली चूड़्यां पूरा गांव री लुगायां नैं लुभावती अर लुगायां पूछती कै या तो रातै घणी तपती करती होवैला जद बा हाथां नैं मलकाती नांवेक मुळकती अर आंख्यां में समझा देंवती। कुणी सूं ऊपरै महादेव रै गळै रा भुजंग सो तीन पळेटा खावतो टड्डो उणनैं पूरी अेक पईसावाळा घराणै री नूंवी-नवेली बींदणी साबित करै। पतळी कमर में भारी-भारी झूमरियां वाळा कंदोरा री लड़ियां जद बा चालै तो यूं बाजै जाणै मिंदर री पूजा री घंटियां बाजती हुवै। पगां री भारी बिच्छूड़ियां अर पगांमांय छमकती जोड़ तो उणरै आवण-जावण रो हवालो देंवती रूपाळा रूप माथै रूपाळी चूंदड़ री ओढणी अर घेरदार लहंगा अर हरिया रंग री चोळी या मोटी लाल टिली कजरारी आंख्यां मांय काजळियै री कोर फूल री पांखड़्यां जस्या राता होट काळा केशां आगै काळी बादळी भी लजावै।

इण रूपाळी गणगौर रो नांव हो—सुगनां।

सुगनां भंवरलालजी रै पांच बेटां पछै घणा जतनां सूं जलमी बेटी। घर में सब री लाडली। भोजायां काम करै, बाईसा आराम करै। घर में ई उणरी मुळकाण, उणरी बातां बन री चुरकली ज्यूं चिं-चिं सगळां रा कानां मांय रस घोळै।

मायड़-बापू लारै-लारै आखै गांव री लाडली सुगनां नैं दादोसा कैवता, ''अे सुगु, कठै गयो म्हारो बेटो...।''

''कांई दादोसा, तीन आखर रा नांव नैं ई तोड़-मरोड़'र दो आखर रो बणाय दियो दादोसा?''

मुळकता तो सगळा अेकै सागै दांत काढ़ता।

47, नाइयां री तळाई, सती साधना मिंदर, उदयपुर (राज.) 313001 मो. 9462677904

 ISSN : 2320-0995

बेटी कितरी भी जीव री जड़ी हुवै, अेक न अेक दिन तो परायै घरां जाणो ईज पड़ै। मां कैवती, ''म्हारी लाडो रै चांद जिस्यो कुंवर आवैला। हाथी रै होदै बैठ'र तोरण मारैला, भोजायां मंगळ गीत गावैला अर बो मोतियां सूं मूंघो दिन भी आयग्यो।

ब्यांव रो भारी जळसो। मानखो मावै नीं। कीड़ीनगरै ज्यूं मिनख तीन दिन तांई जीमण छत्तीस साइना बत्तीस भोजन। गांवव रो घुमक्कड़ो धन्नो बोल्यो, ''म्हैं तो आंगळ्यां चाटतो ई रैयग्यो, जोरदार पकवान बणाया'', तो पन्नो बोल्यो, ''घणा दिनां पछै अस्यो जीमण देख्यो। म्हूं तो अेक ई मिठाई रो नांव न जाणूं। आपां नैं तो खाबा सूं काम।''

जित्ता मिनख, बित्ती बातां। रूपाळा जंवाईराजा, गीतां री रमझोळ अर विदाई री घड़ी। कंकु, कमला, गीता, सीता, पिंकी, रिंकू, नेहा, सीमा, रेखा साथणियां अर घरवाळा, परिवारवाळा सब रै नैणां मांय गंगा-जमना रा धारा चाल रैया।

सुगनां राजसी ठाठ सूं विदा होयगी। सासरै मांय स्वागत, मंगळकळस उठेलती या लजवंती नूंवै आंगणै मांय पग मेल्यो। मूंडै मांय न जाणै कित्ता लाडू फूट रैया हा।

सुगनां उण मूंघी रात री बाट जोय रैयी ही जकी रात हरेक कंवारी डावड़ी नैं अेक संपूरण लुगाई, अेक जोड़ायत रा नांव री उपाधि सूं नवाजै। पण उण रा सोळा सिणगार निरखण वाळो न जाणै कठै कुणनैं निरख रैयो हो। सुगनां री आंख्यां मांय नींद आपरो डेरो जमाबा आयी। सुगनां री उनींदी आंख्यां कोई आय'र उणनैं बाथ मांय भरली। अेक-अेक गैंणा उतार'र उण तपती धार मांय बिरखा री बूंदां जिसी सौरम देंवतो उणरो हेत रो प्यालो।

सुगनां नैं आज ई ठाह पड़ी कै मरद अर लुगाई रो मिलण ई जीवण री फुलवारी नैं महकाय सकै। यो मिलण ई इण बाग में हेत री सौरम रा फुलड़ा खिलाय सकै अर बा हेत रा हिंडोळा में हींडण लागी। मरद अर लुगाई री जोड़ी अेक गाडी रा दो पेड़ा। अेक पर या कोनी चाल सकै। रामजी म्हांकी जोड़ी सलामत राखजै। थे म्हांनै पूरी जिंदगी भर लेरा राखजो म्हारा भरतार।

''तुम कैसी बातें करती हो पागलों जैसी?''

सुगनां उणनैं लपक'र काठो पकड़ लीधो, पण दो पांच दिनां पछै धंधा रो नांव लेय'र उणरो घरवाळो सगळा घरवाळां नैं मीठी गोळी देय'र यूअेसअे परो गयो।

नैणां मांय आस रो दिवलो जोय आज भी ''कद पधारोला?'' पूछती रैवै,पण सुगनां रो घरवाळो न तो जबाब देवै अर न बात करै। उमर ढळ'र सुगनां री काळा केशां री लटां धोळी पड़गी। सुगनां तो घरवाळा रा लाड में पांच पाटी भणी, पण आपणा हेत री निसाणी नैं सुगनां डॉ. बणाय मां अर बापू दोयां री जिम्मेदारी नैं पूरी कीधी।

नीं जाणै कितरी सुगनां इण दरद सूं आपरी जिंदगाणी नैं खतम कर देवै अर कितरी इण धोखो देवण आळा मिनख री थाणै में रिपोर्ट दर्ज कराय न्याय रो डंको बजावै। बिना लुगाई रै घर तो घर नीं लागै। मिनख भलांई भमतियां ज्यूं भमतो फिरो। या तो बा सौरम है जो बिना इतर के दो घरां नैं महकावै। आपरी जान नैं जोखम में न्हाख'र अेक टाबर नैं जलम देवै जदी तो कैवात है— नारी दो जलम लेवै। अेक तो बा मां रा गरभ सूं बारै निकळै जदी अर दूजो बा मां रो रूप धारण करै जदी। आजकाल तो डाक्टर री लापरवाही सूं केई सुगनां उण नान्या-सा जीव नैं जलम देय'र उण काळजै री कोर रो उणियारो भी नीं देखै।

...तो कैय सकां कै धरा अर धराणी री धीरज री होड आगै सब पाणी है। आज या काल या गुजरिया काल री बात करां तो नारी कदै पदमणी, कदै लक्ष्मीबाई तो कदै पन्ना धाय, जीजाबाई, सीता, सावित्री, अनसूया, द्रौपदी, उर्मिला, मैत्रयी, मंदोदरी, गंगा, गीता कितरा नांव गिणावूं। जळसेना, थळसेना, वायुसेना, इतिहासस, इकोनॉमिक क्षेत्र, साहित्य, राजनीति में अर कोई भी असी जगा कोनी जठै बा आपरी ओळखाण रो झंडो नीं फहरायो।

अबै इण सुगनां रूपी नदी जो गेलो देख आपरो रुख कर लेसी, न तो या सबदां रा मणियां में समावै अर न या लेखणी री उपमा में ढळ पावै। इण नदी री ठाह तो भगवान भी नीं लगा पावै तो मिनख रनी कांई मजाल। विस्वामित्र अर कामदेव, रावण अर दुष्यंत, राजा री लिस्ट तो घणी लांबी। राजकाज सब भूलग्या तो इण नदी रो रुख इणरी गैराई कुण भी नीं माप सक्यो। कदै या कळकळ रो मीठो नाद कर मनड़ै नैं सीतलहर में रमाय देवै अर कदैई या जीवड़ा नैं धक-धक कराती उफाण रो रूप लेय लेवै। पण इणरो उफाण भी अर इणरो कळकळ रूप भी स्थाई नीं रैवै। नीं जाणै कितरा रूप धारण करती, कदै ऊंचा मगरा सूं उतरती न जाणै कितरी घाटियां सूं लुढकती या सुगनां रूपी नदी सूखा मैदानां नैं हरिया करती, कितरा मैला-कुचैला बगदा नैं आपरै लारै बहा ले जावै अर पाछी रूपाळी-ऊजळी होय काच जिस्या रूप में मुळकती आपरी ई धुन में चालती रैवै। आपरै मनड़ै मांय सागर सूं मिलण री आस में सागर सूं मिल आपरी ओळखाण भी गमाय देवै। साची ई है, यो समरपण ईज तो इणनैं सागर सूं भी महान बणावै अर सागर भी उणरै समरपण माथै नत-मस्तक होय जावै। कदैई मिरगानैणी बण बालम नैं लुभावै। कदी झांसी री राणी बण जावै, तो कदैई मोम-सी नरम तो कदैई टेम आया काळी रो रूप धर दुस्मण नैं मार भगावै। हे धरा, थारा रूप रो पार कोई नीं पावै।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

डॉ. अनिता वर्मा

गरम कचोर्‍यां

कोरोना-काळ रै चालतां घणा दिनां सूं लॉकडाउन चाल रैयो छै। कांई बडा अर कांई छोटा, सगळा मिनख परेशान हो रैया छै, सब पे कोरोना की मार पड़ी छै। सारा मिनखां की हालत खराब होरी छै। आज म्हैं रसोई में काम समेटबा लाग री छी।

बाहर सूं आवाज सुणाई दी, ''कचोर्‍यां ले... ल्यो... गरम कचोर्‍यांऽऽऽ।'' कचोर्‍यां को नाम सुणतां ई म्हारा कान खड़ा होग्या छा। लॉकडाउन के चालतां दुकानां बंद चाल री छी, फेर यो कचोरी हाळो कठी सूं आग्यो। म्हारै मन रै भीतर विचार चाल र्‍या छा।

''अंटीजी, कचोर्‍यां ले... ल्यो, गरम-गरम काढ'र ल्यायो छूं।'' महारै तांई विचार आयो, कणा-कठी सूं यो कचोरी हाळो आयो छै। फेर घर का गेट पे ऊ आ'र खड़ो होग्यो छो। म्हूं सोच रयी छी, असी बेमारी फैल री छै, यो जाणै कठी सूं कचोर्‍यां ल्यायो छै। आजकाल बाहर सूं खाबो-पीबो सब बंद छै। घणा दिनां बाद कचोर्‍यां को नाम सुणतां ई जी मचड़बा लागग्यो छो।

''कतनीक कचोर्‍यां बांद द्यूं।'' बो बोल्यो।

म्हूं बीं सूं पूछ्यो, ''भाया! तूं कठी सूं आयो छै। पैल्यां कदी न दिख्यो ई मोहल्ला में।''

बो बोल्यो, ''कांई बताऊं, म्हारै कपड़ा-लत्ता की छोरी-सी दुकान छी, पण कांई करां, ई बेमारी में सब-कुछ खतम होग्यो, पईसा खतम होग्या, कतना दिन बैठ'र खाता, पांच मिनखां को परिवार छै। पेट तो कस्यांन कस्यां भरणो पड़ैगो।''

म्हारी नौ साल री बेटी म्हांकी बातां सुण रैयी छी। बा बोली, ''मम्मी, ई समै सब कै तांई पईसां की जरूरत छै, सारा मिनख परेशान होर्‍या छै। कांई पूछताछ कर रैया छो, आपण सब के तांई कचोर्‍यां ले ल्यो।'' बा भीतर सूं बोली छी।

या सुण'र म्हूं गेट पर आय'र कचोरी हाळां सूं बोल्यो, ''भाया, दस कचोर्‍यां बांध'र गेट की डोळी पर रख दै। पईसा भी डोळी पे रख दिया, दो गज की दूरी जरूरी छै।''

कचोरी बेचबा हाळा की दो उम्मीद सूं भरी आंख्यां, चैरा पे लग्या मास्क सूं झांक री छी। कचोरी खरीदबा की बात सूं ही उंकी आंख्यां में चमक आ गई छी।''

संस्कृति विकास कॉलोनी 3, कोटा (राजस्थान) मो. 9351350787

म्हूं कांई करूं

विवेक गुणगुणातो थको कोचिंग सूं आयो छो। उनै बस्तो अेक आडी फेंक द्यो छो। आज किलास में लगातार पढता थकां थाकग्यो छो, सो तेज पंखो चला'र बो बेड पर लेटग्यो छौ। उंकी आंख्यां में आबा हाळा टेस्ट तैर रया छा।

''अरे! यो कांई विक्की, सारै घर में फैलावड़ो कर राख्यो छै। अतनो बडो होग्यो, कांई लखण कोनै? जूता कठीनै... बस्तो कठीनै, टाई कठीनै, तूं कांई चीजां संभाळ कोनै सकै, सारा काम म्हूं ई देखूं, तूं कद बडो होवैगो?'' मम्मी बड़बड़ावती सामान समेटबो लागगी छी।

''विवेक! अरे भाया विवेक!'' दादाजी पुकारबा लाग्या छा।

''कांई होयो, म्हूं थोड़ी देर पैल्यां ही तो घुस्यो छूं। कोई काम छै कांई?'' बो अनमना मन सूं बोल्यो छो।

''म्हारै तांई कांई काम होवैगो, अबार बजार सूं लौटता थकां म्हूं थनैं तीन-चार छोरां कै साथै मोटरसाइकिल पे देख्यो छो। बै छोरां जणा कस्या-कस्या कपड़ा पैर राख्या छा, वांको बैठबा को, बोलबा को तरीको म्हनैं तो आछो कोनै लाग्यो।'' दादाजी विवेक सूं बोल्या छा।

''असी बात कोनै दादाजी, बै सब दूसरा प्रांत सूं कोचिंग पढबा आयाछै। थां चिंता मत करो, बै सब म्हारा भायला छै।'' विवेक हांसतो हुयो बोल्यो छो।

''ल्यो, या कांई बात होयी, चिंता कस्यां न्ह करां... आजकाल जमानो कितनो खराब छै... फेर तूं अतनो बडो भी कोनै... जे आपणो आछो-बुरो समझ सकै।'' दादाजी बोल्या।

''या ल्यो, मम्मी कहै छै तूं छोटो कोनै रह्यो, आप कह रह्या छो तूं अबार बाळक छै, अब थे ई म्हनैं बताओ, म्हूं कांई करूं।'' विवेक झुंझड़तो थको बोल्यो छो।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

अनुपम पाण्डे

इमरत-धारा

अबकै रामजी, मिनखां नैं मारण री सोच राखी है। कांई मेहड़ो बरसैला कै नईं। ओ छोटो-सो गांव। कूवा, डिग्गी अर जोहड़ सै पाणी बिना सांय-सांय करै हा।

सरंपच जी रो हुकम हुयो कै अबकी रामजी नैं राजी करण सारू होम करणो पड़सी। सगळां री रजामंदी सूं सगळो गांव भेळो होयग्यो। पंचायत बैठगी। होम कर'र मीठा चावळां रो भोग लगावण री जुगत होवण लागी।

टाबरां सूं लेय'र बूढा-बडेरां तांई गवाड़ में भेळा होय रैया हा। चूल्हां माथै कड़ाव चढग्या हा। सगळां रा मूंडा चिलकै हा। अबै तो रामजी म्हारी सुणैलो! म्हारै गांव पर तरस खावैलो।

गदळो पाणी पींवतां सगळै गांव में महामारी फैलगी। कित्ती गायां, पसु अर जिनावर पाणी बिना मौत रै मूंडै में चला गया। टाबरां अर मिनखां री भी गिणती नीं है। भोळियै रो सगळो कुनबो काळ रो कलेवो बणग्यो। धरती माता तिस्सां मरै हा।

चावळां रो भोग लागग्यो। सो गांव हाथ जोड़'र रामजी सूं बिनती करी। अबै घणा ना तरसावो, परमात्मा अबै तो मेवलो बरसावो।

स्यात रामजी राजी हुयग्या। घुमड़ता बादळां री गरजणां रै साथै ई मेह बरसणो सरू होयग्यो। गांव रा सै ताळ-तळैया भरीजग्या। जिनावरां रै मूंडै पर चमक आयगी। पाणी में टर्र-टर्र करता डेडर फुदकण लागग्या। खेतां री तिस्साई धरती पाणी पींवतां ई मुळकण लागगी।

सरपंच जी रै घर सूं हुकम हुयो कै पाणी री किल्लत रै कारण गांव में जित्ती भी बैमारी फैली है, बीं रै इलाज सारू सगळा गरीबां री सहायता करी जासी।

इत्ती ताळ में ई भोळियै री लुगाई रो गरळाणो सुणीजग्यो। औ कांई हुयो? भोळियो ई परलोक सिधारग्यो! अबै रतनी दूध पींवतै टाबर सागै कियां जीवण काअसी। पण रतनी घणै हौसलै सूं आपरै काळजै री कोर नैं छाती सूं लगायां राख्यो।

पच्चीस बरस होयग्या। नान्हो-सो टाबर हुंसियार होयग्यो। पच्चीस बरसां रो जवान मोट्यार काळूराम स्हैर में नौकरी करण लागग्यो। फूठरी बींदणी आयगी। दो टाबर है। रामजी राजी है।

रतनी बेटै रै बंगलै में बैठी स्हैर रा नजारा देख रैयी है। टाबर फव्वारां हेठै न्हावै है। नौकर पोरच में खड़ी गाडी पाइपां सूं पाणी मार धो रैया है। बाग में लागी दूब अर फूलां में कानी-कानी फव्वारां चाल रैया है।

बी-216, करणी नगर, बीकानेर (राजस्थान) मो. 7597562277

काळू री बींदणी फ्रीज में बोतलां धरी अर बोली, ''मां, औ बिसलरी वाटर है। म्हारा टाबर औ पाणी ई पीवे है। औ सुद्ध पाणी है। इण सूं टाबर बीमार कोनी हुवै। अेक बोतल चाळीस रुपियां री आवै है।''

औ सुणतां ई मां री आंख्यां में जळ भर आयो। बोली, ''हां बींदणी, औ पाणी नईं, आ इमरत धारा है। इणरो कोई मोल नीं है। इणरी अेक-अेक बूंद अमोलक है। इणरै बिना अेक छिण भी जीवण संभव नीं है। आ बात म्हारै सूं घणी कुण जाण सकै। इणरी अेक बूंद खातर तरसतां म्हारो सगळो कुनबो मौत रै मूंडै में चल्यो गयो हो। इण खातर इण इमरत धारा नैं बचाय राखो। आणै वाळै बगत में रुपियां सूं भी औ इमरत नीं मिलैला। इण इमरत सूं ईज औ जीवण है। खेत-खळां, पेड़-पौधा, जीव-जिनावर सै इण धरती रो सिणगार है। इणसूं ईज सगळो संसार है। हाथ जोड़'र रतनी कैय रैयी ही :

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून।।

◆◆

इंजी. आशा शर्मा

गणित

मूंडै माथै मास्क, हाथां माथै दस्ताना, पतलून माथै पेटी, गाडी मांय राख्योड़ो अंगरेजी कांटो अर ताजी-ताजी फळ-सबज्यां... दाम ई नगदी कोनी देणा, मोबाइल सूं ई पईसा चुकावो... इसो फेरीवाळो तो पैली बार देख्यो।

गळी मांय ऊभी गाडी माथै लोग-लुगायां दो गज री दूरी पर खड़्या आपरी मन सारू मुलाई कर रैया हा। म्हैं ई ऊभी आपरी बारी नैं उडीक रैयी ही। ज्यूं ई भीड़ छंटी, म्हैं लपक'र गाडी कनै गई अर मोटा-मोटा लाल-लाल टमाटर छांटण लागी।

''इत्ता ई डिजिटल होग्या तो चिनेक और हुय जांवता। फळ-तरकारी ऑनलाइन ई पूगा देंवता।'' म्हैं हांसती-सी बोली।

''म्हैं जाण-बूझ'र ई कोनी करयो।'' कैवतो थको छोरो सैज ई मुळक दियो।

म्हैं तरकारी छांटणी छोड'र उणरो मूंडो जोवण लागगी।

''देखो सा, साग-सब्जी रो असल मजो तो हाथां रै टंटोळ, नाक री सौरम अर आंख्यां रा रंग मांय ईज हुवै, उणरै बिना मन राजी नीं हुवै अर जद तांई मन राजी नीं हुवै, तन कियां राजी हुसी?'' सब्जी आळो छोरो आपरो सीधो-सादो गणित समझा दियो।

म्हैं चटक पीळा आम सूंघती मुळक दी।

सवासेर

घणोई समझायो कै मिनखां सूं छेकड़ राख्या कर, पण थनैं जाणै कद अक्कल आसी, अबार आय जावतो नीं गाडी रै नीचै? कांई लेवण गयो टायर रै कनै?'' गिरगिट री मां आपरै टाबर ऊपर रीस करी।

''म्हैं कनै कीं लेवण सारू नीं गयो, म्हैं तो नेताजी नैं पांवाधोक करण गयो हो। म्हैं जद रंग बदळणो सीख्यो जद सौगन खायी ही कै जद म्हारो गुरु मिलसी, म्हैं उणरै पांवाधोक करूंला।'' टाबर आपरी उखड़ती सांसां काबू करतो बोल्यो।

बठीनै पंडाळ मांय नेताजी रै भासण माथै लगोतार ताळ्यां बाजण लाग री ही।

◆◆

अे-123, करणी नगर (लालगढ़) बीकानेर 334001 मो. 9413369571

उर्मिला माणक गौड़

साच रो बोध

रामसिंह अेक होणहार, मेधावी अर साच बोलणियो मिनख होवणै सूं उणरो पूरो परिवार ई नीं, बल्कै पूरो मोहल्लो, मोहल्लो ई क्यूं, पूरो गांव ई उण माथै नाज करतो। कैबा है कै सज्जन मिनख सगळां रो भलो चावै। उणरै बापू नैं सराब री लत है। आ बात उणनैं अखरै। अखरै ई नीं बल्कै उणरै काळजै पैठगी। बो सराब पीवणो तो दूर, उणरै हाथ तलक नीं लगावै। अठै तलक कै जे मजबूरी में सराब री जूठी गिलास ई उठावणी पड़ जावै तो तीन बार साबण सूं हाथ धोवै।

कुसंगत मिनख नैं नरक में ढकेल देवै अर आ ई बात रामसिंह रै साथै हुयी। अबै बो चाळीस बरसां रो है। परण्योड़ो है अर फूल-सी दोय बेट्यां रो बाप ई है।

रामसिंह रो बापू रामजी रो प्यारो होयग्यो। नसाखोरी में आधी खेती तो उणरो बाप सलटायग्यो अर बच्योड़ी नैं रामसिंह नसा में उडाय दी। परिवार में आजकाल फाकामस्ती चाल रैयी यहै। उणां री अैड़ी दुरदसा देख'र गांववाळा उणनैं समझायो, पण अेक कैबा है कै 'सीख सरीरां ऊपजै, दियां लागै डांम', मतलब सीख तो आपरै मन सूं उपजणी चाईजै। दियो तो फगत आग रो चटको ई जाय सकै। उण चीकणै घड़ै माथै पाणी रो कांई असर होवै?

च्यारां कानी निरासा, हतासा अर अवसदा फैल्योड़ो है।

अेक दिन रामसिंह री जोड़ायत भूख सूं बिलबिलावती गस खाय'र पड़गी अर बठीनै उणीज दिन फीस जमा नीं होवणै सूं दोन्यूं छोरयां नैं स्कूल सूं पाछी घरां भेज दी।

रामसिंह रै हियै में चाणचक ई साच रो बोध हुयो अर सराब री बोतल फोड़'र हाथ में गंगाजळ लेय'र सौगंध खाई अर उणनैं निभाई भी।

बां बातां नैं आज लगैटगै दस बरस बीतग्या। रामसिंह गांव री विकास अर नसा मुक्ति समिति रो अध्यक्ष है।

मौकै री तलास

बो सरीर रै मांय हट्टो-कट्टो, गोरो-फूठरो, पढाई मांय हुंसियार अर सरमीलै सुभाव रो हो। छोरयां उण माथै मरती, आपरी जान छिड़कती, पण बो किणी नैं घास नीं न्हाखतो। उणरै बापू री बदळी बीजै स्हैर मांय होयगी अर अबै अेम.टेक री पढाई बठै सूं ई कर रैयो हो।

गांव-चूंटीसरा, जिला-नागौर (राज.) मो. 8742916957

बठै पाड़ोस मांय अेक छोरी रैवती। बा उणरै बारै मांय सोचती रैवती कै म्हारा घरवाळा इणरै साथै म्हारो ब्यांव कर देवै तो किसोक सांतरो रैवै। बा मौकै री तलास मांय रैवती। अेक दिन बो आपरै भायलां साथै ऊभो बातां कर रैयो हो अर बा छोरी आपरै डागळै माथै ऊभी-ऊभी उणनैं जोय रैयी ही अर आपरै मन मांय सोचै ही कै कांई गबरू जवान है, पण कदैई म्हारै साम्हीं ई नीं देखै। बा आपरै सुपनां मांय काठी डूब्योड़ी ही कै इतरै मांय उणरो हाथ डोळी माथै सूं फिसळग्यो अर धड़ाम सूं नीचै पड़ण लागी।

संजोग सूं उण छोरै रो ध्यान बठीनै गयो परो। बा डागळै सूं छाजा माथै पड़ी अर बठै सूं नीचै पड़ण वाळी ई ही कै बो छोरो भाज'र उणनैं आपरा हाथां मांय झेलली। दहल सूं छोरी बेचेत हुयगी। बो झट उणनैं सारला अस्पताळ मांय लेय'र गयो अर डाक्टर नैं दिखाई। डाक्टर कैयो, ''आ दहल सूं बेचेत हुयी है। इणरै तो अेक ई खरोंच तलक नीं आयी। आपरै कारण आज इणरी जान बचगी।''

बो बोल्यो, ''ऊपरवाळै री किरपा सूं म्हारो ध्यान बठीनै गयो परो हो। डाक्टर साब म्हारै हाथ मांय दरद होय रैयो है। म्हनैं कीं दवाई देय द्यो।''

डाक्टर साब उणरी जांच करी अर कैयो, ''हाथ रै मांय चोट आयी अर थोड़ो फेक्चर है, इण खातर प्लास्टर करणो पड़सी।'' अर उणरै प्लास्टर कर दियो।

छोरी री बेहोसी टूटी तो बा पूछ्यो, ''म्हैं कठै हूं, अठै म्हनैं कुण लायो?''

''थनैं अठै म्हैं लेय'र आयो।'' अर उणनैं सगळी बात बतायी।

इतणै मांय छोरी रा घरआळा ई बठै पूगग्या। बै छोरा नैं धिन्नवाद दियो अर उणरो नांव-पतो पूछ्यो अर आप-आपरै घरां गिया परा।

छोरी आपरै मायतां सूं कैयो, ''इण छोरा सूं आपां री कीं जाण-पिछाण नीं ही, तो ई औ खुद री चिंता करयां बिना म्हारी जान बचायी। म्हारै मन मांय तो औ पैली सूं ई बस्योड़ो हो, पण अबै म्हैं इणनैं म्हारी जिंदगाणी मांय बसावणो चावूं। भलांई औ बीजी जात रो है, पण उणसूं म्हनैं कीं फरक नीं पड़ै। म्हैं ब्यांव करूंला तो इणरै साथै ई करूंला, नीं तो आजीवण कंवारी ई रैवूंला।''

घरवाळा बां दोन्यां री मनस्यां जाण'र उणां रो ब्यांव कर दियो। बै दोनूं आराम सूं आपरी जिंदगी बिताय रैया है अर अबै उणां रै अेक छोरो ई है।

दिल रो दौरो

किरोड़ीमल खुद आखी जिंदगाणी भूख सूं बाथेड़ा करता रैया, पण आपरै अेकूकै बेटै नैं पढाय'र ऊंचा पद माथै बिठाय दियो। पढाई होवतां ई उणरी सगाई अेक खावतै-पीवतै चोखै परिवार मांय होयगी। किरोड़ीमल नैं औ विस्वास हो कै छोरीवाळा ब्यांव चोखो करसी, पण बात खुल'र सामनै नीं आयी ही। ब्यांव हुयो अर विदाई सूं पैलां बेटी रो बाप किरोड़ीमल सूं कैयो, ''म्हारै सूं जुड़्यो जैड़ो देवण री खैचळ करी हूं। कीं कमी होवै तो बताय दीज्यो सा।'' पछै अेक लांबी लिस्ट दायजै री पढ'र सुणाई। सुणणवाळां नैं सगळां नैं ई इचरज हुयो। किरोड़ीमल नैं तो इतरी खुसी हुयी कै बो बरदास्त ई नीं कर सक्यो अर दिल रो दौरो पड़ग्यो। बापड़ा रै नीं देख्योड़ा रै नान्है सै काळजै में इतरी जिंसां मावै है कांई? उणनैं तो मरणो ई हो। इतरो फोगट रो सामान लेय'र।

◆◆

डॉ. कृष्णा आचार्य

दाय मां

कुंभारां रै पूरै मोहल्लै मांय दाय मां री घणी चालती। जे कोई रै आधी रात रा ई काम पड़ जावतो तो बो बेहिचक दाय मां रै घर री कुंडी खड़काय लेंवतो। दाय मां आपरी घर री कुंडी कदैई लगावती कोनी अर नीं घर बारै ताळो देंवती। सगळा नैं ठाह ही कै दाय मां री नींद कित्ती काची ही। अेक हेलै मांय ई उठ जावती। लारलै केई सालां सूं तो बै अबै आंगणियै मांय ई मांचो ढाळ लेवै। कनै ई छोटो-सो रसोवड़ो हो जठै झांझरकै चार बज्यां ई चाय चूल्है माथै चढ जावती। चाय पीयां पछै सिनान कर'र बै गेडियो टेकती मिंदर जावती। औ बांरो रोजीनै रो नेम हो। सगळै मोहल्लै री बाई-बीनणी रा जापा घरां ई कराय देंवता अर जे पेट वाळी लुगायां बांरो मूंढो देख लेंवती या बै कोई रै माथै पर हाथ फेर देंवती तद बीं रो दरद तुरंत दूर होय जावतो।

दाय मां जमारो बदळियो तद आपरै विचारां नैं भी आज रै विचारां सागै ढाळ लिया। कैवता, ''अबै म्हैं बूढी होवण लागगी हूं अर हवा भी बदळण लागगी, इण वास्तै थे बडोड़ी अस्पताळ रो रुक्को जरूर-जरूर बणवाय लिया। घणी होसी तद म्हैं सागै चाल जासूं।''

दाय मां रो आस-पाड़ोस भी घणो ई चोखो हो। दाय मां रै साम्हीं रैवण वाळा मनसुखलाल जी तो दाय मां रै अेक हेलै सूं तुरंत घर सूं बारै आय'र आपरी टैक्सी मांय रोगी नैं बैठा'र तुरंत अस्पताळ पूगाय देंवता। दाय मां रो कैयो बै कदैई नीं टाळता। फेरूं तो दिन हुवो चायै रात। सगळै मोहल्लै रा छोटा-मोटा बांरो घणो ई मान राखता हा अर राखता भी क्यूं नीं! मोहल्लै रा आधै सूं बेसी लोगां नैं दाय मां आपरै हाथां सूं जणवाया हा। इण भांत दाय मां बां लोगां खातर मां सरीखी ही। इणी खातर सगळा लोग आपरै हिवड़ै मांय बांरै पेटै घणो आदर-मान राखता।

दाय मां कोई नैं भी कोई बीमारी होवती तद चट सूं बीं रो ईलाज बता देंवती। बांरो पीहर नापासर हो। साल-छव महीनै सूं जद बै आपरै पीहर जावता तद आवती बगत टैक्सी मांय चाडा भर'र लावता। पूठा आय'र बै मोहल्लै रै दस-बीस घरां मांय जाय'र आपरै हाथां सूं चाडो देंवती बगत कैवता, ''ले बीनणी, ठंडो पाणी पीजै अर दूजां नैं ई पाईजै। ठंडा ठारिया रैया अर दूजा नैं ई राख्या!'' बै चाडा भी इसा होवता कै अेकर पाणी घालण बाद पाणी चौबीसूं घंटा ठंडो रैवतो अर फ्रीज रै पाणी नैं ई मात करतो। इण सारू लुगायां नैं जद भी दाय मां पीहर जावती तो आ अडीक रैवती कै बै आवती बगत चाडा अवस लेय'र आसी।

उस्ता री बारी रै मांय, बीकानेर (राज.) 334005 *मो. 8619402147*

लारलै साल निरजळा इग्यारस नैं मिंदर मांय सत्संग चाल रैयो हो। सगळा मिल'र भजन गाय रैया हा। अचाणचक ताळियां बजावता दाय मां ठाकुर जी रै दासै माथै गुड़कग्या अर दो मिनटां मांय बांरो हंसलो उडग्यो। मौजूद लोग-लुगायां मांय हाको मचग्यो। सांत सरीर नैं बांरै घर मांय लाय'र आंगणै मांय पसार दियो। दाय मां रै बेटो तो हो कोनी, अेक बेटी ही, जिकी स्हैर रै कनै ई अेक गांव मांय परणायोड़ी ही। बा आ खबर सुणतां ई आपरै धणी अर बेटां रै सागै भाजती आयी। मोहल्लै मांय रात-भर कोई रै भी घरै चूल्हो कोनी जग्यो। भोर होवतां ई बांरी अरथी त्यार होयगी अर सगळा मोहल्लै वाळा बांरी अरथी नैं कांधो देंवता मसाण कानी लेयग्या। मोहल्लै री लुगायां रो तो रोवती-रोवती रो बुरो हाल होयग्यो। बेटी री गरीबी नैं देखतां मोहल्लै वाळा मिल'र पूरै जतन सूं दाय मां रा बारह दिन रा कारज निभाया।

दाय मां रै सुरग सिधायां पछै सगळो मोहल्लो सूनो-सूनो लागण लागग्यो। दाय मां नैं रामसरण हुयां घणा दिन बीत्या कोनी हा कै बांरी बेटी बो मकान अेक सेठ नैं बेच दियो। अबै तो बा मकान रूपी सैनाणी भी रैयी कोनी जिकी दाय मां री ओळूं दिरावती। अबै तो बीं मकान री जगां अेक आलीसान कोठी बण'र त्यार होयगी ही, पण आज भी दाय मां री ओळूं लोगां रै दिल मांय बण्योणी है अर बण्योणी रैसी।

◆◆

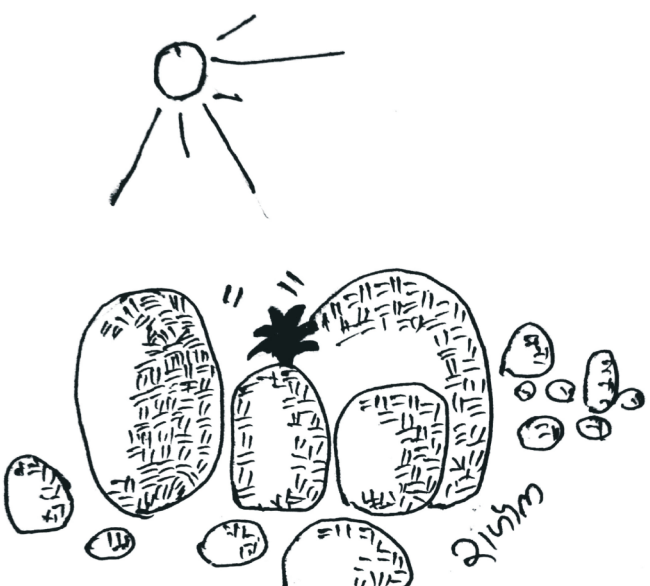

डॉ. नीना छिब्बर

चिड़ी उड

कोरोना महामारी रै चालतां पूरो परिवार ई केई दिनां सूं आपरी इच्छा सूं घर मांय बंद हो। सगळा अेक-दूजै रो मनोबल बधावण री कोसिस करता। मिल-जुल'र घर रो काम करता अर पछै पुराणा खेल रमता। दादोसा भी सगळां साथै रमता।

अेक दिन दादोसा पोता राजू नैं बोल्या, ''राजिया, आज आपां थारै पापा री पसंद रो 'चिड़ी उड' रमांला। बाळपणै मांय म्हैं हमेस जीततो।''

टाबर पूछ्यो, ''दादोसा, आ वा ईज रम्मत है जिणमें गलत पंखेरू उडावतां ई मार खावणी पड़ती, वा भी स्टाइल सूं। हथेळ्यां जोड़्यां पाछै अैना ऊपर लूण-मिरचां, हळदी बुरकण रो मंतर अर पछै दै चांटा, दै चांटा। जो खिलाड़ी हुंसियार होवतो वो कदै मार नीं खावतो।''

इण पछै राजू, मीना, पापा अर दादोसा रमवा आंगणै मांय बैठगया। चिड़ी उड, कमेड़ी उड, हाथी उड सरू होयग्यो। बीच-बीच में गलती होवतां ई मंतर वाळो चांटो। सगळा हंसता। थोड़ी देर बाद पापा बोल्या, ''अबै म्हारी बारी, म्हैं बोलूंला।''

दादोसा अेकदम राजी होयग्या। औ आयो म्हारो चैंपियन। पापा सरू करयो—तितली उड, हाथी उड, जिंदगी उड। पण जिंदगी उड बोलतां ई पापा री आंगळी ऊपर अर बाकी सगळां री नीचै। दादोसा बोल्या, ''आ कांई गलती करदी बेटा?'' पण पापा री आंख्यां में पाणी अर आवाज में जोस हो, बोल्या, ''बाबोसा, जिंदगी तो उडणी ई चाईजै। म्हैं उडाऊंला, चायै म्हनैं कित्ता ई चांटा खावणा पड़ै।''

दादोसा अेक इसारो करयो अर सगळां री आंगळ्यां ऊपर होयगी। साची बात, जिंदगी तो उडैला ईज।

◆◆

17/653, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.) 342008 मो. 9461029319

 ISSN : 2320-0995

पुष्पा पालीवाल

निहिरा

रोटियां पोवती-पोवती जाणै जीव घबरायो हो बींदणी रो। पोळ माथै आय बायरै में बैठगी। कांई हुयो बींदणी ? पूछतां ई बोली, ''यूं ही, जीव सोरो कोनी।''

जाणै जीवड़ै में हजार हिलोरां आणंद री आयगी। सुपना संजोता-संजोता पांच बरस बीतग्या। अबै पाड़ोसणां रै मूंडै पाटा बंध जासी। बींदणी रो चोखो इलाज करावो जी, ईं री उमर री लुगायां तो सासू मां बणवा री त्यारी करै है। कदैई बांनै सीधै मूंडै जबाब कोनी दे सकी। अबै बीनणी मत्तैई जबाब दिराय दैसी।

नौ महीनां कठै निकळग्या। म्हैं तो लाडो नैं अेक ईज बात कैयी—थारी सौगन लाडेसर, जीं दिन सूं तूं सात फेरा लेय'र आयी ही, बावजी री मान लेयनै बैठी हूं। सगळां सूं पैली जे थाळ बजैली तो बजावा वाळी थारी सासू मां ई होवैली। आखिर दुनियां नैं पतो तो चालै कै म्हारी साध पूरी हुयी है। या बात साची है कै बींदणी रै माथै फिकर री लकीरां साफ मंड्योड़ी देखी है। कांई कैवती, आंधा कोठा है, पर ऊपरआळो न्याव करसी। बेटी फोन माथै अेक ई रट लगावती रैवै है—भूआ बणतां ई पैलो फोन म्हारै आवणो चाईजै। जे वंस को भागीरथ आवै तो म्हैं सबसूं पैली कड़ा-कड़ूल्या लेयनै आवूंली, म्हारै भतीजा री ढूंढ करावूंली।

काल री रात निंदौरी निकळी। पाड़ोसण कैवती ही, जे मां रो रूप फीको पड़ै तो छोरी ढीकरो होवै है। रामजी री मरजी, पण म्हारी साध पूरावजै बावजी। ''माजी, बेटी आई है'', कानां में जाणै इमरत बरसग्यो। बावळी हुई म्हैं कांई बधाई दूं। बटवा में हाथ घाल्यो, गुड़मुड़ सौ-सौ रा नोट कोई चार-पांच हाथै लाग्या—लेल्यो, अब ये ही लेल्यो। नर्स री मुट्ठी में नोट राख्यो। म्हारी धाय फूट्या मूंडा सूं दो घड़ी देखती रैयी। माजी, बेटी आयी है, जाणै म्हैं सई सुण्यो कोनी। जाणै म्हारी साध पूरीजी है। साड़ी रो पल्लो ऊंचो-नीचो खोंसती बींदणी रै पिलंग तक पूगी। कांई लाडेसर रूपाळो रूप कसान कुम्हळा रियो है। सासू मां मानता कर बैठ्या। अबै बाईसा ढूंढ पर कड़ा-कड़ूल्या ल्यावा वाळा हा। पाड़ोसण री अटकळ फेल होयगी। नैणां नीर ढुळकता ई हा कै म्हैं हथेळी मांडली, ''वेंडा हुआ कांई, म्हैं तो इण लिछमी खातर ई थाळ बजावण रो कैयो। इण खातर ई भाटै-भाटै देव करया हा। बेटो तो आपणा अेक वंस रो नांव करै, पण बेटियां तो दो-दो कुळां नैं तारण वाळी है। म्हैं तो नांव ई राख लियो—निहिरा।

◆◆

डी. आर. हाउस, धोरा मोहल्ला, पीपळी चबूतरा, कांकरोली (राजसमंद) 313324 मो. 9001063104

मंजू शर्मा जांगिड़ 'मनी'

तिस्स

रामू काम री तलास में स्हैर गयो। स्हैर में उणरो साथी शामू कंपनी में काम करै। रामू नैं बठै ईज जाणो हो। बस सूं नीचो उतरतां ई उणनैं तेज तावड़ो लाग्यो। तपती सड़कां अर ऊपर सूं बळती लू देख'र उणरो माथो चकरायो। मन में सोच्यो, स्हैर में तो तपती अणूती है, अठै कियां रैवणो होसी? मन मांय विचार करतो मोटा-मोटा पांवडा भरतो आगै बधण लाग्यो।

थोड़ी जेज ई चाल्यो होसी कै पसीनै सूं हबाडोळ होयग्यो। कंठ सूखण लागग्या। थैला मांय सूं पाणी री बोतल काढी, तो बोतल खाली। घर सूं भर'र चाल्यो, पण कलेवा करनै आयो हो, सो बस में तिस्स लागी अर बो बोतल मांय पाणी पीयग्यो हो। अबै पाणी कठै सूं लावै? सोचतो आगै बधतो रैयो। तिस्सां मरता रा होठ सूखण लागग्या। थोड़ोक आगै चाल्यां उणनैं साम्हीं मोटो बंगलो निगै आयो।

''अरे! अैड़ो फूठरो बंगलो, घणो जोरदार बणायो औ तो, सागीड़ो बण्योड़ो है। अैड़ै बंगलै में रैवण वाळा लोग ई घणा जोरदार होवैला। देखतां ई मन हरखीजग्यो। घणो जोस आयो। अठै जरूर म्हनैं ठंडो पाणी पीवण नै मिलसी। तिस्स मेट'र म्हारी बोतल भी पाछी भर लेसूं। बंगला में लाग्योड़ा रूंखड़ा देख'र तो बो औरूं हरखीज्यो। थोड़ी देर आं बारला रूंखड़ां री छियां में बिसांई खावूं, पछै बंगलै में जासूं।

थोड़ोक बैमो खायां पछै बो बंगलै में जाय पूग्यो। पण बठै तो बीं नैं कोई निगै नीं आयो। च्यारूंमेर भाळ्यो पण कोई निजर नीं आयो।

''बाईजी, बाईजी!'' मोकळा हेला मार्‌या पण अजै कोई बारै नीं आयो। घर मांय हेलो नीं सुणीज्यो होवैला। अबै करूं तो कांई करूं। हाल तांई काठो तिस्स मरग्यो। इत्तै में उणनैं गेट रै कनै घंटी रो खटको निगै आयो। बो उणनैं दबायो। खटको दबतां ई बाईसा बारै आया। मोटी-मोटी आंख्यां तरेड़ता आवतां ई पूछ्यो, ''घंटी कुण बजाई?''

''म्हैं बजाई बाईसा, म्हैं घणाई हेला पाड़्या पण कोई मांयनै सूं आयो नीं, जणै म्हैं घंटी बजाय दी। बाईसा, म्हैं अणूतो तिस्सो हूं। थोड़ोक ठंडो पाणी पायदो तो आतमा तिरपत व्है जावै।'' सूखै कंठां सूं आंती आयोड़ो बो नीठ बोल्यो।

''आ कांई प्याऊ है जको अठै ठंडो पाणी मिलसी। आ घंटी कांई थांनै पाणी पावण सारू लगायोड़ी है।'' कैवता बाईसा रीसां बळता पाछो आडो बंद कर'र मांयनै गिया परा।

रामू मोटा बंगला नैं अजै ई बाको फाड़्यां जोवै हो।

◆◆

14, मनी विला, एक्सटेंसन स्कीम्स, भगत री कोठी, न्यू पाली रोड, जोधपुर 342005 मो. 9414128465

 ISSN : 2320-0995

शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'

बायरो

''सुणो!'' रामकली आपरै धणी सूं बोली।

''सुणा! कांई नूंवी खबर है।'' कैलास मखौल रा मूड में बोल्यो।

''इयां कांई बोलो जी, म्हैं खबरीलाल थोड़ै ई छूं।''

''चोखो कोनी तो, बात बता बेगी-सी। नीतर थारो पेट दूखण लाग जासी।''

''साची बोलो थे। घणी देर सूं कुलबुला री छूं। जद सूं सुण्यो, लाला रो छोरो भणबा गयो, बठै सूं गोरी मेम परण लायो। थोड़ा दिनां में पाछा चलै जासी। अेक ईज तो छोरो है, लाला री सेवा कुण करसी अब?''

''कांई होग्यो तो... ?''

''थू-थू होय रैयी है सारै चोखळै मांय।''

''आजकाल बायरो अस्यो ई बाज रियो है। अपणाबा में ही फायदो है।''

''जणै आपणो छोरो तो थोड़ो पढ्योड़ो ई चोखो है। रैसी आपणै नख ही। जात मांय ई परणास्यां तो बीनणी भी आपणी सेवा करसी।''

''थारो तो खोपड़ो खराब होग्यो, सगळा अेक जिस्या कोनी होवै।''

''कैय दियो सो कैय दियो। सुणल्यो! म्हारै छोरै नैं घणो कोनी भणाणो, भलांई रूखी-सूखी खाय'र ई पेट भर लेस्यां। परदेसां कोनी भेजणो। परदेसां जाय'र सगळा लखण भुला देवै, धूड़खातै हो जावै। परदेसां रा बायरा री चपेट में आ जावै।''

डोकरी

''अस्यो कांई होग्यो? पो फाट्यां सूं ई थारी आवाज कानां रा परदा फाड़ रैयी है।'' रामलाल बोल्यो।

''थांनै तो कोई बात रो ठाह ई कोनी रैवै। मरणो तो म्हनैं पड़ै।'' झल्लाट भरया सुर मांय कजरी बोली।

'हनुमंत कृपा' 10 बी-12, आर.सी. व्यास कॉलोनी, केशव अस्पताळ रै कनै, भीलवाड़ा (राज.) मो. 9462654500

''बोलणो होवै तो बोल, नीं तो म्हैं चाल्यो।''

''मा'सा नैं साथै लेय'र पधारज्यो। म्हारै सूं अबै बांरी चाकरी कोनी होवै।''

''या कांई बात करी, खाट सूं उठ कोनी सकै, बा थनैं कस्यो दुख देवै?''

''भगवान जाणै म्हारा करम मांय ओर कितरा पोतड़ा धोणा लिख्या है?''

''देख, भागवान! मरबो-जीणो सब प्रभु रै हाथां मांय है। थूं काहै दोस की भागी बणै है। आखिर है तो आपणी मां।''

''कोरोना सूं घणा ई मिनख मर रैया है, पण म्हनैं मौत कोनी आवै।''

''दुख री घड़ियां भी निसर जासी। मन छोटो मत कर। डोकरी जीवड़ा मांय घणी दुखी है। बा सुण लेसी, मूंडो बंद करलै।''

कजरी रो मूंडो बंद कोनी हुयो। सगळी बातां सुण'र डोकरी री सांसां जरूर बंद होयगी।

पेट री आग

घणा दिनां सूं चंदर स्कूल कोनी आयो तो माटसाब बीं रा भायला राम सूं पतो करवायो। पण किणसूं भी बेरो कोनी पड़्यां माटसाब खुद गया चंदर रै घरै। घरां जाय'र चंदर री मां सूं मिल'र बोल्या, ''चंदर स्कूल क्यूं कोनी आ रैयो?''

''म्हूं कांई बताऊं, चंदर रा बापूसा तो कद्यांका म्हांनै छोड'र चल्या गया। खाबा-पीबा का फोड़ा होग्या, जणै के करां?''

''पण सरकार तो मुफत मांय पढाय रैयी है।''

''घर मांय खाबा वाळा चार मिनख है। पेट भरण वास्तै काम पर जावां म्हे दोन्यूं। पेट री आग घणी खोटी होवै साब!''

''कतरा रुपिया देवै सेठ?''

''अेक हजार।''

''हर महीनै म्हैं देसूं अेक हजार, अब चंदर नैं स्कूल भेज दीज्यो।''

''माफी चावां, मुफत को कोनी खावां सा।''

''ठीक है, स्कूल कै बाद म्हारो काम कर दैगो।''

''आप मिनख नीं, भगवान हो सा।''

◆◆

डॉ. संतोष बिश्नोई

प्रीत री भासा

आज पूरो अेक महीनो होयग्यो, राधाकिशन नैं अमरीका आयां नैं। घरआळी लारलै साल सुरग सिधारगी। अब भारत में अेकला क्यूं रैवता! अेक बेटो हो बांरो। बो भी पढ-लिख'र अमरीका जाय बस्यो। राधाकिशन नैं भारत री घणी याद आवती। करता भी के? फोन पर कित्तीक बातां हो सकै! अमरीका में किणी नैं आपसरी में बंतळ रो टेम कठै! दूजी बात, भासा ई समझ में आवै जणै कीं बात करै। बेटो डाक्टर हो, पण आपरै पिताजी री मनगत नीं समझ सक्यो। बांरै मन रै खाली खूणै नैं कियां भर सकै। बो समझ नीं सक्यो। राधाकिशनजी सो-कीं हुवतां थकां ई अेकला पड़ग्या। मन री ऊंधी दिस होयगी। केई बार सोचता, पाछा भारत चल्या जावां, पण भारत में अब कीं बच्यो कोनी। नौकरी करता जद आपरी सारी कमाई टाबरां रै पढाई मांय खरच कर दिया करता। खुद किरायै रै घर मांय रैया। घरआळी केई बार समझाया कै आपणै अेक सस्तो-सो ई सई, घर तो लेय लेवणो चाईजै। पण राधाकिशनजी घरआळी री बात हंस'र टाळ देंवता। आज अठै अमरीका में ई कोई बात री कमी कोनी ही, पण मन रो के करयो जावै?

अेक दिन बेटो अस्पताळ सूं आयो। बडो दुखी-सो लाग रैयो हो। कारण पूछ्यो तो बीं बतायो कै आज अेक औरत रै दिमाग रो ऑपरेशन करयो, पण बीं रै लारै अेक छोटो टाबर हो। बो आज तीन दिनां सूं रोटी-पाणी रै हाथ नीं लगायो। अबै बीं री मां नैं तो होस में आवण में के ठाह कित्तो टेम लागसी। पण जे टाबर इयां भूखो रैयो तो बीं री हालत खराब हो जासी।

सुण'र राधाकिशनजी रै मन मांय ई टाबर सारू ममता जागी। बोल्या, ''म्हैं मिल सकूं हूं कै बीं टाबर सूं।'' बेटो पूछ्यो, ''थे मिल'र के करोगा? थांसूं तो बात ई नीं कर सकै। थे कैवो तो मिला तो म्हैं देस्यूं।'' थोड़ी-सी देर बाद बेटो राधाकिशनजी नैं अस्पताळ लेयग्यो।

अस्पताळ पूग'र राधाकिशनजी टाबर नैं देख'र बीं रो सिर पळूस्यो। फेर बां चावळ-दाळ मंगवाया। बीं नैं हाथ सूं मिला'र टाबर नैं खवावण वास्तै आपरो हाथ आगै बधायो। बो टाबर अेक बार बांनै देखै अर अेक बार खाणै कानी। राधाकिशनजी अेकर फेरूं टाबर रै सिर पर हाथ फेर'र खाणै रो हाथ आगै बधायो तो अबकाळै टाबर खा लियो। औ सब दूर खड़्यै राधाकिशनजी रो डाक्टर बेटो देख्यो तो बो आपरै पिताजी नैं पूछ्यो, ''थे ई नैं के बोल'र खिलायो?'' राधाकिशनजी कैयो, ''बेटा, प्रेम री कोई भासा नीं होवै। आप प्रेम सूं आपरै हाथ सूं किणनैं भी रोटी जिमावो, बो खा लेसी। जियां मां टाबरपणै सूं टाबर नैं प्रीत सूं जिमा देवै। बस प्रीत जरूरी होवै जीवण में। प्रेम री बात बिना भासा भी सब नैं समझ आवै।''

◆◆

सहायक प्रोफेसर हिंदी, कॉलेज शिक्षा, फरीदाबाद, दिल्ली एन.सी.आर. मो. 9887547908

सावित्री चौधरी

आजकाल

बंगलै जाय'र अेस.पी. साब रा पग पकड़तां थकां बै रूंध्यै गळै सूं कैवण लाग्या, ''अेस.पी. साब, छोरै कुकरम कर्‌यो है—टींगरी साथै। पण बीं नैं बचावो सजा सूं। थे जो भी चावो, म्हनैं मंजूर है। मालकां म्हारै तो औ ईज अेक छोरो है।

''देखो, थे तो अेक तरै सूं म्हनैं लाचार कर रैया हो। छोरै नैं बचावण खातर नीं चावतां थकां भी म्हनैं तो जींवती माखी गिटणी पड़सी। साळी महंगाई सूं सलटणै वास्तै।''

उणां रो इसारो समझ'र बै उणां री मेज रै हेठै नोटां सूं भर्‌यो बैग मेल'र ब्हीर होयग्या अर दुस्करमी छोरो बाइज्जत बरी होयग्यो।

मिनकी

मिनकी कुण मारी? आखो दिन बीतग्यो। सिंझ्या तांई कोई नीं बोलै। मर्‌योड़ी मिनकी पड़ी, रोटी कियां खावां? पंचायत में सब पंच भेळा होग्या। बात करवा लाग्या। अबै कांई करां, टाबरां नैं तो भूख लागी है। आपां सब तो मोटा हां, पण बाळकां नैं कियां समझावां? मिनकी नैं कुण मारी, पैली खबर तो पड़ै। निवेड़ो तो पछै करांगा।

लछमण दौड़तो-दौड़तो आयो, अेक सांस में कैवा लाग्यो, ''म्हैं जाणूं हूं, मिनकी कुण मारी, पंच लछमण री बात सुणवा लाग्या। आज परभातै म्हैं गायां नैं चरावा जावतो हो, म्हैं देख्यो कै ठाकरसा मिनकी री पूंछ पकड़नै गळी मांय जावता हा, अबै सब जायनै ठाकरां नैं पूछो।''

पंच सब उठग्या नैं लछमण री बांवटी पकड़ी नै ठाकरसा री हवेली पर गया, ''ठाकरसा! औ लछमण कांई बोलै, आप सुणो।'' ठाकरसा बारै आया। सगळा पंच लछमण री बांह पकड़ राखी ही। लछमण तो निडर हो साच नैं आंच नीं आवै। औ जाणतो हो।

ठाकरसा बोल्या, ''कांई बात करो हो! म्हैं मिनकी मारी? म्हारो खानदान थे जाणो कोनी। म्हारा दादोसा भालो लेयनै शिकार सारू निकळता हा तो सूरज कैवतो लालसिंघ भालो नीचो करलो, म्हारी आंख फूट जासी अर थे म्हारो कैवो कै म्हैं मिनकी मारी! थे कैवणो कांई चावो?''

झूठ तो झूठ ई होवै। इत्तै मांय तो डोढी मांय सूं सीता कंवर बारै आयनै आपरै दादोसा रो हाथ पकड़नै कैवा लागी, ''दादोसा हुकम, मिनकी तो आप ईज मारी। आज परभातै जीमता हा जणै दाळ में लूण बेसी हो। आप थाळी फेंकी जणै मिनकी दूध पींवती ही। थाळी लागतां ई मिनकी हेठै पड़गी। आप ई टांग पकड़नै बारै लेयग्या हा।''

सब पंच अेक-अेक करनै जावा लाग्या। ठाकरसा बोल्या, ''पचास रुपिया लेंवता जावो, मेहतर नैं कैयनै मिनकी फिंकवा दीजो।''

◆◆

29 सिंधी कॉलोनी, आदर्श नगर, जयपुर (राज.) मो. 9414377767

 ISSN : 2320-0995

सुषमा राजपुरोहित

किन्नी

किन्नी उडावणी किणनैं चोखी नीं लागै। रंग-रंगीली, भांत-भांत री किन्नियां बादळां में उडती दिखै जद टाबर तो टाबर, बडां रो मन भी रीझ जावै। टाबरां नैं तो किन्नियां उडावण रो अणूतो ईज कोड हुवै।

अेकर अेक टाबर हो। बो दिन ऊगतां ई डागळै चढ जावतो अर दूजा डागळां माथै मिनख अर टाबर जिका कै किन्नी उडावता, बांनै देखतो रैवतो अर अर घणो राजी होवतो। अेकर बो आभै में घणी फूठरी गुलाबी किन्नी उडती देखी, जिकै रै माथै अेक काळो चेपो लाग्योड़ो हो। बो चेपो इयां लागै हो जाणै कोई मां आपरै टाबर रै लिलाड़ माथै निजर सूं बचावण नै काळो टीको लगायो हुवै। टाबर नैं बा किन्नी घणी ई मन भायी अर मन ई मन सोचण लाग्यो कै काश! बा गुलाबी किन्नी बीं नैं मिल जावै। केई ताळ तो बो किन्नी नैं देखतो रैयो, छेवट बीं सूं रैयीज्यो कोनी अर बीं गुलाबी किन्नी उडावण वाळै मिनख नैं कैयो, ''भाईजी, म्हनैं आ गुलाबी किन्नी देय दो।'' पण बो मिनख टाबर नैं किन्नी तो कोनी दी, ऊपर सूं बीं पर रोळा करण लागग्यो। टाबर साव बिलखो होयग्यो। थोड़ी ताळ में सो-कीं भूल'र पाछो कदैं बादळां में उडती गुलाबी किन्नी नैं देखै, कदैई लटाई नैं देखै अर कदैई किन्नी उडावण वाळा मिनख नैं देखै। देखतो-देखतो इत्तो मगन होयग्यो कै बीं नैं इयां लागण लाग्यो कै गुलाबी किन्नी बो ईज उडाय रैयो है। इत्तै में ई गुलाबी किन्नी कटगी अर हवा में हिचकोळा खावती नीचै पड़गी अर बीं री डोर टाबर माथै आय'र पड़ी। डोर पड़ण सूं टाबर खयालां सूं बारै आयो। ''अरे! गुलाबी किन्नी तो कटगी अर ताणी तो म्हारै माथै आय पड़ी।'' बो बाळपणै में बीं ताणी नैं पकड़'र खींचण लागग्यो।

गुलाबी किन्नी उडावण वाळो मिनख बीं टाबर माथै पैलां सूं ई रीसां बळ्योड़ो हो अर ऊपर सूं कटगी किन्नी। किन्नी कटण रो सारो दोस टाबर रै माथै मंढ'र ताणी नैं जोर सूं खींची तो टाबर री आंगळ्यां ताणी सूं कटगी अर लोही री धार छूटगी। टाबर जोर सूं चिरळायो। हाथ में दरद रै कारण जोर-जोर सूं रोवण लागग्यो अर दूजै हाथ सूं आंगळ्यां नैं पकड़्यो नीचै कानी भाज्यो। डागळै सूं लेय'र आंगणै तांई लोही री धार छूटगी। आंगणै में जाय'र टाबर ढबियो अर आपरी मां नैं हेलो पाड़्यो, ''मांऽऽ अे मांऽऽ।''

जेळवैल, हनुमान गळी, बीकानेर (राज.) मो. 9351340799

टाबर रो रोज सुण'र बीं री मां रसोई मांय सूं भाज'र बारै आयी। टाबर रै हाथ सूं टपाटप लोही पड़तो देख'र मां गाफळीजगी। बीं नैं कीं ठाह नीं रैयो कै बा करै तो कांई करै! छेकड़ बीं नैं चेतो बापरयो। ओरे में जायनै अेक कपड़ै री लीरी लायी अर बीं नैं पाणी सूं गीली कर'र टाबर रै हाथ रै बांधी। थोड़ी ताळ में लोही पड़णो बंद होयग्यो। पछै टाबर नैं मां पुचकार'र पूछ्यो, ''कांई हुयो रे पपिया?'' जणै टाबर डरतो-डरतो आपरी मां नैं सगळी बात बतायी, ''मां, अेक किन्नीवाळै री किन्नी कटगी अर बीं री ताणी आपणै डागळै आयी अर म्हैं बीं ताणी नैं लूटण सारू पकड़ली, किन्नी कटण री रीस में बो मिनख ताणी नैं जोर सूं खींची अर म्हारी आंगळ्यां कटगी।''

मां कैयो, ''बेटा, तूं छोटो है। इण पतंग अर डोरां सूं अळगो रैया कर।'' पण बो तो टाबर हो। थोड़ी ताळ में ई सो-कीं भूलग्यो अर पाछो डागळै चढग्यो उडती किन्नियां नैं देखण खातर। बो मिनख टाबर रै कानी देख'र घूरण लागग्यो अर मन ई मन में टाबर नें ईज किन्नी कटण रो दोसी मान'र हिसाब चुकतो करणो चावै हो, पण कीं कर नीं सक्यो। इयां करतां-करतां किन्नियां उडावण री रुत खतम व्हैगी। टाबर रै अंतस में गुलाबी किन्नी रो चितराम छपग्यो।

आगलै बरस किन्नियां री रुत पाछी आयी। बो टाबर पैलां ज्यूं ई दिन ऊगतां पाण डागळै चढ'र उडती किन्नियां नैं देख'र आणंद लेवण लागग्यो। पपियो केई बेळा आपरै पापा नैं किन्नियां दिरावण रो कैयो पण ऑफिस रै काम रै आगै गिनर कोनी करी। अेक दिन ऑफिस री छुट्टी ही अर टाबर रा पापा घरै ईज हा। जणै बो टाबर आपरै पापा नैं कैयो, ''पापा, आज तो म्हनैं किन्निया दिराय'र लावो नीं।''

बीं रा पापा कैयो, ''हां बेटा, आज तो म्हैं थनैं जरूर किन्नियां दिराय लासूं। झटकै सूं त्यार होय'र आयजा। आपां दोनूं बाजार चालसां।''

दोनूं बाप-बेटा बाजार में किन्नियां री दुकान माथै जाय'र ढबिया। बठै जाय'र टाबर नैं बीं रा पापा पूछ्यो, ''किसी किन्नी लेसी?'' बो टाबर किन्नियां देखण लागग्यो। बठै बीं नैं अेक धोळी किन्नी दिखी। बा किन्नी बित्ती ई फूठरी ही जित्ती कै बा गुलाबी किन्नी। टाबर आंगळी सूं धोळी किन्नी कानी इसारो करयो। टाबर रा पापा री निजर बीं री आंगळी माथै पड़योड़ै निसाण माथै पड़ी अर बांरो विचार बदळग्यो। अरे! औ म्हैं कांई कर रैयो हूं? बै आपरै टाबर नैं कैयो, ''चाल बेटा, आपां नैं किन्नियां कोनी लेणी।''

''क्यूं पापा?''

''देख बेटा, तूं किन्नियां अर ताण्यां रै चक्कर में मत पड़। तूं भूलग्यो कांई, लारलै बरस थारो हाथ ताणी सूं कटग्यो हो। कित्तो दोरो पाटियां-पोळियां करायी अर छेकड़ कठैई जाय'र थारो हाथ ठीक हुयो हो। अबै म्हैं थनैं किन्नी कोनी दिरावूं। चाल... घरां चालां।''

पण टाबर जिद ई पकड़ली धोळी किन्नी लेवण री। टाबर रा पापा, टाबर रो बांहुड़ो पकड़्यो अर खींच'र घरां ले जावण लाग्या। टाबर रोवतो जावै अर कैवतो जावै, ''म्हैं तो बा ईज धोळी किन्नी लेसूं... बा ईज धोळी किन्नी लेसूं।'' बो तद तांई जिद करतो रैयो जद तांई कै बीं री निजरां सूं अदीठ नीं होयगी ही बा—धोळी किन्नी।

◆◆

करुणा दशोरा

अणव्हैती

रूपा तीसरी किलास में भणती ही। बा नित स्कूल जावती अर घणो मन लगाय'र भणती भी ही। उणरो घर स्कूल सूं घणो छैटी नीं हो। छोरा-छापरा खेलता-कूदता पगां ई स्कूल जावता परा हा। रूपा भी आपरै आड़ै-पाड़ै रा बाळकां लारै ई जाया करती ही।

पण आजकाल रूपा घर सूं स्कूल वास्तै घंटो खंड पैलां ई निकळवा लागगी। मां केई दाण उणनैं बरजी भी ही कै हाल तो वैगो है, अतरी झट क्यूं जावै है ? पण बा मां री बात रो पड्डत्तर दियां बिना ई कोई-न-कोई बायनो बणाय'र झट सूं निकळ ई जावती। मां भी इण बात पै वत्तो ध्यान नीं दियो, औ सोच'र कै छोरा-छापरा है। रमता-खेलता परा जावै है, छन्याक वैगा पूग जावैगा तो कांई हरज है!

रूपा री मां रै मन में आ बात तो आयी कै आजकाल रूपा घर सूं वैगी निकळै है, पण क्यूं ? इण बात पै उण घणो ध्यान नीं दियो। पण जद ठाह पड़ी तो घणो हळाबोळ वैई पूगो हो अर सिवाय पछतावां रै कीं हाथै नीं लागो।

व्हियो यूं कै रूपा रा घर सूं न्हामेक छेटी अेक बाड़ा में अेक गंडकड़ी बच्चा दिया। बै नान्हा-नान्हा लूरक्यां घणाई मोवणा अर घोळू-मोळू हा। बांनै देखतां ई किणी रो भी मन उणां नैं खेलावा रो होय जावै। रूपा तो नान्हीक छोरी ही। उणनैं तो जाणै अेक लारै अतरा खेलकण्या मिलग्या अर बै भी जींवता-जागता। बा आपूं आपनैं उणां लूरक्या रा मोह सूं अळगो नीं राख सकी अर माऊ-बापू सूं छानै-छुपकै घर सूं वैगी निकळ'र घंटोखंड उणां लूरक्यां लारै खेल'र जद अड़ै-भड़ै रा सगळा साथी गोट्या स्कूल खातर उण गेला सूं निसरता तो बा भी उणां रै लारै परी व्हैती।

रूपा री घणी तगड़ी मंसा व्हैती उणां लूरक्यां नै आपरै घरां ले जावा री, पण बापू री दरपणी उणनैं अस्यो करवा सूं लगोलग रोकती रैयी अर बा आपरै मन री इच्छा पूरी करण सारू नित उणां लूरक्यां लारै खेल'र टेमोटेम स्कूल अर घरां पूग जावती।

अेक दिन रूपा ज्यूं ई अेक लूरक्या नैं खेलावा खातर आपणै खोळा में लीदो कै अतराक में कूतरी आव रै परी। बा तो आवतां ई घुरावती थकी रूपा पै लपकी तो रूपा रै हाथां मांय सूं लूरक्यो बठै ई छूटग्यो, पण भुसती थकी उण कूतरी रो दांत रूपा रै हाथ री अेक आंगळी में गच्च गयो। रूपा दरपणी रै मारै बठै सूं तुरत निकळी अर स्कूल पौंचगी। बठै ई बा आखो दिन

15, न्यू शास्त्री नगर, सेक्टर नं. 3, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.) मो. 9828028935

अणमणीज'र रैयी। थोड़ीक लागी है, साऊ व्है जायी, यूं सोच'र बा बेचिंता व्हैयगी अर उण हाथ कानी घणो ध्यान नीं दीधो। नीं ई किणनैं ई इणरो जिकरो कीधो कै उणरै सागै कांई बीती।

स्कूल री छुट्टी व्हियां बा घरै पूगी तो बठै भी मारै दरपणी रै उण आपरै माऊ-बापू नैं कीं नीं बतायो। जाणै खबर पड़्यां वै लताड़ैगा। उण आपरै हाथ नैं ओलै-छानै राख्यो पण आखिर कठा तांई ? चार-पांच दिन में तो बो घाव पाकवा आयो। तो ई बा किणी नैं नीं बतायो। स्यात बा आ बात घरै बताय देंवती तो टेम पै इलाज मिल जावतो, पण उण इयां कोनी करयो।

थोड़ाक दिन ओजूं निकळग्या कै रूपा तो कूतरा री गळाई भुसवा लागी। कूं कूं कर'र बा तो रात-दिन कुरळावै। घर रा मिनखां रै समझ में नीं आयी कै छोरी रै कांई व्हैग्यो। पण जो भी हुवो, अबै घणो मोड़ो होयग्यो हो।

गंडकड़ी रो ज्हैर रूपा रा सरीर में पसराव करवा लागो। आखिर ही तो गांव री कूतरी। उणरै कस्या एंटीरैबिज रा इंजेक्शन लाग्या थका हा। तो ज्हैर तो असर करणो ईज हो। होळै-होळै रूपा मांय कूतरा रा सगळा लखण प्रगट व्हैवा लागा। बा कूतरा ज्यूं भूंकती तो कदैई बटको भरवा री करती अर दरपी-दरपी लागवा लागी। ताव आयो जो न्यारो।

औ सब देख'र रूपा रा माऊ-बापू हैरान व्हैग्या। उणां री समझ में नीं आय रैयी ही कै आखिर उणां री छोरी रै व्हियो कांई हे! कजाणा ताव रै कारण तो अस्यान न्हीं कर रैयी है। बै सोचता रैया पण तो भी रूपा उणां साची बात नीं बतायी। देवरै ले जावा पै भी कोई फायदो नीं मिल्यो, क्यूंकै मरीज आपणी तकलीफ सही-सही बतावै तो ठाबंद इलाज लागै कै।

अबै लाचार होय'र रूपा रा माऊ-बापू उणनैं सफाखानै लेयग्या। बठै रा डाक्टर तो रूपा नैं देखतां ई केई दियो कै इणमें तो कूतरा रै काटवा सूं व्हैवा वाळी बैमारी रा लक्षण दीख रैया है। इणरै गंडक बटको भरयो हो कांई ? पण मां-बाप तो इण बात सूं अणजाण हा। बै कांई बोलता! उणां तो ना में नाड़की हलाई दीधी अर रूपा जाणता थकां भी साच नीं बताय सकी। उणनैं समझ पड़गी ही कै म्हारी इण दसा री जिम्मेवार म्हैं ईज हूं, दूजो कोई नीं।

अतराक में पाछो उणनैं दौरो पड़ग्यो। बा कूतरा ज्यूं भुसवा लागी अर उणरै मूंडै सूं लाळ रा रेला निकळवा लाग्या। डाक्टरां घणी कोसिस कीधी उणनैं ठीक करवा री, पण कोई दवा-दारू कै दूजा जतन उणनैं ठीक नीं कर सक्या, क्यूंकै अबै घणी देर व्है चुकी ही।

रूपा री अेक छोटी-सी चूक उणरी जिंदगाणी पै भारी पड़गी अर अतरो दुख देख्यो जो न्यारो। देखतां-देखतां रूपा रा प्राण-पंखेरू परा उड्या। उणनैं डाक्टर ई नीं बचा सक्या। हां, रूपा टेमसर सो-कीं बताय देंवती तो औ दिन नीं देखणो पड़तो। पण अबै कांई ?

रूपा रा माऊ-बापू गराड़ा कर-कर'र रोवा ढूका। बै कैय रैया हा—अरे छोरी! थूं औ कांई कीधो ? म्हांनै वतावती तो खरी। थारो साऊ इलाज करावता। टेमसर इलाज मिलतो तो थूं झट ठीक व्है जावती, जीव सूं तो नीं जावती! हाय म्हारी रूपली...!

मां-बाप रो औ विलाप हर किणी रै ई काळजै नैं चीरतो थको आखै सफाखाना में गूंजग्यो।

◆◆

दमयंती जाडावत

वीज़ा

''आज भाबू चूल्हो नीं चेतायो। स्यात आज बा कीं ज्यादा ई मांदी व्हैगी है। उणरी सरधा कोनी, जिणसूं बा खाणो नीं बणाय सकी है। खाणा में ई कीं खास नीं बणावै। रोज खीचड़ी-थूली बणावै। पेट में आंत नीं, मूंडा में दांत नीं।'' इत्ती बात आपरी जोड़ायत राधा नैं कैवतो गोपाळ माचा पे बैठग्यो अर आगै कैवण लाग्यो, ''भागवान! थोड़ो पाणी रो लोटो तो झिलाय दै।''

राधा पाणी रो लोटो ल्यायी। गोपाळ उणनैं कैयो, ''थोड़ी खीचड़ी बणाय दै। भाबू नैं देंवतो आवूं अर देखतो आवूं कै उणरी तबीयत कीकर है।'' भाबू री धांसणै री आवाज उणां नैं साफ सुणीज रैयी ही।

गोपाळ खीचड़ी लेय भाबू रै घरै आयो। बा सूती-सूती बोली, ''कुण है ?''

गोपाळ बोल्यो, ''भाबू, औ तो म्हैं हूं गोपाळ। आप कीं जीमिया ? आपरी तबीयत कीकर है ?''

भाबू धांसती बोली, ''बेटा, थोड़ो ताव है, सांसां तेज चाल रैयी है, धांस-धांस'र हालत कमजोर व्हैगी है अर सांस लेवण में तकलीफ व्है रैयी है।''

गोपाळ बोल्यो, ''ल्यो भाबू, थोड़ी खीचड़ी खायलो।''

बा बोली, ''बेटा, खावण री मनस्या कोनी। थूं म्हारै खातर इत्ती तकलीफ क्यूं देख रैयो है।''

''इणमें तकलीफ री कांई बात है भाबू! म्हैं आपरै बेटा ज्यूं ई तो हूं। थोड़ी-घणी खीचड़ी म्हारै खातर खायलो।'' गोपाळ पडूत्तर दियो। बेटो सबद कान में पड़्यां उणरै आंख्यां में आंसू आयग्या। पण आपरो दुखड़ो छिपावती, मूंडो फेर'र झट आंसू पूंछ लिया। यूं थोड़ी वेळा भाबू सूं बंतळ कर'र उणनैं दवाई देय'र गोपाळ पाछो आपरै घरै आयग्यो। उणमणा मन सूं उण थोड़ो भोजन कर्‌यो अर सोयग्यो। घणी रात बीतगी पण उणनैं नींद नीं आय रैयी ही।

उणनैं भाबू रै जीवण री बातां याद आवण लागी। जीसा रै गुजर्‌यां पछै भाबू आपरै अेकलड़ै बेटै नैं चोखा स्कूल में पढायो। अेक बरस तो बरसात घणी कम व्ही। खेतां में बेचण जोग उपज कोनी व्ही। नीठानीठ खावण जोग अनाज पार पड़्यो। बा लोगां रै घरां में काम करती। कम खावती, कम बिछावती। खुद मांदी ही, आपरी दवाई नीं मोलावती, पण बेटा रै स्कूल री

ए-504, ईडन कोर्ट अपार्टमेंट, मेवाड़ हास्पिटल रै कनै, न्यू नवरत्न कॉम्पलेक्स, भुवाणा (उदयपुर) 313001
मो. 9414473342

फीस टेमसर जमा करावण सूं कदैई नीं चूकती। यूं ई दिन निकळता रैया। देखतां-ई-देखतां किसन जवान व्हैग्यो। पढण में बो इत्तो हुंसियार होय'र सरकार री तरफ सूं उणनैं छात्रवृत्ति मिली। उण रा संगेती विलायत में पढण नै गया। उणरै मन में ई विलायत में पढण री ही। इण खातर मोटी रकम री जरूरत ही। भाबू आपरी रकमां गैणै मेली अर किसन रै विलायत में पढण रो जुगाड़ करयो। किसन ब्हीर होवण री त्यारी करण लाग्यो। भाबू री आंख्यां में आंसू देख'र किसन उणनैं समझावतो बोल्यो, ''भाबू, थूं म्हारी बिल्कुल चिंता मत करजै। म्हैं कागद लिख'र समाचार भेजतो रैवूंला।'' पण अपरा लाडला बेटा नैं यूं आगो जावतो देख'र भाबू रो काळजो मूंडै आय रैयो हो, पण उणरी पढाई रो विचार करती उण आपरा मन नैं घणो दोरो समझायो। पढाई रा खरचा रै वास्तै जद कदैई धन री जरूरत पड़ती तो किसन भाबू नैं कागद लिख देंवतो। बा जाण-पिछाण वाळां सूं उधार लावती अर आपरो पेट काट'र लोगां नैं ब्याज चुकावती।

किसन रै सागै पढण वाळी गोरी छोरी डायना किसन जैड़ा सीधा-सादा छोरा नैं आपरा जाळ में फंसाय लियो अर उणसूं ब्यांव कर लियो। पण भाबू नैं इण बात री भणक तक नीं पड़ण दी। अेक-दो बेळा भाबू री बीमारी रा समाचार आया अर बो पाछो देस आवण रो मत्तो करयो, पण डायना उणनैं फटकार दियो अर आवण सूं रोक लियो। बो मन मार'र रैयग्यो।

डायना सूं छानै उण भाबू नैं कागद भेज्यो, जिणमें उण लिख्यो कै म्हारी पढाई पूरी व्हैगी है अर म्हनैं अठै नौकरी मिलगी है। कागद रा समाचार सुण'र भाबू रै मन में मोद नीं माय रैयो हो। बा थाळी में गुड़ लियां आखा गांव में दौड़-दौड़'र आपरै बेटै री परदेस में नौकरी लागण री खबर सुणावती, लोगां रा मूंडा मीठा कराय रैयी ही।

हड़बड़ाय'र गोपाळ माचा पे उठ बैठ्यो। उण किसन नैं कागद लिखण रो विचार करयो। भाबू री बिगड़ती हालत री बात कागद में लिखतां आगै लिख्यो कै भाबू अठै थनै घणो याद करै है। इणनैं आपरे साथै लेय जावै, देर नीं करै। झट कागद रो जबाब देवै।

केई दिन गुजरग्या। किसन रो कोई कागद नीं आयो। भाबू री हालत तर-तर बिगड़ती गई। गोपाळ अर राधा उणरी देखभाळ करता। भाबू नैं थावस बंधावता रैवता कै आपरा पासपोर्ट-वीज़ा बण रैया है। किसन रो कागद मिल्यो है अर बो आपनैं लेवण नै आवैला। अेक दिन भाबू री हालत ज्यादा ई बिगड़गी। उण पाणी तक नीं पीयो। गोपाळ उणनैं अस्पताळ लेयग्यो। बो उणरै कनैई बैठ्यो हो। बा अैसान भरी निजरां सूं उणनैं देख रैयी ही।

अचाणचक उणनैं दो-तीन हिचकी आयी। हिचकी रै बिचाळै उणरै मूंडै सूं छेहला सबद निकळ्या, ''गोपाळ... किसन... गोपाळ...।'' इणरै सागै इ उणरी सांस निकळगी। गोपाळ उणरी लाश घरै लियायो। घरै किसन रो कागद आयोड़ो हो। लिख्यो हो कै भाबू रा पासपोर्ट-वीज़ा बण रैया है।

गोपाळ मन-ई-मन सोच्यो कै अबै तो इणरै पासपोर्ट-वीज़ा री जरूरत नीं है। इणरै तो भगवान रै घर रो वीज़ो आयग्यो है।

◆◆

डॉ. मीनाक्षी लक्ष्मीकांत व्यास

पान सड़ै घोड़ो अड़ै, विद्या बिसर जाय

चीकू खरगोसियो अर रिंकू टीलोड़ी खास भायला हा। बै दोनूं नंदनवन रै अेक ई स्कूल में पढता हा अर दोनूं री क्लास ई अेक ही। चीकू तेज दिमाग वाळो पण थोड़ो लापरवाह हो जदकै रिंकू मैनती। चीकू एक बार पढ्यां पछै बीं माथै पाछो ध्यान नीं देंवतो जदकै रिंकू नेम सूं पढाई करयोड़ी रो पाछो अयास करती। बा चीकू नैं यूं ईज करण रो कैवती, पण बो हंस'र टाळ देंवतो अर कैवतो कै म्हनैं सब आवै, म्हनैं रोज अभ्यास करण री जरूरत कोनी।

दिन निकळता गया अर इम्तिहार सरू हुया तो चीकू आदत रै मुजब खुद री धुन में ई रैयो। रिंकू जद टोक्यो तो ओ कैय'र टाळ दियो कै म्हनैं सब आवै, जे जरूरत पड़ी तो देख लेवूंला अेक बार। इम्तिहान सूं पैलड़ै दिन जद बो पढण नै बैठो, आपरी पोथ्यां खोली तो बीं रा होस उडग्या। बीं नैं पैलां सूं पढ्योड़ो कीं भी याद नीं हो अर अबै पढणो बीं नैं भारी बोझ लागण लागग्यो। सगळी रात जाग'र बो भणाई करी, फेरूं ई बीं रा इम्तिहान रा परचा खराब हुया। रिंकू रै परचा चोखा हुया, क्यूंकै बीं नैं नेम सूं भणनै री आदत ही।

परीक्षाफळ आयो जद पतो लाग्यो कै चीकू रै सप्लीमेंट्री आयी अर रिंकू घणा नंबरां सूं पास हुयी। चीकू रोवण लागग्यो तद रिंकू बीं नैं समझायो कै हाल भी घणी टेम है, थारी छोटी-सी गलती सुधार लै। जे थूं थारी पढाई माथै ध्यान देवैला, नेम सूं अभ्यास करैला तो पाछा हुवण वाळा परचां में पास व्है जावैला। बा समझायो कै नेम सूं अभ्यास करण सूं हरेक क्षेत्र में सफळ व्है सकां। बिना अभ्यास तो जको आवतो हुवै, बो ई बिसर जावां। कैवत भी है कै पान सड़ै घोड़ो अड़ै, विद्या बिसर जाय।

चीकू आपरी गलती मानली अर रिंकू नैं धन्यवाद दियो कै बा सच्चै दोस्त रो फरज निभायो है।

चीकू पूरी लगन अर जोस सूं पढाई करण लागग्यो। अबै बो पढाई अर खेल सगळां रो नेम सूं अभ्यास करतो। इणरो परिणाम भी साम्हीं आयो। चीकू परीक्षा अर खेल दोनूं में अव्वल रैयो। बीं नैं अबै नेम सूं अभ्यास री बात समझ आयगी।

◆◆

नाथावतां री गळी, तापी बावड़ी, जोधपुर (राज.) 342001 मो. 9460277423

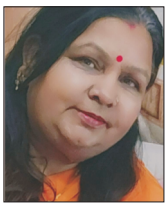

शकुंतला सोनी

ठणठण पाल ई ठीक

अेक छोरी नैं नांव पूछण रो घणो चाव हो। सगळां नैं नांव पूछती अर हंसती। नांव प्रेम नै लड़ोकलो, नांव रूपाळी नै रूप रो पतो ई नीं। नांव शेरसिंह नै डरपोक नंबर अेक। नाम रामजी नै करम रावण रा। नांव भागवंती नै फूटा भाग री, नाम मीठालाल नै जबान नीम जिसी कड़वी। नांव संतोष नै लालची नंबर अेक। दिन निकळ्या नै ब्यांव व्हियो। बींद रो नांव ठणठण पाल। सब आखो दिन ठणठण पाल री लाडी कैय'र बतळावता। घणो मन दुखी होवतो, अरे औ कांई नांव!

अेक दिन रीस री मारी घर छोड'र निकळगी। गेला में अेक मुरदो देख्यो। पूछ्यो—भाई, मरवा वाळो कुण? जबाब मिल्यो—अमर। नांव तो अमर अर मरग्यो?

आगै गयां अेक छोरी थेपड़्यां थापै ही। नांव पूछ्यो तो बोली—लिछमी। वणी नैं हंसी आयगी। फेर आगै गई तो अेक मिनख भीख मांग रैयो, वणी नैं भी नांव पूछ्यो तो बोल्यो—धन्नो। अबै तो वा हंसवा लागी। वणी नैं समझ आयगी कै नांव सूं कांई नीं व्है। वा बोली :

अमरयो तो मरयो भयो, धन्नो मांगै भीख।
लिछमी तो छाणा चुगै, ठणठण पाल ई ठीक।।

◆◆

15, न्यू त्रिमूर्ति कॉम्प्लेक्स, मनवा खेड़ा रोड, हिरणमगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) मो. 9983300220

 ISSN : 2320-0995

डॉ. अंजु

अपणायत रो गैरो मीठो रंग

धूप-छांही जीवण रा कई रंग अतरा ऊजळा हुवै कै याद करतां ई आंख्यां मांय इंदरधनख खिल जावै अर अपणायत रो ऊजळो उजास हियै नैं जगरमगर कर देवै। अै रंग खून रा रिस्ता अर देसाकाळ री सींव सूं परै हुवै। अैड़ो ई रंग अर छिब आंख्यां मांय समायेड़ी है दो भूटानी टाबरां री। उणां रो नांव है—रसिक शर्मा अर अमन। आं दोन्यूं सूं मिलणो भी बडो रोचक तरीकै सूं हुयो हो। टाबरिया छोटा हुवण रै कारण बां दिनां म्हैं म्हारै पीहर ईज रैवती ही। ब्यावर रै सरकारी कॉलेज में पढाती ही। दिनूगै ड्यूटी समै माथै जावती जकैरी सिंझ्या या रात नौ बजी तांई घरां पूगती। बेटो साढी आठेक महीनां रो ईज हो। विश्वविद्यालय री परीक्षावां में कदैई दो तो कदैई अेक ड्यूटी लागती।

अेक दिन दिनूगै री ड्यूटी कर'र टेम माथै ईज घरै आयगी। म्हारै भतीजै अर बेटै में डेढ महीनै रो ईज आंतरो हुवण रै कारण दोन्यूं नैं लेय'र हॉल में खेलाय रैयी ही। सिंझ्या रो बगत हो। म्हारो छोटो भाई अजय पाड़ोस रा प्लॉट में गायां री दूवारी कर'र दूध ले जावण रो हेलो पाड़्यो। दूध मम्मा नैं रसोई में झिलाय'र म्हैं फेर टाबरां नैं खेलावण में लागगी। जित्ती ई बार आवूं, अजय री आवाज सुणीजै, ''भैया, किसे ढूंढ़ रहे हो?''

अचाणचक पूछ्या गया सवाल सूं घबरायोड़ी पड्डत्तर देंवती दो आवाजां अेकै साथै सुणीजी, ''सॉरी भैया, हम तो ऐसे ही घूमने आ गए थे।'' हाथ सूं लारला मकानां कानी इसारो कर'र कैयो, ''उधर रहते हैं भैया। हम भूटान से अेआईटी में पढ़ने आए हैं।''

''अच्छा-अच्छा, बहुत बढ़िया। लेकिन सॉरी क्यों बोल रहे हो? आप तो हमारे पड़ोसी हैं।'' अजय बांनै आश्वस्त करतो बोल्यो।

''जी भैया।''

''आओ! अंदर चलते हैं। चाय पीकर जाना।''

''जी भैया।''

दोन्यूं टाबर घरै आया तो बांनै बैठक में बिठा'र अजय चाय बणावण री कैय'र हथाई में लागग्यो। उण दिन तो बै टाबरिया थोड़ी देर हथाई कर'र अजय नैं किरायै रै मकान में आवण रो नूंतो देय'र चल्या गया। घूमतो-घूमतो अजय बांरा दोस्त-भायलां सूं भी मिल आयो अर बात आई-गई होयगी। म्हैं सगळा आपरा कामां मांय व्यस्त होयग्या।

गुलाब गैस गोदाम रै कनै, जयमल नगर-1, लोहागल, अजमेर (राज.) 305004 मो. 7976229898

पांच दिनां पछै सिंझ्या दोन्यूं टाबर रसिक अर अमन फेर आया। म्हारै पीहर में ठाकुरजी रै दीया-बत्ती कर'र सब बेगो ई खाणो जीम लेवै। खाणो बण रैयो हो, तो अजय कैयो, ''आप दोनों खाना खाकर ही जाना। खाने में क्या बनवाएं?''

चोखो करयो जको पैली ई पूछ लियो। बै टाबरिया तो उबळ्योड़ा चावळ अर साग ई खाबो जाणता हा। रोटी तो कदैई खाई ई कोनी ही। तुरत-फुरत बांरै मुजब खाणो बणायो। ईं बीच अजय सगळा घरकां सूं बांरो परिचै करायो। थोड़ी बातचीत भी हुयगी, पण टाबरिया तो जम'र बैठग्या। घरै जावण रो नांव ई नीं लेवे अर म्हे सोवां बेगा। अठी-बठी री बातां करता बोल्या, ''भैया, हमें एक कमरा किराये पर चाहिए।''

''हमारे तो कोई कमरा खाली नहीं है।'' भाई पडूत्तर दियो। पण बै दोन्यूं जणा तो जिद झाल ली कै म्हैं तो अठै रैवां। थांनै अेक कमरो खाली करणो ई पड़सी। घणी दुबिधा री स्थिति होयगी। घर बैझ्या घंटो गळै में घाल लियो। थाक'र अजय मम्मा नैं बुलायी।

''माताजी, हमें एक कमरा किराये पर दे दो। आप हां नहीं करोगे, तब तक यहां से नहीं जाएंगे।''

घणी अबखायी री बात हुयगी आ तो। इयां लाग्यो जाणै अै तो भलाई में भाटा पड़ग्या। बांरी जिद ही कै आगै हार'र बारली बैठक किरायै पर देवणी ई पड़ी। दोन्यूं दूजै दिन ई आपरा गाभा-गूदड़ लेय'र आ धमक्या। रसिक अर अमन री घणी जोरसोर सूं एंट्री हुयी। बीनणी आवतां ई बांनै साफ-सफाई राखबा अर बारला खाणा री मनाही री भोळावण देय दी। हालांकै आ बात अजय पैली ई बता दी ही, पण बीनणी मम्मा रै हिसाब सूं समझा दिया। थोड़ा दिन तो घणी अबखायी हुयी, पण धींरै-धींरै बै परदेसी आपणै रंग में ढळबा लाग्या।

कॉलेज सूं पढ'र आवता, कूकर में चावळ चढा'र धड़ाधड़ आठ-दस सीट्यां लगाता अर खा लेंवता। अेक दिन बीनणी रात री बच्योड़ी कड्डी गायां नैं नाखबा जावै हा। अमन बीच में ई रोक ली, ''भाभी, ये क्या है? गाय को खिलाओगे?''

''अमन भैया, ये कड्डी है। गाय को ही खिलाने जा रही हूं।''

''भाभी, आज के बाद इसे गाय को मत डालना। बचा हुआ सारा मुझे दे देना।''

दोन्यूं जणा पढता जित्ती देर मांयलो किंवाड़ खुल्लो ई राखता। कॉलेज सूं मोड़ा-बेगा आवता तो घरै बण्योड़ी रोटी-साग पकड़ा देंवता। पैली-पैली तो रोट्यां चाबवा में ई कैवता कै मूंडो दूखै। धींरै-धींरै तीज-तिंवारां पर पुआ-पूड़ी, सियाळै में भांत-भांत रा परांठा अर अठै तांई कै बाटिया भी चाव सूं खावण लागग्या।

सिंझ्या पड़ी म्हे सगळा डागळै पर चल्या जावता। ठंडो-ठंडो बायरो खाबा अर टाबरां नैं ऊळाई में खेलाबा। जद दोन्यूं खुल'र बाताचीतां भी करता। भूटान में तो भूटानी अर अंगरेजी ई चालै, फेर अठै हिंदी कठै सूं सीखी? तो बै बतायो कै हिंदी फिल्मां देख-देख'र हिंदी सीखग्या। म्हनैं घणो अचुंभो हुयो। पण लगन हुवै तो कीं मुस्कल कोनी। रसिक रै परिवार में दादा-दादी अर मम्मी-पापा अर बडी बैन सगळा साथै ई रैवता। अमन रै तो सौतेली मां ही। अेक बैन ही जकी ब्यूटी पार्लर चलावती अर पढाई रो खरचो उठावती।

रसिक गोरो-चिट्टो, गोळ मूंडो, सुतवां नाक, काळी बडी-बडी अपणायत सूं भरयोड़ी आंख्यां रो लंबो पूरो टाबर हो। चैरा पर भोळप ही अर हेताळु सुभाव रो। अमन दूच्योड़ा थेपड़ी जियांनका मूंडै माथै दो चीलरा लगायोड़ी-सी मिचमिची आंख्यां, पिचक्योड़ो नाक, छितरयोड़ा बाल, जका लिलाड़ नैं ढक'र आंख्यां तांई आयोड़ा रैवता। छोटा-छोटा हाथां आळो थोड़ो दब्योड़ो रंग रो ठिंगणो-सो टाबर हो। बोलतो भी साव कम। इयां लागतो, सौतेली मां री बेजां तानासाही रै कारण थोड़ो सुभाव मांय दब्बूपणो आयग्यो हो। भैण री सगळी बातां म्हनैं बतावतो। रसिक आपरा होजुरबा (दादाजी) री दियोड़ी तीन चीजां हमेस साथै राखतो—अेक माळा, दूजी कोई ढाईसौ साल पुराणी ढाई बाई आधाक इंच री श्रीमद्भगवद्गीता अर भगवान बुद्ध री नैन्ही-सी मूरती। रसिक गिटार तो अमन ड्रम जोरदार बजावतो। दोन्यूं संगीत रा रसिया हा।

उण बगत अजमेर में लगैटगै ढाई-तीन सौ भूटानी टाबर पढता। बै ई कायड़ अर लोहागल में रैवता। सगळा भूटान रा राजा जिग्मे खेसर नामग्याल वांग्चुक रो जलमदिन रेस्टोरेंट में घणै उच्छब सूं मनावता हा। भोजन-पाणी रै सागै जम'र नाच-गाणो भी करता अर आपरी मायड़भोम अर भासा नैं पूरो सन्मान देंवता हा। ईं उच्छब रो सारो खरचो भूटानी टाबरां नैं सरकार सूं ईज मिलतो। रसिक सूं आ बात सुण'र घणो अचुंभो हुयो कै आं मांय सूं घणकरा टाबर तो नौकरी करबाळा अर थोड़ाक दो-दो टाबरां का बाप भी हा।

मोड़ा उठबा वाळा दोन्यूं टाबरिया अेक दिन दिनूगै बेगा उठ'र कमरै री साफ-सफाई करी अर रसिक री मोटरसाइकिल चमकाबा में लाग्योड़ा हा। गाभा ई धोय-निचोय'र सुखा रैया हा। दोन्यूं में अेक बेजां बुरी आदत ही—अेक-अेक महीनै तांई नीं न्हावता। मम्मा बेराजी होय'र प्रेम सूं लड़ता, ''अमन-रसिक! न्हायां कित्ता दिन हुयग्या। आज नीका न्हा लीज्यो, नींतर अठै सूं भगा दूंली।''

''जी माताजी।'' तुरत सिनान करबा भाजता। उण दिन सब नैं घणो अचुंभो हुयो कै आज सूरज अगूणी दिसा नैं भूल'र आथूणी दिसा में कियां ऊग्यो है। पूछतां ई घणै हरख रै साथै बतायो कै आज विश्वकरमा जयंती है। भूटान में आंरो उच्छब मनावै। जोरदार साफ-सफाई कर'र विश्वकरमाजी नैं निवण करै। आ बात जाण'र अचंभो भी हुयो अर काळजो ठंडो हुयो कै आपणै देस री राज-रीत नें दूजोड़ा मुलक आज भी मानै है।

बातांचीतां होवती ही। रसिक म्हनैं बोलतां सुण-सुण'र राजस्थानी समझणी अर बोलणी सीखग्यो हो। अेक बार बीनणी आपरै पीहर पधारयोड़ा हा अर दुपारी री परीक्षा देय'र आयो रसिक बेगो-सो मम्मा कनै रसोई में आय'र बोल्यो, ''माताजी, बड़ी जोर की भूख लग रही है। जो भी हो, खाने को दो।''

बीं दिन मम्मा रो बीपी बध्योड़ो हो अर तीन टाबरां नैं अेकला संभाळतां थक भी गया हा। बेराजी होवता बोल्या, ''ईं छातीकूटा री कमी ही।''

मम्मा नैं बेराजी देख'र रसिक बोल्यो, ''माताजी, हां तो छातीकूटा, पण भूखा मर रैया हां।'' कैय'र बो जोर सूं हंसबा लाग्यो। रसिक रै मूंडै राजस्थानी सुण'र मम्मा री रीस छूमंतर होयगी। दोन्यूं नैं हॉल में बैठा'र नीका जिमाया। बीं दिन बाद मम्मा दोन्यूं बेई बत्तो खाणो बणाबा

रो नेम बणा लियो। अेक जणै रो खाणो तो दोन्यूं बगत बेसी बणाबा रो नेम ई हो। घरै सूं कोई पांवणो भूखो नीं जावै।

रसिक बतावतो कै भूटानी चीन अर पाकिस्तान नैं पसंद कोनी करै। भारत सूं अपणायत राखै। बठै बिजळी रो ज्यादा उत्पादन होवै। बाकी पैली वरीयता भारत री रैवै। भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच में भी भारत रो समरथन करै। अेकर अजय दोन्यूं टाबरां अर बांरा भायलां नैं फारमहाउस लेयग्यो। गांव में नास्तो-पाणी करबा रुक्या तो गांव रा टाबरिया—'अरे देखो रे, चाइनीज... चाइनीज...' कैय'र टोळो बणाय'र बारै लारै ई पड़ग्या। औ वैवार सगळा भूटानी टाबरां नैं घणो बुरो लाग्यो। अजय नैं भी बुरो लाग्यो। बो बेराजी होय'र डटकारयो जद टींगर भाज्या। आ घटणा बां सगळां नैं अर म्हांनै भी घणी बुरी लागी। टाबरां रो मन घणो आहत हुयो।

दो परसंग आज भी चोखी तरै चेतै है जका रसिक नैं घणा बुरा लाग्या हा। पैलो तो औ कै अेक बार म्हैं रसिक सूं पूछ्यो कै अेआईटी री जाणकारी थांनै कठै सूं मिली ? तो बो बतायो कै नेट सूं जाणकारी ली, पण बठै उपलब्ध इंस्टीट्यूट री फोटू अर सुविधावां सूं अठै स्थिति साव उलट मिली। दूजी बात, अेकर रसिक नैं म्हैं म्हारा परिचित होटल मेरवाड़ अेस्टेट में ब्यांव में जीमबा लेयगी। आधेक घंटै तक तो बो व्यंजना री स्टाल देखतो थको चक्कर ई लगातो रैयो। म्हैं बोली, ''कोई नै उडीकणो कोनी। पसंद आवै जको आराम सूं जीमो, टेमसर घरां चालणो है।''

जीमा-जूठो कर्‍यां पछै घरां बावड़ती बगत रसिक बोल्यो, ''दीदी, आपके यहां शादियों में दिखावा बहुत है और अन्न की बहुत बरबादी होती है।''

बीं री दोन्यूं ई बातां साची ही। मन बडो दुख्यो, पण साच सूं मूंडो नीं मोड़ सकां। अै आदतां दूसरा देसां रै लोगां रै बीच आपणै देस री छिब खराब करै। सब नैं मिल'र इण दिसा में सुधार अर प्रयास करण री बडी जरूरत है।

डेढ-दो बरस घर रैयो जित्तै दोन्यूं जणा घर रा सदस्य बण'र ई रैया। दूर अणजाण देस रा अै टाबर म्हां सब घरआळां रै मन में आपरा संस्कार, अपणायत, मिनखपणै अर शिक्षा री अमिट छाप छोड'र आपरै देस भूटान तो पाछा चल्या गया, पण आपरा प्रेमभाव री अमिट सैनाणी हियै में छापग्या।

आज भी कदै-कदै अजय कनै फोन आवै जद घणै अपणेस अर हेत सूं भूटान आवण रो नूंतो देवै। अै दोन्यूं टाबर सिखायग्या कै प्रेम अर मिनखपणो देसां अर भासा री सींव सूं घणो ऊंचो होया करै।

◆◆

कंचन आशिया

आखातीज

धम्म-धम्म ऊंखळी, धम्म-धम्म खीच
आवण दै म्हारी आखातीज...

औ अखाणो तो घणी बार सुण्यो हो, पण इण ओखाणै सूं पैली बार रूबरू हुयी। अबकाळै गरमी री छुट्टियां पड़तां ई टाबर गांव जावण वास्तै उंतावळा होवण लागग्या। अेक-दो दिन जरूरी काम सलटाय'र म्हैं टाबरां सागै सासरै आय पूगी। गांव पूगतां ई टाबरां नैं जाणै राम मिलग्यो। दिनभर कुदड़का करता फिरे, पूरै दिन धमाचौकड़ी मचावै अर रमता नीं धापै। संग साईणा भायलां साथै रमता रैवै अर तावड़ियै में ई जक नीं पड़ै।

दिनूगै बेगा उठ'र आपरा दादोसा रै सागै खेतां कानी टुर जावै। धोरां माथै रमता, रपटोळिया करता, धूड़ सूं काठा भरयोड़ा दोपारां तांई पाछा घरां आवै। आज तो उठतां पाण टाबरां लकड़ी रो हळियो बणावण री हठ करण लागग्या। म्हारै देवर आकड़ै री लकड़ी रो हळियो बणाय'र हळ रै बाजणो टोकरियो बांध'र त्यार करयो। भखावटै ई गांव रा सगळा टाबर आपो-आपरा हळिया लेय'र गांव री गवाड़ मांय जाय पूग्या अर हळां रै बांध्योड़ा टोकरियां री टणकार बाजण लागी।

म्हारा सासूजी हुकम देंवता थकां कैयो, ''बीनणी, आथण पौर खीचड़ै रो धान छड़णो है अर दिनूगै बेगो उठणो है। दोनूं ई देराणी-जेठाणी बेगी उठ'र बाड़ा-बाखळ बौर लीज्यो। बूढा-बडेरा बेगा सुगन विचारैला, इण बात रो ध्यान राखजो। दिनूगै सासूजी भखावटै बेगा उठ'र म्हां सगळां नैं हेलो मारयो। सासूजी खीच खोटण नै लागग्या। म्हैं अर म्हारी देराणी जतना बाड़ा-बाखळ बौरण नै ढूकगी।

सगळा घरां मांय खीच खोटण री धमाधम सुणीजण लागी। दोय-चार घरां रै मांय ऊंखळी ही अर घणकरै घरां सूं हमामदस्ते री आवाज आवण लागी।

अठीनै म्हारो देवर टाबरां नैं जगाय'र आकड़ै रो हळियो लेय'र खेतां कानी टुरग्या। च्यारूंमेर हळां रै बंध्योड़ै टोकरियां री टणकार अर तेजा गीत रो हबीड़ो उठण लागग्यो :

गाज्यो गाज्यो जेठ असाढ कंवर तेजा रे
लगतोड़ो बरस्यो रे सावण-भादवो
इतरो कांई नींद नींदाळू कंवर तेजा रे,
थारै तो साईणां बीजै बाजरो...

प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, रा.उ.मा.वि. भियाड़िया, लोहावट (जोधपुर) राज. मो. 8875134787

अठीनै सासूजी खीच बणाय'र रसोई म्हांनै भोळाय दी। सासूजी भळावण देंवता थकां कैयो, ''बीनणी, साग चोखो बणावजो। कोटड़ी मांय थाळी मेलणी है।''

म्हैं अर म्हारी देराणी जतना आखातीज रै तिंवार माथै बंतळ करता थकां रसोई रै काम में लागगी। गवारफळी रो साग, कड्डी अर गुळवाणी बणा'र त्यार करी। इतरै में सासूजी री आवाज आयी, ''बीनणी, लाटा घालणा है।''

म्हारी देराणी पूछ्यो, ''अै लाटा भळै कांई होवै?''

म्हैं उणनैं समझायी, ''म्हैं जद छोटी ही जणै म्हारा दादीसा लाटा करता। पुरस्योड़ी थाळी म्हारै साथै कोटड़ी में मेलता हा।'' म्हैं देराणी कैयो, ''थे सात भांत रा सवा-सवा सेर धान ल्यावो, म्हैं लाटा करूं।''

देराणी धान ल्यायी अर म्हैं आंगणै रै अधबिचाळै धान रा सात ढिगला करया। सातूं ढिगलां रै माथै गुळ री डळियां अर बिचाळै पाणी रो लोटो, कांदो अर काच राख्यो।

अठीनै जीसा बेगा उठ'र खेतां कानी सुगन लेय'र घरां आय न्हावा-धोवो करयां पछै लाटो पूज्यो।

हाळी करै हळोतियो, आयी आखातीज।
सुगन विचारै सांतरा, रामा बेगो रीझ।।
सुगन दीठा सांप्रत, करसा कोढ करैह।
बिरखा बूठै मोकळी, सगळा काज सरैह।।

जीसा लाटो पूज'र कोटड़ी मांय जा पूग्या। बूढा-बडेरा आवण लागग्या। कोटड़ी रै मांय गवाड़ी रा सगळा बूढा-बडेरा भेळा हुय'र आवण वाळै बरस माथै बंतळ करण लाग्या। भेळा हुयोड़ा डोकरा अेक-दूजै नैं आज रा सुगनां रै बारै में पूछ्यो। जीसा कैयो, ''भाईड़ा, सुगन तो चोखा हुया, पण...।''

''पण कांई, आगै तो बतावो...?'' सगळा अेकै सागै बोल्या।

''सुगनां में साच होवै तो जमानो तो चोखो आवैला, पण रोग बापरैला। सूरज ऊगाळी जद म्हैं खेत पूग्यो उण बगत खेत में डावै कानी तीतर बोल्यो, उणरा कंठ भारी हा अर सांस फूल्योड़ो हो। आगै गयो तो ध्रू दिस रै मांय कोचरी बोलै ही। इण बरस जमानो तो सांतरो आवैला, पण सांस रो रोग मानखै मांय फैलसी।''

म्हारो देवर घरां आय'र कैयो, ''थाळी बेगी पुरसो, कोटड़ी रै मांय ले जावणी है।''

बूढळी लुगायां आवतां ई पूछ्यो, ''कोटड़ी में सुगनां नैं लेय'र कांई बातां होयी?''

म्हारै देवर कैयो, ''जीसा कैवता हा कै जमानो तो सांतरो आवैला पण मानखै में रोग बापरैला।''

म्हारी देराणी म्हांनै कैयो कै सुगनां में कैड़ो साच, सगळी कूड़ी बातां है।

बात आई-गई हुयगी। म्हैं म्हारी ड्यूटी माथै आयगी अर सगळी बातां नैं भूलगी। इण बरस जमानो जोर रो आयो। मिनखां लाटा लाटिया अर राजी-खुसी दीवाळी मनाई। दीवाळी पछै रोग री सुगबुगाहट होवण लागी। नवंबर में खबरां आवण लागगी कै विदेसां रै मांय सांस सूं जुड़्योड़ो कोरोना रोग फैलग्यो। मार्च रो महीनो आवतां-आवतां औ रोग आपां रै देस पूगग्यो। देस

रा प्रधानमंत्री सगळा मिनखां नैं घरां रैवण रो संदेसो दियो। पूरै देस में लॉकडाउन लागग्यो। आवण-जावण रा साधन जठै हा बठै ई जाम होयग्या। बापड़ा मजूर पाळा ई घरां कानी टुरग्या। उणां में घणो फोड़ो पड़्यो।

म्हनैं आखातीज रा जीसा रै कैयोड़ा सुगनां री याद आई। सुगन कित्ता साचा हुवै, म्हनैं इण बात रो आज ठाह लागग्यो। अबै आखातीज पाछी आवण वाळी ही, म्हनैं इणरी घणी उडीक ही। उडीक इण बात री ही कै इण बरस सुगन कैड़ा हुवैला। आखातीज रै दिन हर बरस री भांत सगळा जणा आपो-आपरै काम लागग्या। जीसा बेगा उठ'र सुगन लेवण खातर खेतां कानी टुरग्या। जीसा पाछा घरां आया जणै माथै ऊपर चिंता री लकीरां देख'र म्हैं सोच में पड़गी।

घरां सगळा इण बात नैं जाणण खातर उतावळा हा कै इण बरस सुगन कैड़ा हुया।

जीसा कैयो, ''बेटा, सुगन तो सांतरा हुया, पण इण कोरोना रोग नैं जावण में अजै टेम लागैला। तीतर खेतां में बड़तां ई सुगन सांतरा कराया, पण आगै जाय'र कांटां री झाड़ी मांय बड़ग्यो। थोड़ी ताळ पछै झाड़ी सूं बारै आयो जणै कांटां रा इंजेक्शन लाग्योड़ा हा। पूरो बिंधीज्योड़ो हो अर सांतरा सुगन देंवतो थको उडग्यो।

जीसा कैयो, ''म्हारा सुगन कैवै, मानखै रै इण भांत वैक्सीन रा टीका लागैला अर होळै-होळै औ रोग आगो हुय जावैला।''

म्हैं आ सुण'र ऊंडै विचारां मांय डूबगी कै आं सुगनां रै मांय इत्तो साच होवै है कांई ? इण जीव-जिनावरां नैं इण बात रो पैली ई पतियारो लाग जावै है कांई ?

◆◆

किरण बादल

जात-पांत

देस-काळ अर वातावरण रो असर तो टाबर सूं लेय'र बडै आदम्यां तांई दीखै। जिकी बात बडा लोग अनुभव करै उणसूं छोटा भी अछूता कोनी रैवै। म्हैं पैली सोच्या करती कै टाबर आ बातां सूं अळगा है। जात-पांत आद रै बारै में बै कीं कोनी जाणै। बै इण सब सूं दूर आपरै कल्पना-लोक में ई मगन रैवै अर खेलै-खावै, पण अेक दिन म्हारी आ धारणा सफा ई गलत सिद्ध हुयगी।

म्हारी प्रतिनियुक्ति अेक बंद पड़्यै स्कूल में हुयगी। म्हनैं उणनैं नूंवै सिरै सूं चालू करणी ही। म्हैं स्कूल रै बगत सूं कीं पैली ई पूगगी अर बठै जाय'र स्कूल रो ताळो खोल्यो। स्कूल खुलतां ई आसै-पासै आळा टाबरां म्हनैं घेरली अर पूछण लाग्या, ''मैडमजी! आप म्हांनै पढावण सारू आया हो या कोई कागद-पत्तर लेवण सारू?''

म्हैं कैयो, ''म्हैं अठै पढावण सारू ई आयी हूं। आप लोग न्हाय-धोय'र स्कूल में आ जावो।''

थोड़ी देर पछै सगळा टाबर आयग्या। टाबरां आप-आपरी कक्षावां जमा ली। म्हैं बातां-बातां में ई नूंवी जग्यां री जाणकारी ली अर टाबरां सूं कीं सवाल पूछ्या जिकै सूं म्हनैं बांरै स्तर रो बेरो लाग जावै। टाबर घणा ई राजी लागै हा। आधी छुट्टी पछै च्यार बैन-भाई जिका इण स्कूल में पढता अेकै साथै म्हारै कनै आय'र खड़्या हुयग्या। च्यारूं ई अेकै साथै उछाव सूं बोल्या, ''मैडमजी, म्हे थांरै खातर अेक बडी चोखी चीज लेय'र आया हां। आपनैं लेवणी पड़सी।'' आ कैय'र अेक छोरो म्हारी आंख्यां साम्हीं आपरी मुट्ठी खोल दी। उणरी हथेळी माथै च्यार रंग-बिरंगी मीठी गोळ्यां ही, जिकी बंद मुट्ठी कारण पसेवै सूं भीजगी। म्हैं बोली, ''अै तो थां टाबरां खातर ई है। थे खाओ।'' इतरो कैय'र म्हैं रजिस्टर फिरोळण लागगी।

इतरै में बांरी सै सूं छोटी भैण बोली, ''मैडमजी! थे इण कारण ई म्हारी गोळी कोनी खाओ, क्यूंकै म्हे छोटी जात रा हां। नीं तो इतरी मीठी चीज भलां कोई छोडै?''

उणरी बात सुण'र म्हारै गाल माथै चपीड़-सो लाग्यो। म्हारै काळजै में अेक हूल-सो उठ्यो। म्हैं उणनैं उठाय'र आपरी गोदी में बिठाली अर उणरो हाथ पकड़'र गोळी मूंडै में धरली।

औ देख'र उण छोरी नैं जोस आयग्यो अर आपरै बैन-भायां सूं बोली, ''अरे! मैडमजी तो आपणी ई जात रा है।'' सुणतां ई म्हारी आंख्यां भरीजगी अर म्हारी समझ में आज तांई आ बात कोनी आयी कै बात-बात माथै लड़ण आळा बां च्यार भैण-भायां बै बाकी बच्योड़ी तीन गोळ्यां किण भांत आपस में बांटी हुवैला।

◆◆

शास्त्री कॉलोनी, रायसिंहनगर (श्रीगंगानगर) 335031 मो. 9414989707

 ISSN : 2320-0995

सुनीता बिश्नोलिया 'सुनीति'

भूआ कैवती

म्हैं अर म्हारी भूआ... ना-ना, म्हैं अर म्हारी भूआ नीं कैय सकूं। खाली म्हारी भूआ कैयां तो सगळा बडा अर छोटा भैण-भाई बुरो मान जावैला कै बै तो आपणा सगळां री भूआजी था, थारी अेकली रा नईं।

उण दिनां री बात ई न्यारी ही जद 25-30 मिनखां रा परिवारां रा सगळा टाबर भूआ रै कने सोवण अर उणां री पुराणी बातां सुणण तांई आधी रात तक उणां कनै धरणो दियां बैठा रैवता। उण बगत म्हनैं 'कजिन' सबद रो मतलब बेरो कोनी हो। बस, इतणो बेरो हो कै अेक गवाड़ी में रैवणिया सगळा ई भाई-भैण हुया करै। कोई पूछतो तो बतावता—दस भाई अर सात भैणां हां। जद ई तो म्हां सगळा भैण-भायां रै बीच में काका-बाबा रा टाबरां री तरियां कोई औपचारिकतावां कोनी हुया करती बल्कै हक हुया करतो अेक-दूजै री बात मानण अर मनवाण रो। म्हांनै तो खाली इतणो बेरो हो कै म्हारै दस भाई है अर म्हे हां आंरी लाडली भैणां। स्यात म्हारी भूआ रो म्हारै सागै रैवणो भी इण रो अेक कारण हो।

म्हारी 'मोकी' भूआ म्हारै बापूजी अर बाबोसा री बडी भैण नईं ही वै तो बाजीगर री बा चिड़कली ही जिणमें उण जादूगर रा प्राण बस्या रैवै, यानी भूआ नैं खांसी भी आ जावै तो बापूजी स्कूल नईं जावै अर बाबोसा आपरी दुकान पै।

बापूजी अर बाबोसा नैं म्हे भूआजी रै साम्हीं टाबर बणकै उणां सूं डांट खावता अर भैण री चिंता में रोवता देख्या हा। भूआ सगळा भैण-भायां सूं बडी ही। उणां रै चार टाबर हा। बडो बेटो उमर में म्हारा बापूजी सूं स्यात सात-आठ साल ई छोटो हो। छोटी उमर में विधवा हो जाणै रै कारणै भूआजी ज्यादा करकै म्हारै सागै ई रैवती। कुल मिला'र म्हैं समझण लागी जद सूं भूआजी नैं म्हारै सागै ई रैवतां देखी। पण बीच-बीच में भूआजी आपरै सासरै भी जाया करै ही। भूआजी री बातां री पोटळी में इतणा किस्सा, इतणी बातां है कै मांड्या तो पांच किताबां भी कम पड़ जावै। बाबूजी री बात बतावतां भूआ अेक किस्सो भोत बार सुणावती।

अेक दादी अर भूआ घणी सुंवारै उठ्याई क्यूंकै बीं दिन गूगाजी रो त्यूंवार हो। दोन्यूं मिलके गूगाजी धोकण तांई बेगी-बेगी गुलगुला-पकोड़ी, खीर अर सक्करपारा बणा लिया, क्यूंकै

ई-5/54, राधिका अपार्टमेंट, चित्रकूट, वैशाली नगर, जयपुर (राज.) 302021 मो. 9352834589

धोक लगायां बाद में दादी नैं खेत जाणो हो। दादी अर भूआजी मिलकै पूजा करयां पाछै गाय-ढांडां नैं चरावण लागी। बठै सूं निबट्यां पाछै भूआजी टाबरां नैं यानी कै छोटी भूआजी, बापूजी अर बाबोसा नैं जीमण तांई हेलो दियो। म्हारा बापूजी नैं छोडकै सगळा टाबर जीमण तांई आयग्या अर गूगाजी कै धोक खा-खाकै जीमण नै बैठग्या। भूआजी म्हारा बापूजी नैं हेलो पाड़ती गई, पण बापूजी कठैई नीं मिल्या। चाणचक भूआजी अर दादी नैं लाग्यो कै गुलगुला अर पकौड़ी इतणा कम कियां हुयग्या। बापूजी रो घरां नईं हुवणो अर गुलगुला-पकोड़्यां रो थोड़ो होवणो देखकै भूआजी माथो पीट लियो अर भागकै कमरै में जाकै आपरी खाट री गूदड़ी हटाई तो ऊंकै नीचै अेक परची मिली जिणनैं लेय'र भूआजी भाज'र कमरै सूं बारै आया। बारै आय'र दादी रै हाथ में कागद देय'र बोल्या, ''मां, आज थारो लाडलो लोहाघरजी (लोहार्गल) गयो, बापूजी नैं थे बता दीजो।''

''हे रामजी! अेक तो हो, अब औ दूसरो भी...'' सिर पीटती थकी दादी बोली, ''अे बाई! बेरो पाड़ कै कुणकै सागै गयो है छोरो... बो बठै के खासी?'' कैवती-कैवती दादी रोवण लागगी। दादी नैं चुप करवावता भूआ बोली, ''चिंता ना करो मां, चौथू अर माधो भी गया है सागै अर भूखा मरबाळा कोनी कोई सा भी। सगळा गुलगुला-पकोड़ा लेयग्या है—आप-आपका घरां सूं। काल आ जावैला, कागद में लिख'र गयो है थांरो लाडलो।''

अठै सगळा घरका चिंता कर रैया हा, उठीनै बापूजी भायलां रै सागै मौज-मस्ती करण निकळ पड़्यो। थोड़ी मौज-मस्ती रै बाद तीनूं भायला नागकुंड में न्हाणै की सोची। कुंड गैरो हुवण रै कारण चौथू अर माधो बारै बैठ'र ई न्हावण री कैयी पण म्हारा बापूजी ठैरिया खतरां रा खिलाड़ी। कोई क्यूं कवै या बांनै रोकै उणसूं पैलां ई बापूजी बिना सोच्या-समझ्या लगा दी नागकुंड में छलांग अर भायलां नैं जीं बात रो डर हो, बो ईज हुयग्यो।

के हुयो...? अजी बापूजी रै सागै हुयग्यो अेक खतरनाक हादसो। छोटा-सा तो हा ई। हांजी, म्हारा बापूजी सिरफ दस बरस रा ई तो हा। लंबाई भी कम ई ही। अब लंबाई कम होवणै सूं कुंड में पग ई नीं टिक्या, ईं कारण बै डूबण लाग्या। बठै कोई भी नीं हो जको बांनै बचा लेंवतो। भायलै नैं डूबतां देख'र दोनूं छोरा रो रोवा-कूको बधग्यो। और तो कोई जोर चाल्यो कोनी, ईं वास्तै बै रोवण-चिरळावण लाग्या।

पाणी में हलचल कम व्हैती देख'र दोनूं छोरा अठीनै-बठीनै भाजण लाग्या। चाणचक माधो नैं अेक पंडितजी मिलग्या। डर सूं कांपतो माधो कीं बोल तो नीं सक्यो, पण पंडतजी नैं कुंड कानी लेय आयो। छोरां री हालत देख'र पंडतजी समझग्या, पण कीं अणहोणी होवण सूं पैलां ई पंडतजी कुंड में कूदग्या। घणी मुस्कल सूं बांरै हाथ बापूजी री चोटी आयी। फेर धीरै-धीरै कर'र पंडतजी, बापूजी नैं बारै निकाळ ल्याया। ऊं दिन बापूजी बच तो गया, पण भोत दोरा। भूआजी बताया करता हा कै घरां आयां बाद में दादाजी खूब खबर ली बापूजी री... पण बापूजी तो मस्त-मलंग हा। बां पै आं छोटी-छोटी बातां रो कठै असर होवतो। बै तो महीनै में अेक बार तो जानलेवा स्टंट कर'र ई बैठ्या करता।

◆◆

डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'

चांद

'चांद' सबद नैं बोलतां ई मन मांय अेक सुहावणी-सीक ठंडक मैसूस हुवै। रस अर मीठै परस रो रळ्योड़ो-सो भाव मन मांय उपजै। कल्पना री आंख्यां साम्हीं घर री मुंडेर माथै मुळकतै पूर्णमासी रै चांद री छिब झिलमिलावण लागै। कित्ती इचरज री बात है कै महीनै में पैलै पंदरै दिन चांद घटाव लेवै अर आगलै पंदरै दिन बधाव, पण मिनख रो मन उण घटत- बधत नै नीं, चांद री पूरण छिब नैं पकडै। इण रो कारण स्यात मिनख रै अंतस री चावना है। 'पूरण' हुवण री हूंस मिनख रै मन में अणंत काल सूं हबोळा खावती रैयी है। इणी वास्तै प्रतीक रूप में बो पूरण चांद नैं पसंद करै। प्रतीक री भासा मिनख रै मन नैं भोत चोखी लागै। जद ई तो बो आतम रै उत्थान वास्तै बळतै दिवलै नैं, आतम रै फैलाव वास्तै अणसीव समदर नैं, ज्ञान वास्तै चमचमावतै सूरज नैं अर जीवण री अणथाग गति वास्तै बैंवती नदी नैं आपरो आदर्श बणावै। वांनै पूजै अर वांरै जिसो हुवण री कामना करै।

जठै तांई चांद रो सवाल है तो कैय सकां, कै चांद खंड-खंड हुयोड़ै मिनख नैं अखंड हुवण री कामना सूं भरै। बो बतावै कै हर चढाव रै पछै अेक उतार आवै अर हर उतार रै पछै अेक चढाव। मिनख नैं चढाव वास्तै भरपूर कोसिस करणी चाईजै अर उतार वास्तै स्वीकार भाव राखणो चाईजै। चांद रै मुजब जीवण में कोई भी गत अंतिम नीं है। चढाव अर उतार दोनूं रै संजोग रो नांव जीवण है। परगास अर अंधकार जीवन रा दो पख हुवै अर वांरै मैळ सूं जीवन मांय संपूरणता आवै।

विज्ञान मानै कै चांद धरती रो उपग्रह है। किणी टेम धरती सूं जुड़्योड़ो हो, पण परकत री किणी उथळ-पुथळ रै चालतां धरती सूं अळगो होय'र उण रै च्यारूंमेर चक्कर काढण लागग्यो। पण पुराण कैवै कै चांद समदर रो जायो है। समदर-मंथन रै टेम निसरयोड़ै चवदै रतनां मांय सूं चांद भी अेक रतन है। दोनूं दीठां भलाई न्यारी-न्यारी बात कैवो, पण अेक बात तो साव साफ है कै धरती अर चांद रो रिस्तो जबरो गैरो है। स्यात मां अर बेटै जिसो, कै दादी अर पोतै जिसो। जद ई तो चांद धरती रै च्यारूंमेर नैन्हा टाबर दांई घूमै। उणनैं निरखै अर हरखै। उण माथै चांदणी रो इमरत बरसावै। सूरज रै पूठ फोरतां ई बळ्योड़ी धरती रै जख्मां माथै मलम लगावण सारू हरेक सिंझ्या भाजतो आय जावै। समदर सागै भी प्रीत निभावै।

श्रीकृष्णम, सीताराम द्वार रै मांय, हनुमान मिंदर रै कनै, बीकानेर (राज.) मो. 9414035688

इयां तो परकत री हरेक शै अणमोल, सांतरी अर सहेजण जिसी हुवै, पण चांद री तो बात ई न्यारी है। चांद सगळां रो प्यारो है। सगळां रो दुलारो है। टाबर, लुगाई, मिनख कै डैण कोई भी हुवो, चांद सगळां नैं चोखो लागै। स्यात इण रो कारण चांद री सीतळता, रूपै जिसो सुहावणो रंग अर गोळ-मटोळ रूप है। चांद री नित-नित बदळीजती छिबां है।

ज्योतिषशास्त्र चांद नैं मन सूं जोड़ै। धरती रै जळ सूं जोड़ै। मिनख री कल्पनाखिमता सूं जोड़ै। मिनखां मांय कवि जबरो कल्पनाजीवी हुवै। उण रो मन भावनावां रो अणथाग समदर हुवै, जठै रात-दिन कल्पना री लैरां उठती अर गिरती रैवै। इणी कल्पना री लैरां सूं कवि चांद री नूंवी-नूंवी छिबां आपरी कवितावां मांय रचै। इण छिबां नै देख'र चांद जाणै हरखै अर कवि री कल्पनारूपी लैरां नै औरूं उकसावै।

दुनिया रो स्यात् कोई कवि इसो नीं हुयो हुसी, जको चांद रै रूप माथै मंतरीज्यो नीं हुवै। चांद नैं निरख'र जकै रा भाव कविता रै रूप मांय नीं ढळ्या हुवै। कवि कदै चांद नैं आपरी कविता रो विसय बणावै तो कदैई प्रतीक। बो कदै चांद नैं रूपक बणावै तो कदैई उण री न्यारी न्यारी-उपमावां सूं आपरी कविता नैं सजावै। औ ईज कारण है कै दुनिया री हरेक भासा में चांद नैं लेय'र बेजोड़ कवितावां रचीजी है।

कवि नैं चांद उणरै मन री गत मुजब अनोखी, रूपाळी अर न्यारी-न्यारी छिबां में दीसै। कदैई चांद उणनैं उणरी प्रेमिका रै सुंदर मुखड़ै जिसो लखावै तो कदैई प्रेमिका री दोय भवां बिचाळै सज्योड़ी चमकीली टीकी जिसो लागै। कदै तो कवि नैं लागै जाणै चांद काळी तारांआळी चूंदड़ धारयोड़ी उणरी प्रेमिका री नाथ रो पळकतो नगीनो है। और तो और, प्रेमिका रै रूप री चमक अर उण री हंसी में भी कवि नैं चांदणी झरती लागै। बिरह में तो चांद नैं देखतां ई कवि नैं आपरी प्रेमिका री याद आय जावै अर चांद री सीतळता उणरै तन अर मन नैं दाझण लागै।

कवि दुनियादार भी पूरो हुवै। बो लेण-देण बरोबर करणो जाणै। जे बो चांद नैं आपरी प्रेमिका रै मुखड़ै री बरोबरी रो मान देवणो जाणै तो उणरी कीमत भी पूरी वसूलणी जाणै। इणी कारणै कदै-कदैई बो दूर देस में बैठी आपरी प्रेमिका नैं सनेसो पुगावण सारू चांद सूं दूतगिरी भी करावै। कवि फगत प्रेमी ई नीं हुवै, घर गिरस्थीआळो भी हुवै। जद ई तो काळै आभै बिचाळै बिराज्योड़ै चांद नैं देखतां ई उणनैं मां रै खोळै मांय मुळकतै आपरै गोरेगट्ट टाबर री याद आय जावै अर आजू-बाजू भळकता तारां रा गट्ट उणनैं आपरै टाबर रा साथी-संगी लखावै।

भोजनभट्ट कवि नैं कदै चांद आभै आंगणै पुरस्योड़ो खीर रो कटोरो-सो लखावै तो कदैई थाळ मांय राख्योड़ो बडो झूर मळाई रो लाडू जिसो लागै। चौथ रो नूंवो- पीळो चांद तो आभै री भींत माथै खड़ी राख्योड़ी पीतळ री बडी परात जिसो लागै, जकै री अेक कानी री किनोर मुचगी हुवै। दूज रो चांद आभै रै आंगण में फेंक्योड़ी नारैळ री गिरी री पतळी-सीक कतरण जिसो लागै कै कदैई रात रूपी नायिका रै नाथ रो चांदी रो टूट्योड़ो तार-सोक लखावै। सिंझ्या हुवतां ई खितिज सूं झांकतो चांद किणी अचपळै टाबर जिसो लागै, जको पाड़ोसी री भींत ऊपर चढ्योड़ो ताका-झांकी करै है अर मौको लाधतां ई उणरै आंगणै मांय कूदण री मनस्या राखै तो भोर रो मांदो हुयोड़ो चांद उण बटाऊ जिसो लखावै जको जातरा रै थाकेलै सूं अधगावळो हुयग्यो हुवै।

अेक लूंठा विद्वान फरमावै कै अणूंतै बरताव सूं सबद घिसग्या है। उपमान बासी हुयग्या है अर प्रतीकां री चमक गमगी है। बात ठीक भी लागै। अबै टेम भी तो बदळीजग्यो है। जीवण री मुस्कलां बधगी है। अबै अेक भूखै कवि नैं चांद मांय प्रेमिका रो मुखड़ो नीं, गोळमटोळ रोटी

लखावै। तारां सूं घिरयोड़ो चांद कवि नैं भीड़ में अेकलै स्हैरी मिनख जिसो लागै। रात री नाव में सवारी करतो चांद कोई ऊकतायोड़ो अणमनो रईस जिसो लखावै।

बोलचाल में तो चांद नैं लेय'र ईद रो चांद, दूज रो चांद अर पूर्णमासी रो चांद जिसा मुहावरा भी घड़ीज्या है। सफ्फाचट टाट नैं तो मखौल उडावण सारू चांद भी कैयीजै।

मखौल सबद सूं याद आयो कै किणी टेम चांद अणूंतो चंचळ हो। खी-खी करतो किणी रो भी मखौल उडा देंवतो। कैवै कै अेकर बो गणपतिजी रो भी मखौल उडायो। सजा भी पाई। जद ई तो लोग अजतांई भादवै री चौथ रै चांद रा दरसण कोनी करै।

आलोचक चांद री भद्द ई घणी पीटी है। पीट सकै। बां सूं तो लूंठा-लूंठा लिखारा अर राजनीतिज्ञ ई डरै। बांरै मूंढै आडै हथाळी कुण लगाय सकै? बांरो कैवणो है कै चांद सुंदरता रो पूरण प्रतीक कोनी, क्यूंकै उण मांय दाग है। बात तो साची है। दाग तो दीसै। पण विज्ञान कैवै कै अै दाग कोनी। अै तो चांद रै ऊबड़-खाबड़ धरातळ रा निसाण है। बांरी बात भी सई हुय सकै। पण विज्ञान रै दरसण री अेक सींव हुवै। विज्ञान ऊपरली परत देख सकै। मन मांय नीं झांक सकै। चरित्तर नै नीं परख सकै। पण लोक परख सकै, क्योंकै लोक कनै मन री पड़तां नैं भेदणआळी लेजर जिसी ऊंडी दीठ हुवै। बा दीठ कैवै कै अहल्या सागै घात करण में चांद भी देवराज इंदर रो साथी हो। संगी तो बरोबरी रो दावेदार हुवै। ईनाम मांय भी अर सजा मांय भी। कांई ठाह चांद नै आपरी काळी करतूत री सजा मिली कै कोनी, पण उण रै मन रो मैल तो जगत साम्हीं आय ई गियो। जिण रो मन मैलो हुवै उण रो तन ऊजळो कींकर हुय सकै? चांद रा अै दाग अेक लुगाई सागै घात करण री सजा है। ए दाग मन री काळख है। अहिल्या तो बिना अपराध रै सजा भी भुगत ली अर मुगत भी हुयगी, पण चांद अजतांई दागल है। लोक री कचैड़ी सूं अर आपरै मन री अदालत सूं बो बरी नीं हुय सक्यो। हो भी कोनी सकै, क्यूं कै ज्योतिषशास्त्र चांद नैं नवग्रहां मांय सूं अेक ग्रह अर पुराण उणनैं अेक देवता मानै। देवता, गुरु अर नेता रो तो फरज भोत बडो हुवै। सनमान अर बिस्वास री रिछ्या उणां रो धरम हुवै। बै ई जे घात करसी तो बिस्वास कठै सरण लेसी? बै देवता कींकर कैवाय सकसी?

कमी किण मांय कोनी हुवै। गलती करणो गलत नीं हुवै, गलती नीं सुधारणो गलत हुवै। मन रा केई-केई रंग हुवै। बो ई मन जको किणी स्वार्थ रै चालतां धोखो करै, किणी ऊजळी घड़ी मांय त्याग अर सेवा रा ऊजळा पगलिया भी मांडै। चांद भी मांड्या। भगवान नीलकंठ रै तन सूं काळकूट बिस री जळण मिटावण सारू चांद आपरी सेवा अरपित करी। भगवान उणरी सेवा स्वीकारी अर आपरै माथै ऊपर सजाय लियो। चन्द्रशेखर हुयग्या। जीवण तो भगवान शंकर जिसो ई हुवणो चाईजै, जका जगत-कल्याण सारू काळकूट बिस पीयग्या। देव-दानव कोई भी सरणागत हुय'र साम्हीं आयो तो बिना भेदभाव रै खिमा बगस दी। झट करतो वरदान देय दियो। बिस्वास अर प्रेम रो मान राख्यो। चन्द्रमौलि हुय'र चांद रो भी मान बधायो।

संगत रो असर भी जबरो हुवै। बो मन माथै पक्कायत ई लागै। चांद माथै भी लाग्यो। जगत रै कल्याणकामी भगवान शंकर रै सागै सूं अबै चांद री चंचळता अेकदम थमगी है। अबै बो पुराणकाल जिसी धोखेबाजी नीं करै। ना किणी रो मखौल उडावै। अबै तो हुय सकै जित्तो जगत रो भलो करै। आपरो फरज निभावै। सीतळता बांटै अर खुद भी तिरपत, आनंदमगन अर मुळकतो लखावै।

◆◆

शकुंतला पालीवाल

मज्जन

''राम-राम बैनजी।'' कानां मांय मिसरी घोळती मीठी बोली सुण'र म्हैं म्हारो काम छोड'र ऊंचो जोयो तो सामहीं दो जोड़ी काळी आंख्यां म्हारी ठौड़ उडीक रैयी ही। माथै पै काठी चोटी सागै चांदी रो बोरलो गूंथ्योड़ो। मूंडो पूनम रै चांद ज्यूं अेकदम गोळ अर रंग जाणै दूध ज्यूं धोळोफट। तावड़ै सूं आवा रै कारण उण रा गाल लाल होय रैया हा। बा मुळकी तो सगळा धोळा दांत निजर आयग्या, जाणै मक्की दा दाणा व्है अर बै अेक लैण मांय चमक रैया हा। करंगच्या रंग री ओढणी ओढणी उण रा गोरा रंग पै ओपै ही अर लहंगो असी कळी सूं वत्तो ईज हो, स्यात अेक सौ दस कळी रो व्हैला। दोय पगां मांय आधा-आधा किलो री चांदी री कड़्यां अर कमर में चांदी रो भारी कंदोरो। पगां मांय चामड़ै री पगरख्यां। हाथां मांयनै चांदी रा कातर्‌या अर डंक री चूड़ियां माथै सोनै रो टड्डो। म्हैं उणनैं निरखती उणसूं उणरो नांव पूछ्यो तो पड्डुत्तर मांय 'मज्जन' नांव सुण्यो। व्है सकै, म्हैं सूदो नीं सुण्यो। म्हैं पाछो पूछ्यो, ''नांव कांई है थारो?''

''मज्जन नांव है म्हारो।''

''हें... ? मज्जन ? औ ई कोई नांव व्हियो ? थारै नांव रो कांई अरथ है ? म्हैं तो औ नांव पैली दाण सुण्यो।''

''बैनजी, अरथ तो म्हैं ई कोनी जाणूं, जद सूं समझ पकड़ी है, म्हैं तो औ ईज नांव सुण्यो म्हारो अर अरी तो कदैई पूछ्यो कोनी किणी सूं।'' बा इत्ता भोळपणा सूं जबाब दियो म्हनैं कै म्हैं उणनैं उडीकती रैयगी। व्है सकै, किणी नांव रो बिगड़्योड़ो रूप व्है। म्हैं कैयो तो बा भी म्हारी बात री नस हिला'र हांमळ भर दी।

''कोई खाद-बीज आयो व्है तो म्हांनै भी दिरावो। म्हारा खेत-कुडा थांरै ओफिस रा पाड़ोस में ईज है। थे जद चावो पधारो, पण थे पंखां रो ठंडो बायरो खावण वाळा...'' बा आगै कीं कैवती उणसूं पैलां ई म्हैं कैयो, ''मज्जन, म्हारी नौकरी तो खेत-कुडा गुदवा री ईज है अर म्हैं इणसूं घणी राजी हूं।''

''म्हारै मूंफळ्यां मांय कांई रोग आयो है, थे उणरी दवाई देय दो।''

म्हैं कैयो, ''पैसेंट नैं देख्यां बिना दवाई कोनी दे सकूं। म्हैं थांरै खेत आय'र पैलां पैसेंट नैं देखसूं, पाछै दवाई देसूं।''

448, शास्त्री सर्किल, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.) 313001 मो. 7877354547

 ISSN : 2320-0995

''वा जणै, जै रामजी री, थांरी उडीक रैसी।'' कैवती थकी बा हवा रै फटकारै ब्हीर व्हैगी।

म्हैं उणरै खेत पूगी उण टेम बा रिजगो काटै ही। म्हनैं देख'र दांतळी रिजगा रा क्यारा मांयनै मेल'र मुळकती थकी बोली, ''राम-राम बैनजी। भला पधारया। म्हैं तो सोच्यो थे कोनी आवोला।''

म्हैं कैयो, ''मज्जन, थारै सूं घणी बंतळ करूंला, पण सगळा सूं पैलां म्हारा पैसेंट नैं देखणो चावूं।''

बा आगै अर उणरै पाछै म्हैं। मूंगफळी वाळा खेतर मांय जाय पूग्या। बा बोली, ''बात आ है बैनजी कै इण मांय पीळा फूल तो आय रैया है, पण हाल तांई इणरै मूंफळ्यां कोनी लागती दीखी। कदै लागसी मूंफळ्यां? हें! बतावो नीं।''

म्हैं झट सूं मूंफळी रो अेक डांखळो जड़ामूळ सूं उखाड़'र उण मांय लटकती नान्ही-नान्ही मूंफळ्यां उणनैं बताय दीधी। बा मुळकवा लागी। म्हैं जूठ-मूठ री रीस करती कैयो, ''तो थे असी रोळ करण खातर म्हनैं अठै बुलाई अर सरकारी टेम खोटी कीधो।'' म्हैं खेत री पाळी सूं पाछी घिरगी।

बा दौड़ती थकी आगै आय'र ऊभी व्हैगी अर कैयो, ''थे तो घणा झट रिसाणा व्हैग्या। म्हैं तो इयां ई रोळ कीधी कै कूलर-पंखा री हवा खावा वाळा बैनजी नैं खेत री बारखड़ी आवै कै कोनी?'' बा टाबर जियां घणी सरलता सूं आपरी बात कैयी तो म्हनैं उण पै लाड आयग्यो। म्हैं उणनैं कैयो, ''मज्जन, म्हैं तो सगळी भणाई खेती-बाड़ी री ई कीधी है।'' उणनैं खेत रा सगळा रूंख, खरपतवार, फसल सगळां रा नांव अर महत्त्व बतावा लागी तो बा आंख्यां फाड़ती म्हारो उणियारो उडीकती रैयगी। फेर कैयो, ''थांनै तो घणी चोखी समझ है खेती-बाड़ी री। बैनजी, असी भणाई म्हारै टाबरियै नैं ई कराय देवो, म्हैं भी उणनैं अफसर बणाय'र उणरो जमारो सुधारणो चावूं।''

''हां, जरूर मज्जन।'' म्हैं उणनैं उडीकती कैयो।

मज्जन सूं म्हारी दूजी भेळप ही, पण यूं लाग्यो जाणै कितरा ई बरसां सूं म्हैं उणनैं जाणूं। लगैटगै हमउमर होवा सूं म्हे पक्की साथणियां बणगी। मज्जन री साफ निरमळ बंतळ अर मुळकतो उणियारो, उणरी बंतळ मांय दिखावो कोनी। साचै मन री धणियाणी। अबकै पाछी भेंट व्ही तो म्हनैं रोक'र कैयो, ''आज थांनै चाय-पाणी बिना कोनी जावा देवूं।'' कुडा रा मीठा पाणी सूं भर्‌योड़ो लोटो म्हनैं पकड़ाय'र बा चाय बणावा लागी। म्हैं उणरी तुरता-फुरती देखती रैयगी। फेर म्हैं पूछ्यो, ''कितरा टाबर है थारै?''

''नान्हा-मोटा सगळा मिलाय'र तीन कम पच्चीस टाबर।''

''हें... ?'' म्हैं उणियारो जोवण लागी।

बा बोली, ''बो सै सूं मोटो टाबरियो साम्हीं आय रैयो है।''

म्हैं उणरी आंगळी री दिसा मांयनै देखवा लागी तो कांई देखूं के पचास-पिचपन बरस रो मिनख आपरी पागड़ी नैं जमावतो थको आय रैयो हो। म्हैं विचार कीधो—मज्जन रै बापू री उमर रो औ मिनख इणरो टाबर कियां व्है सकै? आ तो पैंतीस बरस री अर औ अधबूढ इणरो टाबर?

बा म्हारा विचार ताड़गी अर कैवा लागी, ''बैनजी, है तो औ म्हारो घरआळो, पण औ भी किणी टाबर सूं कम कोनी। सगळां सूं पैली इणरी नौकरी बजावो, कोई भी चीज आपरै हाथां सूं कोनी लेणी-मेलणी। सगळा काम इण मज्जन रै माथै। पछै व्हियो कै नीं टाबर?''

''पण मज्जन, औ किण भांत रो ब्यांव? कठै इणरी उमर अर कठै थारी?'' म्हैं आगै और कीं पूछती उणसूं पैलां ई बा बोली, ''बैनजी, म्हां करसां री लुगायां रो ब्यांव अेक मिनख सूं कोय होवै, उण मिनख रा घर-गवाड़ा, खेत-कुडा अर ढोर-डांगरां सागै भी ब्यांव व्है। फेर म्हारै पीहर मांय म्हारी मां कोनी अर बापू छोरी रो बोझ आपरै माथै सूं झटपट उतारणो चावै हो, अर इणरै घरआळी मरगी। इणनैं फेर ब्यांव करणो हो। लुगाईजात नैं अै मिनख किणी ढोर-डांगर सूं वत्तो कोनी समझै। जिण खूंटै पै बांधै उणीज खूंटै बंधणो पड़ै। म्हैं भी बंधगी।''

म्हैं उण कानी देखती ई रैयगी अर बा मुळकती म्हारै साम्हीं बैठ'र चाय पीवा लागी।

म्हैं पाछी बोली, ''थूं कैयो कै थारै बाईस टाबर। औ कियां व्है सकै, इण हाड-मांस में अतरो जीव कोनी अर पछै थारी उमर! म्हारै तो आ बात गळै उतरी कोनी।''

बा पड़ूत्तर देंवती बोली, ''अेक तो औ घरआळो सगळां सूं मोटो टाबर, फेर पंदरै ढोर-ढींगर। च्यार टाबरिया पैली वाळी रा अर दो टाबर म्हारा। थे गिणती लगावो, व्हिया कै नीं तीन कम पच्चीस।''

''हां भई व्हैयग्या तीन कम पच्चीस।'' कैवती थकी म्हैं फेरूं उणरै उणियारै कानी जोवण लागी।

बा कैवा लागी, ''बैनजी,आ घर-गिरस्थी बळदागाडी में जूत्या दो बळदां ज्यूं है। जद दो बळद अेक तरियां सूं चालै तो घर-गिरस्थी रो मजो है। पण अठै तो अेक बळद इण गेलै जावै अर अेक बळद उण गैलै। पछै थे बतावो, गाडी सांतरी कीकर चाल सकै? म्हारी घर-गिरस्थी रो तो सगळो बोझ म्हारा कांधा पै ईज है। औ मिनख तो सगळा टाबरां सूं भी मोटो टाबर। टाबर आपरो काम कर लेवै, पण इण रा सगळा हुकम बजावणा पड़ै। जे टेमसर हुकम नीं बजावो तो मातमपुरसी करता देर कोनी करै। अमल-पाणी रा नसा में भमतो फिरै अर म्हारै सूं लड़ायां करै। बैठो-बैठो म्हारै काम मांय मीन-मेख काढै। बैनजी, आ तो बा ईज बात हुयगी कै काळी भैंस धोळी गाय यनैं कैवै कै देख, थारी पूंछड़ी रा बाल काळा। पण भैंस तो पूरी ई काळी, औ उण भैंस नैं कोनी दीखै। औ ईज हाल इण मिनख रो है। आपरी गलती निजरां कोनी आवै।''

हमेस मुळकती मज्जन रा उणियारा पै गैरी उदासी री लकीरां साफ निजर आय रैयी ही। बा उणनैं छुपाय नीं सकी। उणरी आंख्यां रातीचुट व्हैगी अर उणसूं गंगा-जमना बैवा लागी। हमेस मुळकता उणियारा रै पाछै कितरो दरद है, औ देख'र म्हारो काळजो बैठग्यो। उण दिन ओफिस आय'र घणो विचार कीधो। म्हैं मज्जन रै काम आय सकूं अर इणरो जबाब म्हारै साम्हीं ईज हो। उणनैं खेती मांय आगै बधाय'र उणरी मदद करणो संभव हो।

उणरै पाछै खेती रा नितनूंवा प्रोग्राम अर स्कीमां सूं उणनैं जोड़ी अर मज्जन भी पूरी मैणत अर लगन सूं काम करती रैयी। खेती रा नवाचार, महिला-कृषक पुरस्कार अर जैविक खेती करण री वजै सूं मुख्यमंत्री रै हाथां सूं अेक लाख रुपियां रो नकद पुरस्कार। मज्जन लुगायां री मारगदरसक

अर प्रेरणास्रोत बणगी। अेक नूंवी स्कीम रा संबंध मांय उणसूं फेर मिलणो व्हियो। म्हैं उणनैं कैयो, ''फळां रो बगीचो लगावणो है।''

बा फट हुंकारो भर लियो। म्हैं उणनैं कीं कैवती उणसूं पैलां ई बा कैवा लागी, ''बैनजी, दाड़म अर जामफळ लगावणा है।''

म्हैं कैयो, ''दाड़म अर जामफळ तो मिठुड़ा, टाल्यां अर दूजा पंछी भी घणै चाव सूं खावै, इणसूं बचावण खातर अेंटी बर्ड नेट लगावणी पड़सी। ओ खरचो बाधू रो करणो पड़सी। इणसूं तो आछो नींबू रा गाछ उगाय देवां, कोई जीव-जिनावर उणनैं नीं खाय सकै।''

बा बोली, ''बैनजी, बात तो थांरी सोळै आना साची है, पण अै जीव-जिनावर खेती करणी कोनी जाणै, जद सगळा नींबू उगावैला तो अै बापड़ा पंछी आं फळां रो स्वाद कद चाखैला? बैनजी, म्हैं तो दाड़म अर जामफळ ईज उगास्यां अर एंटी बर्ड नेट भी कोनी लगावां। आं सगळा पंछी-पंखेरुआं नैं भी फळ चखावां, इणां रा भाग रो अै खासी अर म्हारा भाग रो म्हे।''

उणरी बातां सूं अेक दाण फेर मज्जन म्हनैं निरूत्तर कर दीधी। म्हैं उणरो उणियारो निरखती रैयगी। किरसा नैं अन्नदाता यूं ईज कोनी कैवै। घणो मोटो अर खुल्लो काळजो चाईजै जको सगळां रै मांय नीं व्है सकै।

◆◆

सिया चौधरी

पन्नो बाबो

यूं तो पन्ना बाबा नैं याद करूं जद भोत ई गंभीर सुभाव रा खेतीखड़िया आदमी। धोती-कुरता सागै साफो राखता। पक्को रंग, पतळो-लांबो-सो मूंडो। छह फुट री कद-काठी, हाथ में इत्ती ई बडी लाठी राखता। कदै-कदैई हाथां में नाचतो-घूमतो ढेरियो भी आ जावतो अर बाबा रै इण सिणगार नैं पूरो करतो रेड़ियो, जको सदां बांरै सागै रैवतो।

म्हां टाबरां नैं तो रेवड़ चरावता, जेवड़ी बंटता अर डपटता ई याद आवै। म्हे टाबर तो पन्ना बाबा रै नांव सूं ई लुक जावता। लाठी रो डर घणो लागतो, पण जियां-जियां समझणा हुया तो बेरो लाग्यो कै पन्ना बाबा आपरै ठीमर सुभाव रै सागै भोत मजाकिया इंसान भी है। बांरा केई किस्सा गांव में चावा है।

भणाई री बात करां तो पन्नो बाबो आपरै रेवड़ में ईज मस्त। स्कूल नीं जावता, जदकै बांरा बडा भाई स्कूल जावता अर पढता। जद कोई पूछतो कै पन्ना! तूं स्कूल क्यूं नीं जावै तो बाबोजी रो अेक ईज जवाब कै मोटो भाई पढै, तो म्हैं मत्तैई मास्टर होय जासूं। बात सो टक्का सही, भाई जो भी पढतो बाबा नैं घरां आय'र बता देंवतो। बाबै नैं देश-बिदेश रो पूरो ग्यान। इतिहास हुवो अर भलांई भूगोल, पन्नै बाबै सूं कीं छानो नीं। खास कर'र विश्वजुद्धां री घणी जाणकारी ही। कुण किणरो गुट रो, कुण किणसूं अर क्यूं लड़्यो, बाबा नैं पूछल्यो, पण बस आखर ज्ञान में प्रौढ शिक्षा में फगत नांव लिखणो सीख्यो, बो भी जोरांमरदी, स्यात बाबा नैं आखर बांचणै में कोई दिक्कत होती होसी। यूं करनै मोटा बाबा तो मास्टर बणग्या पण पन्ना बाबा अणभणिया ग्यानी ईज रैयग्या।

बाबा रै तो बस रेडिया रो चस्को। चायै कांई भी प्रोग्राम आवतो हुवै, रेडियो कदैई बंद नीं हुवतो, भलांई कोई भी भासा रो स्टेशन लागग्यो तो बो ईज चालतो रैसी।

इयां ई अेक बार कोई भोळो आदमी पन्ना बाबा नैं पूछ्यो कै इण रेड़ियै में बोले कुण है? पन्नो बाबो तो पन्नो बाबो, आपरै मजाकिया सुभाव मुजब उणनैं भोत बढिया तरीकै सूं समझायो कै यो रेड़ियो किण तरियां जापान सूं बण'र आवै अर जापान रा लोग भोत छोटा हुवै, इत्ता छोटा कै रेडियो में आय जावै, तो म्हारै रेड़ियै में भी धणी-लुगाई रैवै, कदै-कदैई दोनूं री आपस में ठण जावै, जद बै आपरी भासा में कौतक भी करै। यूं कैयनै बाबो इयांकली-सी कोई भासा रो स्टेशन

भाकर भवन, इंदिरा कॉलोनी, नागौर रोड, डीडवाणा, जिला-नागौर (राज.) 341303 मो. 9990172019

 ISSN : 2320-0995

लगा दियो कै बीं आदमी रै आ बात पूरी जचगी। घणा दिनां पछै कोई उण भोळा मिनख नैं समझायो कै भाई, इयां कोनी हुवै, बाबो तनैं बावळा बणा दिया। तद बो पन्ना बाबा नैं ओळमो देंवतो बोल्यो, ''पन्ना रे, आछोबणायो ?''

पन्नो बाबो आपरै सुभाव सरूप गंभीर होयनै बोल्या, ''किणनैं कुण बणावै, सगळा ऊपर सूं बण्या-बणाया ईज आवै! बात मजाक में कैयी, पण बाबा री बात में बजन हो।

बाबा री गंभीरता सूं मजाक करबा रो अेक किस्सो गांव में भोत चालै। बात पन्ना बाबा रै ब्यांव री है, बाबा रो ब्यांव आखातीज रै सावै पर हो अर उण दिन बडिया (बीनणी) रै गांव में घणकरा ब्यांव हा। बिदाई री बेळा सगळा लोग गुवाड़ में भेळा होवता अर बठै सूं बिदाई होवती। इयां करनै कोई चार ब्यांवला जोड़ा अेक ईज जगां भेळा होयग्या। बींद अेक कानी अर बीनण्यां दूजी कानी। लुगायां रै जमघट में ठाह नीं पड़ै हो कै किणरी बीनणी कुणसी है अर बाळक बीनणी सरमाती बोलै नीं। बिदाई नैं मोड़ो होवतो देख'र सगळां रै ई घालमेल होयरी ही, पण ठाह कियां पड़ै, तो बाबोजी सीधासट बोल्या, म्हैं तो तनैं कोनी पिछाणूं, तूं तो अब ताणी जाणगी होसी, तो आपणै तो 'गोरुआळी मां' अठीनैआज्या! बाबा री बात सुण'र जाणै हंसी रो बम सो फूटग्यो, पण बाबो आपरी बात रा पक्का रैया अर पैला टाबर छोरै रो नांव गोरू (गोरधन) ई राख्यो। छोटी-सी बीनणी नैं पूरो गांव गोरू री मां ईज कैवतो अर आज भी बडिया गोरू री मां रै नांव सूं ईज जाणीजै।

भलां ई टाबर पन्ना बाबा सूं डरता अर पन्नो बाबो भी कदै कोई टाबर नैं बतळायो कोनी, पण बाबा रै बाड़ै में बडो-सो नीमड़ो हो, जिणरी मोटी-मोटी पोड ही, अेक सीधी-सी पोड पर पन्नो बाबो गरमी री छुट्टी में लाव अर लकड़ी का फंटा को बडो-सो आरामदायक हींडो घालता, जिण सूं पूरा दिन घरां में दड़बेड़ा टाबर आथण री बगत पन्ना बाबा रै बाड़ै में भेळा होय खूब खेलता अर हींडता। बांनै कोई तरियां री मनाही कोनी ही।

इयां ई हरियाळी तीज पर बाबा रै बाड़ै में ईज तीजणियां रो मेळो लागतो। औ बाड़ो ईज तीजणियां रो ठावो ठिकाणो बणग्यो। बाबो मूंडै सूं तो कदै कीं नीं बोलता, पण आ बात सगळा ई जाणता कै बाबा नैं टाबरां नैं यूं राजी देख'र घणो हरख होवतो।

पन्ना बाबा नैं हांसता-मुळकता तो कोई नीं देख्यो, बै सदीव गंभीर रैवता, पण बाबो मन में मस्तमौला सुभाव रा ईज हा, सीधो सरल जीवण जियो। लारलै दिनां पन्नो बाबो सौ बरस पूगग्या। बांरो बो ठीमरपणो अर संतोखी मुख सदां ओळ्यूं में रैसी अर गांव में बांरी बातां सदा चालसी। बाबा नैं सादर सरधांजळी।

◆◆

विमला भंडारी

किस्सो बडी बहू रो

अम्मा सूं मिलणो व्हियो हो मथुरा में। संजू भैया, रिचा, बाळक अर अम्मा नैं दौसा सूं लियाया हा। रात री साढी नौ बजै ही। अम्मा री मरजी ही कै बै म्हनैं आपरै सागै मथुरा घुमावै। बगत निकळतो गयो पण संजोग नीं बैठ्यो। अम्मा दिन-दिन दानी व्हैती गई। थाकवा लागी। वणां री अणी साध नैं पूरी कीधी वणां रै नानकिया अंजीव, जणीं नैं मिनख अंजीव 'अंजुम' रै नांव सूं ओळखै। म्हैं भी 'अंजुम' ईज कैयनै बतळावूं। कम उमर मांय ई अंजीव नैं राजस्थान साहित्य अकादमी रो युवा पुरस्कार मिलग्यो हो। नानी 'क उमर में 106 पुस्तकां लिखवा वाळा अंजीव पे म्हनैं भी घणो अंजस है।

मथुरा, 28 अक्टूबर री परभात रो बगत। बो खास दिन म्हां तीनूं ई जणा मथुरा रा सतजुग, द्वापर अर त्रेताजुग री दीठ सूं खास तीरथधाम रा दरसण करवा री मंशा राख बोलेरो गाडी सूं रवाना व्हिया। दोपारी री बगत बारह बज्यां तांई म्हे बलदेव जनपद पूग्या। गाडी सूं उतरनै अंजीव म्हां दोई पति-पत्नी नैं पैली राधागोविंदजी पाठक रै घरै लयग्यो। अंजीव, राधागोविंदजी सूं म्हांरो परिचै करवायो अर दाऊजी रै मिंदर में दरसण करबा री मंसा राखी। उत्तरप्रदेस हिंदी साहित्य संस्थान सूं साहित्य भूषण सूं पुरस्कृत अर ब्रजभाषा रा रसीला कवि राधागोविंदजी घणा राजी व्हिया अर भोजन री मनवार कीधी पण म्हांनै जल्दी ही। औ तो पैलो ईज मुकाम हो अर म्हनैं मथुरा रा सगळा दरसण करनै सांझ रा वृंदावन जावणो हो, जठै विष्णुशरणजी म्हाराज रै लारै दरसण करणा हा। पछै सिंझ्या रै जीमण रो नूंतो संतोषजी रै घरै मथुरा में तै हो। बठै छिणेक देर बैठनै ठंडो पाणी पीधो अर राधागोविंदजी नैं सागै लेय'र दाऊजी रा दरसण करवा म्हां चारूं ई जणा पाछा जीप में बैठनै चाल पड़्या।

ज्यूं ई म्हां जीपड़ी सूं उतर्‌या, दो-चार पंडा म्हांरै कनै आयग्या। पूछवा लाग्या, ''कठै सूं आय रैया हो?''

''उदयपुर सूं।'' भंडारी सा तड़ाक सूं उथळो दियो।

''कांई जात-बिरादरी हो? दिखो तो महाजन हो।'' पंडे पूछ्यो।

''महेसरी हां।'' पतिदेव फेर बोल पड़्या।

''कस्या महेसरी?'' फेर पंडे पूछ्यो अर पाछै लागग्या। जद अंजीव कैयो, ''रे भाया, म्हां तो अठा रा ईज हां। मथुरा रै कनै राया गांव रा रैवासी ही।'' अबै तो बात ओज्यूं उळझगी। पंडा अबै म्हारै पाछै चाल पड़्या।

भंडारी सदन, पैलेस रोड, सलूंबर (उदयपुर) राज. 313024 *मो. 9414759359*

 ISSN : 2320-0995

''भैणजी, आप कस्या महेसरी हो?''

म्हैं मुळक दीधी अर पाछी आयनै बतावा री बात कर आगै बधग्या अर आपरो लारो छुडायो।

तीरथधाम रा पंडा जात्री सूं भेंट चढावा रै नांव पे लूट-खसोट करै। भगतां री भावना भांपनै पईसा-कौड़ी अैंठवा रै कारणै ईज बदनामी रो कळंक ढोवै। अणी कारण वणां री आछी बात भी दबी जावै। अणां पंडां रै कारण ईज अबै राधागोविंदजी म्हांरै लारै आवा में हिचकवा लाग्या। कैवा लाग्या, ''आप जावो, दरसण कर आवो। म्हैं बारै ईज बैठो आपरी वाट जोऊंगा।''

''क्यूं, आप क्यूं नीं चालो?'' म्हां दोई पूछ्यो।

''म्हारै तो अठै ईज रैवणो है। आप चल्या जावोगा तो ई पंडा म्हारै सूं राड़ करैगा। भूंडा बोल सुणणा पड़ैला।''

तीरथधाम पे पंडां रै आतंक रै दाण, केई जिग्या मैसूस व्हियो पण राधागोविंदजी जस्या विद्वान री हालत देखनै घणो खारो लाग्यो अर म्हैं हठ करनै वणां नैं सागै लेय चाल्या। म्हांरै लारै वणां नैं देख'र पंडा ओसा-मौसा बोलवा लाग्या। म्हांनै राधागोविंदजी नैं बठै ई छोडणा पड़्या।

दाऊजी रा दूरा सूं बारणै सूं ई दरसण कीधा। परसाद चढायो, पण घणो दोरो। धक्का-मुक्की ही। जद देख्यो कै मिनख गरभघर में भी दरसण कर रैया तो पूछवा पे पंडे छह सौ रुपिया मांग्या। बात तीन सौ पे तै व्ही अर रुपिया लेय'र म्हारै वास्तै मिंदर रै गरभघर रो दरवाजो खोल दीधो। देव दरसण रो म्हारो मनोरथ अतरो आगतो हो कै औ भी नीं विचार्‌यो कै बारली मूरती मांय कांई राख्यो है, जरा मन री मूरत ई देखल्यो। पण कांई करां! घुट्टी में जे संस्कार आया तो पंडा री रोजी बणगी।

मिंदर मांय दो मूरत्यां ही, जकी कनै-कनै नीं होयनै आम्हीं-साम्हीं खड़ी ही। सीधी साम्हीं अेक दाऊजी कृष्ण रा बडा भाई री अर दाऊजी रै साम्हीं टेढी रेंवती मैया री। रेंवतीजी दाऊजी री परणायत, पण लारै नीं बिराज'र साम्हीं ड्योढी ऊभी थकी ही। म्हैं मोबाइल सूं मूरत्यां रा फोटू लीधा।

''घणा आराम सूं दरसण व्हिया।'' बारै आयनै म्हैं कैयो।

''रुपिया तीन सौ लाग्या।'' भंडारी सा रोळ कीधी।

''रे रुपिया थारी रात में कोई नीं जनमियो।'' म्हनैं भी म्हारा पापा रो औ ओखाणो याद आयग्यो। म्हां जीप में बैठ'र राधागोविंदजी रै घरै आयग्या।

तीरथजात्रा रो असल मरम तो वंडी लोककथावां है। राधागोविंद जी पाठक कैवा लाग्या, ''दाऊजी बलराम है। बिरज रा राजा है। कृष्ण रा बडा भाई है। कृष्ण जद कंस नैं मार न्हाख्यो तो राजा उगरसेन बिरज रो राज कृष्ण नैं सूंपवा लाग्या तो कृष्ण बोल्या, ''बडा तो दाऊजी है। आप अणां रो राजतिलक कर गादी सूंपो।'' अणी भांत बिरज री गादी पे दाऊजी नैं बैठायनै कृष्ण द्वारिका परा गया। आ बात तो आप सगळा जाणो ईज हो।''

छन्याक रुकवा पछै वणां कैवणो जारी राख्यो, ''औ दाऊजी रो मिंदर है। रेंवती मैया दाऊजी री जोड़ायत है।''

''अै मूरत्यां आम्हीं-साम्हीं कियां लागी है?'' म्हैं आगै पूछ्यो, ''राधा-कृष्ण, सीता-

राम, गौरां-शिव तो आपणी जोड़ी में लारै बिराजै। औ कांई राज है जो आम्हीं-साम्हीं बिराज्या थका है। आ बात म्हारी समझ नीं आयी!''

जद पाठकजी पूरो वृत्तांत सुणावा लाग्या। बोल्या, ''आप तो खरा दरसण कीधा है। मिनख तो हाथ जोड़'र पूठ फेर लेवै। म्हे दाऊजी चाळीसा में पूरो बखाण कीधो है। बै दाऊजी चाळीसो लेय आया अर म्हनैं हरख सूं सूंपता बोल्या, ''आप पढोला तो खुशी व्हैगा।''

''पण अबार आप सगळो वृत्तांत सुणावो।''

बै कैवा लाग्या, ''अठै पैली अेक काचै पाणी रो तळाब हो। नांव हो क्षीरसागर। श्यामा गाय सब गायां लारै चरनै बठै पाणी पीवा जावती तो आपरा थण रो दूध बठै ईज किनारा पे छोडी आवती। जद गुसांईजी म्हाराज गाय रै थण खाली व्हैवा री बात पतो लगाई तो वणी धरती रै नीचै सूं दाऊजी री मूरत निकळी। दाऊजी री मूरत सूं थोड़ी डोढी रेंवती मैया री मूरत निकळी। मिंदर बणायो अर दोई स्वप्राकट्य मूरत्यां री थापणा जथाठौड़ कीधी। आप दोनूं रा दरसण मिंदर में कीधा है।'' अतरो कैयनै बै छिणेक रुक्या। पाछा बोल्या, ''आप पूछ्यो कै अै मूरत्यां डोढी क्यूं है? अणी रो भी किस्सो है।'' राधागोविंदजी बतावण लाग्या अर म्हे चित मन सूं सुणवा लाग्या।

''रेंवतीजी सतजुग रा हा। धरती पर राजा रेंवतजी व्हिया। रेंवतीजी वणां री बेटी हा। रेंवतजी रो सीधो संपर्क ब्रह्माजी सूं हो। वणां रेंवतीजी वास्तै ब्रह्माजी सूं वर पूछ्यो—आप म्हारी बेटी वास्तै किणी वर नैं सोच्यो है? जद ब्रह्माजी बोल्या—रेंवतीजी तो त्रेताजुग में दाऊजी सूं परणेंगा। रेंवतीजी नैं आ बात खबर पड़ी तो बै तप पे बैठग्या। घोर तपस्या कीधी। अतरी कै वणां पे उदाई घर घाल दीधो अर माटी चढगी। रेंवतीजी आखा माटी सूं ढकग्या। जद दाऊजी बिरज रा राजा बण्या तो रेंवतीजी नैं सोध्या अर माटी सूं बारणै काढनै लेयनै आया।'' पाठकजी किस्सो सुणावा में डूब्या थका पण नारीचेतना रै सवाल पे म्हारो मन सजग होयग्यो।

''राजा रेंवतजी रेंवती रो ब्यांव मांड्यो। दाऊजी बरात लेयनै परणवा आया। मंडप में रेंवतीजी नैं देख'र गुवाळ-बाह हंसवा लाग्या। ठिठोळ करता बोल्या—बडी बहू, बडा भाग। रेंवतीजी सतजुग में जनम्या। दाऊजी सूं दो जुग बडा हा। दाऊजी रै बात चुभगी। वणां आपरै हळ सूं रेंवतीजी नैं खींचनै माथै मूसळ धर दीधो। रेंवतीजी छोटा होयग्या। दाऊजी रै अणी बरताव सूं रेंवती जी नैं अपमान री पीड़ा व्ही। रेंवतीजी बोल्या—बींद आपरै घरै लेजायनै आपरी ब्याहता सूं कस्यो भी वैवार करै, पतिव्रता स्त्री सब सहन करै अर आपरो धरम निभावै, पण अठै तो म्हारा पीहर में सगळा साम्हीं मंडप नीचै अस्यो वैवार? अस्यो तो कोई नीं करै। रेंवतीजी रूसग्या अर दूरा जायनै डोढा बैठग्या।''

पाठकजी घणी सारी बातां कर रैया हा, पण म्हारो मन सतजुग सूं लेयनै कळजुग री स्त्री री दसा पे विचरण करवा लाग्यो। इण संसार में पुरुस श्रेष्ठता खातर लुगाई री लघुता जरूरी है। राधागोविंदजी सूं विदा लेयनै म्हां आगै बधग्या। गाडी रा पहिया रमणरेती रै लक्ष्य पे आगै बध रैया हा, पण म्हारो मन स्त्री रो कांई कान अर कांई अपमान व्है, आं विचारां में उळझ्यो थको सगळा काळ नैं पुराणां नैं खंगाळ रैयो हो? मिनख तो आवै, दाऊजी रा दरसण पावै, जैकारा लगावे। रेंवतीजी तो खूणां में ऊभा ई लुक्या रैवै। दूजी खिड़की सूं दरसण करणा पड़ै!

◆◆

सुशीला शर्मा 'कंचन'

जगन्नाथपुरी री जात्रा

आ बात है जनवरी, 2019 री। भिड़तां री साल री सरुआत पुरी जात्रा सूं हुयी। आज बैठ्यां-बैठ्यां चितार आयगी। अबार राड़रावणा कोरनो-काळ में तो या ही लागै कै म्हैं मुगती रा द्वार च्यारूं धाम भी कर सकूंली या नीं, या फेर म्हारी बा आखरी जात्रा ही।

सियाळा री छुट्ट्यां ही 25 दिसंबर सूं लेयनै 6 जनवरी तलक। स्कूल री छुट्टी होयगी। निसरण लाग्या कै हैड माटसाब पाणी हाथ में थमातां सागै कैयो, ''बाईसा, संस्कृत भाषा रा प्रशिक्षण में आपरी ड्यूटी लागी है। 26 सूं 31 दिसंबर तलब आपनैं महापुरा ईज रैवणो है।'' अठीनै म्हांकी पुरी जात्रा री टिगट पैलां सूं ई बण्योड़ी ही।

घरां आवतां ई पैली साबजी नैं आ खबर सुणाई। साबजी तसल्ली सूं म्हनैं कैयो, ''कोई बात कोनी, जात्रा कैंसिल।'' ब्याळू करती बगत अनिल जात्रा रा सामान-सट्टा बैई पूछ्यो, म्हैं सारी बात बतायी तो बां टिगट पैलां आळा कैंसिल करवायनै 1 जनवरी रा पाछा बणवा दिया। दिन-रात बठै रैवणियो प्रशिक्षण हो। घरां आवतां ई गाभा-लत्ता... कियां होसी, सब घबराटी छड़गी, पण समै नीसरग्यो।

जयपुर सूं दिल्ली अर दिल्ली सूं पुरी, औ म्हांरो जात्रा-मारग हो। अेक दिन सुनील कनै दिल्ली में रुक्या। तड़काऊ 6 बज्यां री रेल ही, सो बहू बेगी उठनै परांवठा बणा दिया गेला वास्तै। बेटो मोबाइल फोन सूं टैक्सी बुक करवा दी। टेसण माथै पूगावण सागै गयो। बुढापा रो सुख भी अेक अलग ई आणंद होवै है। टाबरां री ब्याह-सगाई पछै लारली चिंता नीं रैवै। जिम्मेवारी सूं मुगत हुयां पछै री जात्रा हनीमून सूं कम कोनी लागै। बरसां पछै भरतार रै सागै म्हैं अेकली जात्रा करी ही। मन हुलारां मारै हो। हिवड़ै हेत उमग्यो आ-जा रैयो हो। मोकळी बातां गैलरा किस्सा ज्यूं-ज्यूं याद आया, बतळा लिया, लारै ई ओळमा भी देंवता रैया। भागदौड़ री जिंदगाणी अर टाबरां रै भविष्य री चिंता में कद बूढा होयगया, बेरो ई कोनी पाट्यो।

3 जनवरी री धोळी दोपारी जगन्नाथ पुरी पूगग्या। साब री मैरबानी सूं अेस.बी.आई. रा विश्रांति-गृह में कमरो बुक होयग्यो हो। विश्रांति-गृह कांई, जाणै पांच सितारा होटल हो बो तो। 13 नंबर कमरै में ठैरग्या हा म्हे। न्हाय-धोयनै बैठनै भोजन जीम्यो। घणो सुवाद खाणो हो, स्यात पवित्तर थान रो परताप हो या फेर म्हांनै भूख घणेरी ही।

72, शिवनगर, रोड नं. 2, मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर (राज.) 302039 मो. 9413337163

थोड़ी बार आराम करनै म्हे नीचै गया। बठै पैलां सूं ई टूर कंपनी आळा बैठ्या हा। वणां नैं अेडवांस रुपिया देयनै म्हे जगन्नाथजी रा मिंदर कानी चाल पड़्या। टैक्सी ईं छोटा-सा स्हैर री अळियां-गळियां घुमावती मिंदर सूं आधा कोस दूर उतार दिया।

बजार रो नजारो देखतां थकां म्हे मिंदर रै साम्हीं पूग्या। बठै मोबाइल अर बाकी सामान नैं थड़ी में जमा करवाया, पछै लैण में लाग्या। जूता-चप्पल भी बठै ई खोल दिया हा। आधो घंटो लैण में लाग'र मिंदर रै साम्हीं जा पूग्या। हाथ-पग धोयनै मिंदर में प्रवेस कर्‌यो। गाइड रै लारै म्हे घूमता रैया। बो बतावतो रैयो :

''भगवान जगन्नाथजी रो मिंदर 12वीं सदी में गंगबंस रो प्रतापी राजा अनंगभीम देव बणवायो हो। आठ सौ बरस जूनो पुरी मिंदर स्थापत्य अिर शिल्पकला रो नायाब नमूनो है। इणरी ऊंचाई 214 फुट अर दरसाव पंचरथ जिस्यो है। इण मिंदर रै च्यारूंमेर री भींतां नैं प्राचीर कैवै, जिणरी लंबाई 660 फुट अर ऊंचाई 20 फुट है। मिंदर रा चार खंड है—विमाण, जगमोहन, नाट्य अर भोगमंडप।''

गाइड बतावतो रैयो, मिंदर री अणगिणत विसेसतावां अर चमत्कारां रै बारै में, पण म्हांनै इतरी भीड़ में नींका तरीकी छोड'र समझ में भी कोनी आयो कै आपां दरसण करनै धक्का-मुक्की में कठै जा पड़्या। दरसणां री कसक मन में रैयगी। भारी मन सूं बठै ईज अेक भोजनालय में भोजन जीम-जूठनै बारै नीसर्‌या तो जयपुर रा अेक पुराणा जाणकार मिलग्या। रामा-स्यामा करनै सिंझ्या पछै बठै आवण रो कारण छीड़ में दरसण करणो बतायो। म्हैं घणी राजी हुयी, अब आपां भी नींका तरीकी सूं दरसण करस्यां। म्हे बजार में घूमनै बीच रो टेम पास कर्‌यो अर पछै नौ बज्यां पछै नैण भर-भरनै जगन्नाथजी रा दरसण करनै आ जातरा अर जलम दोनूं सफळ कर्‌या।

आगलै दिन विश्रांति-गृह रै साम्हीं टूर कंपनी री बस दिनूगै पूगगी। म्हे बीं में बैठग्या। गाइड बतावणो सरू कर्‌यो, ''आपां सब सूं पैली चालस्यां गुंडिचा मिंदर में। औ मिंदर जगन्नाथजी रा मिंदर सूं दो कोस री दूरी माथै उत्तर दिसा में है, इणरो निरमाण राजा इंदरमदुम्न आपरी राणी गुंडिचा रा नांव पे करवायो हो। इण मिंदर री जगचावी 'पुरी रथजात्रा' में घणो महत्त्व है। आसाढ में ऊजळा पख री दूज नैं तीन रथां में बैठनै तीनूं भाई-भैण गुंडिचा मिंदर में प्रवेस करै है। जगन्नाथजी रो रथ नंदिघोस, बलभद्रजी रो रथ तालध्वज अर भैण सुभद्रा रो रथ देवदलन नांव सूं होवै है।''

म्हैं तो आपनैं आ बतावणो ई भूलगी कै नाथजी रा मिंदर में तीन काठ री मूरत्यां है। अै तीनूं विग्रह नीम री लकड़ी सूं बण्योड़ा होवै। यां मूरत्यां रो नवकलेवर 12 बरस में हुवै है। जीं बरस इधक मास आवै है, बीं बरस ई नवकलेवर होवै।

अबै बस म्हांनै पुगाया लोकनाथजी रा मिंदर में। औ मिंदर पुरी रो सै सूं जूनो महादेवजी रो मिंदर है। अै जगन्नाथजी रा भंडारा रा रखवाळा मान्या जावै। अठै हरेक साल सौरती नैं बडो मेळो भरीजै। कैयो जावै कै रामजी लंका जावता थका अठै भोळैनाथ री पूजा करी ही। बठै सूं गाडी म्हांनै चिलिका झील कानी लेयगी। पूरै गेलै सड़क रै किनारै छोटी-छोटी सी तळायां मनमोवणो चितराम हो। चिलिका झील भारत री बडी अंतर्देसीय झील है। आ झील उड़ीसा रा उपकुल में 1100 वरग किमी छेत्र में फैल्योड़ो है। घणेसरा सरोवरां सूं पूर्‌योड़ी चिलिका झील में दूर

देस-परदेस रा पंखेरू आंनै इणरी सोभ्या रै चार चांद लगा देवै है। पुरी सूं आ झील 100 किमी सूं भी ज्यादा दूर हुवैली स्यात। अठै रा मछेरां रो अेक रुजगार पर्यटकां नैं नाव में बैठा'र झील में दूर तलक घुमावणो अर डालफिन दिखावणो है, पण बांरी हालगत देखतां थकां तो यो ईज लागै कै बिचोळिया ई खा जावता होवेला अणां री मोटी दिहाड़ी नैं। म्हे डीजल सूं चालण वाळी नाव में बैठनै घणी दूर निकळग्या हा। फटफट री आवाज करती नाव आपरै पाछै पाणी में लीकटी मांडती जा रैयी ही। पंछी किलोळां कर रैया हा। लोगबाग वीडियो बणाय रैया हा, चाणचुक डालफिन साम्हीं आयगी। सगळा खुसी रा मारया उछळ पड़्या। नाव मुड़ण लागी, कीं डगमगागी, स्यात डीजल बीतग्यो होवैलो। नाव थोड़ी दूर जायनै थिर व्हैगी। म्हारो जीव धगधगाट करण लाग्यो, पण चनी-सी टेम में ई अेक मोट्यार आय'र म्हांरी नाव नैं खुद री नांव सूं जोड़'र खींचतो ई पूगा दिया बंगाल री खाड़ी रा किनारा माथै, पण अब बठै मन कोनी लाग्यो। वापसी आवतां रात व्हैगी। आज भी रात नै नौ बज्यां निरांत सूं जगन्नाथजी रै मिंदर रा दरसण करनै विश्रांति-गृह आया।

आज जात्रा रो तीजो दिन हो। म्हांनै भुवनेश्वर जाणो हो। काल म्हे चंदन तळाब अर साक्षी गोपाळजी रा मिंदर में भी जायनै आया हा। आज म्हे सब सूं पैली कोणार्क सूरज मिंदर पूग्या। बठै सूं पैली समंदर रै किनारै बस रुकी। घणी दूर तांई समदर नैं निरख रैया हा, की चाणचक लहरां आयी आ गोडां तांई भिजोयनै चली गई। या भी जात्रा सफळ होवण रो संकेत हो।

कोणार्क मिंदर पुरी सूं 36 किमी री दूरी माथै है। इण मिंदर री थापना उत्कल राजा लांगुला नरसिंघदेवजी 1200वीं सदी में करवायी ही। 1200 कारीगर 12 बरस तांणी राज रा खरचा सूं इण मिंदर रो निरमाण करयो गयो। थांनै इण मिंदर रा शिल्प री जित्ती सोभा बतावूं, बित्ती ई कम है। सूरजदेवजी री तीन मूरती उदित, मध्य अर अस्त सूरज देवता। इण मिंदर रो रूप सूरज रा रथ जिस्यो लागै है। इणमें 24 पहिया है। हरेक पहियै में आठ-आठ आरा, ज्यांरो व्यास 9.9 फुट है। मिंदर रै दक्षिण में दो भड़कीला घोड़ा है, बांनै उड़ीसा सरकार आपरी सरकारी मोहर में छाप राख्या है। इण मिंदर री पूरब दिसा में सिंघ हाथी नैं दबाय राख्यो है।

अठै सूं म्हे भुवनेसर में ईज लिंगराजजी रा मिंदर में गया। भुवनेश्वर उड़ीसा री राजधानी है। लिंगराजजी भगवान संकर रो विग्रह है। अठै रो कला-कौसल अचंभाजोग है। अब म्हे पूग्या खंडगिरी-उदयगिरी धुरायां में। खंडगिरी री ऊंचाई 133 फुट है अर इणमें 16 धुरायां (गुफावां) है। बीजा परबत उदयगिरी री ऊंचाई 110 फुट है अर इणमें 44 धुरायां है।

अंत में म्हे नंदन कानन चिड़ियाघर में पूग्या। चिड़ियाघर भुवनेश्वर सूं 25 किमी दूरी पे है। अठै रा बंगला बाघ अर धोळा बाघ प्रसिद्ध है। अठै म्हनैं सन् 1982 री कश्मीर जात्रा याद आय रैयी ही। हार्‌या-थाक्या पुरी पूग्या, फेरूं वा ईज सागी नौ बजी मिंदर गया। लगोलग तीन दिन तलक निजरां री तिरपती जगन्नाथजी रा दरसण करनै व्हैगी। भगवान इस्या दरसण सब कोई नैं करावै।

◆◆

बसंती पंवार

दंतकथा

दांत है तो उणां री कथा ई हुवै। अेक कथा अैड़ी है जिकी थां सगळां नैं सुणायां बिना म्हारो आफरो नीं झड़ सकै। चावै माडाणी रो पाडो ई हुवै, पण सुणणी तो पड़ैला। तो सुणो सा!

अेक गांव में डोकरा-डोकरी रैवता हा। उणां नैं स्हैर री पळपळाट... स्हैरियां ज्यूं रैवणो, बोलणो घणो चोखो लागतो। डोकरो दो-चार अंगरेजी रा सबद ई सीख लिया हा। मिनखां रै बिचाळै जद बो बैठतो तो अंगरेजी बोली सूं आपरी धाक जमावण री अणूती ई कोसिस करतो।

साठां पार, पण कोई बूढा कैय'र तो बतळावो, बै उणां रै दोळा व्है जावता। कैवत ई है कै 'साठां बुद्धि न्हाठां। टीवी देख-देख'र बै आपरा नांव ई हीरो-हीरोईन रा राख लिया हा। अेक-दूजै नैं जद बै बुलावता तो... ''ओ म्हारी करिश्मा कपूर...!''

''बोलो सा, म्हारा सलमान खां जी...।''

भींतां रै ई कान हुवै। होळै-होळै गांव में छोरा-छोरियां नैं ठाह पड़गी तो बै उणां नैं छेड़ण लागग्या :

''ओ बा'सा, थे सलमान खां कीकर हुया?''

''कुण बा'सा? थे किणनैं कैवो? कांई म्हैं थांनै बा'सा लागूं? अर थांनै कांई मतलब है म्हारै नांव सूं... ?''

''क्यूं कै थांरो नांव तो...।''

''भागो अठै सूं। बा'सा हुवोला थे अर थांरो बाप... आया बापड़ा म्हनैं समझावण नैं... गो आउट...।''

छोरला जे नीं मानता तो बा'सा बांनै मारण नै दौड़ता। औ ईज हाल डोकरी रो हो।

''ओ मा'सा?''

''अे सीढीकाडियां! थांनै म्हैं कांई मा'सा दिखूं?''

''थांनै मा'सा नीं तो कांई करिश्मा कपूर कैवां!''

''मा'सा व्हैला थांरा बडेरा... म्हारो तो नांव ई करक्सा कपूर है।''

करक्सा कपूर... करक्सा कपूर करता-करता टींगर हंसता अर बोलता—

90, महावीरपुरम, चौपासणी फनवर्ल्ड रै लारै, जोधपुर (राज.) 342008 मो. 9950538579

''करक्सा रो मतलब तो लड़ाईखोर ई हुवै, थे तो साच्याणी रा करक्सा ई लागो, पण कपूर कियां हुयो, औ तो सरनेम है। थे तो...।''

''तो म्हारो ई सरनेम है। अठै सूं जावो हो कै बुलावूं बांनै... ?''

''भागो-भागो रे... हमार सलमान खां जी आय जावैला।''

बगत यूं ई निकळण लागो। अेकर भावाजोग सूं दोन्यूं रा दांत दुखण लागग्या। निरा दिनां तांई तो बै अेक-दूजै नैं ई नीं कैयो। पछै डोकरै सूं तो सैन नीं हुयो, तो बो बोल्यो, ''ओ म्हारा करिश्मा कपूर जी...!''

''बोलो सा म्हारा सलमान जी ?''

''म्हारा तो दांत घणा कुळै, कितरा ई दिन हुयग्या।''

''अरे म्हारा ई घणा कुळै, पण म्हैं तो मूंडो सींव'र बैठी हूं। यूं कित्ताक दिन चालैला। स्हैर चाल'र डाक्टर नैं देखावां ?''

''हां, औ ईज ठीक रैवैला, पण थूं किणनैं ईज कैयीजै मतना।''

डाक्टर नैं देखायो तो बो डोकरी नैं कैयो कै थे तो दवायां सूं कीं बगत धिकाय सको, पण छेवट तो दांत निकाळणा ई पड़ैला। अर डोकरै नैं कैयो कै थां तो अबार ई निकळवाय ल्यो तो ठीक रैवैला। पण बाई बत्तीस तो बीरो छत्तीस लखणो। बै दोन्यूं दवायां लेय'र घरां आयग्या। दवायां ई लेयली, पण दांत तो सावळ हुवण रो नांव ई नीं लेवै। बै दोन्यूं आप-आपरा दांतां नैं समझावण लाग्या :

''अे सीढीकाडियां! थां आखी उमर म्हारा मूंडा मांय काढ दीवी, अबै यूं क्यूं मूंडो मोड़ो हो ? थे तो म्हारा जबड़ा जाया बीर हो, जबड़ां रै मांय ई बिराज्या रैवो। थे तो म्हारा थोबड़ा रै मांय बैठा ई फूठरा लागो... थांरी कदर हुवै। बारै पड़्यां पछै थांनै कुण पूछैला। आपरै सिधारियां सूं म्हारो चौगटो ई चिप जावैला, जाणै नीचोयोड़ो नींबू हुवै। सगळो फुठरापो ई धूड़ में मिल जावैला...। थे तो देखो ई हो कै माथै बाल तो माथै में ई कांई, आखी जिनगाणी में ई धूड़ न्हाख दी, थे तो यूं मती करो! पछै थे तो म्हारा बत्तीस जोध-जवान हो, सरकार रै दांई परिवार नियोजन मती करो कै घटतां-घटतां आपां दोय अर आपां रा दोय ई रैय जावां।

''इत्ता बरसां तांई तो थे ग्यानी-ध्यानी जियां आप-आपरै ठायै बैठ्या रैया... नीं हिल्या, नीं डुल्या... नीं धूज्या... नीं कदैई कीं कैयो। थांरी तपस्या नैं तोड़ण खातर कीं दांत-दाढ कुबद करै दीसै। खुद तो नाचो-कूदो जिका ठीक है, पण थे तो आखै डील नैं ई नचाय देवो... थे तो रात-बिरात ई नीं देखो। म्हनैं तो यूं लागै कै थे भायां ज्यूं न्यारा हुवण री तेवड़ली है। पण भेळापै मांय जिको आणंद है, बो न्यारा हुयां नीं मिलैला। मिलजुल नै चबावो तो चबावण रो काम ई सोरो करोला... अेकला हुयां चबाईजैला नीं, ध्यान राखजो। पछै भलांई माथा फोड़जो!

''थे तो जाणो ईज हो कै दांत अर आंत रो मां-जाया ज्यूं हेत हुवै। थे कुरळावो तो आंत ई कुरळावै, क्यूं कै थांरै बिना म्हे जीम नीं सकां अर नीं जीमां तो आंतां तो बापड़ी कुरळावैला ई। करां तो कांई करां! जे डाक्टर थांनै बारै काढ देवैला तो अै आंतां तो विधवा हुय जावैला।

''म्हे तो सोच्यो हो कै पळपळावता दांत देखावण सारू टीवी माथै आवांला... नांव अर पईसा दोन्यूं कमावांला... अरे गैलां! म्हारै सागै थांरो ई नांवको हुवतो... पण अबै जे थे यूं किनारो कर लेवोला तो म्हारा सुपना रो कांई हुवैला?

''म्हे थांनै हाथ जोड़ां... थांरै पगां पड़ां... थांनै घणा सो'रा राखांला... कदैई करड़ी चीजां नीं खवावांला... थांनै ऊनो-ऊनो सीरो जीमाय'र सूता राखांला। म्हारै मूंडै रा लाडेसरां! थे मूंडै मांय ई बिराज्या रैवो। थां जैड़ा हो वैड़ा ई म्हांनै फूठरा लागो। थे भलांई लूला-लंगड़ा... उबड़-खाबड़ कै टेढा-मेढा हुय जावो, पण म्हारै मूंडै मांय बसिया रैवो... थे ईज तो म्हारा भगवान हो।''

इण तरियां सूं बै दांतां नैं घणाई समझाया, पण बै तो चीकणा झाड़ा हुयग्या। करिश्मा जी तो हिम्मत राख'र बोला रैया। सोच्यो, घणा कूका कर्‌यां तो दांतां नैं कोयलड़ी गावणी पड़ैला।

अबै करै तो कांई करै! नीं तो दांतां... नीं आंतां... नीं रातां चैन। सलमानजी, करिश्मा नें लेय'र पाछा डाक्टर कनै पूग्या... उणां रै पगां पड़्या कै ज्यूं व्है ज्यूं इण दरद नैं मिटावो। डाक्टर उणां रै सुंई लगाय'र बैठाया। थोड़ी ताळ सूं मांय बुलाया।

कुरसी माथै बैठाय'र ओजारां सूं डोकरै रो बाको फाड़्यो। बो कीं कैवै तो कीकर कैवै... मन रा सुपना बाकै मांय सूं बारै निसर रैया हा... उणां रो दाणो-पाणी इत्तो ईज हो... आंख्यां डबडबीजगी। अैड़ो कोई माई रो लाल नीं हो जको उणां रै दांतां नैं बचाय सकै। बा करिश्मा ई बारै बैठी ही।

डाक्टर नैं मन मांय घणी ई गाळ्यां काढी, पण उणसूं किसा गूमड़ा हुवणा हा... बो तो आपरो काम पूरो कर दियो... सलमानजी बोखा हुयग्या...। सोच्यो, अबै कैड़ो सलमान? बारै आय'र घरवाळी नैं देखी—आ तो हाल तांई करिश्मा लागै... पण म्हैं...?

पोपला गाल मांय धंसग्या... सावळ बोलीजै कोनी...। सोच्यो, मूंडै माथै तो अबै अलीगढ रो ताळो लगावणो ई चोखो है... बारै तो भूल'र ई नीं जावणो... नीं तो छोरला...

टाबर तो टाबर ई हुवै, पण करक्सा कपूर नैं देखो—म्हनैं देख'र कैड़ी मुळकै है अर पछै घरै आवै जिणनैं ई आ दंतकथा कित्ता लावा लेय-लेय'र सुणावै... पण डाक्टर रै घरै देर है अंधेर नीं... जद इणरी बत्तीसी न्यारी हुवैला... इणनैं ई ठाह पड़ जावैला... जणै म्हैं ई हंस-हंस'र लावा लेवूंला... पण कीकर?

अरे म्हारा मूंडै रा सुहाग... थे म्हांनै छोड'र क्यूं गया ओ? अबै कीकर जीवूंला...? हे राम...!

◆◆

विमला नागला

मां रो कागद बेटी रै नांव

केकड़ी
9 मई, 2021

म्हारी लाडली,

घणी आसीस।

म्हे सगळा अठै राजी-खुसी हां अर ठाकुरजी म्हाराज री किरपा सूं थूं भी राजी-खुसी होवैला। आज रो दिन तो घणो खास है अर थूं म्हासूं घणी दूरां सात समंद रै पार है, थारै सूं मिलण सारू म्हारो हिवड़ो घणो उगमाय रैयो है। घड़ी-घड़ी लागै, जाणै पांखड़ा होवता तो उड'र आय जावती। कदैई लागै, म्हैं भी कुरजां सागै सात समंद पुगाय देवूं म्हारी लाड़कड़ी रै नांव लिख्योड़ो हेत रो परवानो।

हां रे बेटा, रात री बारह बजतां ई थारै सूं वीडियो-कॉलिंग होयगी। थनैं जलमदिन री मोकळी बधाइयां देय दी, जी-भर बातां करली, पण फेरूं भी म्हारो मन कोनी भरीज्यो। थारी ओळुंवां रा चितराम नैणां मांय जाणै फिल्म री रील दांई चालण लागग्या। अै कणैई म्हारी आंख्यां मांय हरख रो उजास भरै तो कदैई थारी चितार सूं गंगा-जमना ज्यूं बैवण लागै। इणी भांत रा जंजाळ मांय म्हारो मनड़ो थनैं कागज लिखबा सारू उकळबा लाग्यो।

हां म्हारी लाड़कडी! म्हनैं ठाह है, अेक दाण तो थूं कागद नैं देख'र जोर सूं हांसती थकी झट सूं कैय देसी कै मां! थे भी इण इंटरनेट रै जमानै मांय अै कुणसा जमाना ज्यूं लिखण लागग्या। पण बेटा, अेकर म्हनैं थारी भायली बतायो कै थारै पापा रो लिख्योड़ो पैलपोत रो कागद जद थारै होस्टल मांय पूग्यो तो थूं हरखबावळी-सी उणनैं लेय'र सगळी भायल्यां नैं बतावती फिरी ही। अर उण पाती नैं पढती बेळा पापा री चितार मांयय थूं रोवण लागगी ही। थारी सहेली बतायो कै थूं बोली, इण कागद नैं पढती बेळा यूं लागै जाणै म्हारा पापा ईज म्हारै कनै ऊभा बोलै है, अर पछै थूं उण कागद नैं आपरै सिरांथियै मेल'र सूयगी ही अर नींद उडी जणै घणी दाण उणनैं बांचती रैयी आ आपरा आंसू पूंछती रैयी।

लाडो! म्हैं भी थनैं कागद मांडबा तो बैठगी, पण म्हनैं खुद नैं ई ठाह कोनी कै म्हारै मनड़ै मांय प्रीत रो उफणतो समंद नीं जाणै कांई-कांई मंडासी।

15, दिव्याशालय, सुंदर कॉलोनी, राजपुरा रोड, केकड़ी, जिला-अजमेर (राज.) 305404 मो. 9214960689

चीकूड़ी! थारै जलम सूं लेय'र आंगळ्यां पकड़'र धीमै-धीमै भरता पगल्यां सूं थूं कद चीलगाडी मांय सात समंद पार उडगी, म्हनैं जाणै समै रो लखाव ई नीं व्हियो। पण टाबरां सूं बिछड़्यां पाछै रो टेम तो जाणै बैरी व्है जावै, जो काटियो ई कोनी कटै। उणरी चितार घणी पीड़ देवै। देख नीं, हमेस कम बोलवा वाळा थारा पापा आज तो थार अेक्सप्रेस ज्यूं दिनूगै सूं थारी बातां मांय ई नीं जाणै कितरी बातां कर'र घड़ी-घड़ी भावां मांय बैवण लागै है। बियां भी बेटियां बाप री जान होवै ईज है रे बेटा!

बेटूड़ी, थारै नटखट बाळपणै रै पाछै भी थूं कदैई ओळबा रै गेलै तो गई कोनी, पण मोट्यारपणै री डेळ चढती बेळा थोड़ी रीसाळू जरूर होयगी है। पण म्हैं जाणै ही कै इण औस्था मांय टाबरां री प्रकृति माथै बदळाव आवै ईज है। जणै ई तो किशोर अवस्था नैं 'तूफानी काळ' कैवै। पण टाबरां रै सागै मायतां री भी इण टेम घणी जिम्मेवारी बध जावै जावै है। म्हैं आ जाणै ही अर इण सारू म्हैं थनैं ऊंच-नीच रो भेद समझावती थकी चोखी पोथ्यां भणबा सारू हमेस ई प्रेरित करै ही, जिणसूं कै थूं पोथ्यां भणती-भणती कद नूंवी रचनावां मांडण लागी, म्हनैं तो ठाह ई कोनी पड़ी। थारी पैली रचना छपी जणै म्हैं भी हरखबावळी होयगी ही अर बो अखबार सगळां नैं मुळक-मुळक'र बतावै ही। थारै लगोलग पढण री हूंस अर पोथ्यां सूं प्रीत रै कारणै ईज तो थनैं इतरो लूंठो प्रोजेक्ट मिल्यो। थारी योग्यतावां रै कारण ईज तो म्हारा पगल्या धरती माथै ई कोनी पड़ै है रे बेटा!

अरे हां, बियां तो थूं हमेस ई स्कूल री सगळी गतिविधियां मांय ई पैलो नंबर लावै ही, दूजां नैं थारी उपलब्धियां बतळावती म्हारी जीभ कदैई थाकती कोनी ही, पण इण बात रो तो घणो ध्यान राखै ही कै थनैं इण बातां सूं अणूतो गरब नीं होय जावै। थूं हमेस म्हारै सूं बेराजी भी रैवै ही कै मां, थे म्हारी कदैई बडाई कोनी करो...। पण म्हारी लाडकंवर, म्हारी मां हमेस कैवती ही कै सुपात्तर बीनणी कर बेटी बा ईज होवै जिणरा घर मांय करयोड़ा काम नैं पैलां सरावै। दूजा जणां रै मूंडै सूं आपणा घरां री बडाई ही हमेस आपां नैं गरब देवै।

म्हारी लाडू! थूं हमेस ऊंची पढाई सारू म्हारै सूं घणी दाण अळगी रैयी अर म्हनैं कदैई कैबा-सुणबा रो मौको कोनी दियो, पण अबकाळै तो थूं मायड़भोम सूं भी अळगी होयगी है नीं, जिणसूं म्हनैं थोड़ी चिंता है। बठै देस परायो, भोम पराई, मिनख पराया होवण सूं कदै-कदैई म्हारै हिवड़ै मांय अणचींती डरपणी भी बापर जावै। अरे... अरे सुण, म्हैं जाणूं कै थूं तो घणी स्याणी-समझणी है, पण दुनिया मांय तो भांत-भांत रा जीव हुवै है नीं। जियां महासागर रै मांय हीरा-जवाहारात भी हुवै अर जैरीला जीव-जिनावर भी। जीवण मांय धोळी फट पूनम री चांदणी रात हुवण रै सागै ई अमावस री स्याह काळी रात भी तो आवै है नीं बेटा! थूं नामेक सबदां मांय म्हारी बात समझगी नीं। चोखी संगत मांय रैईजै अर मोबाइल माथै थूं हावी रैईजै, पण कदैई मोबाइल नैं थारै माथै हावी मत होबा दीजै। मोबाइल रा गेम तो अैड़ी भूत-प्रेम हुवै कै पछै पूछ ई मत बेटा, अै तो लाग्योड़ा ई खोटा।

अरे हां लाडूड़ी... म्हैं थनैं कैवणो ई भूलगी कै आज थारै जलमदिन माथै हरेक बरस री भांत रूंख लगायो। थनैं ठाह है अबकाळै साल कुणसो रूंख? हारसिंगार रो। ठाकुरजी सूं बिणती

करूं कै इण रूंख रा केसर जैड़ा रूपाळा फूलां री सौरम दांई म्हारी लाडली री भी सफळता री डम्पर चारूं दिसावां मांय फूटै।

बेटा! म्हैं थनैं अबै जकी बात कैवणी चावूं बा घणी चिंता री अर महताऊ होवण सूं ध्यान देवण जोग है। थूं पर्यावरण विग्यान रै मांय लूंठा प्रोजेक्ट सारू परदेस गई है तो म्हारी घणी इच्छा है कै थारै प्रोजेक्ट आपणी मायड़भोम नैं प्रदूसण सूं किण भांत मुगती मिल सकै, इण पर भी देसहित मांय घणो महताऊ काम सीखजै। आपणी मायड़भोम घणी निरवाळी है। सुरग सूं भी सुंदर अर मोवणी है। अठै रा लिखारा कविसरां, साहित्यकारां परकत रा घणा सोवणा चितराम मांडता थका सांतरो बरणाव करै। अठै री धरा घणी रंगीन है, अठै सात सुर मांय नदियां कळ-कळ गीत गावै, बादळियां री गड़गड़ाट, चिड़ियां रा चुरकला री चूंचाट, भंवरा-तिलतियां री गुणगुणाट, बिरखा री बूंदां री छमछमाट, चांद-तारां री बरात, रूंखड़ां रा पाना या मीठा गीत, पहाड़ां री बात अर इठलाती तितलियां, इतरती धरती री बासंती बहार है। अठै परकत कदै परवाई मां रो नरम हाथ पकड़ै तो कदैई उणनैं सियाळै रै तावड़ै मांय नरम-गरम अैसास करावै। डूंगर साधु बाबै जैड़ा मून साधै तो नदी आपरै पीव समंद सूं मिलणै सारू उंतावळी निगै आवै। कितरा फूठरा चितराम है रे बेटा। अठै भांत-भांत री रितुवां, तीज-तिंवार होवै, सगळां रो आप-आपरो महत्त्व है, नीतर दूजा देसां मांय तो कठै तो कोरी गरमी पड़ै अर कठै कोरो सी... पण आपणै माथै ठाकुरजी री घणी मैरबानी है, जे सगळी रितुवां रो मजो आवै।

पण बेटा... अठै रा मिनख है नीं जका आपरै लोभ सूं इण रूपाळी भोम मांय सुवारथ रो ज्हैर घोळै। नदियां नैं मैली मट कर दी, प्रदूसण री काळी बादळी अठै रा चांद-सूरज री आभा नैं ईज मंदरी कर दी। पंखेरुआं रा आलणा उजाड़'र आपरै सारू म्हैल-माळिया चुण दिया, रूंखड़ां नैं काट'र जंगळ खतम कर दिया, जिणसूं घणकरा जीव-जिनावर तो अबै कोरा पोथ्यां रा पानां मांय ईज रैयग्या। आवण वाळी पीढियां इणनैं कोरा इंटरनेट माथै ईज सर्च करसी।

बेटू! प्रदूसण रा दुष्परिणाम नैं तो चोखी तरियां जाणै है थूं, बस म्हारो औ कैवणो है कै थूं धरा सारू अैड़ो कोई काम करजै जिणसूं सही अरथां मांय पतझड़ रै पाछै री बसंत बहार सूं धरती मां री हरी-भरी चूनरी माथै पीळा कसीदा री बूंटी चमकै, जिणसूं आभै मांय हरख रो इंदरधनख तण जावै। आपणी आवण वाळी पीढियां अर उणरी संतानां पाछा रूपाळा बादळ, पेड़-पौधा, लूंठा रूंखड़ा, झरणा, नदियां, समंद, चांद, तारा, सूरज, बादळ, रंग-बिरंगा पंखेरू, चिड़ी चुरकला, मोर, कोयल देख-देख'र हरख सकै। नीतर तो मिनख री अंतहीण लालसावां रै कारणै जो परकत उणनैं भगवान बणावै उणनैं करमफूटो बणतां जेज कोनी लागैला। कोरोना महामारी नैं देखै नीं, कितरी बैरण है आपणी। पण देख, मिनख त्राहि-त्राहि करै, पण धरती माता रै मूंडै पर जरूर हरख बापरै है। बा भी मां है, जिणसूं आपरी संतानां रो दुख है उणनैं पण... रिस मांय तो मां टाबरां नैं सीख देवण सारू कोप करै ईज है। मिनखां रै घर मांय कैद होवण सूं प्रदूसण काम होयग्यो, घणी ठौर रा रैवासियां नैं तो अबै जाय'र आभै रा चांद-तारा निजर आया, पण मिनखां नैं मरता-बिलखता देख'र हिवड़ो घणो घबरावै। आक्सीजन कोनी मिलबा सूं झट देणी कढता प्राणां नैं देख'र भी लोगां रै मांय रूंख लगावण री चेतना, प्रदूसण सूं धरा नैं मुगती री बात समझ कोनी आवै तो पछै दण रा मिनख-जमारा नैं धिक्कार है।

लाडली! सदैव समै आपरा पांखड़ा पसार्‌योड़ो उडै है। थनैं भी देखजै, बठै टेम री ठाह ई कोनी पड़ैली। इण सारू थूं घणी मैणत कर'र आपरो काम पूरो करजै। अरे हां... थारी लाडकड़ी थारी भायल्यां चिड़कलियां जद रोजीना दाणा-पाणी सारू आवै है नीं, उण दाण थारी घणी चितार आवै। बेटियां अर चिड़कलियां दोनूं अेकसी ई लागै है नीं घर मांय फुदकती-सी।

लाडूड़ी, खूब फळो-फूलो, म्हारी उम्मीदां पर सोळा आना खरी उतरजै अर मायड़भोम सारू आपरो पूरो फरज निभा'र इण रो करज उतारजै। ठाकुरजी सूं भी आ ईज बिणती है कै कोरोना री मांदगी सूं मुगती देबा रै सागै ई मिनखजात मांय पर्यावरण री रिच्छा सारू भी चेतना जगाईज्यो, जिणसूं कै आवण वाळी पीढियां भी सोरी सांस लेवै अर आपरी सोवणी-मोवणी परकत पर गरब-गुमेज कर सकै अर पीढी-दर-पीढी इणनैं धरोहर रै रूप मांय संभळा सकै।

थारो पूरो ध्यान राखजै—खास तौर सूं खाबा-पीबा रो। बाळपणै सूं ई थारै खाबा-पीबा रा घणा नखरा है। थूं जाणै है नीं—पैलो सुख नीरोगी काया।

चाल, अबै अेक बार बोल दै... ''म्हारी लाडूड़ी।''

''म्हारी मां...'' म्हनैं यूं अैसास होय रैयो है जाणै थूं हमेस री जियां म्हारै काळजै सूं लाग'र पड्डत्तर देवै है अर म्हारो रूं-रूं ममता मांय हिलोरा लेवै है। अबै घणो कोनी लिख सकूं लाडू। पापा कानी सूं घणो-घणो लाड। थारो बीरो, दादीसा, दादोसा भी थनैं घणी चितारै।

घणी-घणी आसीस, म्हारी लाडली।

—थारी जामण

◆◆

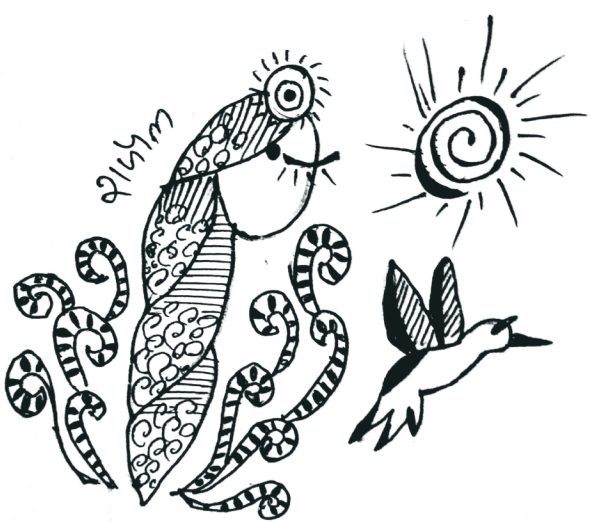

अरुणा अभय शर्मा

टेम चोखो है

मुख्य पात्र

1. मां 2. नारायण (बेटो) 3. रमिया (नारायण री लुगाई)

दूजा पात्र

1. बाबोसा 2. पाड़ोसण काकी 3. नारायण रा दो भाई

4. नारायण रो दोस्त, गांव रा लोग-लुगाई

(नारायण अेक सीधो-सादो छोरो है, जिको पढणो चावै, ढोर जियां जूण पूरी नीं करणो चावै। पण उण रा मां-बाबोसा रैया अणपढ, लकीर रा फकीर। इण खातर उणनैं पढाई छोड'र खेत अर पसु संभाळणा पड़्या। आगै जावतां नारायण आपरी लुगाई अर दो बेटियां री जूण कीकर सुधारी, आ ईज कहाणी कैवण रो प्रयास इण नाटक में करीज्यो है।)

(नारायण रो जीव हरमेस किताबां में ई रैवै। कामकाज सूं जी नीं चुरावै, पण बाकी बगत में अेक ईज काम करै, भणबा रो। अचाणचक बाबोसा नैं हवा बैयगी। अेक हाथ अर अेक पग में लकवो मारग्यो। इब भर-भर मूंडा अमल लेवैला तो अेक दिन तो भुगतणो ईज हो। नारायण मां नैं घणी समझायी कै बा बीं नैं स्हैर जावण देवै, पढाई रै साथै-साथै काम भी करूंला अर बाबोसा रै इलाज रो इंतजाम भी हो जावैला, पण अणपढ मां गांव रै बारै निकळण नै त्यार नीं ही।)

मां : (रीस में भर्‌योड़ी) सुण नारायणिया, अबै बारह किताब तो थूं भणली, इब स्हैर जावण री जिद करीतो इण घर में थारी कोई जग्यां नीं है। थारा बाबोसा मांदा पड़्या है, बांरी सेवा करण रो अर इण घर रो चूल्हो जगतो राखण रो थारो ई फरज है। तूं बिचार करलै, तनैं कांई करणो है। (बड़बड़ाट करती मां बाबोसा कनै जाय'र बैठगी)

रिलायंस पेट्रोल पंप रै लारै, विनायक विहार, देवासियां री ढाणी, मकान नं. 67, खसरा नं. 147, सारथी सरोवर कॉलोनी रै कनै, पाल गांव, जोधपुर (राज.) मो. 8875015952

(नारायण घर रो मोभी बेटो, करै तो कांई करै। विचारां में पड़ग्यो। छोटा दोनूं भाई अबार तो सातवीं अर पांचवीं में भणै है, कीकर सगळा परिवार नैं छोड'र स्हैर जावूं? आखिर नारायण बाबोसा रै साथै-साथै सगळा परिवार री सेवा में लागग्यो।)

बाबोसा : (तीन बरस सूं मांचा में ई है) नारायण री मां, अरे सुण तो! इब पोतां रो मूंडो देखलूं तो सांसां सोरी निकळ जावै।

(इब मां नारायण रै ब्यांव री जुगत में लागगी। नैड़ा ई गांव में बात पक्की होयगी। चौमासो निकळण री बाट नीं जोई, भर उन्हाळै ब्यांव कर दियो। रमिया बींदणी नैं सात मास पूरा होया ई हा कै बाबोसा सुरग सिधारग्या। ढाई महीनां पछै रमिया रै पीहर सूं छोरी होवण रो समाचार आयो।)

मां : (रमिया रै घरै आवतां ई) देख बींदणी, पैली बगत तो इण छोरी नैं थारा बाबोसा री आसीस मान'र राखूं हूं, पण इब म्हनैं बेगै सूं बेगो पोतै रो मूंडो देखणो है। आखिर नारायण रो नांव तो बेटो ई आगै बधावैला।

(सवार-सिंझ्या आ ईज सुणतां-सुणतां तीन बरस होयग्या। छोटोड़ै भाई नैं ई मां इण सियाळै परणाय दियो। नारायण री लुगाई पीहर जावै है, भाई लेवण नै आयो है।)

मां : सुणो छोटा ब्याईजी! ब्याणजी (रमिया री मां) नैं म्हारो संदेसो पूगतो कर दीजो कै जे अबकै छोरी होई तो थांरी धीय नैं अठै पाछी मत मेलजो।

(आज नारायण घरै आयो मां चबूतरा माथै बैठी उणरी ई बाट जोवती मिली)

मां : थारै सासरै सूं फोन आयो हो। थारी लुगाई अबकाळै फेरूं छोरी जामी है। म्हैं तो पैलां ई संदेसो भेज दियो हो अर आ बात थूं जाणै ई है। तो अबै ना-नुकर करयां सूं कोई फायदो नीं है। काकी (पाड़ोसण) बात पक्कीर कराय दी है। सांमलै नैं थारे पैलै ब्यांव सूं कोई अेतराज नीं है। बै जाणै है कै आपां घर-घराणै रा मिनख हा। सवारै त्यार रैईजै।

नारायण : मां, थूं यूं कीकर कर सकै है। म्हारै छोरी होई है तो इणमें रमिया रो तो कोई कसूर नीं है। छोरा-छोरी रै जलम रै वास्तै बाप ई जिम्मेवार होवै। म्हैं जाणूं हूं। तूं भलांई डाक्टर साब नैं जाय'र पूछलै।

मां : वा-वा, चुप हो जा। म्हनैं ग्यान मती दै। चार किताब भणली तो तूं मां नैं सिखावण चाल्यो है। तूं कित्ता ई हाथ-पग पटकलै। आवती सुधनम रो थारो ब्यांव पक्को है, गीता रै सागै। इब रमिया इण घर री थळकण पाछी नीं चढ सकै। तूं बीं नैं भूल ई जा इब।

(मां त्यारियां में लागगी ब्यांव री। बठीनै नारायण भी मन में धारली ही, कै ना दूजो ब्यांव करूंला अर ना रमिया रो साथ छोडूंला। सुधनम रै दिन ई बीं री छोरी इक्कीस दिनां री होवण वाळी ही।)

(आज सुधनम है, चार दिनां सूं मां सगळी रीतां-भांतां में लाग्योड़ी ही। आज तो मां रै पगां नीचली जमीं खिसकण आळी है।)

मां : अरे नारायण! कठै है, मोड़ो हो रैयो है। बेगो आव! सुण रे भरतिया (नारायण रो छोटो भाई), भाई कठै है?

भरत : म्हैं तो सवारै सूं ई नीं देख्या भाईसा नैं। कांई ठाह कठै है बै?

(सुण'र मां रा हाथ-पग ठंडा पड़ण लागग्या। दोनूं भायां नैं मेल'र पूरो गांव जोवाय लियो। नारायण रो कठैई पतो नीं लाग्यो। जांन चढण री टेम टळगी ही। सगळा गांव में औ ईज हाको हो कै नारायण घर छोड'र भाजग्यो। सिंझ्या पड़तां नारायण घर रै मांय बड़ग्यो अर लुगाई-टाबरां नैं पितरां रै पगै पड़ा'र झटपट बारै आयग्यो। रमिया सासूजी रै चरणां में इण आस सूं झुक्योड़ी ही कै मां रीसणो छोड'र रोक लेवैला बांनै, पण मां रीसां बळती साम्हीं ई नीं जोयो।)

नारायण : अरे रमिया, कठै रैयगी तूं? टैम्पू आळो खोटी हो रैयो है। बेगी आव। आज टेम चोखो है—म्हारा लुगाई-टाबरां री नूंवी जूण सरू करण रो।

(पेटी, थैला सब टैम्पू में मेल'र नारायण जिकी बात सगळा गांवआळां रै साम्हीं कैया, उणनैं सुणतां ई तो मिनख अर लुगायां सगळां रा बाका फाट्योड़ा ई रैयग्या।)

नारायण : सुण भई नेमाराम (पाड़ोसी अर नारायण रो बाळपण रो बेली), म्हैं तो अस्पताळ सूं अपरेसन करा'र आयो हूं। छोटो-सो चीरो जिंदगी भर रो आराम। ऊपर सूं घरआळी नैं कोई तकलीफ नीं देखणी पड़ै। परिवार, धणी अर टाबरां री सेवा-चवाकरी में घर री लुगायां जूण पूरी कर दै अर मिनख कांई करै? सरकार, डाक्टर ससगळा बतावै, रोज टीवी में देखो, पण हिम्मत नीं करो थे कोई। रैयी बात म्हारा नांव लेवाळ री, तो म्हारी छोरियां नैं भणा-लिखा'र हुंसियार करूंला। आपरै नांव सूं जाणीजैला म्हारी छोरियां। म्हारी रमिया घणी हुंसियार है, पण बीं रो सगळो टेम घर अर खेत में ई पूरो व्है जावै। इब बीं नैं आगै री पढाई पूरी करावूंला। चाल रमिया, बैठ गाडी में।

◆◆

पूर्णिमा मित्रा

लूंठो जलमदिन

पात्र

1. नदीम 2. रसीदुल 3. मोनिका 4. जैतून 5. मंदाकिनी
6. बल्ली 7. टल्ली

(पड़दो खुलतां ई दो दस-इग्यारै साल रा टाबर मंच माथै उतावळा-सा आवता निगै आवै।)

सुनील : अरे बाप रे! कित्ती गरमी पड़ रैयी है। तिस्स सूं म्हारो जीव आकळ-बाकळ होय रैयो है। (लड़खड़ावतो-सो हेठो बैठ जावै।)

नदीम : (सुनील रो बूकियो झाल'र) अरे भई, इण तावड़ै मांय क्यूं बैठग्यो? कन्नै आळै नीमड़ै रो रूंख है। उणरी छियां मांय छिणेक सुस्ता लै।

रसीदुल : (उतावळो-सो उणरै कन्नै जाय'र) सुनील, लै आ संतरै री फांक चूसलै। (आपरी गोजी सूं संतरै री फांक उणनैं देय'र) मोनिका! हथाई बंद कर अर बेगी-सी अठै आव। सुनील अर म्हनैं पाणी री बोतल झिला।

नदीम : (रुमाल सूं आपरै लिलाड़ रो पसेवो पूंछ'र) अबकाळै तो जबरदस्त गरमी पड़ रैयी है। लागै है, आभै सूं खीरा बरस रैया है। काल तो म्हारै पापा नैं ऑफिस सूं आवती बगत लू लागगी।

रसीदुल : (चिंता भरी आवाज मांय) घणकरा स्कूल अर दफ्तर अैड़ी जग्यां थिर है, जठै सड़क रै असवाड़ै-पसवाड़ै रूंखां री छिंयां ई कोनी। जठै देखो, बठै लीला रूंखां री जग्यां ठूंठ ई ठूंठ निगै आवै।

मोनिका : अबै लतीफ चाचा री तबीयत कियां है? चाचीजी उणां नैं डाक्टर कनै लेयग्या हुवैला।

नदीम : अम्मी जान बांनै फौरन डाक्टर कनै लेयगी। अबै तो बै सावळसर है।

करणी नगर, नागणेचीजी रोड, बीकानेर 334003 मो. 8002038941

 ISSN : 2320-0995

मोनिका : (मंच रै प्रवेसद्वार कानी मूंडो कर'र) जैतुनिया, बेगी-सी आव। (आपरै कनली पाणी री बोतल सुनील नैं झिला'र) पैली चोखी तरियां सूं मूंडै मांयपाणी रा छांटा न्हाख अर फेरूं घूंट-घूंट पाणी पी।

जैतून : (मटकती सी मंच माथै आय'र) अरे भाईजान देख्यो, बै दो जणा नीमड़ै रै रूंख नैं बाढ रैया है।

रसीदुल : (नीमड़ै रो रूंख बाढता लोगां कानी पांवडो बधावतो) अरे, अै तो बल्ली-टल्ली है। बल्ली-टल्ली आजकाल थे स्कूल क्यूं कोनी आवो? अर ईं बापड़ै नीमड़ै नैं क्यूं बाढ रैया हो?

टल्ली : (आपरो गॉगल्स गोजी मांय घाल'र) म्हारी मरजी। म्हारै निजू मामलै मांय टांग अड़ावण री कोई जरूत कोनी।

नदीमा : (नरमाई सूं) पण थे औ रूंख क्यूं काट रैया हो? औ बापड़ो तो आपां नैं छिंयां अर निंबोळिया देवै।

टल्ली : (इतरावतो) क्यूं, औ रूंख कांई थूं लगायो है? फोकट मांय म्हारो भेजो मत खराब कर। म्हैं तो होळिका दहन खातर चिन्हीसीक लकड़्यां काट रैया हां।

सुनील : औ तो अगस्त रो महीनो है। होळी तो फागण में मनाईजै।

बल्ली : म्हारै गांव तो तीज अर दीयाळी री तरियां होळी भी दो बार मनाईजै।

जैतून : (हंस'र) कूड़ो कठैई रो! म्हांनै गैलसफा समझै है।

मोनिका : (समझाइस देंवती) कोई थारै हाथ-पगां नैं कुल्हाड़ी सूं जख्मी करै तो थांनै किसीक लागसी?

बल्ली : (आपरी जीवणी कनपटी मांय आंगळी घुमा'र) मेंटल कठैई री। रूंख तो बेजान हुवै है। म्हैं तो इंसान हूं, इंसान। बेजान चीजबस्त नैं बाढणै सूं पाप कोनी लागै।

नदीम : थूं गलत कैवै। रूंख भी आवणी तरै सजीव हुवै है।

टल्ली : फेरूं तो इण रा भी नाक-कान अर हाथ-पग होवता होवैला। पण म्हांनै क्यूं कोनी दीसै! स्यात थ्री डी चस्मै सूं दीसता होसी।

मोनिका : जियां आपां नाक सूं ऑक्सीजन ड्राई ऑक्साइड लेवां हां अर कार्बन ऑक्साइड बारै काढां हां, बियां ई अै रूंख ज्हैरीली कार्बन ड्राई ऑक्साइड लेय'र आक्सीजन बारै काढै।

टल्ली : पण कठै सूं?

सुनील : पानड़ां रै लारै नेन्हा-नेन्हा रोमछिद्रां सूं।

(इत्तै मांय गुलाबी प्लाजो सूट पैरयोड़ी अेक फूठरी सी नार, हाथ मांय गमलो लेय'र हाजर हुवै।)

मंदाकिनी : (मधरी आवाज मांय) कांई बात है टाबरां? थे इण तावड़ै मांय ऊभा कांई कर रैया हो?

जैतून-मोनि. : मंदाकिनी दीदी, अै बल्ली अर टल्ली है नीं, अै दोन्यूं इण नीमड़ै नैं बाढ रैया हा। म्हे लोग आंनै रोक रैया हा।

मंदाकिनी : बल्ली-टल्ली! रूंखां नैं बाढणो अधरम हुवै है। अै आपां री तरियां संवेदनशील अर सरजीव हुवै है। थांनै ठाह है, आ बात कुणसै भारतीय वैग्यानिक सै सूं पैली प्रमाणित करी ही?

सुनील : (ऊभा होय'र) सर जगदीशचंद्र बोस। इण सूं पैली बै बेतार रो आविष्कार कर्‌यो हो।

मंदाकिनी : शाबास! अच्छ्या थांनै ठाह है, अंधाधुंध रूंखां री कटाई सूं आपां नैं कांई-कांई नुकसाण उठावणो पड़ै?

मोनिका : (गमलै मांय लाग्योड़ै पौधै नैं लाड सूं लावती) इणसूं ग्लोबल वार्मिंग बधै, जिणसूं ग्लेसियर गळ'र प्राकृतिक आपदावां रो रूप धारण कर लेवै।

जैतून : नदियां अर समंद मांय जळजळो आ जावै, जिणसूं अणगिणत जान-माल रो नुकसाण हुवै है।

टल्ली : (उबासियां लेंवतो) मैमजी, आखी दुनिया मांय लुगायां लकड़ी बाळ'र ई खाणो बणावै है।

मंदाकिनी : जद ई तो इसी लुगायां दमै अर आंख्यां री बैमारियां री चटकै सूं सिकार बण जावै।

मोनिका : (आपरै बस्तै सूं किताब काढ'र) इण मांय लिख्योड़ो है कै जळावण अर फर्नीचर बणावण वाळी लकड़ी अलग किसम री हुवै। औ नीमड़ो तो पर्यावरण सुद्ध करै।

रसीदुल : नीम री छाल, निंबोळी, नींमझरे सूं दवायां बणै। इणरै साख सूं दांतण बणै।

मंदाकिनी : (लाड सूं रसीदुल रो माथो पळूस'र) वाह, थे साचा पर्यावरण प्रेमी हो। थे तो आपरै पाठ्यक्रम री बातां रोजीना रै वैवार मांय अंगेज लीनी। थांरै गळी-गवाड़ मांय कुण-कुणसा रूंख लाग्योड़ा है?

रसीदुल : म्हारी गळी रै कनलै सड़क पे असवाड़ै-पसवाड़ै लाग्योड़ा रूंखां नैं ठाह नीं कुण बाढग्यो? दोनूं तरफ ठूंठ ई ठूंठ निगै आवै।

टल्ली-बल्ली : (डरप सूं हकलावता) मैमजी, बाय गॉड, म्हैं तो रूंखां रै टच ई कोनी कर्‌यो।

मोनिका : इणनैं कैवै, चोर री दाढ़ी में तिणकलो।

मंदाकिनी : (रीसाणै सुर मांय) ठाह है बल्ली-टल्ली, एक पौधै नैं रूंख बणवा मांय कित्ता साल लागै है? अमृता देवी खेजड़ली रा रूंखां नैं बचावण सारू आपरा प्राण देय दिया हा। आ बात तो थे थांरी मां के दादी सूं अवस सुणी होसी।

बल्ली : (संकतो सो) बां दोन्यूं नैं तो आपसरी मांय राड़ करणै सूं ई फुरसत कोनी। दादी मंचली माथै पड़्या म्हांनै गाळ पाड़ता रैवै।

बल्ली : अर पापा दारू पीय'र रात नै माराकूटा करै।

मंदाकिनी : अबै म्हारी समझ मांय आयग्यो कै थे आपरी भड़ांस उण अणबोला रूंखां नैं बाढ'र बारै काढो हो।

टल्ली : (आपरी आंख्यां सूं आंसूड़ा टळकावतो) मावड़ी नैं तो सेठां रै घरै बुहारी अर अैंठोड़ा बासण मांजण सूं ई फुरसत कोनी। म्हारा सै सागड़दी म्हांनै चिंघावता रैवै।

मंदाकिनी : जद थांरो हियो परेसान हुवै तो म्हारै घर में लाग्योड़ै बगीचै मांय निराई गुड़ाई कर'र आपरो आफरो काढ सको।

मोनिका : (ताळियां बजा'र) वाह दीदी, आ बात आप घणी सांतरी बताई, पण आपरै हाथ में औ पौधो कियां?

मंदाकिनी : (गळगळी होय'र) हर साल म्हैं आपरै जलमदिन माथै किणी पोसाळ मांय गुलाब रो पौधो भेंट करूं। आज भी म्हैं थांरै पोसाळ मांय जा रैयी ही।

जैतून : म्हारी स्कूल री तो पूरी छुट्टी होयगी। आप औ गमलो म्हां मांय किणनैं भी संभळा देवो। म्हैं इणनैं काल स्कूल मांय जाय'र इणनैं प्रिंसिपल साहब नैं देय देस्यां।

मंदाकिनी : (जैतून रै हाथ मांय गमलो पकड़ावती) आज सूं पैली इत्तो व्हालो जलमदिन म्हैं कदैई कोनी मनायो। चालो, इण बात पर थे सगळा टॉफी खावो। (आपरै परस सूं टॉफियां काढ'र टाबरां नैं देवै)

(सगळा टाबर जलमदिन री मोकळी बधायां कैय'र ताळियां बजावण्ए लागै। पड़दो गिर जावै)

◆◆

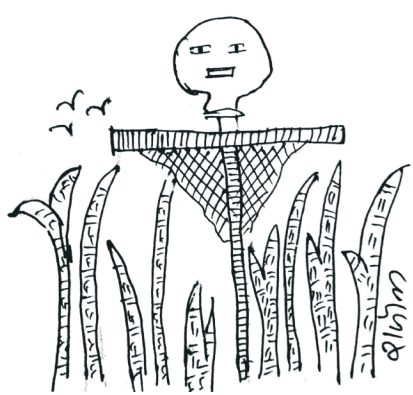

डॉ. गीता सामौर

मध्यकालीन नारी रै अंतस री पीड़ रो गान
'बीसलदेव रास'

नरपति नाल्ह विरचित 'बीसलदेव रास' अेक गीति प्रबंध है जिको राजमती राणी रै प्रणय अर विजोग रो सुंदर गान कैयो जाय सकै। प्रथम दीठ सूं औ ग्रंथ बीसलदेव नायक रै नाम रै मुजब नामकरण सूं उणरी कीर्ति रो बखाण करतो लखावै, पण गंभीर अध्ययन अर गैरी दीठ सूं देख्यां औ मध्यकाल री अेक नारी रै अंतस री पीड़ रो गान है।

विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर अेक जगां कैवै, ''मैं कुछ नहीं लिखता। मेरे हृदय में एक विरहणी स्त्री रहती है, वह रो देती है और मैं उसका दुख कागज में उकेर देता हूं।'' आ बात सोळा आना साच बीसलदेव रास रै कवि माथै लागू हुवै। इण ग्रंथ री नायिका राजमती राजस्थानी साहित्य री अेक अनूठी नारी रतन है, जिकी आपरै भांत री अेकली नायिका है। सगळै साहित्य मांय राजमती जैड़ो दूजो चरित निगै नीं आवै।

धार नरेश भोजराज परमार री कन्या राजमती रो ब्यांव अजमेर रै सासक बीसलदेव चौहान सूं कर दियो जावै है। ब्यांव रै उपरांत राजमती नैं लेय'र राजा बीसलदेव अजमेर आ जावै।

अेक दिन अचाणचक राजा बीसलदेव आपरी राणी राजमती सूं गरब अर अहंकार मांय कैवै कै म्हारै समान दूसरो राजा धरती पर नीं है, क्यूंकै म्हारै राज मांय सांभर सर सूं लूण निकळै है। अब यूं तो मध्ययुगीन मानसिकता रै हिसाब सूं आ कोई अनोखी अर अप्रत्याशित बात नीं है, क्यूंकै राजा अर सामंतां रो चरित सदा सूं ई इस्यो ई होवतो आयो है। बांनै चाटुकारिता अर आत्मप्रशंसा ईज सुहावै। पण अठै राणी राजमती रै चरित रो अेक ऊजळो पख उभर'र साम्हीं आवै कै बा चाटुकारिता करण वाळी, झूठी हां मांय हां मिलावण अर स्वांग री चासणी मांय लपेट'र चापलूसी करण वाळी अर पुरुस नैं भरम मांय राखण वाळी नारी नीं है।

गरब करि बेलियउ संइभरि वाल।
मो सारिषउ नहीं अवर भूआल।।

जणां राजमती पाछो कैवै :

गरब म करि हो संइभरिवाल।
तो सारिषा अवर घणा रे भूआल।।

ई-31, जमना नगर, पथ नं. 6, सोडाला, जयपुर (राज.) मो. 9414838092

 ISSN : 2320-0995

एक उड़ीसा कउ धणी।
जिउं थारइ सइंभरि उग्रहइ।
तिउं आं धरि उग्रहइ हीरा कइ षांणि।।

राजमती साफ सबदां मांय कैवै कै राजा! आपनैं गरब नीं करणो चाईजै। ईं धरती पर आपरै समान अनेक राजा है। अेक तो उड़ीसा रो ई राजा है, जिणरै राज मांय हीरां री खान मांय सूं ठीक बियां ई हीरा निकळै जियां आपरै राज में सांभर सूं लूण निकळै है।

...अर अठै सूं ईज इण ग्रंथ री कथा नूंवो यूटर्न लेवै अर अठै सूं ईज सरुआत हुवै राजमती रै आगै रै दुखपूरण जीवण री कथा। मध्यकाल रै सामंती प्रवृत्ति रै राजा नैं आ बात चुभ जावै अर आपरै अहंकारवश राजा गुमान कर बैठै। बीसलदेव नैं राजमती री आ आकरी अर खरी बात लाग जावै अर बो कैवै कै राजमती म्हारी बिसराहना करी है, इण वास्तै अबै बो उणसूं कोई संबंध नीं राखैला :

चितह चमकियउ बीसलराव।
धणकउ बचन बस्यउ मनमाहि।
म्हे बिसराह्या गोरड़ी।

राजा रो मान देख'र राजमती नैं आपरी भूल रो अैसास हुवै। बा राजा सूं घणो अनुनय-विनय करै, पण राजा माथै इणरो कीं असर नीं हुवै। राजमती स्वीकार करै कै म्हैं राजा री बिसराहना कर'र दोस कर्‌यो है :

हूं विरासी राजा मइ कीयउ दोस।
पगरी पाणही स्यउं किसउ रोस।
कीड़ ऊपर कटकी किसी।
म्हे हंस्या थे करि जाणियउ साच।
ऊभीय मेल्हि किउं चालीयउ।
स्वामी जळह विहूणा किम जीयइ माछ।।

अठै कवि मध्ययुग री उण मानसिकता नैं उजागर करै जिण मांय लुगाई नैं पग री जूती मानी जावती अर कीड़ी रै बराबर उपमा देईजती ही। आज रै संदर्भ में आ बात आपां नैं मामूली लाग सकै, पण मध्यकाल में नरपति नाल्ह कवि अेक राणी राजमती रै मुख सूं आ बात कैवाय'र अणूती लूंठी बात करी है। इणनैं आपां नैं ईं बात नैं जुग रै संदर्भ मांय समझण री दरकार है।

कवि राजमती रै मूंडै सूं कैवावै :

कइ मुडइ लेइ नइ ऊलग जाइ।
कइ रे जोगी हुइ नीसरइ।

मध्यकाल मांय अेक राजा रै साम्हीं उणरी राणी सूं आ बात कैवावणी भोत बडी बात मानीज सकै है, पण जियां कै सामंती मनोवृत्ति मांय हुया करै है, राजा कैवै :

हूं न पतीजूं गोरी थारइ बइणि।

राजमती रोकण रा सगळा जतन करै, पण सगळा अकारथ चल्या जावै। जणां राणी रै हियै सूं उद्‌गार निकळै :

छंडी हो स्वामी म्हें थारी हो आस।
मइला हो थारउ किसउ बेसास।
बांदी करि धणि नीव गिणी।
म्हांकी सगा सुणीजा मांहे लोपी छै भाम।
जीवतड़ी मूयां बडइ
बालुं हो धणी तुम्हारऊ हाम।

बा कैवै कै हे स्वामी! म्हैं थारी आसा छोड दी। थूं मलिन हियै रो है, थारो किस्यो विस्वास! अठै बडी बात आ है कै कवि नरपति नाल्ह नारी (राजमती राणी) रो हियो पढ लियो है अर आ ईज बात उणरी रचना नैं काळजयी बणावै। राजमती री पीड़ अठै सगळी नारी जाति री पीड़ बण जावै।

आज खुद स्त्रियां भी आपरै हियै री पीड़ नैं उजागर करणी चावै तो घणी संभावना है कै बै भी इण कवि रै उपमानां नैं दोहरावै।

उण सामंती जुग मांय बीसलदेव नैं अैड़ी चुभती उपमा देवण वाळो भलां नरपति नाल्ह रै अलावा कुण साहस कर सकै हो :

म्हांकउ मूरख राव न जाणइ सार।
राउ नहीं सखी भइंस पीडार।

अंतपंत बीसलेदव राणी राजमती नैं छोड'र प्रवास माथै निकळ जावै। तद सखी-सहेल्यां राजमती नैं समझावै :

सात सहेलीय बइठी छइ आय।
भोली तोथी भलीय दवयंती हे नारि।
सो नल राजा मेल्हि गयउ।
पुरुष समउं निगुणी नहीय संसारि।

कवि कैवै कै पुरुस रै समान निगुणी इण संसार मांय दूजो कोई नीं है। आ बात अेक कवि मध्यजुग मांय कैवे, आ भोत साहस री बात है।

राजमती री पीड़ नैं उघाड़'र सब रै साम्हीं उजागर करती वेळा मानो कवि आपरो काळजो खोल'र साम्हीं राख दियो है :

अस्त्रीय जनम काइं दीधउ महेस।
अवर जनम थारइ घणा रे नरेस।
राणी न सिरजीय रोझड़ी
धणह न सिरजीय धवळीय गाय।
बनखंड काळी कोइली।
हउं बहसती अंबा नइ चंपा की डाळ।
भखती द्राष बीजोरड़ी।
इण दुख झूरइ अबला जी बाळ।।

राजमती कैवे कै हे महेस ! लुगाई री जूण थूं म्हनैं क्यूं दी ? हे नरेस ! थारै कनै और बहुतेरा जलम हा। फेर भी थूं म्हनें जंगळ री रोझड़ी (नीलगाय) क्यूं नीं बणायी ? नारी नीं बणाय'र सांघणै जंगळ री धोळी गाय क्यूं नीं बणायी ? अर बनखंड री काळी कोयल क्यूं नीं बणायी ?

इण भांत बा अबला नार आपरै दुखां मांय झुर रैयी है। इण भांत लुगाई चायै बडै राजा री राणी हुवो अर भलांई साधारण नार, सब रा दुख अेक जैड़ा ईज लखावै। लुगाई नीं बणाय'र बा विधाता सूं रोझड़ी, बनखंड री काळी कोयल अर धोळी गाय तक बणाबा री अरदास करै।

सदी कोई सी ई होवै, जुग कोई सो भी होवै, लुगाई री पीड़ रो कोई पार नीं, लुगाई जात री पीड़ अणंत है। बीं रै हिस्सै वेदना, अणंत पीड़ अर आंसू ई आया है, जिणां रो आज भी कठैई अंत नीं है। कांई मध्यजुग री राजमती री आ पीड़ आज री लुगायां नैं आपरी पीड़-सी नीं लागै ? इण भांत राजमती सगळी लुगाई जात रो प्रतीक बण जावै।

धिन्न है कवि नरपति नाल्ह ! धिन्न राजमती राणी !!

◆◆

दमयन्ती कछवाहा

संत नागरीदास अर विष्णुप्रिया (बणीठणी)

आज किशनगढ रै राजम्हैलां में घणै ई आणंद, उमाव अर उच्छब रो दिन है। आज वांरा पाटवी कंवर युवराज सांवतसिंह, बूंदी रै जैतसिंह हाड़ा नैं हरायनै रणभोम सूं जुद्ध जीतनै पधार रैया है। उण जैतसिंह जोधार सूं जीत हासिल जिको कै टणको वीर बाजतो हो। युवराज सांवतसिंहजी री उमर फगत तेरह बरसां री ही, इण वास्तै आ जीत औरूं अंजस अर गुमेजजोग ही।

किशनगढ राजदरबार में भी सगळी त्यारियां बगतसर संपन्न हो चुकी ही। राज रा सगळा ताजीमी सरदार अपणी-अपणी जोड़ायतां अर राजपरिवार रै साथै वांरै वास्तै मुकर्रर ठौड़ माथै बिराजमान होयग्या हा। दरबार रै मुख्यद्वार माथै मंगळ बाजा बाज रैया हा। रणिवास रै खास दरवाजै माथै शहनाईवादक सुरीली रागनी उगेर रैया हा।

किशनगढ रा महाराणीसा चतुर कुंवरी आपरी खास दासी विष्णुप्रिया नैं उडीक रैया हा, सो कैवण लागया कै विष्णुप्रिया थारो सिणगार हाल तक पूरो नीं हुयो कांई ? इणी बीच कुंवराणीजी री दासी आयनै महाराणीसा री जुहार करनै कैयो, ''महाराणीसा री जै होवै। हुकम, कंवराणीसा आपरै चरणांरविंदां में धोक देवण नै पधार रैया है, आपरी आग्या चावै।''

महाराणी चतुर कुंवरीजी, ''आ तो घणी खुसखबरी सुणाई। मानगढ रै कछवाहा राजा यशवंतसिंहजी री राजकंवरी अर म्हारै लाडलै सांवत रा जोड़ायत म्हारी कुळवधू कुंवराणीसा दरबार में पधार रैया है, तो वांरो घणै मान स्वागत है। बांरो ओपतो आदर-सत्कार करणो है। खास दरवाजै सूं लेयनै दरबार महल तक वांरै मारग में फूल बिछावो अर पूरै रास्तै यांरै माथै फूल अर अंतर री बिरखा करावो।''

दासी बोली, ''जो हुकम महाराणीसा।''

इत्तै में संगीत रै मंगळ वाद्यां रै साथै युवराज सांवतसिंहजी रै जयकारै री आवाज नजदीक आवती सुणीजण लागगी। दरबार हॉल पूगनै सांवतसिंह सबसूं पैली आपरै पिताश्री महाराजा राजसिंहजी अर कुळगुरु रै धोक दियां पछै ताजीमी सरदारां री बधाई अर मुजरो अंगीकार करयो। दरबार महल री सारी कारवाई पूरी होयां पछै युवराज सांवतसिंहजी रणिवास सारू ब्हीर हो जावै।

महाराजा पिताजी अर राजदरबार रै सभासदां सूं भेंट करीज्यां पछै अबै कंवरजी आपरी माता किशनगढ री महाराणीसा नैं धोक देवण सारू उतावळा हा।

61, पोलो प्रथम (पावटा) जोधपुर 342006 मो. 9414034510

सोळै फूठरी डावड़ियां मंगळ कळस ऊंचायां सै सूं पैली पाटवी कंवर सांवतसिंहजी रो स्वागत करयो। कंवरजी रा कारिंदा बां सगळा कळसां में अेक-अेक मोहर अर रोकड़ रुपियां रो नेग बख्सीस करयो। मंगळ वाद्यां शंख अर कंवरजी रै जयकारां री आवाज महाराणीसा रै कानां में इमरत री बिरखा करै ही।

सांवतसिंह कैयो, ''महाराणी मां रै चरणारविंदां में आपरो सेवक सांवतसिंह घणै मान सूं धोक देवै हुकम।''

महाराणीसा आसीस्यो, ''जुग-जुग जीओ म्हारा लाल, भगवान नृत्यगोपाल सदैव थांरी रक्षा करै। राठौड़ां रो कुळ गौरव में बधोतरी करण री दिन दूणी रात चौगणी शक्ति प्रभु प्रदान करै। इण आसण माथै बिराजो।'' कैयनै महाराणीसा उठै मौजूद दासियां नैं बधाई गावण रो हुकम देवै।

बाजै बधाई ब्रज में नंद घरनि सुत जायो।
गोपी गीत मनोहर गावत भावत तान तरंगनि छायो।।
कोतुक मोहे देखि देवगन देवलोक बिसरायो।
नागरिदास उछाह छके अति आनंद उर न समायो।।

दासी आयनै कैयो, ''राजनरतकियां री प्रधान विष्णुप्रियाजी महाराणीसा सूं दरबार में हाजर होवण री आग्या चावै हुकम!''

महाराणीसा फरमायो, ''आग्या है, उणनैं फौरन हाजर करो।''

विष्णुप्रिया आवतां ई बोली, ''खम्मा घणी महाराणीसा, कंवरजी री जै होवैला। विष्णुप्रिया री बधाई मंजूर करावो हुकम।''

महाराणीसा कैयो, ''विष्णुप्रिया आज म्हारै पाटवी कुंवर नैं अपणै नाच अर गाणै री आपरी कला दिखावै।''

विष्णुप्रिया बोली, ''जो हुकम महाराणीसा।''(आपरै मन में सोचै) कंवर सांवतसिंहजी नैं तो पैली बार अैड़ै रूपाळै वीर-धीर नैं सैमूंडै देख रैयी हूं। म्हनैं तो यांरी सूरत म्हारै सांवरै सलौनै जैड़ी लाग रैयी हयै। जित्तै उणरी जोड़ीदार सखियां साज माथै स्वर छेड़ दिया। बा अेकदम जाणै सुपनै सूं जागी। बा नाच रै साथै गावण लागी :

बनी बिहारिनी रस सनी निकट बिहारीलाल।
मान कियो इन दृगन ते— अनुपम रूप रसाल।।
रतनारी है थांकी आंखड़ियां।
प्रेम की छकी, इस बस अलसानी जाणि कंवल की पांखड़ियां।
सुंदर रूप लुभाई गति-मति, हाई गई ज्यौं मधु माखड़ियां।
रसिक बिहारी वारी-प्यारी कवन बसी निस कांखड़ियां।।

गीत सुणनै कुंवरजी पूछ्यो, ''आ कुण है महाराणी मां। पैली तो इणनैं म्हैं कदैई नीं देखी अठै!''

महाराणीसा बतायो, ''आ तो थोड़ा दिनां पैली ई म्हारै पीहर कामां सूं आयी है। म्हारा भोजाईसा म्हारै जलमदिन माथै म्हनैं जींवती-जागती भेंट भेजी है। बां फरमायो कै आ विष्णुप्रिया

नृत्य अर संगीत री ग्याता है अर केई भासावां जाणै। आ बणाव-सिणगार में घणी रुचि राखै, इण वास्तै सगळा बणी-ठणी कैवै।''

कंवरजी कैयो, ''जणै तो अचरज रो भंडार है। गावै भी बहुत सुरीलो अर इणरो नृत्य भी मन नैं मोवण वाळो है।''

महाराणीसा बोल्या, ''इणनैं भी म्हैं वृंदावन रै रसिक बिहारी मिंदर रा महंत रसिक देव सूं वैष्णव धरम री दीक्षा दिराय दी हूं। आ काव्य रचना अर पद रचना भी घणी आछी करै।''

कंवरजी कैयो, ''हां सा, म्हनैं इण बात रो अंदाजो इणरी अबार गायोड़ी रचना सूं होयो। आ रसिकबिहारी रै नांव सूं लिखै।''

महाराणीसा बोल्या, ''हां बेटा, कदैई आ बणीठणी तो कदैई रसिकबिहारी नांव सूं पद-रचना करै।''

कंवरजी कैयो, ''ज्यूं कै म्हैं नागरीदास रै नांव सूं पद-रचना करया करूं।

महाराणीसा बतायो, ''भगवान नृत्यगोपा री तो आ इत्ती भक्ति करै कै अपणै आपनैं राधा रो अवतार ई समझै।''

कंवर आपरै म्हैल में बैठा। केनवास माथै अेक चितराम उकेर रैया हा। साथै ई कीं ओळ्यां गुणगुणा रैया हा :

छवि को रेखाओं से बांधूँ,
छल छलात यौवन को सागर,
चन्द्रज्योत्सना तन धरि आई।
अलक ललक घूमत कपोल,
मुसकान अधर मख शिखा सुधराई।।
नयन कंटीले लाज भरे से
नागर कैसे साधूं।
छवि को रेखाओं से बांधूँ।

किण बिध बणाऊं म्हैं इण मनमोवणी सुंदरी रो चितराम। औ म्हैं कांई देख रैयो हूं। कांई म्हारो अधूरो चितराम सजीव होयग्यो है, कै म्हनैं कोई सुपनो आयो है।

बणीठणी री बोली सुणीजी, ''कंवरजी री जै होवै सा। म्हैं महाराणीजी री आग्या आपरी सेवा में हाजर होयी हूं। आपरा महाराणी मां म्हनैं आपनैं, आपरै जलमदिन रै मौकै उपहार रै रूप में भेंट दीनी है। जैतसिंह सूं जुद्ध करती बगत गैरा घाव आपरै सरीर माथै होयग्या है। म्हैं पट्टियां खोलनै घावां नैं साफ कर दूं। राजवैद्यजी पधारण वाळा ई है।''

कुंवरजी कैयो, ''बणीठणी, थांरै सरूप में तो म्हैं अपणी आराध्या राधा नागरी री छिब देख रैयो हूं। म्हैं थांरै हाथ भी नीं लगा सकूं, तो सेवा रो तो सवाल ई कठै उठै? थे तो म्हारै कनै बैठ जावो, इणसूं म्हारै हिवड़ै में थावस आय जासी।''

बणीठणी बोली, ''तो फेरूं आपरो प्रेम संसार वास्तै आदर्श बण जावै जिणसूं कंवराणीजी री ईष्या रो कारण भी नीं बणै।''

कुंवरजी कैयो, ''बणीठणी, थां तो जिंदगाणी रै वास्तै इमरत हो, मदिरा नीं।''

बणीठणी बोली, ''अबै म्हारी पचासवीं बरसगांठ आवण वाळी है।''

कुंवरजी कैयो, ''म्हारी तेरहवीं बरसगांठ रै दिन आपां दोनां री जाण-पिछाण हुयी है। उणरै पछै अबै सैंतीस बरस बीतग्या। थांरै रूप में छिनभर भी फरक नीं पड़्यो। थे आज भी वैड़ा ईज रूपाळा हो जैड़ा सैंतीस बरस पैली हा।''

बणीठणी कैयो, ''आ कोई कमती अचरज री बातनीं है कै इत्तै बरसां तक लगातार साथै रैवता थकां भी आप म्हारी देह रो स्पर्श तक नीं कर्‌यो।''

कुंवरजी बोल्या, ''आप तो म्हारी आराध्या रो सरूप हो। म्हैं आपरै बाबत अैड़ा विचार सोच भी नीं सकूं।''

अेकर सांवतसिंहजी दिल्ली आपरै परिवार समेह पधार्‌योड़ा हा। वांरा सुपुत्र सरदारसिंहजी भी कोई मुहिम माथै गयोड़ा हा। उण दौरान महाराजा राजसिंहजी रो सुरगवास होयग्यो, तो सांवतसिंहजी रा छोटा भाई बहादुरसिंहजी उण बगत रा जोधपुर नरेश री मदद सूं किशनगढ रा राजा बणग्या। इणरै पछै सरदारसिंहजी आया तो बहादुरसिंहजी आपरै भतीजै नैं किशनगढ रै मांयनै भी नीं बड़ण देवै। समाचार पायनै सांवतसिंहजी भी दिल्ली सूं आयग्या। बहादुरसिंहजी आपरे बडै भाई नैं भी किशनगढ री सींव में घुसण नीं दिया।

दिल्ली री बादसाहत तो बां दिनां कमजोर ही, इण वास्तै सांवतसिंहजी मराठा सूं मदद लेयनै किशनगढ माथै धावो बोल दियो। घणो ई मिनखां रो घाणियो होयो, जिणनैं देखनै सांवतसिंहजी नैं राजकाज सूं विरक्ति होयगी। किशनगढ रा दो हिस्सा होयग्या। सरवाड़, फतहगढ अर रूपनगर रा परगना माथै सांवतसिंहजी अश्विन सुदी दशमी संवत 1814 रै दिन आपरै पुत्र सरदारसिंहजी रो राजतिलक करनै आपन वृंदावन रो वास कर लियो।

यूं सांवतसिंहजी घणा शूरवीर हा। दस बरस री अवस्था में अेक मतवाळै हाथी माथै कटार रै अेक ई वार सूं विचलित करदै। तेरह बरस री उमर में रण में बूंदी रै जैतसिंह नैं मार दै। अठारह बरस री अवस्था में थूण री गढी जैड़ै दुरगम गढ नैं जीतनै आपरी वीरता रो परचम फहरा दियो। सांवतसिंहजी दो आंगळ चौड़ी बाढवाळी नूंवै ढाळै री तलवार रो आविष्कार कर्‌यो जिको सांवतसाही बाढ रै नांव सूं जाणीजै।

आपरै सुपुत्र सरदारसिंहजी रो राजतिलक कर्‌यां पछै आप वृंदावन बसग्या अर कृष्ण भक्ति में लीन होयग्या। आप नागरीदास रै उपनाम सूं पद-रचना पैली सूं ई करता हा। यांरा रचिया पद यांरै वृंदावन वास सूं पैली ई जनता में चावा हा, इण वास्तै वृंदावन में लोग यांरो घणो आव आदर करता।

अेकर नागरीदासजी किशनगढ रै गेलै हा। बांनै जयपुर में पड़ाव करणो पड़्यो, जणै महाराजा सवाई माधोसिंहजी नैं इण बात री जाणकारी मिली तो बै नागरीदासजी सूं मिलण खातर वांरै डेरै पधारिया। बातचीत करता थकां महाराजा साब बां सूं केई सवाल कर्‌या जिणरो जबाब नागरीदासजी अेक सवैयै में देयनै तत्काल जयपुर सूं रवाना होयग्या। हाजर है वो सवैयो :

जाति के हैं हम तो बनवासी, जू ना रही ओरहूं जात की बाधा।
देस हैं घोष नै चाहत मोख को, तीरथ श्रीजमुना सुख साधां।
संतन को सतसंग आजीविका, कुंज विहार अहार अगाधा।
नागर के कुलदेव गोवर्धन मोहन मंत्र अरु इष्ट है राधा।।

किशनगढ मांय संवत 1755–1757 रै बिचाळै बणीठणी रो चितराम बणनै पूरो हुयो। अेक बार सांवतसिंह बणीठणी नैं राणियां रा गैणां अर पोशाक पेरायनै चितराम बणायो तो चितराम सांगोपांग हूबहू वैड़ो नीं बण्यो जैड़ो बणणो चाईजतो। पछै आपरै दरबारी चितरामकार नैं बुलायो। दोनूं मिलनै जिकी कसर रैयगी उणनैं पूरी करी तो सांगोपांग हूबहू बणीठणी रै रूप रो चितराम बणग्यो। इण चितराम रो आकार 48×36.6 से.मी. बतावै।

लोग यां दोनां रो खूब लाड–चाव करता। विष्णुप्रिया, बणीठणी, लवलीज, उत्सवप्रिया, कलावंती, नागररमणी, कीर्तिनिन, राजस्थान री राधा रै नांव सूं बणीठणी रो बिड़दाव करता तो सांवतसिंहजी भी चितवन, चितेरे, अनुरागी अर नागरीदास रै नांव सूं भी जाणीजता।

नागरीदासजी नैं संगीत, चितरामकारी, काव्यकला आद ललित कलावां रो आछो ग्यान हो। सबसूं सिरै राधानागरी रा भक्त हा। अै कवियां रा आश्रय दाता हा। केई कवि तो वृंदावन में किशनगढ हवेली में ईज वास करता :

धन–धन वृंदावन जो आवै।
सुंदर करत प्रीति संतन सौं नित प्रति न्योत जिमावै।
मन क्रम सौं सेवत साधन चरननि लगि लपटावै।
नागरीदास भाग तिनको कोऊ कहां लगि बरन सुनावै।।

नागरीदासजी रा गुरु वल्लभ संपद्राय रा गोस्वामी रणछोड़दासजी हा। आप छोटा–बडा 78 ग्रंथ रचिया जिका तीन खंडां में है—वैराग्य सागर, शृंगार सागर अर पद सागर।

नागरीदास री प्रेरणास्रोत प्रेमिका बणीठणी जिकी स्वयं अेक गायिका अर कवयित्री ही। आंनै पूरै संसार में जगचावो करण रो श्रेय अलीगढ विश्वविद्यालय अर लाहोर कॉलेज रा प्रोफेसर एरिक डिकिन्सन नैं जावै। सन् 1943 में जद प्रोफेसर मेयो कॉलेज रो मुआयनो कर्‌यां पछै किशनगढ राजघराणै री कलाकृतियां देखी—पुरुषाकृति लंबो छरहरो बदन, उन्नत ललाट, लंबी नाक, पतळा होठ, सुंदर नैण। नारी रो गौर वर्ण, काजळ सूं अंजिया विशान नयन, चौड़ो ललाट, तीखी सुंदर नासिका अर सुराहीदार गर्दन नैं देखनै मंतरमुग्ध होयग्या। प्रोफेसर डिकिन्सन आपरै भ्रमण रै पछै किशनगढ शैली माथै अेक किताब लिखी। इण तरै बणीठणी (विष्णुप्रिया) री ओळखाण पूरै जगत में फैलगी। बणीठणी रै चितराम माथै सन् 1973 में भारत सरकार अेक डाक–टिगट जारी करनै देसभर में नूंवी पीढी नैं बणीठणी री जाणकारी करायी।

नागरीदासजी रो सुरगवास संवत् 1821 में वृंदावन में किशनगढ राज्य री कुंज में होयो, जिको कै आज भी नागरकुंज रै नांव सूं जाणीजै। उठै यांरी छतरी अर चरणचिह्न बण्योड़ा है, जिणरी पूजा होया करै। समाधि माथै लेख खुद्योड़ो है :

श्री राधाकृष्ण गोवर्धन धारी।
वृंदावन युमुना तट चारी।
ललितादिक बल्भ बिठलेस।
मोहन करो कृपा आदेस।
सुत को दै युवराज आप वृंदावन आये।
रूपनगर पति भक्ति वृंद बहु लाड़ लड़ाये।

सूरबीर गंभीर रसिक रिझवार अमानी।
संत चरनामृत नेम उदधि लौं गावैं बानी।
नागरीदास विदित सो कृपा ढार नागर ढरिय।
सांवतसिंह नृप कलि विषै सत त्रैता विध आचरिय।।

बणीठणी रो जन्म नाम विष्णुप्रिया हो। अै कविता में आपरो नांव रसिकबिहारी लिखता। विष्णुप्रिया भगवान कृष्ण री बचपन सूं ई भक्त ही। जणै नागरीदासजी रो सुरगवास होयो जणै अै वांरै कनै मौजूद हा। नागरीदासजी रै सुरग सिधार्‌यां रै अेक बरस पछै संवत् 1822 री आषाढी पूर्णिमा रै दिन यांरो भी देवलोक गमन होयग्यो। नागरीदासजी री छतरी रै कनै यांरी भी छतरी बण्योड़ी है, जिणरै माथै औ लेख खुद्योड़ो है :

श्री बिहारिन बिहारि जो, ललितादिक हरिदास।
नरहर रसिकनि कृपा, दियो वृन्दावन वास।।
श्री रसिकदास गुरु की कृपा, लहमा भर सत्संग।
विष्णुहि वृन्दावन मिल्यौ, भक्त बिहार अनंग।।
रसिक बिहारी सामरो, ब्रजनगर सुर काज।
इन पद पंकज मधुकरी, ...विष्णु समाज।।

◆◆

डॉ. प्रकाश अमरावत

राजस्थानी कहाणी अर महिला रचनाकार

मायड़ हेज जैड़ी मीठी, हियै हिंवळास, आवै अंतस में अपणास, गीरबा सूं गमकै, माण में मठोठ, मनवार में मूंघम अर साहित्य में सिमरथ। कठै लग बात करां इण राजस्थानी भासा री, जिणरै आखर-आखर में अपणायत अर जस री जोत जगै। इत्ता सिमरथ साहित्य में अमोली रचनावां अर अणगिण विधावां है। बगत रा पाना पलटां तो हरेक जुग, बरस, मास अर घड़ियां में बदळाव निजर आवै। साहित्य में नूंवी विधावां जलम लेवै—गुडाळियां, थड़ी, पगै चालती दौड़ण लागै। होड में आगै बधण लागै अर रेस में जीतण री खैचळ करती जीत ई जावै।

राजस्थानी में ई साहित्य लेखन में महिलावां री लूंठी परंपरा रैयी है। गद्य अर पद्य री सगळी विधावां में महिला रचनाकार दखल राखै। कवितावां अर कहाणियां में तो झाल भरी महिलावां लाध जावैला। कहाणी गद्य री सबसूं चावी अर सरल विधा मानीजै। आज तो कहाणी पढतां ई लेखिका रो नांव ठाह पड़ जावै, लिख्योड़ो साहित्य या कहाणी साम्हीं हुवै। आ 'फलाणी' लेखिका री कहाणी है। पण टाबरपणै में आपां नानी, दादी, मासी, भूआ सूं बातां सुणता आया हां। आपां री पैलड़ी पीढी रा लोग ई सुणी होवैला। बै बातां कठै सूं आयी ? कुण कथी ? कांई इणां री रचना करण वाळी ई कोई नानी, दादी रै रूप में महिला ईज तो नीं ही ? अै बातां कहाणी रो जूनो या आदू रूप कोनी कांई ? कांई बातां सूं ई कहाणी रो जलम होयो ? अैड़ा केई सवाल म्हारै मन-मगज मांय उठ्या। आज जद राजस्थानी कहाणीकारां री बात करां, कहाणियां रै विसयां री बात जठै तांई करां, रचना संसार री बात करां तो अैड़ो कोई विसय कोनी जिको आंरी लेखनी सूं अदीठो रैय आखरां नीं ढळ्यो या कोरो रैयो।

कहाणीकारां में म्हैं सबसूं पैली नांव राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रो लेवूंला। बांरी घणकरी कहाणियां में लोकजीवण री झांकी अर जूनी बात परंपरा री सौरम है। सामंती परिवारां रा पात्र, रजवाड़ी रीत-पांत, आचार-विचार साथे लुगाई रै ओळै-दोळै फिरता चित्राम, नारी री वीरता, उछाव, धीरज, सतीत्व, वचन पाळण, कर्तव्य पाळण रै साथै नारी रै मन रा कंवळा भावां रो बेजोड़ वरणाव है। वरणन री इधकाई, ओपमावां, कैवण रै आंटै साथै भासा रा सबदां नैं परोटण री खामचाई आपनैं सिरमौड़ लेखिका रै ठेठ आभै लग ऊंचै आसण माथै बैठावै। राणीजी महिलावां वास्तै सीख रा साखीधर रैया।

मकान नं. 37, पोलो द्वितीय, जोधपुर (राज.) मो. 8118818039

 ISSN : 2320-0995

इण परंपरा नैं आगै बधावण में जिकै कहाणीकारां रा नांव आवै बै इण भांत है :

तारा लक्ष्मण गहलोत, पुष्पलता कश्यप, आनंदकौर व्यास, चांदकौर जोशी, सुखदा कच्छवाह, माधुरी मधु, जेबा रसीद, कमला कमलेश, कुसुम मेघवाल, प्रकाश अमरावत, विमला भंडारी, सावित्री चौधरी, बसंती पंवार अर पछै मंजू सारस्वत, संतोष परिहार, ऊषाकिरण जैन, चम्पा देवी। इणीज भांत नदी रा वेग ज्यूं आगै बधतजी कहाणी परंपरा में किरण राजपुरोहित 'नितिला', संतोष चौधरी, शकुंतला पालीवाल, कीर्ति शर्मा, अनुश्री राठौड़ रा नांव गिणावण जोग। कहाणीकारां रा नांव तो बात नैं आगै बधावण वास्तै लिख्या है, किण रो नांव छूट जावै तो आमनो करण री बात कोनी, क्यूंकै औ अंदाजो है अर इणसूं म्हारी बात कैवण रो आधार बणैला। इणसूं पैली अर पछै ई केई महिला कहाणीकारां रा नांव छूटण री संका है, आ अछेह परंपरा टूटणी नीं चाईजै। इणनैं तो ठेठ आभै रै उण पार तांई ले जावण री खेचळ करण वास्तै ई बगत-बगत माथै साहित्य रा हेताळू, साहित्यरा साधक जण अेक बीड़ो उठावै कै काम में नूंवी बात कांई आयी है? कठैई जात्रा में ठैराव तो नीं आयो है। कांई महिला चिंतक सावचेत है? बदळता परिवेस, बदळती सभ्यता अर सगळो हवा-पाणी रो बदळाव उण साथै बदळती चिंतन री साख भरती अै कहाणियां। बरसां पैली साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं खैचळ सरू व्ही। शारदा कृष्ण जी बीड़ो उठायो अर बीसवैं सईकै रो राजस्थानी महिला लेखन री कूंत 'आंगणै सूं आभो' में करीजी। बरसां पैली राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं जागती जोग रो अेक महिला रचनाकार विशेषांक निकळ्यो हो। केई बीजी साहित्यिक पत्रिकावां भी इण तरै रा महिला रचनाकारां रा विशेषांक निकाळ्या अर घणो अंजस कै 'राजस्थली' जैड़ी चावी तिमाही पत्रिका पाछो औ बीड़ो उठायो है, जिणमें महिला सिरजणकारां री गिणती देख'र ई जीव सोरो होवै। घणो आंझो काम है, अेक सूं अेक जोड़ इग्यारा अर यूं सौ-सवासौ सूं ऊपर तांई गैरी लांबी गिणत बधावणी, पण राजस्थली रा संपादक री मैणत अर लगन सूं औ झीणो काम साहित्य समाज में दीपैला।

खैर, कहाणी-लेखन री बात करां तो विसय-वस्तु री दीठ सूं पैलड़ी घणकरी कहाणियां में लुगाई जीवाजूण री खैचळ है, जिणमें टाबरपणै में ब्यांव होवणो, भणाई-लिखाई में अबखायां या अणपढ जीवण री जूझ, रूढियां-परदा, नौकरी नीं करकणी, बारै आवण-जावण, बोल-बतळावण रो बरजणो, विधवावां साथै होवण वाळा भूंडा सलूक, हीण भावना, जिणमें बांनै घरां में ई रैवण रो आदेस होवतो। बांरै पैरवास, रैण-सैण सब माथै समाज री दाखल रैवती। लुगायां माथै खास कर'र विधवावां घर रा मिनख रूपी जिनावरां रै शोषण री शिकार होवती, पण लाज री मारी अबोली ई जूण काटती। आं कुरीतां रो कूंडो लुगायां रै माथै ई खाली क्यूं करीजै? अेक महिला रचनाकार अै बातां लिखै तो समाज नैं चेतावण वास्तै कै लुगाई भी समाज री जमी है। इणनैं नीं पोखो, इणरो सम्मान नीं करोला तो समाज आगै कीकर बधैला? लुगाई री जूण दोरी अर अबखी। भूंड रो ठीकरो उणरै माथै, तो घर-परिवार री चाकरी करण री जिम्मेदारी रो भार ई उण ऊपर। जीवण आदर्सां री पूतळी बणाय'र घड़ी उणनैं बैमाता। फगत मिनखां री भूखी वासनावां नैं तिरपत करण खातर नीं घड़ी उणनै। उणमें ठैरै ऊंडी धीरज कळा अर निसरै अर चूंवै तो फगत

इमरत री धार, जिकी हरेक जीव आपरी मां रै हांचळ सूं पी है। उणरै हियै री पीड़, नीति, धरम, मरजादा, सेवाभाव, समाज रा काण-कायदा, जीवणमूल्यां री घणी-घणी बातां आं कहाणियां रा विसय रैया है। इण आलेख सारू पैलड़ी कहाणियां नैं छोड'र अेक बगत विसेस, जिणमें लारला पांचेक बरसां में लिखीजी कहाणियां रा कीं दाखला आपनैं देवूं, जिणसूं कहाणी परंपरा में आया बदळाव री कूंत सोरी होय जावैला।

घणी दीठ पसार'र बात करां तो संदर्भां सूं आ कूंत सबळी होय सकैला। पैलड़ी कहाणियां में ई कोई विसय छूटियो तो है ई कोनी। अेक कहाणीकार री कहाणियां में ईं विसयां री बोहळाई लाध जावै तो झाल भरी कहाणीकारां री लेखनी तो पूरा समाज रै ओळी-दोळी जिकी घटणावां, मिनखां रा वैवार, समाज री दसा अर अबखायां रो आवखो वरणाव आं कहाणियां में होया है।

2015 में आयो किरण राजपुरोहित 'नितिला' रो कहाणी-संग्रै 'कांठळ' कळायण बण'र बरस्यो है। लुगाई री अमूझती जूण नैं हरी करण, तो कदैई साथण रै मिस 'विधवा' रो दुख पूछ्यो ई नीं, काळजै बंधिया होड़ा नैं मिटावण रा जतन करती दीसै। लुगाई, लुगाई रो दुख-दरद अर पीड़ नीं जाणै तो हियो पासाण जैड़ो। पण किरणजी री कहाणियां में लुगाई रै जीवण री जूझ में ऊंडी धीरज कला ई है। 'छेकड़ली अरज' री कथा नायिका सोनी 'जलम दुखी सो जरा दुखी' ज्यूं जागीरदारां री हेठवाळ रैय'र बाप रा परिवार नैं पोखै। बेटियां नैं ब्यांव रै ओळावै ई बेचण री कुरीत रो खुलासो करती लेखिका सोनी नैं हरेक रूप में कमाऊपूत री संग्या दी। औ समाज माथै आकरो व्यंग्य, डोढा बोल है। आपरी कथ्य सैली इधकी है। 'कदास आ जी भर रोय लेवै' कहाणी में भावी सुखी है। बधतै जीवण री ताकत है, मजबूताई है, तो टूटोड़ो ताळो ई मुछाळो पौरादार है। ताळो अठै अपूरण रैयगी मनस्यावां रो प्रतीक ई है। काळै अतीत अर सोनी रै बेरंग भविष्य, दोनां में कीं फरक कोनी, पण कैवण में फरक है जिको सरावणजोग। अेक सवाल और, कै लुगाई रै टाबर नीं होवै तो कांई उणरी बा अेकली दोसी है? हेत, अपणास अर प्रीत तो फगत अेक सागै ई करीजै, पछै तो संतान जामण वाळी मसीन ई होवै। 'राजीपो' में धणी-लुगाई रो संबंध विस्वास री जड़ां सूं हरियल होवे। लुगाई कमावण वाळी तो होवै, पण धणी रो मनचायो पैरणो, रैवणो, बा खुद री मरजी सूं तो आज ई नीं चालै। धणी भलांई उणरी निजरां साम्हीं दूजी लुगाई कै छोरियां नैं गळै लगाय लै, पण खुद री लुगाई वास्तै बो बिना कीं देख्यां अणदीठा आरोप लगावण में पाछ नीं राखै, पण कहाणी अैड़ो मोड़ लेंवती दीसै जठै आ कहावत सिद्ध होवै कै 'मूंगां रो कांई पीसणो अर धणी-लुगाई रो कांई रीसणो!' जय अर हर्षा रो राजीपो होय जावै। बो लुगाई नैं मापणै रो प्रतीक है। अै कहाणियां कैवे कै समाज बदळै है। लुगाई-जूण रै वास्तै सोच री आ 'कांठळ' धुप'र समाज नैं सैंचन्नण करैला, अैड़ो विस्वास है।

2017 में बसंती पंवार रो कहाणी-संग्रै 'नूंवो सूरज', जेबा रसीद रो कहाणी-संग्रै 'कदै तांई' अर कीर्ति शर्मा रो 'हेत रो उजास' कहाणी-संग्रै आयो। आं कहाणियां रा विसय ज्यूं लुगाई री जीवाजूण साथै समाज रो हरेक अंग, हरेक घटणा जुड़्योड़ी है, पण पुरुस उणनैं आपरै ढाळै सोचै तो लुगाई आपरै माथै बीत्योड़ी बातां नैं घणी गैराई सूं अर पूरा साच सूं जाण सकै, निवड़ सकै, इणरो खुलासो करीज्यो है। अेक ई विसय नैं न्यारी-न्यारी लेखिकावां आप-आपरी लेखनी अर सोच रै मुजब न्यारा-न्यारा ढब सूं कथै।

'हेत रो उजास' री कहाणीकार कीर्ति शर्मा री कथन शैली सरावण जोग, बगत रै बायरै मुजब बदळता विसय ई निजर आवै। 'धूज' कहाणी में सियाळै री धूजणी कोनी, मांयलो डर ई कोनी, पण साच ई कैयो कै 'नागो जाणै म्हारै सूं डरै पण मिनख तो इज्जत सूं डरै'। इण कहाणी री नायिका नरमाई सूं किण तरै अलपती, लड़ाईखोर मोवनिया री मां नैं अबोली कर मोवनिया सूं साच बोलाय दै। पढी-लिखी रै च्यार आंख्यां हुवै, यूं ई नीं कैवै। संस्मरणात्मक शैली री किशोरी काका री ओळ्यूं है। अधूरा प्रेम री पीड़ अर वेदना नैं उकेरण में लेखिका री कोरणी में सजीवता है, मरमपरसी भावां री। दादी-पोती में दोय पीढी रो आंतरो, पण उणरी अमूझती लाचारी पोती दुरगा जैड़ी ताकत रै रूप में समाज रै साम्हीं ऊभी करे। रूढियां नैं तोड़ती बेटियां नैं ई अबै बडेरां रै कांधो देवण रो हक दिरावती आ कहाणी साचै अरथां में लुगाई री जड़ां समाज में सैंठी करै। केई चरित नायिकावां ज्यूं रुकमी भूआ ई हेत-अपणास रो दूजो नांव है। होरै-फोरै बगत में गांव-गळी रा मिनखां रै आडो आवणो, बांरी हारी-बैमारी में तन-मन सूं सेवा करणी। आतमविस्वास अर स्वाभिमान रै साथै मीडिया रो काम करती भूआ अैड़ा पात्र किणी अेक रा नीं हुवै, आखै समाज री बा रुकमी भूआ ही। हेत देंवती अर सगळां रै हियै उजास भर देंवती। अैड़ी ई कहाणियां में 'केतकी भोजाई' अर 'उडीक' है। जठै लुगाई, लुगाई री लाज रुखाळी बण जावै तो समाज में सुधार अवसर आवैला। बेटियां रै जलम सूं ई जिण लुगाई नैं परिवार छोड देवै जूझण वास्तै, उणरो धणी कुण! पण दुखां री खाण लुगाई सेठ-साऊकारां, कामदारां, मुनीमां री खोटी नीत कदै तांई झेलती रैवैली। लुगाई नैं भोग री वस्तु समझण वाळां वास्तै 'काजळी' अेक जबरो पड्डुत्तर है। मिनखां रा मन सुद्ध होवै तो लुगाई बां सूं आगै बध सकै, पण बा तो सदियां सूं अेकण सागै केई मोरचां माथै जूझ रैयी है।

कृष्णा आचार्य रा दोय कहाणी-संग्रै 'लाल चूड़ो' अर 'मांयली बात' री कहाणियां ओपती, सबळी अर सरावणजोग है। आंनै छोटी कहाणियां कैय सकां, जकी लघुकथावां सूं आकार में कीं बडी है। कृष्णाजी री कहाणियां जिकी तीन-चार पानां मांय आपरी बात पूरी मठोठ साथै सार रूप में कैवण री कला अंगेज्योड़ी है। आपरी सगळी कहाणियां री घटणावां अर पात्र जाणै आपां रै आसै-पासै रा सैंधा लखावै। 'लाल चूड़ो' कहाणी है तो लुगाई रै जीवण-संघर्ष री, पण दूजी कहाणियां सूं कीं न्यारी है, जिणमें लेखिका कैवणी चावै कै लाल चूड़ो सवागण रो सिणगार, सुवाग री सैलाणी तो है ईज, इणरै साथै मरद री घर-परिवार या लुगाई, टाबरां वास्तै जिम्मेदारी अर लुगाई रो उणरै पेटै विस्वास है। पछै उणरो मोल कोनी रैवै। बो सवागण रा हाथां में ओपै, खुलियां पछै फगत कचकड़ो कै सीप रैय जावै। चूड़ो उतार लिछमी सब भावां-संबंधां सूं जाणै मुगत होयगी। कैवत है कै 'बाप किरोड़ी अर भिखारण', पण भूखी मां ई टाबरां नैं पोखण री जुगत बैठा सकै। खुलती पोल में ललित जैड़ा मिनख भोळी-ढाळी छोरियां नैं प्रेमजाळ में भरमाय'र मौका रो फायदो उठावै, पण जूली री मां री सावचेती, चतुराई, समझदारी, भावी री सोच अणव्हैती नीं होवण देवै। चौथो चितराम ई न्यारो-निकेवळो है। कथ्य री दीठ सूं जीवण री चार अवस्थावां रै ज्यूं जीवण में आया बदळावां नैं लेखिका चितराम रै रूप में उकेरिया है। दुनिया साम्हीं तो थाप देय'र मूंडो रातो राखणो पड़ै। पछै 'पाणी तो पाणी री ढाळ' बैवै। मिनख स्वभाव तो जठै जावो, कागला काळा ई लाधै। 'सवालां वाळा बैनजी' कहाणी में किण भांत अेक पढी-

लिखी लुगाई ई भावां में बैवती जावै पण धणी माथै भरोसो नीं करै तो कठै जावै! बो भरमाय'र पईसा-टक्का लेय'र उणरी कांई भूंडी गत करी कै मिनखपणो लाजां मरै। जद बाड़ खेत नैं खावै तो उबारै कुण? 'अेकली लुगाई', 'सहायता', 'सुपात्तर बीनणी' सेती इण संग्रै मांय छत्तीस कहाणियां है। सगळी समाजू कहाणियां जीवणमूल्यां री सीख देवै। 'मांयली बात' (2019) कृष्णा आचार्य रो दूजो कहाणी-संग्रै है, जिणमें 32 छोटी-छोटी कहाणियां में जीवण रो सार है। कहाणी 'मांयली बात' री पारबती रो सुपनो हवाई जहाज में बैठण रो कोनी अर नीं ई सिंगापुर री सैर करण रो, पण सुपनो तो सुपनो होवै। ऊंटगाडै माथै बैठ'र परिवार साथै बाबै रै मेळै में जावण रो टाबरपणै सूं सुपनो हो। धणी पिचका-पापड़ी रा ठेला सूं गृहस्थ रो गाडो चलावै, पण मेळै रै अैन बगत बाबै री पैदल सेवा रो चंदो लेवण नै आयोड़ा काकोजी नैं घर री इज्जत राखण खातर भेळा करयोड़ा पांचसौ रुपिया देवणा पड़ै अर आपरो सुपनो ऊंचो टांग देवै। धरम अर संस्कार संस्कृति नैं रुखाळै। अैड़ै लोकजीवण री झांकी आपरी कहाणियां में केई ठौड़ निजर आवै। माईतां री चोखी सीख मिलै तो टाबर-छोरू भूल करयां पछै ई सुधर जावै। घर टूटता उबर जावै। सीख रो असर पड़ै। ईमानदार मास्टरजी अर रिश्वतखोर पटवारी रै मिस लेखिका कैवणी चावै कै रैण-सैण में फरक तो रैवै, पण खरी कमाई तो सोळवों सोनो है, नचींती नींद है अर खोटी कमाई सूं मिनख सोनै तुलै तो ई बगत आयां जेळ री हवा खवाय देवै। स्कूलां में आवण वाळो पोषाहार बो ई मास्टर अर बाबू छोडै कोनी, पण लुगाई पात्रां रै मिस कर्तव्यबोध जगाईजै। लुगाई री मनतग, सावचेती, वचनां री पालणहार अर समझ भरी बातां सूं समाज संभळ सकै। लुगाई घर बणावै अर बा ई बिगाड़ै। सरल भासा में अै कहाणियां समाज नैं सीख देवै। सब कहाणियां री अलायदी विसय-वस्तु है। पात्रां मुजब भासा है।

'कदै तांई' जेबा रसीद रो कहाणी संग्रै है। इण संग्रै री कहाणियां ई लुगाई री जीवाजूण सूं जूझती कहाणियां है। लेखिका कैवणी चावै कै 'हाथां कीधा कामड़ा, किणनैं दीजै दोस', कैवत रै ज्यूं ई लुगाई खुद जिम्मेदार है आपरी भूंडी गत री। कांई करै ममता। हिंवळास अर कंवळा भावां रो मन उणनैं ऊंची उठण ई नीं देवै। धणी माथै भरोसो नीं करै तो जावै कठै? 'बंधिया जठै छूटणा' है। माईत जिणरै लारै घालै उणसूं नीं निभावै तो जावै कठै? मजबूरी रो नांव महात्मा गांधी। घरां में काम करण वाळी नौकराणियां साब नैं बिगाड़ै कै साब उणरी लाचारगी रो लाभ ले लेवै। कठैई ऑफिसां में बॉस आपरै अधीनस्थ काम करण वाळी महिलावां नैं आपरी हवस रो सिकार बणावै। इणसूं परिवार टूटै कै कळह बधै। 'काचा घरां रा आंगणा' ब्लैक मेलिंग करती नौकराणी अर गैली बणाय'र मानसिक रूप सूं मालती नैं तळणो, जिणसूं बा साच्याणी गैली होयगी ही।

अैड़ी ई सामाजिक अबखायां, सामाजिक सरोकार अर समाज नैं सुधारण री दीठ सूं बसंती पंवार रो 'नूंवो सूरज' कहाणी-संग्रै साम्हीं आवै। संग्रै री छोटी-छोटी कहाणियां जाणै जीवण री छोटी-छोटी बातां री सीख देंवती दीखै। 'तीन रो वैम', 'टोटको' आद मनोवैग्यानिक कहाणियां है। पछै वैम री दवा तो हकीम कनै ई कोनी होवै। पण टूणा-टोटका जैड़ी बातां सामाजिक सोच री हेठी न्हाख देवै। भोपा-डफरी सूं घर धुप जावै, मिनख धन अर मन सूं निबळो बणतो जावै। बसु जैड़ा पात्रां सूं समाज नैं आं बातां सूं निरांयत मिली। सूरज तो बो ईज है—आद-

जुगाद सूं ऊगै अर आथमै, पण भटक्योड़ो जे सूंवै मारग आय जावै तो उणरै जीवण में अवस नूंवो सूरज ऊगै। मिनख तो खामियां रो खजानो है। भटकाव किणरै जीवण में नीं आवै। भौतिक सुखां री चावना कुण नीं करै। मिनख रो मन आं सुखां खातर सूंवो मारग छोड'र कुमारग पकड़ै। बसंती री कहाणियां सुधारवादी दीठ देवै। नूंवी चाल, नूंवी सीख अर बदळाव रो नांव ई जीवण रो नूंवो सूरज है।

2018 में सावित्री चौधसरी रो कहाणी-संग्रै 'अपणायत रो अैसास' पाठकां साम्हीं लुगाई री घणकरी मनगत अर समाजू सोच साथै साम्हीं आवै। आंख्यां रो फूट्यो भलांई होवो, हियै रो फूट्यो नीं होवणो। हियो उजास रै मारग रो चानणो बण बीखो काढै। दिव्यांग वरग वास्तै संवेदना जगावै आ कहाणी। शिक्षा सारी अबखायां मिटावण री कूंजी है। ओपरी दीखता थकां ई केई बार अेक चुप सौ सुख रो काम करै। धीरज राखो, ओखो नीं बोलणो, घमंड अर रीस करयां गिरस्थ री गाडी नीं चालै। विवेक सूं काम करणो। तलाक लियोड़ी लुगायां वास्तै समाज रो धारो न्यारो। लुगाई नैं जीवण रो धारो बणावो पड़ैला। भूंडा कामां सूं सुख किणनै मिल्यो है। 'लूंठो डूंगर' जे दुख रो है तो लुगाई री समझ सूं उणनैं घुड़ायो जाय सकै। लुगाई ही लुगाई रो साथ देवै। उण रा दुख नैं खुद रो मानै। बहू री गलतियां नैं सासू बेटी जाण'र कै टाबरपणो मान'र उणरी रुखाळी रै रूप ओट रो लूंठो डूंगर बण सकै। बेटी बचावण री सीख सुलखणी नार रा सुलखणां लेखै समाज में मिनखापणो जीवतो है, इण बात री साखीधर अै कहाणियां नूंवै ढाळै कथीजी है।

'काया री कळझळ' संतोष चौधरी रो कहाणी-संग्रै हे। अै कहाणियां आज री समकालीन भारतीय कहाणियां सूं होड करती कहाणियां कैयी जाय सकै। 'आपथापै' री नायिका नीलम कांई आपरो सत छोड'र धणी रै बरोबरी री तनखा वाळी नौकरी पाई हे? औ उर्मिलाजी नैं क्यूं भरम होयो, बै आसीस रो हाथ अधबिचाळै क्यूं राख दियो। पढ-लिख'र आगै बधण में नारीत्व आडो नीं आवै, आवै फगत मिनखां री सोच। सत-पत नैं राखतां आगै बधणो ई लुगाई री साची जीत है। कथा में नीलम पैली बतावै कै नौकरी खातर अेक-दो बार कंपनी रा मालिक नैं राजी करणो पड़ैला। दूजी बात, नीलम कैवे कै रोटी, कपड़ा अर घर में रैवण री छात खातर बा रोज धणी विनीत रो बलात्कार झेलणो पड़ै, म्हारी आतमा सागै बलात्कार ई तो करै, क्यूंकै मन नीं मिलै अर हियै हेत नीं रळै तो धणी-लुगाई रै दैहिक मिलाप में नर अर नारी रो मिलन ई रैय जावै। उणमें अेक री रजामंदी नीं होवै तो बलात्कार बण जावै। कांई इणीज भावां सूं अमूझती बा मालिक नैं राजी कर दियो? संतान नीं होवै तो मिनख री अरथी माथै केई आपरा बण संपत्ति रा हकदार बण जावै, गोदनामो करावै। मोहनराम चौधरी री गवाड़ी में ई सब इण सारू त्यार बैठा हा, पण चौधरी री धण केसर री पाकी सोच सूं बा बरसां पैली शरण आया सरूपा अर पारू रा बेटा नैं मोहनजी रो खून बताय'र बांरी मोटी रै लकड़ी देवण रो हक देय घर रो रुखाळो बणाय दियो। कहाणी अेक सस्पेंस साथै आगै बधै अर अंत में बो सस्पेंस खुलै—''म्हारा चौधरी नैं अगन उणरो खुद रो लोही देसी, अर हांडी शिव रै हाथ में पकड़ाय दी। पारू ई दोनूं हाथां री अेक-अेक चूड़ी उतार चौधरी री माटी री देह माथै राख दी।''

'काया री कळझळ' कहाणी दिनेश रै मनगत रा भावां री संवेदना जगावण वाळी बा कहाणी है, जिणनैं समाज अंगेजै कोनी। समाज सूं कट्योड़ो बो बरग जिणरी न्यारी दुनिया है। पण

मासी लिछमी अर उणरी नानी दिनेश रो साथ दियो। बो ऑपरेशन कराय'र आपरै साथी महेन्द्र साथै लुगाई बण'र रैवण रो तेवड़ लियो। कहाणी जिण भांत आगै बधै, उणरी कथ्य-सैली अलायदी है। लेखिका पूरो वातावरण बणावै। होळै-होळै उणरा कामां में सुघड़ताई, लुगायां जैड़ी जिम्मेदारी, सेवा रो भाव, पछै मेळै में लुगाई बण नाचणो। जाणै अै दिनेश री मांयली अमूझ अर थ्यावस रा थंभ हा। हद घरवाळा उणरी बात री गिनरत नीं करी तो बो फांसी खाय'र मरणो मांडियो अर अंत में नानी नैं सैंठी सांभणी पड़ी। थर्ड जेंडर रै रूप में समाज रा उण उपेक्षित वरग नैं ई मिनखापणो रो मान देवणो है। 'टूंटियो' लोकरंजन, लोकनाट्य, लोकसंस्कृति रो रूप, पण उण मिस लुगाई री मनगत, अमूझती, उकळती दब्योड़ी नारी देह री कळझळ ई साचै अरथां में पूरी चौड़ै-धाड़ै साम्हीं आवै। नीं चांवता थकां ई उमर रा अेक पड़ाव माथै मरदां री अगन बुझावणी पड़ै। लुगाई, लुगाई है—उठै बा सासू, भाभी, बैन, बेटी या नूंवी बीनणी नीं, फगत लुगाई है, अेक जैड़ी। 'मन री डोर' जिण माथै बंध्योड़ी होवै उठै ईज जुड़ै। तन तो स्नेहा अर उण मोट्यार रा अेक हुया, पण अेक रै होठां सुहैल रो नांव अर मोट्यार रै होठां कविता जिकी उणरी जोड़ायत रो नाम हो। देह तो माटी री, जिणरी तिरस बुझगी पण मन री डोर तो बंधै जठै ईज बंधै। 'हियै व्है सो होठां आवै' बा ईज बात स्नेहा अर मोट्यारसाथै होयी। संतोष चौधरी री कहाणियां में नारी रा कंवळा भावां साथै समाजू थितियां रो नूंवो दीठाव है।

'केसर रा छांटा' शकुंतला पालीवाल री कहाणी में नूंवा कथ्य निगै आवै। आ कहाणी भी काया री कळझळ री हामळ भरै। जठै संतोष चौधरी रो पात्र आपरा भायला साथै घर बसाय लुगाई जूण जीवणी चावै उठै शकुंतलाजी री नायिका रो घर बसण सूं पैली उजड़ जावै, पण बा पीहर आय'र समाज-सेवा रो बीड़ो उठावै। बा आपरी खामी नैं जीवण रो मंतर बणावै। 'केसर रा छांटा' आदिवासी समाज रो अेक उच्छब है। केसर घोळ'र गांव रा मौजीज मिनख रूंखां अर परकत नैं रुखाळै। जिण रूंख माथै छांटो लागै, बो काटीजै कोनी, बो पूजनीक बणजावै। अैड़ो ई छांटो छोरियां रै स्याणपणा री सैलाणी व्हिया करै। आंबवी कदैई नीं समझ सकी कै बो स्याणपण रो छांटो कांई है, पण आज बो उच्छब केसर रा छांटा रो आंबवी री अगवाई मनाईज्यो। बा खुद नैं अर्द्धनारीश्वर रूप में देख्यो, जिको शिव रो प्रतीक है। आपरै डील री कमी नैं कमी नीं जाणी। गौणां माथै सासरै गई अर दूजै ई दिन धणी पाछी पूगाय दी। उण दिन सूं समाज-सेवा करण रो धेय बणाय लियो।

कैवत है कै 'माथो बाढ'र देवो तो ई लोग कैवै खांगो है'। लुगाई रै त्याग में ईज उणरै बेचाल री बात करयां बिना समाज नीं रैवै। समाज तो छोडो, घर रा लोग ई सक करै। कांई लुगाई सूंदै मारग चाल'र मोटो काम नीं कर सकै? कांई उणरो सामरथ आद पुरुसां सूं कमतर है। बा समाज री नींव है। 'ढळता सूरज रो उजास' री प्रो. माधवी रो चरित्र ई ऊजळो पण नींव रै भाटै नैं कुण देखै। ऊपरी फरूकती धजा इत्ती क्यूं उडै? इणरो पड़ूत्तर फगत धजा कनै, बा कद बोलै? माधवी आज ई अबोली वृद्धाश्रम में सेवा रो काम अपणाय घर छोड दियो। अेक मिनख नैं तो जलम री देवाळ मां पछै बैन, बेटी, लुगाई रै रूप में ई मां मिलै, क्यूंकै बा हर रूप में पैली मां है, पछै दूजो रूप या किरदार। पण अेक लुगाई नैं तो जलम री देवाळ मां ई औ सुख देवै। इण संग्रै

री सगळी कहाणियां नूंवी कहाणियां है। कथन-सैली सूं कहाणी री विसय-वस्तु, पाठक रै हियै हाथ घालै, बो पढतो जावै। भासा में मेवाड़ी बोली री मीठास-मठोठ घणी मन भावै।

लारलै साल 2020 में छप्योड़ो कहाणी-संग्रै 'नेव निवाळी' किरण राजपुरोहित 'नितिला' रो दूजो कहाणी-संग्रै है। इण मांय राजस्थान री गांवठी संस्कृति सूं झीणी झळक है। केई बरसां पछै गांवठी संस्कृति रा मरता सबदां नैं इण कहाणी-संग्रै में सरजीवण होवता देख्या जाय सकै। उणां रा अरथ मिनखाजूण माथै कित्ता फिट होवै, अरथावू लागै। घर रा पड़वा में बरतीजण वाळा साधन मिनखां नैं मिनखाचारो, मरजादा, नीति री सीख देवै। नंदिता रै रूप में स्याणी होवती बारह-तेरह बरसां री किशोरी रै वय:संधि अवस्था रो वरणन, वामा रै रूप में अधूरी नारी भावनावां रो मरमपरसी वरणाव, जिणनैं मैसूस करण वाळी रमा भूआसा है। वामा नैं नारीत्व रो सुख मिलणो चाईजै, उणरी जूण अलूणी नीं रैवै, जीवण लूखो नीं रैवै, कित्ता खरा सबदां में बै आपरा भाई-भोजाई नैं कंवारी वामा अर संतजय रै नर-नारी संबंधां नैं जोड़'र पुन कमावण री बात कर देवै। अधरम नैं धरम बणाय राखण री कला इण कहाणी में है। जिकी धरती तिरसी रैवै बा नेपै नीं होय सकै, बंजर बण जावै। धरती अर लुगाई री रीत अेक। लुगाई जूण मांय उमर परवाणै आवता बदळाव, परकतरूपा नारी मन में हेत-हिंवळास पांगरतो रैवै। केई बार देह उमर बतावै, पण मन सोळा बरसां रो बण पाछो फ्लेस बैक में जावण री खैचळ ई नीं करै, जावै ई परो। समाज रा काण-कायदा, रीतां-पातां, धरम अर नीति री जाडी जेवड़ी सूं बडेरा बांध'र राखी है। मन नैं कोई कीकर बांधै। जे बो आतमा रा मेळ सूं काम करै तो चौगणो चाव बधै अर जे मन अनीति कर बेलगाम घोड़ो बण जावै तो इण धरम री जाडी जेवड़ी रा सटीड़ पड़्यां बिना नीं रैवै। नीति री नकेल अैड़ी घालै कै मन डाफाचूक, हाणफाण होय'र पाछो ठाणो झेल ई लेवै। किरणजी नारी देह रो विग्यान अलायदो बतायो है। नर-नारी संबंधां नैं परकत सूं जुड़ी अेक प्रक्रिया पण कैवै, जिणसूं तन-मन तिरपत होय जावै। आप फ्रायड रै सिद्धांत री बात ई करै। मन बेलगाम घोड़ो है, मन री गति असीम अर अणंत रै उण पार तांई है। मन रा लाडू खावणा कोई यूं तो नीं कैवै? बैठा अठै हां अर मन बो जाय... बो जाय...। मन नैं कोई कीकर पकड़ै, कीकर रोकै? कीकर थाम सकै? पछै मन सूं छानी चोरी कोनी, मन जाणै मनां रा घाव जाणै। बो सावळ-कावळ सब सोचलै, पण आतमा जिकी परमातमा रो अंस है उणनैं सूंवै मारग जावण रा जाझा जतन कर सद्बुद्धि देवै। मन भटकाव सूं बच जावै। मन कीं अपजोगती करणी चावै तो अेक सबद पण? उणसूं पाछो पड़्त्तर मांगण या जाणण नै त्यार रैवै।

घर री 'थळगट' मरजादा है तो 'आगळ' नैतिकता है, धरम है। मरजादा री रुखाळी है। सामाजिक रीत है। कैवत ई है कै चोरां रै कैड़ा ताळा? ताळा साऊकारां रै वास्तै। ओढाळ्योड़ी डोढी अर जड़्योड़ी आगळ मन नैं काबू करण रा चाबुक है। मधु रा विचार जाण'र सासू सूखी जमीं हरी होवै। बगत परवाणै बदळाव, लुगाई री पीड़ नैं जाणणो, मैसूस करणो अर आई अबखाई रो निवेड़ो आपरी कहाणियां में है। नर-नारी संबंधां नैं इलेक्ट्रान अेकलो है तो ऋणात्मक सूं चाव नीं आवै, प्रोटोन मिलतां ई उणमें चाव रो संचार होवै। जित्तै दोनूं अेक नीं होवै नर-नारी बित्तै वै न्यूट्रान ज्यूं आवेश बिना उदास, नीरस, अेकलपा जैड़ा भावां सूं पीड़िजता रैवै। बांरो मन

रीतो रैवै। इण भांत आपां मिनख रै भावां नैं विग्यान री दीठ सूं ई जाण सकां। किरणजी री कहाणियां में चौड़ै-धाड़ै नारी देह रा रंगभीना चित्राम सबदां मंड्योड़ा, फाबता नै ओपता लागै। 'नेव निवाळी' में कंवळो, थळी, आगळ, पड़वा री बणगट में काम आवण वाळी सैंग चीज-बस्त—चांदो, कण्काी, बरंगो, नेवा, गार, मुरड अर पछै लेवड़ां री बात कर जाणै स्रिस्टी री रचाव, बसाव अर पछै परळै री चेत करावै। घर बणावण रा सगळा साधन मिनखाजूण सूं जोड़'र आपरै सिरजण पेटै परोटीज्या है। घर मिनख रो आसरो कहीजै। पैली लोग पूछता कितरा आसरम है। घर में ठैराव-बसाव री ठौड़ (कमरा, पड़वा, छान, ओरो, तिबारी) उण आसरै नैं बणावण वाळो मिनख खुद कितरो बंध्योड़ो है उणसूं? घर कच्चो कै पक्को, पण बणावण वाळो कुण? अेक कारीगर, जको साचो सिल्पी है। देखण वाळो उणनैं देखै, फेर उणरै बणगट नैं मन मुजब कथै, उणीज भांत किरणजी अेक सिल्पकार री भांत निरवाळै सिल्प सूं आं कहाणियां नैं कथी है।

आज री राजस्थानी कहाणी आंगणै सूं पांवडा भरती आभै अड़ती दीखै। नारी-विमर्श नैं लेय'र खुल्लै-खाळै लेखिकावां लिख्यो है, जिको सास्वत साच है। अणजाण कुण? ओछी सोच नैं पसवाड़ै न्हाख'र कहाणियां रा पात्र आगै बधता दीखै। सासू रो चरित अबै पैली वाळो कोनी तो समाज नर-नारी सूं अलायदी तीजी जूण नैं हियै में ठौड़ देवण लाग्यो है। अवस ई राजस्थानी कहाणी जात्रा रो भविष्य ऊजळो है।

◆◆

मोनिका गौड़

राजस्थानी उपन्यासां मांय नारी-विमर्श

(महिला उपन्यासकारां रा उपन्यासां रै संदर्भ मांय)

किणी भी सभ्यता री विकास जात्रा साहित्य री भेळप बिना आगली पीढी तांई नीं पूग सकै। वाचिक परंपरा सूं आखरां रै ढाळै ढळती साहित्य री विकास यात्रा आगै बधती, फलांगती, जूनी-नूंवी परम्परावां नैं पोखती, पांगरती अर सामाजिक बदळाव नैं दिखावण अर अंवेरण रो अेक जरियो हुवै।

राजस्थानी भासा रो तो खुद रो अेक गीरबैजोग इतियास है। सईकां री धरोड़ नैं अंवेरण रो काम भासा माथै ई हुया करै। श्रुति सूं लेख तांई री इण जात्रा में केई पड़ाव छूट ई गया होसी, पण भासा जद आखरां री आंगळरी पकड़'र टुर व्हीर हुयी तो आपरै काळ रा सुख-दुख, पीड़, अंवळायां-अबखायां नैं आपरै खजानै में भेळी करती रैयी। उण खजानै नैं फिरोळियां ठाह पड़ै कै बदळाव रा कित्ता नगीना, रतन या कित्ता कांकरा है। हरेक बगत रा लिखारा आपरी समझ मुजब इण थाती नैं संभाळै अर कीं नूंवा एंगल काढ'र आपरी पीढी नैं सूंपै।

राजस्थानी भासा ई आपरी सभ्यता, संस्कृति अर संस्कारां नैं सांभ राख्या है, साथै ई राजस्थान रो राजस्थानीपणो भी चोखी तरयां अंवेर रख्यो है।

राजस्थानी साहित्य में वीरता, भगति, प्रेम, त्याग, वैराग, दर्शन, अध्यात्म अर जीयाजूण सूं जुड़्या सगळां विसयां माथै अठै रा लिखारा आपरी कलम सू अलेखूं चितराम मांड्या है, जकां नैं पढतां ई उण बगत विसेस री सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियां रै साथै-साथै मानखै री स्थिति रो भान हुवै।

गीतां रै जरियै कंठां सूं लोक साहित्य सहेज्यो गयो। आखरां पाण अमिट रैयो। धूप-छांव, आंधी-मेह, सीत-घाम ज्यूं बगत री लूवां-डांफरां सूं बाथेड़ो करतो साहित्य आपरो धरम निभावण री बस पूगतां पूरी आफळ करी है। इणीज कारण आपां इक्कीसवीं सदी रै आंगणियै बैठा थकां ई बीत्योडै सईकां नैं समझ सकां हां।

सभ्यता री विकास जात्रा कदैई मधरी, कदैई खतावळ भरी रैयी। साहित्य इणनैं चोखी तरयां सांभ'र राखी। साहित्य री काव्यधारा छंद सूं मुक्त छंद ताई आयी। गद्य कथा-वार्ता सूं कहाणी, रेखाचित्र, संस्मरण अर डायरी सूं गुजरतो उपन्यासां तांई आयो।

माजीसा री बाड़ी, बीकानेर (राज.) 334001 मो. 9829610939

आजादी सूं पैली अर बाद में खास तौर सूं लारला बीस बरसां मांय जित्तो डाफाचूक करणियो बदळाव हालिया पीढी देख्यो है, उणनैं सबदां मांय ढाळणो अर बांधणो मुस्कल काम।

मशीनीकरण, नगरीकरण, गमता गांव-गवाड़ी रै साथै उपभोक्तावाद, शिक्षा रो प्रसार, व्यक्तिगत स्पेस सूं लेय'र फोन सूं वीडियो कॉल तक री लांबी छलांग सूं आगली, लारली कम सूं कम तीन-चार पीढियां नैं अेकै ठौड़ लाय'र ऊभो कर दियो है। आं बदळावा रो सीधो असर रोजमर्रा री जिंदगाणी में दिखै तो साहित्य ई किण भांत उणसूं अळगो रैय सकै!

सगळा जाणै कै राजस्थानी साहित्य में सईकां तांई मरद-सत्ता रो बोलबालो रैयो। अठै तक कै स्त्री मनगत नैं ई पुरुस ई आपरी लेखनी सूं सगळां साम्हीं लावण रो काम करता रैया है। स्त्री-चेतना रा सुर छिद्दा-माड़ा मिलै साहित्य में। उणां री हाजरी लोकगीतां, हालरिया, हरजस अर बन्ना-बन्नी तांई रैयी।

मीरां बाई, समान बाई, गवरी देवी जैड़ा आंगळ्यां माथै गिणीजण वाळा नांव ई भक्ति रै खातै खताईज्या। मां मीरां नैं अवस औ श्रेय दियो जाय सकै कै बै आपरै बगत री दशा-दिशा नैं सांवरियै रै मिस आपरै गीतां-पदां में मांड्यो है।

पण स्त्रीलेखन में सून्याड़ ई रैयी। आजादी पछै लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रो नांव लियो जा सकै। बै कीं पारंपरिक साहित्य-सिरजण सारू ईज काम कर्‌यो, स्त्री-चेतना, उणरी मनगत नैं बै ई खास तवज्जो नीं दी। इण बिचाळै सावित्री डागा, आनंदकौर व्यास, प्रेम जैन, कमला कमलेश, जैड़ी लेखिकावां आपरी कलम सूं अेक ओळखाण दी। स्त्री रै अंतस भावां नैं साम्हीं लावण री आफळ करी। हालांकै आदर्श, त्याग, मर्यादा रो भाव लेखन में प्रमुख हो। कहाणियां, कवितावां माथै काम भी घणो ई होयो, पण आधुनिक गद्य विधावां, जियां—रेखाचित्र, संस्मरण ,डायरी, रिपोर्ताज अर उपन्यास पर उल्लेखनीय काम नीं हुयो। हालांकै पुरुस लेखक लगोलग राजस्थानी भासा में सिरजण कर रैया हा। आ गीरबै जोग बात है कै राजस्थानी भासा सगळी वैश्विक विधावां नैं परोटण रै सागै नूंवो रचाव भी कर सकै। भासा विरोधियां रो मूंडो बंद करण मांय साहित्यकारां री महताऊ भूमिका है। साहित्य री आधुनिक विधा उपन्यास में पुरुसां रा नांव ई आंगळ्यां पर गिणावण जोग है। लगैटगै 108 राजस्थानी उपन्यासां रै ताण शिवचंद्र भरतिया रै 'कनक सुंदर' सूं सरू हुयी आ उपन्यास जात्रा श्रीलाल नथमल जोशी रै 'आभै पटकी' अर अन्नाराम सुदामा रै 'दूर दिसावर' सूं होवती मधु आचार्य रै 'गवाड़' रै सागै आगै पूरण शर्मा पूरण रै होम ताईं री अेक लंबी सूची बणै।

जठै तक कविता, कहाणी री बात है, इणमें लेखिकावां गीरबैजोग काम कर्‌यो है, पण गद्य री बीजी विधावां री बात हुवै तो महिला लेखन में मून फैल जावै। खास तौर सू उपन्यास लेखन री स्थिति पुरुस लेखकां री तुलना में थोड़ी मौळी है। फेरूं ई इण साहित्यिक सून में आपरी लेखनी सूं नूंवा गीत रच'र आपरै होवण नै थापित करती लेखिकावां में बसंती पंवार, जेबा रशीद, मनीषा आर्य सोनी, अन्नूश्री राठौड़, सीमा भाटी, डॉ. रेणुका व्यास नीलम अर संतोष चौधरी आद रो नांव लियो जा सकै।

खास तौर सूं लारलै बीस बरसां रै साहित्यिक परिदरसाव नैं देखां तो बसंती पंवार रो 'सौगन', मनीषा आर्य सोनी रो 'आठवीं कुण', सीमा भाटी रो 'हेत री हूंस', अनुश्री राठौड़ रो 'जीया जूण रा कापा', डॉ. रेणुका व्यास रो 'धिंगाणै धणियाप', संतोष चौधरी रो 'रात पछै परभात' जैड़ा उपन्यास अेक ताजगी रो अैसास करावै अर सागै इण बात री संभावना ई जगावै कै आवण वाळै बगत में लेखिकावां री भागीदारी बधैला, नीं फगत गिणती री दीठ सूं बल्कै गुणात्मक स्तर माथै ई। फिलहाल, आं उपन्यासां री जे कप्पड़छाण करां तो केई बातां साफ निगै आवै।

लेखिकावां नैं घुट्टी में मिल्योड़ा नैतिकता, त्याग, समर्पण जैड़ा संस्कार लेखन में भी साफ दीसै। बगत रो बदळाव आं उपन्यासां में है, पण जियां नूंवी बीनणी संकती, सरमावती पग मेलै, इणीज भांत लेखन में सामाजिक बदळाव घूंघटै री ओट लियां दिखै, चटकै हुया भौतिक बदळावां नैं तो घणी सोरपायी सूं मांड्यो है, पण मनगत री मुखरता में संको है। फेरूं ई रसोई रै आंगणै सूं बारै आभो नापण निकळी स्त्री अबार ई जिम्मेदारियां रै चक्रव्यूह में अभिमन्यु दांई उळझ्योड़ी है। औ उळझाव लेखन में निगै आवै। आपरी पिछाण, ओळखाण नैं सोधती जड़ां सू ऊंडी जुड़्योड़ी है।

उपन्यासां में पसवाड़ो फोरतै बगत री फिरोळ करता कीं बदळाव रेखांकित करया जाय सकै।

परिवेश : उपन्यास रो कैनवास खासो मोटो हुयो है। छोटै गांव-कस्बै सूं लेय'र महानगर भी कथावस्तु में आधार ज्यूं बरतीज्यो है। केळू रा घर, छपरा, ओबरी रै साथै डीघी बिल्डिंगां, बैलगाडी सूं मोटर-कार ई सहजतां सूं कथा-वस्तु री जरूरत मुजब आया है। घाघरो, लूगड़ी, साड़ी सूं जींस तक रो सफर तै हुयो है। रोजमर्रा रा छोटा-छोटा रीत-रिवाज—भात मुकलावो, नातो, झगड़ो, पीळो, सेवरो जैड़ा सबदां सूं आंचळिक परिवेश ई परतख हुवै। लेखिकावां घणी खामचाई सूं इणनैं सहयोगी पात्रां रै रूप में बरत्यो है।

विसयां री विविधता : विसयगत रूप सूं देखां तो विसयां री न्यारी-न्यारी छिब मिलै। महिलावां सूं जुड़्योडा विसयां माथै बांनै आपरी मनगत नैं आपरै मुजब कलम रै ढाळै ढाळण रो हक है। शिक्षा री जोत चेतन हुयां पछै भूमिकावां भी बदळी है, तो बदळाव लेखन में आवणो लाजमी है। इंटरनेट चलावण वाळी लेखिकावां परंपरा नैं परोटती थकीं स्त्री-संघर्ष रा अलायदा रंग अर ढबां नैं रच्या है। टूटतै-खिंडतै परिवारां री पीड़, विधवाविवाह, प्रेम री सात्विकता, मर्दसत्ता सूं बगावत, परित्क्यता, नौकरी करणी अर उण सूं उपज्या सवाल, अेकल महिला, अेकल मां री अबखायां नैं साम्हीं लावण में लेखिकावां समर्थ हुई है। स्त्री-मन री अंवळायां-कंवळायां नैं चोखी तरियां सबदां रो बानो पहरायो है।

आं उपन्यासां री कीं मूळ बातां अर बदळाव आवण वाळै बगत रै साहित्य री दशा-दिशा नैं तय करसी। विगत रो अनुभव अर आगत री हुंकार रै साथै अेक मोटो कैनवास खोलै। कसमसीजती स्त्री री पसवाड़ो फोरण री आफळ रा मंडाण पण है।

भूमिकावां में बदळाव : कदैई मजबूरी अर कठैई आपरी इच्छा सूं स्त्री जद घर री थळगट छोड'र रोटी कमावण सारू निकळी, आरथिक आजादी आयी तो समाज अर परिवार में उणरी आवाज भी सुणीजण लागी। सामाजिक भूमिकावां रो डायनैमिक बदळ्यो। लेखन में अै बदळाव आवणा ईज हा। संदर्भित उपन्यासां में भी सामाजिक उथळ-पुथळ मूळकथा रै रूप में है।

'सौगन' री मंजू हुवै, चायै 'रात पछै परभात' री नायिका। पर्स में आपरै पसीनै रा नोट सांभता भी अंतस री मिठास अर ममताळु स्वरूप कायम राखै। पाई-पाई नैं तरसती अस्मिता अेक सुघड़ सशक्त घरधिराणी अेक सफळ कामकाजी महिला रै स्वरूप में साख्यात दुर्गा ज्यूं लखावै। आपरी कमाई रै पाण खुद रो आपो तो संभाळै ईज है, साथै ई पतिरूपी जीव नैं तो परोटै ई, सागै बदळती भूमिकावां, पसवाड़ो फोरतै सामाजिक परिदरसाव नैं भी चवड़ै करै।

अै उपन्यास स्त्री री मनगत, अस्मिता, आपरै पगां ऊभण री हूंस अर बदळाव री झलक नैं देखण रा झरोखा अर बारियां है। भविष्य में भी अै कहाणियां-पात्र बदळाव री सींव मांडसी।

आ भूमिकावां नैं आपरी आफळ सूं समझण, समझावण री कोसिस करती स्त्री आपरै पांति रो मान, सम्मान, हक मांग रैयी है। 'जकै री खावां बाजरी, बांरी भरो हाजरी' रा पुरुसपरक मुहावरा नैं गलत साबित कर रैयी है। ज्यादातर लेखिकावां खुद भी नौकरी करै है। बै परिवार में निर्णायक भूमिकावां मांय है। आर्थिक आजादी री भोम माथै ऊभी थकी आपरी ओळखाण नैं सोध रैयी है, बणा रैयी है, पण जियां निजू जीवण में ई बै आपरै संस्कारां नैं परोटै उणीज भांत बांरी नायिका भी आपरी चेतना, चिंतना में इत्ती ऊपर उठै कै मरद-सत्ता नैं उणरै आगै झुकणो पड़ै। पण औ झुकणो, पुरुस नैं दबाणै कै नीचै दिखाणै सूं साव अलायदो है। इण तथ्य नैं भी थापित करै कै आपरी लुळतायी, ममता नैं अखूट राखतां थकां ई पईसा कमाया जा सकै, साथै ई परुस रो मान-सम्मान बच्यो रैय सकै।

कर्तव्य निभांवती महिला आपरै हक सारू कोई भी हद तक आ सकै। आर्थिक स्वावलंबन वैचारिक मजबूती रो आधार बण रैयो है। खास बात आ भी है कै स्त्री पात्र पुरुस सूं बदळै री भावना नीं राखै, बां जियां आर्थिक आजादी कै मुगती री आड़ में शोषण री पैरोकारी नईं करै। लेखिकावां आपरै स्त्री पात्रां सूं थ्यावास भी दिरावै कै मिनखाचार ई अेकूको मोटो धरम है। चावै कोई भी स्थिति हुवो, उणरी रिछ्या करणी जरूरी है।

परंपरा नै बदळण रो साहस : महिला लेखन जात्रा में अैड़ा केई मोड़ है जठै परपंरा रो मुखमलिया बदळाव पाठक नैं आनंदित करै। अेक बीज उणरी चेतना में छिड़कै जिकै सूं औ बदळाव स्थायी जड़ां पकड़तो लागै। मानवी जीवण नै रूंधण वाळी रूढियां री जकड़बंदी जकी, उणरै विगसाव में आडी आवै, उणनैं तोड़णो जरूरी हुया करै, लेखिकावां परपंरा अर रूढि रै झीणै आंतरै नैं समझ्यो अर आपरै कथ्य-कथण री बुणगट में घणी खामचाई सू गूंथ्यो है। विधवा-विवाह रै नांव माथै सळ घालतै समाज नैं उण सारू त्यार करण रो जिम्मो जिण भांत लेखिकावां लौकिक जीवण में ई उठायो अर निभायो है, इणीज भांत आपरै लेखन सूं भी आ मौन क्रांति पैदा करी है। आं उपन्यासां नैं पढतां केई सबळ महिला पात्र समाज में दीखण लागै। उणां रो संघर्स, अबखायां समझ में उतरै। पाठक री चेतना जद काल्पनिक कथावां में पड़तख दाखला देखणा सरू करै तो रचना अर रचनाकार नैं सफळ समझणो चाईजै। साथै ई अेक बात और रेखांकित करती आगै बधै कै शिक्षा हर बदळाव रो मूळ हुवै।

मनगत रचण री आजादी : आज री मनगत नैं समझै ईज नीं बल्कै कैवै, लिखै। जिण भांत न्यारा विसयां माथै कलम चलावण री हूंस दिखाई है, बा सरावण जोग है। बदळाव नैं मांडता अंकै ई नीं संकै, चायै दैहिक आजादी री बात हुवो या कूख रो धणियाप लेवणो हुवो, जेंडर

भूमिका या यौनिकता री बात हुवो, अै निरभै होय'र आपरी कलम चलाई है। औ लाजमी भी है, क्यूंकै समाज सशक्तीकरण अर स्त्री आजादी री जकी घालमेल हुई है, उण रा दुष्परिणाम देखण-सुणण रै सागै भोग ई रैयी है।

'धींगाणै धणियाप' री नायिका हुवै या 'हेत री हूंस' री निष्ठा। बै छोरै-छोरी रै कुदरती भेद नैं सामाजिक भूमिकावां अर भेस पैरावै री घालमेळ में पजायां अेक जीव किण भांत दुख पावै, इण मानसिक घाण-मथाण नैं लिखण री जोरदार कोशिश करी है। जेंडर यानी समाज द्वारा तय करयोड़ा नेम-कायदा स्त्री-पुरुस री भूमिकावां है, जद कै यौनिकता कुदरत रो उपहार है। समाज में अेक मोटी चूक आ होय रैयी है कै आदमी-लुगाई री बराबरी अर समानता नैं बाहरी पहरावै छोटा केश, पैंट-बुशर्ट पहरणो, नशो-पत्तो करण नै मान्यो जा रैयो है। औ भौतिक दिखावो जेंडर गेप नैं नीं बल्कै कोई छोरै नैं माडाणी छोरै जियां रैवण पर मजबूर करणो है। मासूम मन बाहरी पलकै नैं साच मान लेवै। कुदरत री दियोड़ी भेंट यानी आपरी स्त्रीत्व री पिछाण सूं दूर भाजै, पण कद तांई? आखिर तो आपरै अस्तित्व सूं रूबरू होवणो ईज पड़ै। अैड़ी स्थिति सूं बाथैड़ा करता केई चरित्र आपांणै आजू-बाजू ईज है। मानसिक अर सामाजिक चक्रव्यूह में फंस्योड़ो जीव आखिर अपघात नीं करै तो दूजो कांई तोड़ है? छोरी नैं तो छोरै दांई राखण नैं त्यार, पण जे छोरै नैं छोरी दांई राख्यो जावै तो? औ 'तो' ईज सगळी चिंतावां अर विमर्श नैं जलम देवै, साथै ई समाज री दोगली रीति-नीति रो पड़दो फाश भी करै। स्त्री नैं देवी मानणियो समाज उणनैं इंसान नीं मान्यो। स्त्री री सहनशक्ति, धारणखिमता, उण रा सगळा गुण पितृसत्तात्मक समाज में हथियार रूप बरतीजी। पण आज री लुगाई इण अन्याय रै साम्हीं छाती ठोक'र ऊभी है। आपरै पांती रो पानो पावणो चावै। जेंडर नैं समझती थकी आपरी आवाज सूं दाकळ देवण रो जबरो काम ई आज री लेखिकावां घणी खामचाई सूं करयो है।

लेखिकांवा शिल्प, बिम्ब, प्रतीकां रा नूंवा प्रयोग रंज-रंज करया है। भासा री लुळताई, कंवळाई नैं अखंड ई राखी है अर सागै आंचळिक परिवेस सूं रचना नैं नूंवा आयाम ई दिया है।

नितार : राजस्थानी महिला उपन्यासकारां आपरी कलम री कोरणी सूं समाज, व्यवस्था, मिनख अर उणरी ऊंडी चिंतना, स्त्री री बदळती भूमिकावां साथै उणरी जूझ रा सांतरा चितराम मांड्या है। उपन्यासां रै पात्रां रै जरियै स्त्री-विमर्श री बात सखरै ढंग सू मांडी है। तकनीक रै साथै आधुनिक गैजेट्स नैं कैवटतां आपरी मनगत नैं मुखर करी है। सबदां रै बहानै मन में उकलतै भावां नैं अंवेरयो है। आं उपन्यासां अेक आस तो जगाई है, पण घणो कात्यां पछै ई घणोई कातणो बाकी है। आधुनिकता री पैरोकारी करतां कीं संकती-सी लेखिकावां स्त्री री पारंपरिक त्याग, समर्पण री छिब रै मोह सूं पूरी नीं निकळी है। स्यात बांनै औ डर लागै कै कठैई बांरी निजू छिब पर आंच आ सकै? पाठक बांरै पात्रां में लेखिका नैं देखणो-जोवणो सरू कर सकै। कथ्य रै स्तर पर खासा सुखद बदळाव दिखै, पण अबार ई घणाई अैड़ा विसय है जिण माथै स्त्रीपक्ष या नजरियै सूं लिखण री दरकार है, चायै 'लिव इन...' री बात हुवो, थर्ड जेंडर, सास बहू रै बदळता रिश्तां या यौन हिंसा, कार्यस्थल पर मानसिक शारीरिक शोषण, अवसाद आद रा मुद्दा हुवो।

लेखिकावां व्यवस्था सूं टकरावण री हूंस तो दिखाई, पण पैलां हद तांई सहन करती स्त्री रै रूमान नैं रच्यो है, स्त्री रो सुतंतर अस्तित्व अजै लेखन में आवणो बाकी है। लेखन में अेक झिझक है, जकी समाज रै गळ्योड़ै-सड़्योड़ै तानै-बानै नैं सहेजै है। अबार ई चरित्र बेलड़ी सरीसा मरद-पात्र में आपरो भविष्य सोधै। आपरै मत्तै खड़्यो होवणो शेष है, आपरै जुद्ध रो खुद ई सेनापति, सैनिक अर विजेता बणण में कीं कसर है, अेक झिझक है जकी उठता पगल्यां नैं ठिठका रैया है।

गीरबै जोग बात आ भी है कै आज री लेखिकावां हरावळ में शामिल है। आ उम्मीद छाती ठोक'र करी जाय सकै कै अेक लीक पर बैंवता थकां बै बदळाव रो अेक निरवाळो मारग सोध्यो है। अब बै आपरी मांयली स्त्री री दैहिक, मनोवैग्यानिक तिरस, उणरो भौ, हरख, मांयली कळझळ, मुल्क नैं बिना संकै पड़तख करसी। आपरी ओळखाण रा पगल्या मांडती पीढी रै प्रयासां नैं साधुवाद है।

आपरी सांस्कृतिक धरोड़, आंचळिकता नैं अंवेरता-परोटतां जिण भांत री त्यारी आं उपन्यासां में दीसै, बा भविष्य कानी संभावना री पूरी अेक खिड़की खोलै कै आवण वाळै बगत में आं नींवां माथै, नूंवा विचार, कंटेंट, ट्रीटमेंट, शिल्प, बिंब-प्रतीकां सूं जड़्योड़ी मंजिला खड़ी होसी, जिण पर राजस्थानी भासा अर साहित्य नैं गुमेज होसी।

◆◆

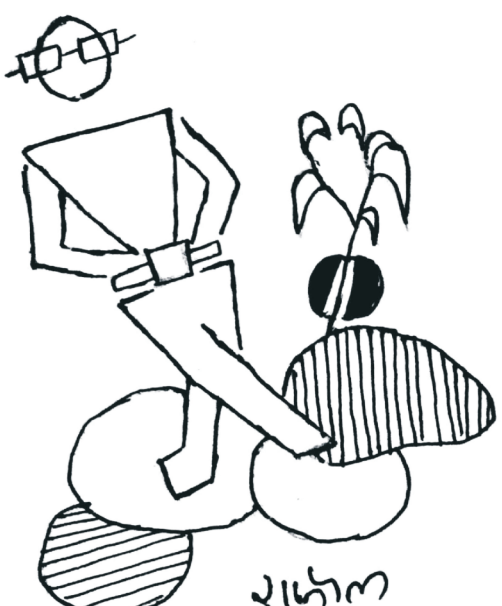

रेखा लोढ़ा 'स्मित'

परंपरा अर संस्कृति रै विकास में महिला लेखन री भूमिका अर योगदान

(राजस्थान रै संदर्भ मांय)

संस्कृति अर परंपरा किस्या भी समाज अर खेत्र री ओळखाण व्हिया करै। मिनख जद सूं सामाजिक ढांचै में जीवण जीवा री सरुआत करी तद सूं ई उण रा नित रोज रा कामां सूं लेय'र सामाजिक वैवार सब किस्या न किस्या कायदा में बंध्या थका है। बात, वैवार, रैण-सैण रा अै कायदा ईज परंपरावां बाजै। अै परंपरावां अेक मिनख अर अेक परिवार सूं सरू होय'र उणीज परिवार तक सुकड़ीज'र ई रैय सकै अर समाज रा दूजा लोगां री मान्यता पाय'र सारा ई समाज री, खेत्र री परंपरा भी बण सके। अै परंपरावां परिवार अर छोटा समूह सूं निकळ'र बडै समूह अर खेत्र री परंपरा बण जावै। असी परंपरावां ई आगै जाय'र उण खेत्र नैं समाज री संस्कृति बाजै। संस्कृति इ उणी समाज अर खेत्र री सोच, विचार, वैवार नै उणां री दीठ व्हिया करै। बां परंपरावां अर संस्कृति रै आधार माथै ईज उण समाज अर खेत्र रो बरताव अर वैवार व्हिया करै। मिनख सरुआत सूं ई प्रगतिसील जीव है। जद सूं स्रिस्टी सरू हुयी, तद सूं आज तलक मिनख री जीवणचर्या अर सोच, विचार अर वैवार में केई बदळाव व्हिया अर आज ई व्है रैया है। यो बदळाव कदैई सकारात्मक होवै है तो कदैई नकारात्मक भी व्है सकै। सकारात्मक बदळाव ई परंपरा अर संस्कृति रो विकास बाजै।

आपणो देस न्यारी-न्यारी संस्कृतियां अर परंपरावां री भेळप रो देस है। अठै हरेक राज्य री न्यारी-न्यारी सांस्कृतिक ओळखाण है। इणमें राजस्थान तो आपरी रंगीली तबियत सूं ईज पिछाण्यो जावै, पण जियां-जियां तकनीक अर विग्यान रो विकास हुयो, बियां-बियां अेक खेत्र अर समाज रा लोगां रो दूजा खेत्र अर समाज रा लोगां सूं मेळजोळ अर वैवार रा अवसर बदळावा लागग्या। ईं मेळ-मिलाप सूं यां खेत्रां रा सांस्कृतिक मूल्यां रो आपसी लेण-देण व्हैणो सरू व्हैग्यो। ईं सूं लोगां रै रैण-सैण, खाण-पीण, विचार-वैवार में खासो बदळाव आबा लागग्यो। इणसूं परंपरावां में बदळाव रै साथै सांस्कृतिक विकास भी हुयो अर समाज में आधुनिक अर तकनीकी स्तर माथै भारी आंतरो भी दीख्यो।

आपणा देस अर विसेस करनै राजस्थान री घणकरी परंपरावां महिलावां पे केंद्रित निजर आवै अर आवै भी क्यूं नीं! अेक महिला परिवार री धुरी अर समाज री रीढ व्है। कैवै है—अेक

सी-207, आलोक स्कूल रोड, सुभाष नगर, भीलवाड़ा 311001 (राजस्थान) मो. 9829610939

पुरुस कोरी अेक इकाई ईज व्है, पण अेक महिला अेक पूरी संस्था व्है। इणीज वास्तै किणी भी संस्कृति रा बेसी भाग में महिलावां री भूमिका घणी महताऊ होवै। अेक महिला ईज मिनख री पैली गुरु व्है। अेक टाबर रै जलम रै पछै उणनैं मां जो भी बरताव, वैवार सिखावै या यूं कैवां कै टाबर नैं संस्कार देवै, बो परंपरा अर संस्कृति नैं हस्तगत करणो ईज व्है। ईं बात रो अरथ आपां यूं भी लगा सकां कै हर परंपरा महिला रै हाथ सूं निकळ'र ई आगली पीढी तांई पूगै।

मतलब समाज री घणकरीक परंपरावां अेक महिला रै जीवण पर बेसी प्रभाव न्हाखै। परंपरावां अर संस्कृति उण समाज री नित रोजरी चर्या भी व्है अर उणां री पूजा-पद्धति, खाण-पीण, ओढण-पैरण रो तरीको भी व्है। जितरा भी बरत-वास, पूजा-नेम, रीत-भांत होवै उणां में महिलावां री ई खास भूमिका दीखै। जिण बात, वैवार सूं महिलावां बेसी प्रभावित व्है, बां बातां नैं समझणो, उणां रो समाज पे पड़बा वाळो आछो-बोदो प्रभाव अेक महिला ईज नेड़ै सूं समझ सकै।

मिनख सरू सूं ई ईस्वरीय सत्ता सूं भै खावै। ईं कारण आपणा बडेरा आपणी परंपरावां रो पक्कायत पाळण करावा सारू उणां नैं धरम री खौळ पैरायी। जीवण जिण सोळा संस्कारां में बंट्योड़ो है, उणां संस्कारां नैं अपणावा रै वास्तै उणां नैं भी धारमिक रंग दियो।

अै बरत, पूजा री बेसी परंपरावां तो समाज री भलाई सारू ईज व्है अर प्रकारांतर सूं परकत री हेताळू पण व्है। बांरै मिस रूंखां सूं प्रेम अर उणां रै जीवण सारू महत्त्व बतायो जावै। नीम, पीपळ, बड़, आंवळी, कैळ रो पूजन करनै रूंखां रो महत्त्व बतावा री ई खैचळ करी जावै। चांद, सूरज, नदी अर पोखर रो पूजण जळ अर परकत री दूजी चीजां, नखतरां रो महत्त्व समझावै, सिखावै। पण कीं परंपरावां नासमझी कै बगत री जरूरत मुजब व्है सकै। किणी बगत जरूरी नै सही री व्है पण बगत निकळ्यां पछै उणां रो कोई महत्त्व नीं रैवै। बै अेक कुरीति बणनै समाज में सड़ांध फैलावा लाग जावै। असी परंपरावां सतीप्रथा, बालविवाह, औसर-मौसर, डायजो, नाताप्रथा, आंटो-सांटो, बहुविवाह जिसी कुरीतियां, जिणां रो समाज पे तो बुरो प्रभाव पड़ै ई पड़ै, पण महिलावां री तो जिनगाणी ई दोरी व्है जावै। कैवै है कै जो भोगै बो ही जाणै। महिलावां ईं सब थितियां नैं घणै नेड़ै सूं देखै, भोगै तो अणां पे अधिकार सूं कोई भी बात बै ईज कर सकै।

साहित्य सरू सूं ई समाज री आरसी बाजै। जका ई लिखारा व्हिया बै समाज री आछी-बोदी बातां नैं मिनखां साम्हीं लावा री खैचळ करता रैया। पण म्हैं ऊपर भी मांड्यो अर अठै फेरूं कैवणो चावूं कै भलांई आपणो समाज पुरुस प्रधान रैयो है, पण संस्कृति अर परंपरावां नैं निभावा अर आगै बधावा री खैचळ महिलावां ईज करती रैयी है। तो उणां रो बखाण भी महिलावां ईज बेसी सुथरा तरीका सूं कर सकै। इणीज कारण महिलावां रा लेखण री भूमिका लूंठी व्है जावै।

वैदिक काल में ई महिला लेखण री बहुतायत रैयी व्हैला, पण उणरा बेसी प्रमाण देखबा में नीं आवै। उण बगत रा साहित्य रो रचाव भी संस्कृत भासा अर पछै पाली, प्राकृत में ईज मिलै। वैदिक काल रै पछै महिलावां री सामाजिक स्थिति में केई बदळाव व्हिया। महिला नैं दोयम दरजो मिलबा लागग्यो हो, पण फेर भी समाज रै पेटै आपरी जिम्मेवारी निभावा में महिलावां लारै नीं रैयी। भक्तिकाल में मीरां बाई, समान बाई अर केई जैन साध्वियां अर छत्र कुंवरि, सूरज कुंवरि जिसी लेखिकावां उणी समै रै समाज री थिति रै मुजब लेखन कीधो। सबळ नै ठावी परंपरावां नैं अपणाबा रै साथै बोदी परंपरावां नैं छोडतां बांरी दीठ उणां रै लेखन में दीखी।

आधुनिक काल में लेखिकावां री अेक मोटी सूची है जो आपरै लेखन सूं सांस्कृतिक अर पारंपरिक विकास अर समाज नैं आरसी दिखावतो लेखन करवा री खैचळ में लगोलग लिख रैयी यहै। आज री लेखिकावां परदै सूं बारै आय'र आपरो मून तोड़्यो है। बै अेक सांतरै लेखन रै माध्यम सूं समाज री आंख्यां खोलबा अर केई नवाचारां नैं जीवण में अपणाबा री अणथक मैणत कर रैयी है।

राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत सूं सरू हुयी आ जातरा केई पड़ाव पार करती थकी आधुनिक साहित्य रो परमाण समाज साम्हीं राख्यो है। डॉ. तारा लक्ष्मण गहलोत, कमला कमलेश, सावित्री चौधरी, प्रेमलता जैन, प्रेम जैन, डॉ. प्रभा ठाकुर, डॉ. सुखदा कच्छवाह, चांदकौर जोशी, सुंदर पारख, हुसैनी बोहरा सहित केई अस्या नांव है, जे महिलावां रो प्रतिनिधित्व करता थकां आपरै लेखन में म्हांरी संस्कृति अर परंपरावां रो ऊजळो पख समाज अर नूंवी पीढी रै साम्हीं मेलता थकां कुरीतियां अर दुस्परिणामां सूं सावचेत करती रचनावां रो रचाव पूरी खिमता रै साथै कीधो। इणां रै अलावा शिक्षा अर आधुनिक तकनीकी विकास सूं हुया बदळाव नैं भी स्वीकारवा री दीठ पेदा करवा री खैचळ भी उणां रा साहित्य में दीखी। ईं बगत री लेखिकावां री ईं खैचळ रो यो परिणाम व्हियो कै इणां रै बाद री नूंवी लेखिकावां मांय अस्या अणछूया विसयां री हूंस बधी अर उणां रो लेखन समाज रा थोप्या गया बेहूदा कायदा री कैद सूं बारै निकळ'र नूंवी लेखिकावां अस्या अणछूया विसयां माथै आपरी कलम चलाई जका विसय महिला तो महिला, पुरुस लेखन में भी वरजित अर उपेक्षित हा। इणी उपेक्षा रै कारण आपणी संस्कृति अर परंपरावां रो बहाव रुकग्यो अर अेक खाडै में भरया पाणी ज्यूं म्हारो वैवार अर विचार सड़ांध मारबा लागग्यो हो।

ईं पीढी रै पछै राजस्थान में राजस्थानी लेखिकावां री अेक लांबी पांत त्यार हुयी। अै लेखिकावां आपरी बात पूरा दमखम सूं राखबा खातर साहित्य री गद्य-पद्य री केई नूंवी-जूनी विधावां में आपरी कलम चलावणी सरू कीधी। यां विधावां में गीत, छंद, दोहा, कविता, गजल, कहाणी, लघुकथा, उपन्यास, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, आलेख जिसी केई विधावां भेळी है। लेखिकावां रा केई नांव अबै साम्हीं आवा लाग्या जकी कोई अेक विधा या बेसी विधावां में सिरजण कर रैया है।

बां नांवां में (नांव अकारादि क्रम में लिख्या है, या सूची लेखिकावां री वरिष्ठता निर्धारित नीं करै) अंकिता 'कागदांश', अनिता जैन 'विपुला', अभिलाषा पारीक, अलका अग्रवाल सिगतिया, आशा पांडेय ओझा, आशा शर्मा, उषाकिरण, उषा प्रजापत, ऋतुप्रिया, कविता किरण, कमला जैन, कामना राजावत, किरण राजपुरोहित 'नितिला', कृष्णा आचार्य, कृष्णा कुमारी, कीर्ति परिहार, गीता जाजपुरा, गीता सामौर, जेबा रसीद, दीपा परिहार 'दीप्ति', नीलम पारीक, प्रकाश अमरावत, प्रीतिका पुलक, पूर्णिमा मित्रा, बसंती पंवार, भारती व्यास, मंजू किशोर 'रश्मि', माधुरी मधु, मधु सोनी, मानसी शर्मा, मीनाक्षी बोराणा, मीनाक्षी दवे, मोनिका गौड़, राजेश दुलारी सांदू, रेखा लोढ़ा 'स्मित', डॉ. रचना शेखावत, डॉ. रेखा व्यास, रेणुका व्यास 'नीलम', विद्या भंडारी, शकुंतला शर्मा, शारदा कृष्ण, शीला संचेती, श्यामा शर्मा, संजू श्रीमाली, संतोष चौधरी, संतोष मायामोहन, सिया चौधरी, सीमा भाटी, सीमा राठौड़ 'शैलजा', सुंदर पारख, सुनीता बिश्नोलिया, सुमन पड़िहार, सुमन बिस्सा, सुमन मनोत जैन आद है। इणां रै अलावा भी केई नांव व्हैला, उणां सब रो अठै उल्लेख करणो दोरो है।

आं सब लेखिकावां री अेक ईज खैचळ रैयी कै म्हारा सनातन सांस्कृतिक मूल्यां नैं बचावता थकां आज रा आधुनिक बदळावां नैं अपणाणो अर जका कायदा समाज री प्रगति में बेड़ियां बणै बांनै आपरै लेखन री धार सूं काटणी। ईं सब खैचळ यो परिणाम रैयो कै महिलावां कछुवे ज्यूं आपरी खोळ में समटी थकी ही, जिणसूं बै बारै निकळबा री हिम्मत अर जुर्रत करबा लागी। अेक पांवडो ई सही, पण बै बारै काढ्यो तो सही। नीं तो अजै तांई महिलावां खुद री बणायोड़ी कैद में ईज जाळा में उळझी माकड़ी ज्यूं उळझी थकी ही। म्हैं जाणूं हूं कै आ सब खैचळ ऊंट रै मूंडै में जीरो रै उणमान है। हाल भी घणकरी लुगायां ईं मक्कड़जाळ में ईज फंसी है, पण आज दो पग काढ्या है, कालै सौ काढैला। यो पतियारो भी है।

अबै मूळ बात करां तो यां लेखिकावां आपरै लेखन रै माध्यम सूं सूत्योड़ा समाज नैं हेलो पाड़'र जगाबा रा साचा जतन कीधा है। बै सनातन संस्कृति नैं ई सबद दिया तो नूंवी दीठ रो भी मान राख्यो। बै जड़ां सूं जुड़ाव भी राख्यो तो पींजरा नैं तोड़'र उडबा रा जतन ई कीधा। माटी सूं तिलक भी कीधो तो आकास नैं बाथां में भरवा री ई जबरी खैचळ कीधी। आपणी लोक संस्कृति अर उच्छब-तिंवार नैं ई गीतां में गाया तो प्रेम रो ऊजळो रंग भी कवितावां अर गीतां में भर्‌यो, जकां सूं आपणी संस्कृति जीवंत रैय सके। समाज री विसंगतियां पे भी करारी चोट करतो रचाव भी कविता रै माध्यम सूं व्हियो है। कहाणियां में तो आं बरसां में जबरो ई प्रयोग देखबा में आयो। सादीसुदा लोगां री असी बातां जिणसूं आपणै समाज रा ताना-बाना में ई टूटण आवा लागी ही, बां बातां नैं भी कहाणियां में उगेरी। पश्चिम रा प्रभाव में बिना ब्यांव रै साथै रैवा री हूंस, ब्यांव पछै निभावा री खैचळ कम नै तलाक री बेसी नौबत रै पाछै रा कारणां नैं ई कहाणियां रै माध्यम सूं समाज साम्हीं मेलबा रा महताऊ प्रयास व्हिया है। नाता अर आंटा-सांटा जैड़ी कुरीति पे प्रहार करती कहाणियां अर उपन्यासां रा रचाव सूं आपणी संस्कृति रै बोदा पख नैं कम कर'र उणरा ऊजळा पख रै विकास री खैचळ महताऊ है।

आधुनिक लेखिकावां साच कैवां तो आपरी जीयाजूण सूं अेक जुद्ध लड़ती थकी खुद रै अस्तित्व रै साथै पूरै समाज रै अस्तित्व नैं सांतरो राखबा रो अणथक प्रयास कर रैयी है। औ प्रयास आज भलांई थोड़ो कमजोर लाग सकै, पण आ खैचळ आबा वाळा काल री मजबूत नींव त्यार कर रैयी है। आज री लेखिकावां परंपरागत, उपदेशात्मक लेखन री लीक छोड'र नूंवी दीठ अर नूंवा बुणगट री रचनावां रो रचाव करै, जको लोगां री मनगत ई कैवै अर उणां रै हिरदै नैं परसबा रो सामरथ भी राखै। जठै तक साहित्य लोगां रै भणबा में नीं आवै, उणरो प्रभाव किस्तर पड़ सकै। ईं वास्तै इस्या साहित्य री आज जरूरत है जको लोगां में भणवा री रुचि जगावै ताकि लोग ई उण साहित्य नैं भणै अर आपणी परंपरावां अर संस्कृति रो महत्त्व समझै। कुरीतियां री बेड़ियां नैं काटबा री हामी भरै।

आधुनिक महिलावां रो लेखन संस्कृति में आया संक्रमण नैं उजागर करबा री कोसिस भी करै। आज सोसल मीडिया, इंटरनेट रै कारण पश्चिम रो बेसी प्रभाव आपणी संस्कृति नैं गंदलो कर रैयो है। केई अस्या बदळाव आज री पीढी री जीवणचर्या में आय रैया है, जका किणी भी कीमत पर अपणाबा लायक नीं है। आपणी आज री लेखिकावां अस्या विसय ई आपरै लेखन में भेळा करया जिण माथै पुरुस लेखक भी बहुतायत में खुल'र नीं लिख्यो। जे लिख्यो भी तो उणां री अेक न्यारी दीठ ही, जकी महिला लेखन री दीठ सूं अेकदम अलग ही। आं विसयां में लिव-इन

रिलेशनशिप, सेरोगेसी, विवाहेतर संबंध, बलात्कार, शारीरिक शोषण, समलैंगिकता, वर्जिनिटी जिस्या विसय है। इणां पे पूरी जिम्मेवारी अर पूरी मर्यादा रो पालण करता थकां करयोड़ो लेखन आपणी संस्कृति रै बचाव अर विकास री ई खैचळ है।

जद कस्या ई समाज में अनाचार अर अनैतिकता बधबा लागै, जद स्वारथपरता रिस्ता पे हावी व्है तो नैछै ई यो उण समाज रो सांस्कृतिक पतन ईज बाजै। राजस्थान री चावी-ठावी लेखिकावां इस्या पतन माथै ई आपरी कलम चलाय'र समाज नैं जागरूक करवा री लगोलग कोसिस कीधी है। कन्या भ्रूणहत्या अर यौन शोषण जिस्या विसय पर लेखिकावां री बदोतर रचनावां भणी जा सकै, जकी समाज नैं पतन सूं रोकबा रै वास्तै अेक मजबूत खंबा ज्यूं खड़ी है। हालांकै दूसरा माध्यम जियां टीवी, मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट, फिल्मां आद साहित्य सूं बेसी प्रभावी है, पण फेरूं ई साहित्य लोगां पे आपरो असर छोडै है। ईं रो असर भलांई मोळो होवै, पण यो प्रभाव स्थाई व्हिया करै। इणीज वास्तै साहित्य री भूमिका महताऊ है। लेखिकावां रो लेखन साहित्य में तो आपरो ऊंचो ठांव राखै ईज है, इणरै साथै ई संस्कृति अर परंपरावां रै विकास में ई खासो योगदान लखावै।

यूं तो आज री लेखिकावां आपरी बात कैवा में मरजादा रो लंघण नीं करै। बै आपरी बात तरीकै सूं इसारा में ईज कैवण री जुगत करै। पण कैवै है—फूल रै लारै कांटा व्हैणो लाजमी है। यूं ई कोई-कोई लेखिका बेसी चाव में बोल्डनेस रै नांव या अत्याधुनिकता रै प्रभाव में कदै-कदैई थोड़ा खुला सबदां में आपरी बात कैय देवै या साच नैं ज्यूं को त्यूं बतावा री खैचळ में अस्या चितराम मांडै जिकां सूं कोई नैं मरजादा रो लंघण लाग सकै। म्हारो सोचणो है कै आपां नैं असी स्थिति सूं बचणो चाईजै। आज जस्यो बगत चाल रैयो है, इणमें समाज में महिलावां अेक दळदळ सूं निकळ'र अेक मजबूत जमीं पे आपरा पग जमावा री कोसिस कर रैयी है। यौन शोषण अर कन्या री जलम रै पैली हत्या, बलात्कार जस्या दंस सहता थकां ई समाज में आपरी थिति नैं बेहतर करवा सारू प्रणप्राण सूं जुटी थकी है। अस्या बगत में महिला रो जीवण खांडै री धार पे चालबा जस्यो है। उणी दसा में कलम अर भासा रो सावचेती सूं बरतारो करणो अर केई विसयां पर जोरदार पण मरजादा में रैय'र लिखणो बगत री मांग है। म्हांनै ईं री पूरी खैचळ करणी चाईजै।

केई चावी-ठावी लेखिकावां री केई चावी-ठावी संस्कृति अर परंपरावां रो पोसण करती अर कुरीतियां रो समूळ खातमो करवा री लोगां में जागरूकता पैदा करती केई सारी पोथ्यां रा नांव म्हारै ध्यान में आवै, पण अठै उणां पोथ्यां रो नांव लिख पावणो संभव नीं लागै। व्है सकै ईं खैचळ में केई जरूरी नांव छूट जावै, इणीज वास्तै म्हनैं पोथ्यां रो उल्लेख करणो चोखो नीं लाग रैयो है। पण आ बात म्हैं पूरै विस्वास सूं कैय सकूं कै म्हारै राजस्थान री निरवाळी संस्कृति रै संरक्षण अर विकास में महिला लेखन री महती नै गरब करवा जोग भूमिका अर योगदान रैयो है। म्हनैं आसा है कै अबार तक जकी लेखिकावां रा नांव अर काम साम्हीं आया है अर दूजी नूंवी लेखिकावां भविष्य में आवैला, बै सब आपणा समाज नैं नूंवी दीठ अर दरसाव देंवता थका आपणै विरासत में मिली संस्कृति में बधापो करण में आपरी पूरी खिमता सूं लगोलग लागी रैय'र आपरो योगदान देवैला।

◆◆

डॉ. शारदा कृष्ण

आधुनिक राजस्थानी महिला काव्य में प्रगतिवादी सुर

लोक में लुगाई री प्रज्ञा-प्रतिष्ठा वेद सूं प्रमाणित है। भरतखंड रो औ बो ईज आर्यावर्त्त है जठै वैदिक ऋषियां रो उद्घोष स्त्री री महताई बखाणतां ऊंचै सुरां उच्चरयो गयो हो—'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता।' इतियास रे पांवडां सोनलिया आखरां स्त्री री सिरजण-खिमता वेद मंत्रां, ऋचावां अर शास्त्रार्थ-चर्चावां पाण आज रै नूंवै स्त्री-लेखन लग बरोबर प्रगटीजती रैयी है। ऋग्वेद अर अथर्ववेद में श्रद्धा, कामायनी, वैवस्वती, पौलोमी, वाची, रोयशा, ब्रह्मवादिनी, लोपामुद्रा आद ऋषिकावां मंत्र अर श्लोक रच्या है। वेद सूं आगै लौकिक संस्कृत साहित्य में केई प्रतिष्ठित रचनाकार सिरजणरत हुई। हिंदी में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान री परंपरा में आज स्त्री लेखिकावां री अेक लांबी डीघी पांत सरावणजोग सिरजणा में रत है।

राजस्थानी रो महिला लेखन आदिकाल, मध्यकाल अर आधुनिक काल ताणी बिचै-बिचै अंतराल छूटतां पांण भी बरोबर अबाध गति सूं जारी है। आदिकाल में 12वीं सदी में झीमा चारणी रो उल्लेख मिलै। मध्यकाल में निर्गुण अर सगुण भगती धारा में रामकृष्ण भक्ति पदां री रचना करण वाळी अर समाजू चेतना जगावण वाळी अलेखूं महिला सिरजकां रो उल्लेख मिलै। जैन साध्वियां अर राजपरिवारां री राणी-राजकुमारियां तकातक साहित्य साधना में लीन ही। समान बाई, मीरां बाई रा पद आज भी घणै कोड सूं भगती भावां समाज में गाईजै।

मध्यकालीन राजस्थानी महिला साहित्य में भक्त कवयित्री मीरां बाई रो नांव सबां सूं सिरै मान्यो जावै जठै सूं राजस्थानी महिला-लेखन-जागरण अर चेतना रो प्रारंभ आपां मान सकां। पंद्रहवीं सदी में स्त्रीचेतना अर जागरण-जूझ री प्रतीक मीरां आपरै समै रै पितृसत्तात्मक समाज अर राजस्थान रा बंधणां री सबळी सांकळ तोड़'र आपरै संकळपां, स्वायत्तता पाण आपरै प्रेय अर श्रेय नैं समरपित रैयी। मीरां रचित पदावलियां अर भक्ति रचनावां में बां आपरै इष्ट नैं ध्यावण अर पावण रै बिचै आवण वाळा किणी बंधण-बाधावां नैं नीं सीकारया। मीरां री आ द्रिढता अर संघर्ष-सामरथ आज री जुझारू अर लक्ष्य नैं समरपित स्त्री री जीवटता रो बीज-मंतर है। मीरां रै पछै मध्यकाल में भक्त कवयित्रियां आपरै भगती पदां री सिरजणा अर भजनावलियां री रचना समैसार करती रैयी।

'आशादीप', पिपराली रोड, सीकर (राज.) 332001 मो. 9928743194

 ISSN : 2320-0995

मध्यकाल अर आधुनिक काल रै अंतराल री वैचारिक मूर्च्छना अर सोच-समझ री मांदगी री जड़ता आजादी पछै स्त्री री नूंवी चेतना अर चिंतन रै जागरण साथै टूटी। आखै जगत री आधी दुनिया आपरी मांयली पीड़ अर अमूझ नैं कागद माथै उतारण रो हिम्मत-हौसलो बपरायो। राजस्थान में आ चेतना मीरां पछै राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रै हियै हरफ मांडण ढूक्या अर बां कहाणी-कथा, लोककथावां री सांतरी अंवेर आपरै सिरजण में करी। राजस्थानी में गद्य अर पद्य दोनूं विधावां माथै महिलावां आपरी कलम-कोरणी करी।

आधुनिक राजस्थानी महिला लेखन में कविता रै सीगै बात करां तो मीरां पदावलियां पछै राजस्थानी कविता परंपरा रै खोळियै सूं बारै नीसर'र प्रगतिवादी विचारधारा कानी पांवडा बधावती लखावै। संजोग-बिजोग, सिणगार अर रूप-वरणन माथै रीझती महिला-कविता अबै जथारथ अर सामयिक दुख-दरदां री पड़ताळ करण लागगी, क्यूंकै कविता मिनख रै भौतिक परिवेस सूं अळगी नीं होय सकै। कविता आपरै समै रो पड़बिंब हुवै। समाज में लुगाई री ठौड़ दोयम दरजै री मानीजण रै कारणै बीं रा दुख, दरद, पीड़, अमूझ अर अन्याव-अत्याचारां रै प्रतिकार री भावना बांरी विचारदीठ नैं प्रभावित करी।

प्रगतिशील कविता रो मूळ सुर सामाजिक, राजनीतिक अर आर्थिक बदळाव रो हुवै। आम आदमी रै दुख-दरद री बात, किसान री दसा अर सैंग भांत रा सोसण अर अन्याव री खिलाफत प्रगतिशील कविता रो आधार हुया करै। आजादी पछै सेठ-सामंतवाद रो विरोध, मजदूर-किसानां री दुख-दरद गाथा रो प्रगटाव कवितावां में होवणो सरू होयग्यो हो। समाजू विडरूपतावां माथै दायजो, पड़दा प्रथा, औसर-मौसर, बालविवाह, बुढापै में ब्याह जैड़ी कुरीतियां माथै रचनाकारां कलम चलाई। पारंपरिक छंदबद्धता सूं कविता मुगत होवण ढूकी। थोड़ी और आगै बध'र अैड़ी कवितावां 'नई कविता' रूप में थरपीजण लागगी। इण कविता में गेयता, छंदबद्धता अर यति-गति, आरोह-अवरोह रो कोई बंधण कोनी हुवै। सीधी सपाट बात सैली रो सो रूप धारण वाळी आ कविता प्रयोगवाद री जमीं माथै ऊभी है। नूंवी कविता रो नूंवोपण इणरी नूंवी अभिव्यक्ति अर भासा रै मुहावरै रै पाण है। मिनख, मिनखपणो, परिवेस में व्यापी सगळी अबखायां, अन्याव, छळछंद, लूट-खसोट जैड़ी सगळी समस्यावां नूंवी संस्कृति री विशेषता या गुण-रूप नूंवी कविता में दरसाया जावै।

राजस्थानी महिला काव्य री परंपरा अर प्रगति बिचाळै पुळ बांधण री भूमिका में आशादेवी शर्मा, तारा लक्ष्मण गहलोत, राजेशदुलारी सांदू, सावित्री डागा, जेबा रशीद, कमला कमलेश, प्रेमलता जैन, बसंती पंवार, सुंदर पारख आद कवयित्रियां रो सिरजण गिणीज सकै। आं सिरजकां री कविता परंपरागत कविता रै सुभाव नैं साथै परोटतां थकां नूंवो विसय अर कथ्य अपणावती लखावै।

महिला काव्य री दूजी धारा में वै कवयित्रियां सामल होय सकै जकी नूंवा बिंब-प्रतीकां अर नूंवा भासा-मुहावरा अंगेजतां थकां नूंवी कविता री तर्ज में आपरै सिरजण नैं नूंवै शिल्प में नूंवै भावबोध सूं जोड़ै अर साथै-साथै सिरजणा री समकालीन जमीं सूं आगै बधण री बात करै।

नूंवी कविता रै कलेवर री इण भावछाया में शारदाकृष्ण, सुमन बिस्सा, मोनिका गौड़, संतोष माया मोहन, ऋतुप्रिया, रेणुका व्यास 'नीलम', रचना शेखावत, अभिलाषा पारीक 'अभि',

सीमा भाटी, मानसी शर्मा, कुसुम जोशी, कृष्णा आचार्य, लीला मोदी, किरण राजपुरोहित 'नितिला' आद कवयित्रियां रा नांव गिणावण जोग है।

भारतीय मनीषा सत्यं शिवं सुंदरम् अर विश्व कल्याण री भावना रा ऊंचा आदर्शां सूं ओत-प्रोत है। जीवणमूल्यां अर मिनखाचारै री मरजाद री अंवेर अठै रै साहित्य री मूळ भावना रैयी है। राजस्थानी महिला काव्य परंपरागत समाज री तिड़कण नैं परोटतां थकां नूंवै समाजू मूल्यां री बात आपरी जमीं सूं जुड़ाव राखतां थकां करै। मध्यकाल में नारी री पीड़ अर दयनीयता आधुनिक समाज में नीं सीकारीजी। नारी मुगती आंदोलन अर स्त्रीविमर्श री विचारणा बठै सूं उठ'र आज ताणी अेक बडो सामाजिक मुद्दो रचनाकार या आम आदमी नैं भी ऊंडै असर प्रभावित करै। अैड़ै बगत प्रगतिवादी कविता मजदूर, किसान अर स्त्री रै पख में समाज-सुधार रो सुर साध'र आगै बधी। नूंवै अर आधुनिक राजस्थानी महिला लेखन में इण चिंतन अर विचारणा रो सूत्र केई काव्यकृतियां में प्रगट्यो है। प्रमुख काव्यकृतियां रो संखेप में विवेचन—

चंदाबरणी (आशादेवी शर्मा) 1971

राजस्थानी काव्यकृतियां में प्रकाशित पैली पोथी रूप में 'चंदाबरणी' अेक चावो संकलन है। इण कविता पोथी में राष्ट्रभक्ति, शृंगार अर प्रकृति-चित्रण री कवितावां साथै नारी जागृति अर चेतना रा सुर भी मुखर है। छंदबद्ध अर छंदमुक्त दोन्यूं भांत रा गीत कवितावां में लुगाईजात री मांयली पीड़, दरद, परबसता, लाचारी अर दोघाचिंती रा भाव प्रगट्या है। राग बिजोग साथै दारसनिक दीठ में आशा शर्माजी लिखै :

मैं चाल पड़ी पणिहारण,
पग में पायल बांधी रे
समदर भर्‌यो पड़्यो है,
म्हारी गागर खाली रे

स्त्री री सामरथ नैं चेतावती अेक कविता रा भाव इण भांत है :

कंवळी हो थे पण कोमलता,
थांरो साचो नाप नहीं है
सुंदर हो थे पण सुंदरता,
जीवण रो अभिशाप नहीं है

उगाळी री उडीक (सावित्री डागा) 2004

सावित्री डागा राजस्थानी री समरथ कवयित्री है। आपरै पैलै कविता-संग्रै 'उगाळी री उडीक' में परंपरा सूं जुड़ाव राखतां थकां आधुनिकता अर प्रगतिवाद कानी बधती कवितावां बां रची है। बांरी कविता री जमीं राजस्थानी महिला काव्य में प्रतिरोध अर प्रतिकार री संभावना सिरजै। अठै कथ्य में नूंवोपण, परिवेसगत संवेदनावां सूं जुड़्यो थको अर प्रभावी भी है। नूंवा बिम्ब अर प्रतीक बरततां थकां सावित्रीजी भासा अर शैली रै सीगै भी सावचेत रैया है। स्त्री रै वजूद अर सबळाई नैं अन्याव अर शोषण रो विरोध सिखावतां बै लिखै :

सदियां सूं गोळ व्हैती म्हारी ओळखाण
नीं रैवैला गोळ
गोळ जिनसां में घाणी रै बळद ज्यूं
गोळ-गोळ फेरतां
थां म्हनैं गोळ गींडी मत बणाओ।

'उगाळी री उडीक' रो शिल्प नूंवो अर कथ्य प्रभावी है।

सुपनां रो सिणगार (राजेशदुलारी सांदू) 2002

इण काव्य-संग्रै में नारी रै सुपनां रो साज-सिणगार करती नूंवी उम्मीदां अर संकळपां री सिरजणा नूंवी काव्य-भासा में हुयी है। समाज में ऊंडी जड़ां जमायोड़ी स्त्री नैं दोयम दरजै धकेलण वाळी कूड़ी मानतावां अर मनगतां नैं अेक सबळी, सुतंतर अर ऊरमावान स्त्री री ओळखाण रा भाव जगावती आं कवितावां रा बिंब अर प्रतीक भी ठावा है। धरती अर आकास रो स्त्री अर पुरुष रूप में मानवीकरण करतां बै चेतावै :

घणी जेज मत भाळै भोळी
इण आभै साम्हीं
अकड़ीज जावैली थारी घांटी
थूं निरख अर परख फकत इण जमीं नैं
फगत आ थारै काम आवैला
जलम सूं मरण ताणी
इण सारू
अळगी रहजै आभै रै छळ सूं।

कैक्टस मांय तुळसी (तारालक्ष्मण गहलोत) 2001

इण कविता पोथी रै शीर्षक मुजब कवितावां लुगाईजात री जीवट जूझ अर जिजीविषा माथै रचीजी है। अठै तुळसी रो कैक्टसां बिचै सीधो सट्ट ऊभो रैवणो आंकसां बिचाळै ऊभो रैवणो है। कविता रा भाव प्रभावी प्रतीकां प्रगटावै।

धोरां पसरयो हेत (डॉ. शारदा कृष्ण) 2004

गीत, गजल अर कवितावां में नूंवा प्रयोग अंगेजतां थकां शारदा कृष्ण री सिरजणा राजस्थानी महिला काव्य में आपरी अेक निकेवळी ठौड़ बणावै। 'धोरां पसरयो हेत' रै फ्लैप माथै आदरजोग मालचंद तिवाड़ी लिखै, ''शारदा कृष्ण रै कवि री मूळ प्रकृति गीत री है। बांरै गीतां में ही तो बांरो कवि रूप घणै सैंजोरै ढाळै साम्हीं आवै। पाठक मन री काव्य-स्मृति बांरी कविता रै वस्तु-विन्यास, छंदप्रयोग अर भासाई ठाठ रै सैंग औजारां सूं पाछी चेतन हुवण ढूकै अर बो शारदा कृष्ण री कविता रै मिस आधुनिक राजस्थानी कविता रै केई गम्योड़ा सुरां री झणकार ई आपरै कानां मांय मैसूस करण लागै।'' मुक्तछंद अर छंदबद्ध दोनूं भांत रो सिरजण इण संग्रै में मूल्यां री छीजत, कुदरत अर मिनख बिचै बधतो आंतरो, टूटता आस-भरोसा, रिस्ता-नातां रो छीजतो अपणेस, मिनख मनां में छळ-छदम अर परायैपण रो पसराव, घर-गळी-गांव री सून्याड़ आं कवितावां रो विसैगत बरणाव है।

सिमरण अर **जळविरह** (संतोष माया मोहन) 2004, 2008

साहित्य री कविता-विधा में 'सिमरण' री कवितावां आपरै कथ्य अर विचार-दीठ में निकेवळी अर घणमोली है। संतोष माया मोहन री कवितावां मांय अरथविस्तार घणो व्यापक अर डीघो दायरो अंवेरै। आं कवितावां में घणै धीजै सूं दारसनिक विचारणा साथै स्त्री री अस्मिता नैं आपरै मांय भीतर, बारै अर वीं रा बीजा रूपाकारां मां, बेटी, बहू, सास, नणद, भोजाई अर बहन रा रिस्तां में प्रगटावै। कवयित्री लिखै :

पिता थे
थे ई जामण जाया बीर
थे म्हारी भावज घर गीगला
थे थिर अम्बर म्हारा बाप
चूंधो म्हारी भावज रा हांचळां।

सूरज रो सनेसो, अंतस भरयो उजास अर **आंतरो झीणो है** (डॉ. सुमन बिस्सा)

सुमनजी रो पैलो कविता-संग्रै 'सूरज रो सनेसो' 1999 में छप्यो। इणरै पछै 'अंतस भरयो उजास' 2004 अर 'आंतरो झीणो है' 2013 में साम्हीं आया। सुमनजी री काव्य-भाषा घणी परिष्कृत अर मौलिक है। चिंतनप्रधान विसय-वस्तु नै निकेवळा बिंब-प्रतीकां रै प्रयोग सूं बै असरदार ढंग सूं आपरै कविता-कथ्य नैं परोटै। सामयिक सोच री बडी कविता बा हुवै जिण मांय बीं बगत री चिंतावां, पीड़ अर दौरप रा सुर साव परतख प्रगटै अर सुमन बिस्सा इण सीगै तीनूं ई कविता-संग्रहां में सावचेत लखावै। 'निवण है थारै तप तेज नैं', 'हांचळ रो हेज' जैड़ी कवितावां इणरी साख भरै। नींव अर गुम्बद रै प्रतीकां में बै मायतां अर संतान री उपेक्षा-अपेक्षा भाव इण भांत प्रगटावै :

— आ बात सुण'र नींव नीं बोली
पण, धीमै-सीक अेक भाटो सिरकायो
गुम्बद डगमगायो
भुंवाळी खाय'र कीं संभळ्यो
फेर धीमै-सीक फुसफुसायो
औ अचाणचक भतूळियो कठै सूं आयो!

अठै परंपरागत कविता रा वात्सल्य भावां सूं अलायदा अेक नूंवो चेतावणी भरयो भाव उकेरीज्यो है। अठै कविता प्रगतिशील हुय जावै।

बखत री बातां, बोली रा बाण, मुखर मून अर **सूळी ऊपर सेज** (डॉ. कविता किरण)

मंच अर कागद दोन्यां माथै आपरी कलम री कोरणी री करामात प्रगटावतां थकां कविता किरण गजलां, गीतां री सखरी सौगात लेय'र राजस्थानी महिला काव्य री जागती जमीं माथै अवतरै। कविता रो पैलो गजल-संग्रै 'बखत री बातां' 2003 में, 'बोली रा बाण' अर 'मुखर मून' 2006 में अर 'सूळी ऊपर सेज' 2012 में छप्यो। च्यारूं गजल-संग्रहां में छोटी बहर री असरदार सीधी सरल भासा वाळी गजलां कविताजी रची। राजस्थानी महिला काव्य में गजल रो औ नूंवो प्रयोग कविता किरण री कलम रै पाण कोरीज्यो। कविता किरण री गजलां मिनखपणो, जीव-

जगत री जूण-जात्रा, मूल्य अर मरजाद गमावती समाजू अबखायां अर विडरूपता री विसय-वस्तु नैं केंद्र में राख'र रचीजी है। छोटी बहर री काया में बडो अर ऊंडो अरथ भाव, नूंवा बिंब-प्रयोगां मांय अवतरयो है। बै लिखै :

गूंगा समझ रिया हो म्हांनै
होठ सिंया गम खावण सारू
कितरा कूड़ साच करिया है
सत रो साथ निभावण सारू

आभै री आंख्यां अर **बगत रो बायरो** (डॉ. जेबा रशीद) 2004, 2015

जेबाजी रा दोन्यूं संग्रै पारंपरिक कविता रै कलेवर नैं नूंवी साज-सज्जा साथै राजस्थानी में उर्दू रो सहज सामंजस्य करतां भासा रै प्रयोग में संजोवै। जेबाजी कहाणीकार रूप में ओळखीजै, पण कविता-कोरणी में भी बांरो सुभाविक सिरजण-पख उजागर हुवै। कविता री उत्पत्ति रै तथ नैं सिरजतां बै लिखै :

इच्छावां धूळ ज्यूं / कीं फूल-सी / पंछियां रै लारै / उडै मन पंछी ज्यूं / तद अफसाना सी जलमै है कविता।

अठै 'अफसाना' अर कविता रो मेळ 'कविताई' नैं भासा प्रयोग रै सीगै 'अफसानियत' सूं जोड़ै।

सपना संजोवती हीरां अर **ठा नीं कद हुज्यावै प्रेम** (ऋतुप्रिया) 2013, 2018

ऋतुप्रिया री 'सपना संजोवती हीरां' साहित्य अकादेमी, दिल्ली सूं पुरस्कृत हुई है। सहज सरल लहजै में छोटी कवितावां जनजीवण सूं जुड़्या मुद्दां री विसय-वस्तु साथै घणी प्रभावी बण पड़ी है।

ज्यूं सैणी तितली (किरण राजपुरोहित 'नितिला') 2011

किरणजी रो औ पैलो कविता संग्रै नूंवै बुणगट अर टाळवैं शिल्प नैं अंगेजतां भासाई मठोठ रो जागतो उदाहरण है।

हथेळी में चांद अर **अंधारै री उधारी अर रीसाणो चांद** (मोनिका गौड़) 2012, 2017

मोनिका गौड़ आधुनिक राजस्थानी महिला काव्य रो उल्लेखजोग नांव है। मंचां माथै राजस्थानी कविता री लोकप्रियता रै बधेपै में मोनिका री प्रस्तुति प्रभावी हुवै। परंपरा अर आधुनिकता रै सांगोपांग मेळ अर न्यारै-निरवाळै भासा-बिंबक-प्रतीकां सूं मोनिका आपरै कथ्य अर विसय-वस्तु नैं पाठक अर श्रोता रै हियै ऊंडै भावां चितावै। आपरी कविता 'हारी नीं है स्त्री री हूंस' में 'फीनिक्स' रै ओळावै अेक नूंवै बिंब अर प्रतीक री अवतारणा करतां मोनिका लिखै :

हर बार हारती स्त्री
बावड़ै आपरी भसम सूं
फीनिक्स पाखी री जात
क्यूं कै हारी नीं है जुगां सूं
स्त्री री हूंस।

आधुनिक सूं उत्तर आधुनिक काल कानी बधतो राजस्थानी महिला काव्य प्रगति अर प्रयोग रा पांवडा भरतो नित नूंवै बधेपै सधतो जा रैयो है। इण ढाळै सिरजणा रै समचै नूंवी कवयित्रियां री अेक और पांत आज कविता लेखन रै छेत्र में नूंवै तेवर अर अभिव्यक्ति री अंजसजोग ऊरमा साथै ऊभी हुयी है, जिणमें अभिलाषा पारीक 'अभि', सीमा भाटी, मानसी शर्मा, रेणुका व्यास 'नीलम', कुसुम जोशी, तारकेश्वरी सुधि, गीता जाजपुरा, कृष्णा आचार्य, स्व. रचना शेखावत, दीपा परिहार, प्रेम जैन, डॉ. लीला मोदी, करुणा दशोरा आद कवयित्रियां आपरै प्रकाशित काव्य संकलनां सूं राजस्थानी महिला काव्य जात्रा में घणमोला पड़ाव रच्या है।

प्रकाशित पोथी रूप में आयोड़ै सिरजण रै अलावा भी आखै राजस्थान रा न्यारा-न्यारा हलकां में राजस्थानी कविता नूंवै ढंगढाळै आज री कवयित्रियां री कवितावां बीजी राजस्थानी पत्र-पत्रिकावां में बरोबर प्रकाशित होय रैयी है, जिणमें सिया चौधरी, अंकिता पुरोहित, प्रियंका भारद्वाज, अनिता जैन 'विपुला', सपना वर्मा, सुनीता बिश्नोलिया, कामना राजावत, गीता सामौर, शकुंतला शर्मा, सुमन परिहार आद रा नांव गिणावण जोग है।

प्रकाशित कृतियां समेत आपरै प्रभावी सिरजण लेखै प्रवासी कवयित्री सुंदर पारख, पूजाश्री रा काव्य संकलन ई कविता-सिरजणा रै नूंवै मानदंडां रच्या गया है। शकुंतला सरूपरिया, बसंती पंवार, डॉ. प्रकाश अमरावत, श्यामा शर्मा, कृष्णा कुमारी, डॉ. लीला मोदी जैड़ा नांव राजस्थानी महिला कविता में सरावण जोग इजाफो करणजोग गिणीजै।

डॉ. प्रेम जैन री कविता पोथी 2012 में प्रकाशित 'रोशनी रा रूंख' में सामल कवितावां परंपरा अर आधुनिक कविताई रै बिचाळै आपरो मौलिक चिंतन प्रगटावै। वरिष्ठ लेखिका कमला कमलेशजी रो कविता-संग्रै 'भांत-भांत रा रंग' नांव सूं 2018 में प्रकाशित है। कमलाजी मूलतः गद्य लेखन घणो करयो है। कविता लेखन में बांरी नूंवी दीठ सरावण जोग है।

अठै होय सकै केईक मानीजता अर सखरी कलम-कोरणी रा उल्लेखजोग नांव छूटग्या हुवै, इणरो औ तात्पर्य कतई नीं समझ्यो जावै कै बांरै सिरजण में कोई गिणावण जोग बात कोनी ही। आ म्हारी चूक अर दीठ री व्यापकता में कमी कथीजैला।

गीरबैजोग बात आ है कै जिण राजस्थानी महिला लेखन अर खास तौर सूं कविता माथै कदैई कोई जिक्र-चरचा या बंतळ साहित्य जगत में सुणीजी कोयनी, नीं आलोचना, समीक्षा में सामल हुयी, बा कविता अर बो लेखन आज नूंवै कविताई मुहावरै अर दीठ नैं आपरी सिरजणा में घणै सायरपणै संजोवै। आ खिमता दिन दूणी रात चौगणी बधै अर सवाई हुवै।

आखै जगत रो महिला सिरजण साहित्य री लगैटगै सगळी विधावां में घणो खरो, खांटो अर सखरो रच्यो जा रैयो है। राजस्थानी कवयित्रियां रै अध्ययन, निरीक्षण अर अनुभव रो दायरो अबै देस-दुनिया री सम-सामयिकता अर जुगबोध सूं जुड़तां थकां आंगणै सूं आभै ताणी पूग जावण रा जतन करतो आगै बधै अर आपरी ऊरमा पाण दुनिया रै सशक्त, सामरथवान अर सजग सिरजण री पांत में ओळखीजै, इणी सुभकामना साथै। जै राजस्थान, जै राजस्थानी।

◆◆

अर्चना राठौड़

रूंख भायलो

पीपळी री सीतल छाया
अर बड़ रै नीचै बैठ
घड़ी-दो घड़ी रो बिसराम
हार्‌या-थाक्या मिनख नैं
जाणै फेरूं नूंवी ऊरजा सूं
भर जावै है...

नीमड़ै रै डाळ पर घाल्या
सावण रा हींडा
लहरियै में सजी-धजी
सुहासणां रै हिवड़ै मांय
अपार हेत-प्रेम भर जावै है...

खेजड़ी री सांगरी
कैर अर गूंदां री लूंजी
किणरै मन नैं कोनी भावै
बबूल्या री पातड़ियां
मौज सूं बकरियां खावै
अर गूंद सूं मां
घणा स्वाद लाडू बणावै...

रूंखां सूं रीती आ धरती
बंजर अर उजाड़
तपता जेठ रो
सीतळ बायरो हो
या हो फेरूं
सावण में बरसतो मेह
सारी बरकत
हर्‌या-भर्‌या रूंखां सूं ईज
आवै है

रूंख
मिनख रै जीवण रो
प्राणदाता होवै है
साची कैयग्या बडेरा
औ रूंख भायलो होवै है।

वीर दुर्गादास

राजस्थान रा साचा सपूत
वीर दुर्गादास
इण धरती रा लोग
करी थांसूं
वीरता री आस
इणरी आन-बान री
राखी थे लाज
सगळा साचा ऊजळा
थांरा काज

अस बैठ्या असवार
सगळा नर-नार
करै थांरी जैकार...

राजस्थान रै
मान रै खातर
स्वामी री मूंघी
जान रै खातर
जीवण दियो लगाय
बिना परवा कर्‌यां काया री
देस नैं लियो बचाय
साची थांरी वीरता
साची थांरी सगती
साची थांरी महिमा वीर
साची देसभक्ति।

◆◆

9/887, मालवीय नगर, जयपुर 302017 मो. 8058421711

अनिला राखेचा

थारी कविता

जद भी पढूं हूं
म्हैं थारी कविता
पढण रै बाद
पसर जावै है मून
सबद
जिका कुदड़का कर रैया हा
घणी बगत सूं
हुय जावै है
बै अबोला-सून
अर हिवड़ै उतर
ऊंडै काळजै
करण लागै है
भांत-भांत रा नाद
जणै चुप री हथाई सूं
हुवण लागै बात
अेक अैड़ी बात, जिणनैं
थूं म्हारै अणकैयां ई सुण लेतो
म्हारै अणलिख्यां ही
म्हारी आंख्यां मांय पढ लेतो
म्हारा अै अणकैया-
अणलिख्या सबद
थारै पढतां ई झरण लागता
म्हारी पलकां री कोरां सूं
म्हारी अलकां रै छोरां सूं
गूंथण आ जातो
थूं फेरूं उणनैं
थारै फुरसत रा डोरां सूं
चुग-चुग पुष्पां रा आखर
अर सबदां-सबदां रो पातो
थारो सिरजणधरम
फेरूं अेक
नूंवी कविता रच पातो
बीं नैं ही आज म्हैं
फेर सूं पढण बैठी हूं
जाणूं हूं, जकी नैं पढ्यां पछै
फिरती पसर जासी मून
छ्या जासी अबोला
अर सबद हुय जावैला मून!

◆◆

124 ए, मोतीलाल नेहरू रोड, आशीर्वाद बिल्डिंग, फ्लैट-2बी, सैकंड फ्लोर, कोलकाता-700029
मो. 9051806915

 ISSN : 2320-0995

अभिलाषा पारीक 'अभि'

पांखड़ल्यां

दे दै, पांखड़ल्यां म्हारा राम
उड आ जाऊं थारै पास
क्यूं तरसावै दिन अर रैण
सह ना पाऊं इब यो भैम
या काया थारी माया सारी
रमरी जीं में दुनिया सारी
भांत-भांत का जीव-जिनावर
केई जूणां में अटकी सारी....

अंडीनै-उंडीनै पग-पग
खींचाताण मची घर-घर
आप-आपकी मोह-माया का
भरम भंवर भर-भर....

म्हारो मनड़ो टेर लगावै
छिण-छिण यो तनैं बुलावै
मनड़ो-तनड़ो-जिवड़ो थारी
बस, थारी ही बात बतावै....

सब भरमां सूं पार लगा दै
यां भरमां नैं 'तूं' मिटा दै
दे दै, निजरां की पांखड़ल्यां
निजरां सूं आ जाऊं थारै पास....

मिजमानी

झीणी-झीणी चूनरी सूं
झांकै मत गोरड़ी
थारै निजरां की मिजमानी
म्हांनै घणी प्यारी लागै

पीळो पोमचो, लाल चूनर
फकर-फकर लहरावै
भंग पीयां ज्यूं कोई भंगेड़ी
गोता अश्यां खावै
ईं चूनरी नैं मत फहरावै, ओ गोरड़ी
थारी चूनर की मिजमानी, म्हांनै...

चंदरबाई को चुड़लो थारो
खनन-खनन जद बाजै
हिवड़ो म्हारो बावळो भागै
थारै लैरां लागै
ईं चुड़लै नैं मत खणकावै, ओ गोरड़ी
थारै चुड़लै की मिजमानी, म्हांनै....

पायल थारी बाजणी
छनन-छनन जद बाजै
मनड़ो म्हारो मोरयो बण
धिन-तिक, धिन-तिक नाचै
ईं पायल नैं मत छनकावै, ओ गोरड़ी
थारी पायल की मिजमानी म्हांनै....

सी-30, अम्बाबाड़ी, जयपुर (राज.) मो. 9829595559

अरुणा जी. मेहरू

मन रै आंगणै

आज चावूं कै नाचूं मन रै आंगणै
भूल सभी नैं नाचूं मन रै आंगणै
जो दबिया पड़्या है दुनियादारी रै कारणै
आज चावूं कै....

वा सारी सुगंध, वा सारी ताजगी
भरलूं फेफड़ां रै मांयनै
जिणरी घणी जरूरत है
म्हारै ठेठ अंतस रै मांयनै
आज चावूं कै....

बसंत नैं भरलूं बाथां रै मांयनै
झूलूं हिंडाळै निसंक
पूरी ऊरमा सूं रासां थामनै
आज चावूं कै

चावूं अेक नूंवो चित्राम बणावूं
पाछो जीवण रो
म्हारी हिवड़ा री कलम सूं
दूर हटाय दुनियादारी रै पूरा कैनवास नैं

आज चावूं कै नाचूं मन रै आंगणै
भूल सभी नैं नाचूं मन रै आंगणै।

आंधल घोटो

रमै सै जणा आंधल घोटो
आंख्यां पर पाटी
पण हाथ-पग पूरा जोर-सोर सूं मारै
मंजल नैं पकड़ण सारू
अर मंजिल मूंडो चिड़ावती
जीभ बतावती दांत काढती
सर सूं कनै सिरक जावै
रमणियार नैं पतो ई नीं लागै
फकत हाथ-पग मारतो ई रैय जावै।

औ डांव कीकर जीतीजैला
बंद आंख्यां सूं कोई
कीकर मंजिल तक पूगैला
अर जो पूग भी जावै तो
'चमत्कार नैं नमस्कार' वाळी कहावत
चरितार्थ हुई लखावैला।

रमणियां रै रमत री कुंवत
तोई नीं आंकीजैला
टाबरियां रौ औ खेल
मानखै नैं सीख देवण सारू ई
रच्यो गयो है स्यात।

◆◆

पूर्व सरपंच, पोस्ट-दयालपुरा (आहोर), जिला-जालौर (राजस्थान) मो. 9928457700

 ISSN : 2320-0995

इन्द्रा सिंह

म्हारी प्रीत

होवै फूलां सूं म्हारी बातां
चिड़कल्यां सुणै है म्हारा गीत, रैवै सै सूं म्हारी प्रीत

आंख्यां मांय जादू है बो, खिंच्या-खिंच्या सै आवै है
सद्भावां सूं भर्‌या है जो, निरमोही कद होवै है

करूं सदा जंगळ मांय मंगळ
होवै सदा साच री जीत, रैवै सै सूं म्हारी प्रीत

म्हारा पांव नहीं रुक पावै, आगै बधता जावै है
कांटा घणा-घणा चुभ जावै, फाला पड़ता जावै है

राखू नहीं म्हैं कदै भी रीस
नाखूं आडी बैर री भींत, रैवै सै सूं म्हारी प्रीत

अैसास घणोई पल-पल रो, तिरस मोकळी है बाकी
बिस्वास घणोई कण-कण रो, निरख मोकळी है बाकी

ध्याऊं सदा धरम री रीत
गाऊं सदा आस रा गीत, रैवै सै सूं म्हारी प्रीत।

◆◆

वार्ड नं. 13, नया बास, चूरू (राज.) मो. 8094391221

इन्दु तोदी

जठै हर नारी नवदुर्गा

देख कोरोना
कियां काळै अंधियारै नैं
हौसलां कै दीपक सै म्हे सब मिल भगाया हां,
जद रात बणा ली इतरी सुहाणी
तो सोच सवेरो कितणो सुंदर आणै आळो है,
जठै अेक-अेक नारी है
नवदुर्गा काळी भवानी को रूप
जिणकै हाथ में है खड्ग, तिरसूळ
अर खुद बा भयंकर ज्वाला की
निशानी है,
हर पुरुस-पुरुस में है
हर हर जटाजूट शिव शंकर त्रिपुरारी
जिणकै नेत्र सूं
अब नहीं तूं बचणै आळो है।
अब सै मिलकर कर लियो हैं संकळप
इण सारू थारी मुस्कल निकट
अब आणै आळी है
हो जा अबै बेगो-सो तूं चलतो
नईं तो बदत्तर मौत तूं मरण आळो है
अेकला रहकर भी नईं म्हे अेकला
म्हे सै बंधु-भाई आज बतळाया हां
तो सोच कोरोना!
जद रात बणाली म्हे इतरी सुहाणी
तो सोच सवेरो कितणो सुंदर आणै आळो है।

जद तूं खुद है ज्वाला

है तूं खुद धधकती ज्वाला,
अंधेरा सूं फेरयूं किसो डर?
भिड़जा तूफानां सूं
अपणै हौसला पे विश्वास कर

जद तक मंजिल ना मिलै
चाल, ना रुक अेक पल
पगां नैं लोहीझ्याण कर

दिव्य है जद तूं दिव्यांग
जीतबा की जिद को
संधान कर

टूट पड़णो है बाज बण
रास्तै की सगळी मुस्किलां पर

थारो सो कोई नईं अठै शक्तिमान
स्वयं की परीक्षा कर
और भर हुंकार सीनो ताणकर।

◆◆

धरान (नेपाल) मो. 9862023320

 ISSN : 2320-0995

इला पारीक

के लिखूं म्हैं... ?

आवैगो अेक टाबरियो
आ सोच परिवार हरसावै है
पण कूख में बेटी सुणतां ई
मायत-सा मर जावै है
करवा दे बहू सफाई
आ बात सासू समझावै है
सुणतां ई कूख में बैठी कन्या
कुररी ज्यूं कुरळावै है
मेरो मनड़ो बोल पड़्यो
अनजायी कन्या को चीत्कार लिख
पांच बरस री हुई या लिछमी
सगळा मिल हरसावै है
छमछम करती फिरै आंगणै
मोद में मुळकावै है
जद फांक्यां रो लालच देय'र
पाड़ोसी ई भरमावै है
रक्षक ई भक्षक बण'र
मानवता नैं सरमावै है
मनड़ो मेरो बोल पड़्यो—
ईं कन्या रो चीत्कार लिख।
सोळै बरस री हुई जद कन्या
काच में दुख मुळकावै है
आगै री कर-कर कल्पना
सुपणै में हरसावै है
पण हे राम! औ जुलमी माणस
तेजाब डाल झुळसावै है
देख-देख पुराणी फोटू
आ कन्या अब कुरळावै है
मनड़ो मेरो बोल पड़्यो—
ईं कन्या रो चीत्कार लिख।
दादोसा री लाडली जद
छोड चाली घर बाबुल रो
मन में घणो हरसाव लियां
पहुंच घर साजन रै।
गैंणा-गाभा किसाक ल्यायी
ताना मारै जद सासरला
फेर अेक मायड़ री प्यारी
झुळसण लागी आग में
मनड़ो मेरो बोल पड़्यो
तूं दुल्हन रो चीत्कार लिख।
बूढी मां मंचली में पड़गी
बेटो हुयो जवान अबै
घरवाळी सूं मुळक'र बोलै
मां री सुण मत बात अबै।
खसूं-खूं करै डोकरी
पण बीं नैं के परवाह
बिरधाश्रम में छोड मावड़ी
होग्यो बेपरवाह।
मनड़ो मेरो बोल पड़्यो—
तूं मां को हाहाकार लिख।

◆◆

डी-52, समता नगर, बीकानेर (राज.) 334001 मो. 9460172951

डॉ. उषा श्रीवास्तव

जगतो सवाल

घर सूं बारै भेजवा में डरपै है
मां-बाप
बेटियां नीं कर पा रही पूरा
आपरा ख्वाब।
गळी-गळी, बस्ती-बस्ती
चोर-लुटेरां रो राज है
कांई भारत
साच्याणी आजाद है?
'बेटी बचाओ बेटी पढाओ'
बस नारो बण'र रह जावैगो?
कै ईं नैं देस सई अपणावैगो?
मौनसभा कर'र अन्याव सूं
लड़ नीं सको
खोखला वादा करनै
किणी रा घाव भर नीं सको
नोचवा-खसोटवा नै
नरपिशाच घूमै है हर मोड़ पे
औरत की इज्जत
मनरंजण साधन भर?
कदी थांरा ठंडा खून में
उबाळ आवैगा
कदी सई में
मिनख बण पावैगा?
पीड़ितां नैं कभी न्याव,
इज्जत दिलावोगा?
कै बस ट्रायल, केस
जांच री खानापूर्ति कर
अपणो फरज निभावोगा?
मौन दुपट्टा ओढनै
किणी री आबरू बचावोगा?
खाली-माली विरोध
जुलूस, कैंडल मार्च सूं
बहू-बेटी री आबरू नीं बचै
दिखावटी राजनीति सूं
दरिंदगी कदी मिट नीं सकै
अैड़ा दुष्कर्मियां रो जे
साच्याणी करबो चावो अंत
तो लटकाई दो
अैड़ा निरधर्मियां नैं
चौरायै पर तुरंत
तद कैवो—
'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ'
आगै बधावो
बेटियां रो भविस
सुखमय बणाओ।
◆◆

ई-406 प्लेटीनम सिटी, अेच.अेम.टी. लिंक रोड, यशवंतपुर (बैंगलोर) कर्नाटक 560022 मो. 9342850454

 ISSN : 2320-0995

ऐश्वर्या राजपुरोहित

आयो आसाढ

आयो रे आयो आसाढ आयो
काळा बादळ ऊमटिया रे

हरिया-भरिया खेत होया
बिरखा इसी होई रे
नाडी-तळाब सगळा भरया
हिवड़ो घणो हरखायो रे

सावण झूम्यो सुहावणो-सो
साथणियां संग आओ अे
साज-सिणगार थे करलो
हींडा हींडण चालो अे
मोरिया गावै गीत गैहरा
सावणी झड़ी लागै रे
औ भादरवो उमड़-घुमड़ियो
सागै कजळी ती लायो रे

घर-घर सातू सिकण लाग्या
जीभड़ल्यां लाळा टपकावै रे
मूसळाधार मेघ बरस्यो
जीवड़ो ई हुयो सोरो रे
औ आसाढ, सावण, भादरवो
बिरखा चोखी लायो रे
बिरखा चोखी लायो रे

प्रकृति में रमणी चावूं

प्रकृति में रमणी चावूं
उणमें ई खुद गमणी चावूं
लहरां सूं बहणी चावूं
हवा रै सागै झूमणी चावूं

तावड़ा ज्यूं तपणी चावूं
तो रेत मांय बसणी चावूं
दळदळ माथै चालणी चावूं
फसलां जियां लैरावणी चावूं

आभै सूं मिलणी चावूं
करैला जैड़ी कड़वी यादां नैं
चूरमा जैड़ी मीठी यादां में
बदळणी चावूं

फूठरी दुनिया में जीणी चावूं
प्रकृति री गोद में होणी चावूं
प्रकृति में रमणी चावूं

◆◆

मनणां रो बास, वरकाणा, जिला-पाली (राज.) मो. 9828752270

ऋतु प्रिया

घर

अेक

आज म्हैं गई
म्हारै पुराणै मुहल्लै में
बठै देख्यो
म्हारो छोटो-सो घर
जिणरै किंवाड़ां लारै
म्हैं लुक जावती ही
घणकरी बार

म्हैं देखती रैयी
घर नैं भौत देर तांई

ओळ्यूं रै मिस
के ठाह कियां आयग्या आंसू
आंख्यां सूं बारै

सोचूं—
कदैई खरीद'र
सूंप सूं बापूजी नैं
इण घर री चाबी

बापूजी रो सुपनो हो
औ घर
जिको बेच दियो
स्यात म्हारै सुपनां सारू।

दो

घर छोड'र
चिड़कली चाल पड़ी
आपरै नूंवै घरबार
उण आपरै जलम रो
घर ई नीं छोड्यो
मां-बापूजी
बैन-भाई
सखी-सहेल्यां
अर आपरी
सगळी यादां नैं समेट'र
चाल पड़ी
बा अेक नूंवै घर री
काया में प्रवेस सारू।

साच

जरूरी नीं
कै जिको दीखै
बो ईज हुवै साच
जिको नीं दीखै
बो भी हुय सकै साच
पण कुण जाणणो चावै
साच
स्यात आजकालै
साच नैं आंच।

दुनिया

अेक

मिनख नैं
सगळै जीवां में
सिरैकार कुण कैयो
म्हैं तो नीं कैवूं
प्रकृति सूं जुड़्योड़ा
सगळा जिनावर जाणै
प्रेम री भासा
पण मिनख
क्यूं जीवै
आपरी अलायदी दुनिया में।

दो

टाबरां रा सगळा खेलकूद
छोरियां रा नाच-गाणा
बूढा-बडेरां री लांबी बातां
गिटग्यो काच रो बक्सो
अर रई-सई कसर
पूरी कर दी मोबाईल
अबै सगळा
आपरी उधेड़ै अर आपरी सींवै
आखो जग
आप-आपरी दुनिया में जीवै।

◆◆

मु. पो. कूदन, तहसील-धोद, वाया-दादिया, जिला-सीकर (राज.) 332031 मो. 7891739443

 ISSN : 2320-0995

कविता शर्मा

पणिहारी

रुणझुण, रुणझुण पायलड़ी
माथा पै चूनड़ी झीणी
नैण कटारी कामणगारी
मुळकै भीणी-भीणी

धोरां री धरती रै मांय
जठै बूंद-बूंद तिरसावै
माथै इंडी, इंडी पै गागर
भर-भर इमरत ल्यावै

टाबर टोळी भाबू भोळी
निरख-निरख हरखीजै
घणो तावड़ो पण भरया परींडा
देखै चिड़कल्यां रीझै

आ पणिहारी गजबण भारी
नित कुवा सूं पाणी खींचै
खेत, गुआड़ी, आड़ी-बाड़ी
घडुल्या भर-भर सींचै

जूंट जिनावर ढोर बटेऊ
सगळ्यां री तिरस बुझावै
पिणघट री ओळख पणिहारी
मुरधर री शान कहावै।

आंधी

झाख, झक्खड़ ओळा बिजळी
आंधी धूड़ धाणी
च्यारां कानी मचै बूरणो
हुवै महल झूंपड़ी अर ढाणी

धड़धड़ातो उठै भम्बूड़ो
करै शोकर सांय-सांय
ढोर-ढंगर, टीण अर टप्पर
सागै उडता जाय

आडी पड़गी सगळी फसलां
बूर झड़कतो जावै
जद बौळा रोस दिखावै आंधी
निरा रूंख उखाड़्यां जावै

लारै-लारै इंदर बाबो
गरज गरज धमकावै
लपकै बिजळी, छूटै धूजणी
टाबर डरपै ओलो खावै

झाख झक्खड़ सगळा बूरै
पण आंधी करै तबाही
जद हुवै आभै धूड़मधाड़ी
थे घरां ही रहज्यो भाई।

◆◆

57, डी ब्लॉक, श्रीगंगानगर (राजस्थान) मो. 9414830148

डॉ. कृष्णा कुमारी

थे ई जाणो

कतनी सुखी छै
या छोटी-सी चिड़ी
जद भी मन में आवै ईं कै
नाप्यावै छै धरती अर आकास नै फुर सूं
आ बैठै छै साता खाबा
कदी पेड़ पे
कदी घास में फुदक-फुदक कै
खेलबा लागज्या छै
अणजाण्यां चिड़ा-चिड़्यां लारै
कोई न्हैं पूछै ऊं सूं
कोई न बरजै ऊं नैं
अरी कै तूं फिर री छी
कीं कै साथैसारो दिन
अर कस्यां रूंख पे
काढी आखी रात थूं?

अर या गाई-माई
या भी तो मरजी की छै मालक
चरबा-फरबा चावै जठी चल दै छै
सो जावै छै
बीचां-बीच सड़क कै माथै
गाड्यां-घोड़ा / लोग-लुगायां / आगै-पाछै
सूं खड़ ज्या छै ईं सूं बच कै
अर ईं चींटी नैं भी देखो
अपणी धुन में / अठी-उठी
कांई भी करती / फिरती रहवै
मिल जावै जद चावै जिसी दूजी चींटी तो
कानाफूसी करबा लागै
कांई न कांई दोनूं
कोई न्है क्हवै ऊं सूं / कोई न बरजै ऊं नैं
अरी कै तूं कीं कै गोडै इसक लड़ाबा गी छी?
अर या गिलैरी / अर या ऊंदरी
यां की भी तो कतनी चैन की कटरी छै
न्हैं तो ब्यांव की चिंता
न्हैं ई सासरै आणो-जाणो
न्हैं ई घूंघटो पड़ै काढणो
न्हैं ई डाइजा का सोलां में
जीवतां ई बळबा को डर छै
कोई खसम यांनै पावां की जूती क्है कै
ठोकरां सूं आडी न्हैं पाड़ै

पण या बापड़ी औरत?
कांई बताऊं! हाय विधाता!!
हाय री दुनियां! हाय री मरदां हाळी माया!!
म्हूं कांई क्हूं?
म्हैं कांई क्हूं??
थे ई सोचो! थे ई जाणो!!

◆◆

'चिर उत्सव', सी-368, तलवंडी, कोटा 324005 मो. 9166887276

 ISSN : 2320-0995

कृष्णा सिन्हा

कियां लिखूं कविता

थे चावो
कै म्हैं मांडूं प्रेम कविता
कविता
जिकी मोह लेवै मन नैं
कविता
जिकी कर देवै नेह बीज रो थापन
अर प्रीत सूं सराबोर कर देवै
इण अळूझाट भर्‌यै जीवण नै
पण कियां मांडूं म्हैं
अैड़ी कविता
कियां उकेरूं
थारै मन री चावना रा
मोवणा चितराम
कियां मैसूस करूं
इण प्रीत झरणै रो
कळकळ नाद...
जद पसर्‌योड़ी है
अणथाग-अणमाप पीड़
म्हारै आखती-पाखती
जद बिलख रैया है
नैना टाबर भूख सूं
मजूर मां-बाप रो
रुजगार बंद है
बीमारी सूं आंती आय
सांस छूट रैयी है जद
घर रै अेकलै खैवणहार री
अरथ रै तोड़ै सूं टूट रैया है
मन रा तार-तार
तद कियां मैसूस कर सकूं
प्रेम नैं ?
कियां लिख सकूं कविता
कियां उगेर सकूं
हेत-प्रीत री राग

थे अरथा दीजो

थे अरथा दीजो
म्हारै आडा-अंवळा सबदां नैं
काचा-पाका भावां नैं
थे उकेर दीजो कविता में
म्हारी पीड़
म्हारी प्रीत
म्हारा सपना
थे ई मांड दीजो कागद में
म्हैं जाणूं कै थे समझो हो
म्हारै अंतस री कळझळ
अर मनगत री जूझ
अतरी सी म्हारी अरज
कै थे दीज्यो म्हनैं म्हारी पिछाण।

◆◆

12, कृष्णालय, पशुपति विहार, सेगवा, चित्तौड़गढ़ (राज.) 312001 मो. 9461140160

कमला मारवाड़ी (जैन)

मजलां चालणियो ई पासी

मजलां चालणियो ई पासी
सूत्या-सूत्या सुपनो देखै
बो सुपनो ई रह जासी
मजलां चालणियो ई पासी।
चालणे रो मतलब जीणो,
थमणै रो मरणो है
सोच-समझ कर ले निरणो
उठकर पग आगै धरणो है
बैठ्या सूं मंजल सिर चढज्या,
चाल्यां बणै, चरणां री दासी
मजलां चालणियो ई पासी।
चालूं कै नईं चालूं?
सोच-सोच कै टेम गमावै।
आळस तज, डग धरया लगोलग
अणचिंत्यो भी पा जावै
कामू रो रैवै हर खिण ताजो
निकम्मां रो बण जावै पासी
मजलां चालणियो ई पासी।
जीवण अणमोल इणनैं
आळस में मतना खोवो
मैणत रा हळ चलावो अर
हिम्मत रा अखूट बीज बोवो
'कमला' आगै पांव बधाया,
साथी सागै केई मिल जासी
मजलां चालणियो ई पासी।

◆◆

राजबिराज (नेपाल) मो. 9825733440

 ISSN : 2320-0995

कामना राजावत

हथाई आळी चूंथरी

बा हथाई आळी चूंथरी कठै गई
जठै सिंझ्या पड़्यां
कीं डोकरियां भेळी होवती
करती ही मन री बातां
हंसी ठिठकळ्यां, कदैई करड़ी बातां
बांकी बातां में इतिहास हुवतो हो
तो कदैई खींच देंवती कींको भी भूगोल
बै कैवती—म्हैं भागफाट्यां जाग्या करती
मण-मण पीस्या अर पोया करती
चाळीसां मण धान काढ्या करती
महीनो-महीनो नीपणो-चाकणो करती
दोपारियां गोटो किनारी लगाया करती

बै कैवती—म्हैं अेक लोटा पाणी सूं न्हाती
चिमनी का चानणा मांय बिणाव करती
काजळियां लेंगा पे, पीळो ओढ'र
काजळ-टीकी, आटी-डोरी रो कर सिणगार
गणगौर पूजण जाया करती
ऊंट पे बैठ'र पीहर सासरै आया-जाया करती
बांकै माथा पे पड़ी झुरियां माथै आयोड़ी हंसी
अर बीती बातां नैं याद कर
आयो मोद, कित्तो ओप्या करतो हो बां पर

बै कैवती—दिराणी-जिठाणियां मिल'र रैवती
बडेरां रो मान राख्या करती
आखै दिन सासू रै आगै भाज्या करती
कोई मोड़ा तांई बडेरियां रा पग दाब्या करती
कोई आधी रात रै पछै
पीव मिलण नै जाया करती

बै कैवती—म्हांका टाबर अचपळा कोनी हा
मोटो खुवाता, मोटो पैराता
पण घणा मूंडै कोनी लगाता
अेक काठा डूपटा में सियाळो काढता हा
धाणी भूंगड़ा उन्याळै में घणा भाता हा
चौमासा में रैवतो काकड़ी-मतीरां को कोड
काचरी-टींडसी रा फालरा सुखाता हा
घणा ई गाती ही गीत
करती ही घणा ई तमासा
जद जंवाई-भाई आवता हा

म्हैं सुणती बांरी बातां
लागतो, अै कुणसा जुग री लुगायां है
अलग-सी
अब तो टेम बदळग्यो
अब कीं नैं औसाण है हथायां रो
सुख-दुख बांटण रो
सगळा भाज रैया है
अबै घरां रै साम्हीं
कोई हथाई आळी चूंथरी कोनी बणावै।

◆◆

डी-78-79, द पॉम हाउस, सुशांत सिटी, कालवाड रोड, जयपुर (राज.) मो. 9414718086

डॉ. चेतना उपाध्याय

अंगरख्यो

हगळा मां सा नै बा सां नैं ढोक दूं
हगळा टाबरां नै म्हांकी जान लोग-लुगायां नैं राम-राम
थे म्हनैं ओरखो ? मूं अंगरख्यो
मोट्यारां का पैरबा नै आतो काम
ईं टेम नै तो म्हारो पूरो ई कर दियो काम तमाम
लकझक सफेदी रो, कांई ताप हुया करतो हो
त्योहारां पे धुलवा री मूं बाट देख्या करतो हो
पग्यां पगरखी धोती, गळै मां मिमणिया नै माथा पे साफो
म्हांकी शान मांय कांई कसीदा काढ्या करता हा
मूं वांको मान बधावतो नै वे म्हारी हंभाळ राखता
अबै किंसो टेम आग्यो, नीं तो करै राम-राम
अर ढोक देवा रो तो अठै कांई काम
हाय-हलो नै कर दियो, म्हांको पूरो काम तमाम
पैंट-शर्ट, अंगरख्यो-धोती नैं खाग्या
टाई बैल्ट, तिमणिया कमरखी खागी
म्हांरी आन-बान-शान, साफो पड़ग्यो धूड़ा में
रोट्यां पोता चूल्हा पे, न फेर सैंकता अंगारा पे
मांटी म्हांकी मां रेती, न ऊपर आळो बाप समान
हवेर कलेवा नै फेर दोफैरी, सांझे ब्याळू नै राम-राम
आखो दंण खेत खलिहान कमर तोड़ता
सांझ पड़ै जद चौपाळां पे हगळा हमाज री साज सम्हाळ
औ ई अंगरख्यो धोती साफो वठै चलातो म्हांको काम
औ ई अंगरख्यो धोती साफो वठै चलातो म्हांको काम।

◆◆

49, गोपाळ-पथ, कृष्ण विहार, कुंदननगर, अजमेर 305001 (राज.) मो. 9828186706

 ISSN : 2320-0995

ज्योत्स्ना राजपुरोहित

बा बतळासी बगत अर आभै नैं

बै सगळी लुगायां
हकदार है
दया अर सहानुभूति री
जिक्यां नैं बैम है
आपरी निरणै सगती पर
जिकी आखी उमर ढूंढती रैवै
अेक मरद
जिको बाप-भाई कै
प्रेमी रै ओळावै
ले सकै
बांरी पांती रा फैसला
अर बारै काढ सकै बांनै
अधरझूल सूं।

कळपती रैवै जिकी सदीव
काळजै उठती
आजादी री चावना में
बळती रैवै बां लुगायां सूं
जिकी लेवै खुदोखुद फैसला
सई-गलत री
दोघड़चिंता सूं मुगत होय
जोखम लेवणो जाणै है जिकी!

भविस में कदैई
किणी दिन
पीठ फोर'र
बैठ जासी अै लुगायां
अर कर दैसी निजरांदीठ
इण जगत रा
सगळा रीत-रिवाज
उण दिन
जुगां सूं
मिनखां रै चौफेर भूंवती
बांरी परकम्मा अर ढूंढ
हुय जासी पूरी
तद रैसी
फगत लुगाई
खुद रै पगां खड़ी
आतमसिद्धा
वीरबानी
जिकी बतळासी
बगत अर आभै नैं।

◆◆

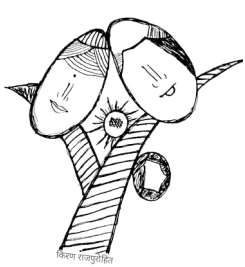

डी-42, विजय विहार, सोफिया स्कूल रै लारै, बीकानेर (राज.) 334001 मो. 8107235452

ज्योति राजपुरोहित

मन

मन म्हनैं कठपूतळी ज्यूं
नचावै अर म्हैं नाची जाऊं रे
मन रा हाथां बिकी-बिकी-सी
ठगी-सी रह जाऊं रे।

सात समंदर पार कराय दै
कदैई तो घर में बैठां-बैठां रे।

आंख्यां सावण-भादवो कराय दै
भींज-भींज जाऊं रे
मन म्हारो माळी ज्यूं म्हैं तो
दासी बण बैठी रे।

अैड़ो म्हारै पर जादू फेरयो
सुध-बुध म्हारी बिसराई रे
खोळ किंवाड़्यां मन री
बारै कीकर निकळ जाऊं रे

लोभ-मोह नैं छोडनै
प्रभु चरणन में 'ज्योति' जाऊं रे
मन म्हनैं कठपूतळी ज्यूं
नचावै अर म्हैं नाची जाऊं रे।

◆◆

देवो थे किणनैं दोस

बिना नाथ रा बळदिया,
भिड़ता भर-भर जोस।
बुढापै भूंडी हुई,
देवो थे किणनैं दोस।।
मदछकिया थे मानवी,
थे नीं राखता होस।
नस-नस इब ढीली पड़ी,
देवो थे किणनैं दोस।।
गाबड़ नीचै गेरली,
कर-कर मनड़ै रोस।
डाफाचूक हुया डोकरा,
देवो थे किणनैं दोस।।
थर-थर धूजै बूढिया,
औ देख आवतां पोष।
जम सियाळो आयग्यो,
देवो थे किणनैं दोस।।
दान-धरम कीन्हो नहीं,
भर भरी जवानी जोस।
पल्लै पुन्न पूंजी नहीं,
देवो थे किणनैं दोस।।
जम जबर जद आवसी,
पिराण ले जासी खोस।
पिछतावै में नाड़ हिलै
देवो थे किणनैं दोस।।

◆◆

43, सिटी संगाथ सोसाइटी, रामदेव होटल रै लारै, अहमदाबाद हाई-वे, पालनपुर, बनासकांठा (गुजरात) 385001
मो. 9601913642

 ISSN : 2320-0995

कविता

जयश्री कंवर

महेन्द्र-मूमल

जद-जतद पढ़ूं
महेन्द्र-मूमल री कहाणी
हिवड़ै में हूक उठै
आंख्यां में आवै पाणी

बै किस्या मिनख हा
जो समझी भावना साची
आंख्यां ई आंख्यां सूं
प्रेम-पाती बांची

अब क्यूं रीत गयो
हिवड़ै रो भाव
क्यूं होयग्यो मिनखां रो
तातो भाखर सो सुभाव

प्रेम पर भारी हो रैयो धन
प्रेम सूं रीत रैया मन

कोई करै भावना रो
तोल-मोल
कोई उडावै रिस्ता रो मखौल

डूंगर जिस्या
सख्त होयग्या
आजकाल रा मिनख
मिनखपणो बिसरा'र
बणग्या चील-कागला
कंगूरा झुकग्या सरम सूं
चीख रैया है छप्पर अर
डागळा
कांई जाणै
और किस्या दिन आसी
साचा प्रेम री बातां तो
किताबां में ई रैय जासी।

जीवण री बातां

आवो,
आज फेरूं बैठां
नीमड़ै री छिंयां मांय
घणा दिन बीतग्या
सुख-दुख री
बातां करयां।

आवो,
आज खोलां
आपणै मन री गांठ्यां
स्हैरां मांय
जाय बस्या जद सूं
भूलग्या आपणो
गांव अर गवाड़ी
भूलग्या चूल्हा री सिक्योड़ी
बाजरै री रोटी रो सुआद
चीलवा रो खाटो
छाछ राबड़ीपीयां
जाणै जुग बीतग्यो

आवो,
आज फेरूं परोसां
थाळ मांय
देसी जीमण
मायड़ भासा रो
रसपान करां
जड़ां ईज राखसी
मन रा रूंखड़ा
हरया-भरया

आवो,
भरल्यां
हिवड़ै में हेत रो उजास
फेरूं आ जासी
चानणी रातां
ल्यो आवो,
आज करां
जीवण री बातां।

◆◆

9/887, मालवीय नगर, जयपुर 302017 मो. *9166928249*

तरनिजा मोहन राठौड़ 'तंवराणी'

गैली राधा

उण दिवसां री बात छै
म्हैं कंवळी कूंपळ ज्यूं हुवती ही
कंचन काया आईनै मांय देख मुळकती ही
भंवरां री दीठ सूं इणनैं बचाय राखती ही
जद सुणिया सबद थारै मन रा
हरख-हरख कर दरसन री चाव राखती
साम्हीं कदैई नीं पड़्यो रे कान्हा!
पण हूं थनैं ओळखती,
मीरां री प्रीत पर ना इतरा रे कान्हा,
उणरी प्रीत लौकिक रे कान्हा,
म्हारी प्रीत सूं मत जोड़ी,
आ तो अतंस में रम्योड़ी
अलौकिक रे कान्हा।

कान्हा! केई बरसां सूं थनैं उडीकूं
भर नैणा रै पाण,
जद थूं मिल जावै अेक बार सुपनै में आय,
म्हारै धीरज रो छैह आ जासी
अणजाणै में म्हारै मूंडै सूं
फगत 'कान्ह-कान्ह' निकळसी
जद जग हंसैलो अर
म्हनैं गैली राधा कैवसी
पण थूं चिंता ना करजै।

कान्हा! म्हारै हिवड़ै में थूं सदा इयां ई रैसी,
म्हारी सखियां कैवै,
रैळी-बावळी राधा थूं मन में मोद करै
नैणा में गुमेज भरै कै—
थूं कान्हा री अर कान्हो थारो
होस में आय जा
कान्हो थनैं बिसरग्यो
छोड़ थारी अणगाती प्रेम री गळियां
किणी राणी रै मन बसग्यो
इसां सबदां रा बाण कान्हा म्हारै हियै नैं दाझै,
पण थारी म्हारी प्रीत नैं नाजोगा कांई जाणै?
कोसिस रा पग टूट जावै
जद थूं म्हनैं याद करै
थारी अमर प्रेम री सौरम फूलां-फूलां में महकावै,
थारै नैणां रो नेह जणा-जणा में छळकै
पण नैह रो छैड़ो थासूं छूटै कोनी
थारी छिब हिवड़ै सूं जावै कोनी
नईं कान्ह, नईं!
थारो-म्हारो ब्यांव कोनी हो सकै,
आ बात म्हारै हिवड़ै में शूळ-सी चुभ जावै,
पण जद आंकूं थारी-म्हारी प्रीत नैं
निष्काम भावां सूं समरपित हो जाऊं,
नईं कान्ह, नईं!
थारो-म्हारो ब्यांव कोनी हो सकै
क्यूं कै अेक जीव रा
दो अलग-अलग सरीर हां आपां
थूं म्हारो कान्हो है अर म्हैं थारी गैली राधा।

◆◆

610, न्यू बी.जे.एस. कॉलोनी, मार्ग 14, बी. रोड, जोधपुर (राज.) 342006 मो. 9829110475

 ISSN : 2320-0995

दीपिका दीक्षित

सोना नो सूरज क्यारे उगेगा ?

कंय है के
सोना नो सूरज उंगी ग्यो है,
नै आना सूरज ना उजवारा मय
गरीबी, अशिक्षा अनै ऊंच-नीच
हंपाई रयं है।
चारियें मेर
हेत नै हम्पनी हन्नाइये
वागवा लागी है
पण ज्यारे मुं कमली ने जोवूं
त मन मय विचार आवै
के आनैं जिंदगी नो
सूरज क्यारे उगेगा ?
कारे मटेगा अैनी जिंदगी नो परिताप ?
नै क्यारे थायगा
अैनी जिंगी मय सुख, शांति नो वरसाद ?
मु जारे भी
कमली नै बारा मय विचार करूं
त मारी आंख ना साम्हीं
अैनी जिंदगी नो अेक वरसाद
सिनेमा नु वजु उतरी आवै।
बापड़ी कमली !
वैगी उठी नै घट्टी दरे,
सपं-ढांढं नुं करै, रोटो करै नै
नानका नै दूद पिवाड़ी
नै छोंरै नैं भणवा मैली,
न पांस कोस वेगरी स्हैर मय
मजूरी करवा जाए।
आखो दाड़ो हाडतोड़ मजूरी करै
सांझ पड़ै घेर आवै
घेंरै जापा मंय
छोरो रोते थकी मलैं।
अैणनै बुस्कारती थकी
आंगणा मय आवै।
आंगणै सोमो दारू मय डट थाई नै बैठो
नै कमली नै जोइ,
नै गाळी देतो थकी रोटलो मांगै।
कमली छोरा नैं नीचै मैली,
रोटी करबा बैठै।
सोमो नै रोटो आली,
सोमो रोटो खातै-खातै
बबड़ातो-बबड़ातो
अेमज ढरि जाए
नै कमली अड़दू-पड़दू खाई
छोरं नै सुआड़ी नै पोतै हुई जाए
नै बीजै दाड़ै फेर काम माथै जाए।
म्हनैं रई-रई नै अेकस विचार आवै
कै कमली नीं जिंदगी मय
सोना नो सूरज क्यारे उगेगा ?
सोना नो सूरज क्यारे उगेगा ?

◆◆

48-शिव कॉलोनी, तैयब हीरो मोटर्स रै लारै, संस्कार होटल री गळी, उदयपुर रोड, बांसवाड़ा 327001
मो. 9414725226

डॉ. धनञ्जया अमरावत

म्हारो बेरो

म्हारो बेरो
हां औ बेरो, म्हनैं चोखो लागै
अठै बसी है,
म्हारै बाळपणै री यादां
जठै म्हैं हेरती,
चिड़कलियां रा आळा
कबूड़ां रा माळा
अर व्हारां नैना-नैना
बिचियां रै हाथ लगाय
लेंवती बो सुख
जको आज
नीं मिळै, हेरियोड़ो ई।
हां, अठै ईज तो रैवता हा
भंवर जी, मांगो,
उणरी मां अर खेमौ
कितरा लाड-लडावता हा बै
नैना लीलू बाईसा नैं।

कठै गिया, बै हेजाळू लोग
आज हेरूं तो ई
नीं लाधै बो हेज।
इणीज बैरा माथै
हा कीं रूंखड़ा
कीं बोरड़ियां रा
कीं खेजड़ियां रा
तो कीं बांवळियां रा
जका देंवता म्हनैं
बोरां, खोखां, गूंद अर
पापड़ियां रो इधको सुवाद
कठै गियो बो सुवाद
अबै तो,
बो सुवाद आवै ई कोनी।

म्हारै बाळपणै रा बेली
धूड़ा में,
ऊंडो रैवणियो हाथीड़ो
बाड़ा में भरिया आंईणा अर
ठाणां बंधिया दूजोड़ा ध्राव।
कठै गई बा सिंझ्या
जद दुवारी करता सागड़ी
म्हनैं हेलौ मार बुलाता
अर, दूध री धारां सूं
भरीज जावतो
म्हारो सगळो मूंडो
बो झागां चढी,
दूध री बाल्टी सूं
आंगळी भरनै
दूध रा झाग चाटणो
आज ई म्हारै मूंडै
मुळक लेय आवै
इणीज बेरा री
माटी री सौरम
इणरी साखां री महक
नीप्योड़ा लाटां री गंध
आज पण बसी है
म्हारै अंतस में।
हां, इणीज बेरा माथै
म्हैं फिरती
म्हारा जीसा री
आंगळी पकड़ियां
उछळती-कूदती
जद जीसा री याद आवती
तो पूछती
खेतां में चुगता सारड़ां नै
जीसा रो पतो
पण आज तो बै सारड़ा ई कोनी
जिणसूं पूछूं म्हैं
म्हारै जीसा रो पतो
पण म्हैं जाणूं हूं कै
इणीज बेरा री
रज-रज में बसिया है
म्हारा जीसा।
हां, इणीज कारण
म्हनैं चोखो लागै औ बेरो।
◆◆

11, शक्ति-सदन, राम मोहल्ला, नागौरी गेट रै बारै, जोधपुर (राज.) मो. 8003700477

 ISSN : 2320-0995

नलिनी पुरोहित

माधवी

किस्तर बोलैला माधवी
इण पुरुषप्रधान देस में
बोलणो तो कांई
होठ भी नीं हिलाय सकै
माधवी गूंगी नीं है
उणनैं अेक जबान
बख्सी है ईश्वर जी
पण छीन लीनी समाज
अर समाज में रैयनै
गूंगीजनै मून होयगी
बोलती किस्तर माधवी
दान में दियोड़ी
वस्तु ही माधवी
माधवी रा बापजी
प्रचलन चालू करयो हो
कन्यादान रो अर
जदी सूं चालरयो है
प्रचलन गाय अर गौरी नैं
जठै हांकी जावै
बठै ई रहणो पड़ै
आपरी मरजी सूं बोलण रो तो
सवाल ई नीं उठै
म्हैं ई अेक सवाल करूं
भारत रा पिता सूं
भारत रा पिता ई
चलाई ही या प्रथा
यो रिवाज
क्यूं नीं अबै पुत्रदान व्है
कन्या रो ईज क्यूं
अगर यो व्है तो
आज धन्य हो जावै पिता

आज रो बाळक
काल रो नागरिक
कैवता ढबै नीं है
सगळा जन जागरूक
कांई कर पावैला
आज रो अेकलव्य
डोनेशन रा जुग में
विपदा बडी है साम्हीं
दक्षिणा नीं डोनेशन
मांगै है द्रोण
अेकलव्य कनै सूं
नीं वणी रा पिता सूं
अंगूठा री जगा
पचास हजार रो चेक
पछै अेकलव्य रो तीर
कुत्ता रा मूंडा पे लागै
या द्रोण रा माथा पे।

◆◆

23/60, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, पाल रोड, जोधपुर (राज.) मो. 9079645114

निर्मला राठौड़

मायड़ कैवै बेटी नैं

मायड़ कैवै बेटी नैं
मत आवजै लाडो थूं इण देस
चीड़ी कमेड़ी बणाय दीजै ईसर
मत बणाजै बेटी

घोर कळजुग आवियो इळा माथै राम
घर में ई नीं सुरक्षित बेटी आपणी आज
जद रक्षक ई भक्षक बण जावै तो
कठै अर किण सूं फरियाद करै बेटी

जलम देवाळ बाप ई भक लेवै तो
किण रो विस्वास करै बेटी
नारी जूण री जात्रां दोरी घणीज
कोय ना समझै आ बात

जलम लेवै जद घर में बेटी
मातम छावै अणमाप
सुत सुता में अंतर राखै घर पिरवार
नी मांगै कदैयी कीं मुख आपरौ खौल बेटी
जैड़ो मिल जावै उणनैं स्वीकार करै बेटी

सगळा कैवै हांती री धणयाणी हुवै बेटी
नी हुवै पांती री हकदार बेटी
इण बात री गिणनै गांठ लगावै बेटी

हाथ सूं घर आळा जकौ दैवै
उण में ईज सबूरी कर लेवै बेटी
काम काज में मायड़ रो हाथ बटांवै बेटी
तो ई दरद मिलै उणनैं अणमाप

जद मोटी हुय जावै तो
खटकै घणी नैणा में सगळां रै बेटी
काळ चढनै रक्षक रै माथै
जद तांडव करै राकस
हवस रा लोभी भूखा भेड़िया री
बळि चढ़ जावै बेटी

क्यूं भक लैवै रक्षक ?
क्यूं लजावै कुळ नैं ?
छोटी-छोटी चिड़कलियां रो
बाळपणौ चिकदावै निरलज्ज

कांई कसूर हुवै उणां रो ?
लाजां मरती किणी नैं नीं बताय सकै बेटी
रोज-रोज मरणां सूं बेहतर
आत्मघात कर जावै बेटी

जद रक्षक ई भक्षक बण जावै तौ
किण नै अर कांई फरियाद करै बेटी।

◆◆

पदम निवास, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.) 342006 मो. 9660021521

 ISSN : 2320-0995

नीलिमा राठौड़

कोविड पर आपबीती

अेक

कबूतर रो जोड़ो
निल लगातो जुगत
बालकनी में घोसलो बणाणै री
म्हैं उडाती
तार पर बैठ्या देखता
मुंह उतार्‌यां
आज म्हैं करूं जुगत बचणै रा
घर मांय बंद
बारै कबूतर उडै खुलै आभै में
म्हैं देखूं बियां ई
जियां बै देखता हा मुंह उतार्‌यां।

दो

मिंदर री आरती
आनंद देवै मन नैं
मस्जिद री अजान
जगा देवै आतमा नैं
ओपरा मिनख री
नींद उचटगी
केस करया, फेर मुकदमो
अर फैसलो
बंद कर दियो सोरगुल
ईस्वर-अल्ला सोच्यो
नींद तो जोरकी
आपां ई लेवां झपकी
पारलोकी तो सोयग्यो
बंद कर आडा
मिनख धापग्या
अेकलपणै सूं काठा।

तीन

रात रै काळजै में
चांद री चांदणी ही
कीं गैरी, कीं माड़ी
रीत री रीत ही
कदै छोटो-कदै मोटा
टोटा रा टोटा हा
समय रो पहियो फिरियो
पहियै रो समय फंसगो
आज तो मिनख रै
सांसां रा ई सांसा हुयग्या
कांई करी रे सांवरा!
आपसरी डोर ई तोड़ दी
जो करी भली करी
आस्था री गळी बंद मत करी
थारी करी, पर म्हैं तो बस
दो-चार आपबीती करी।

◆◆

डी-5, फ्लैट नं. 101, उमापथ, रामनगर, सोडाला, जयपुर (राज.) 302019 मो. 9460870515

पवन राजपुरोहित

कुबदी कोरोनो

अबै तो बण्यो घर रुखाळो
बारै बैठ्यो कोरोना नाग काळो
फण पसारिया औ च्यारूंमेर
नीं छोड्या गांव-ढाणी स्हैर
अबखाई मांय पड़ी जिनगाणी
कुबदी कोरोनो जबर मांडी मनमानी
जीव-जीव रा पड़्या सांसा
नत निसरै औ बिछ रयी लासां
कर दीन्हा तैस-नैस केई घर-परिवार
कैड़ा दिन हा हंसता-मुळकताआवै बिचार
कोटियो सूत देंवतो दुमणो दुकानदार
देख्यो नीं इण जूण कदै अैड़ो हाहाकार
मंदी मांय मिनख सूं निसर्‌यो राम
बिसर मिनखपणो करै ऊंधा काम
लगावो थे मास्क राखजो दूरी
बचावो सै रो जीव औ हुयग्यो जरूरी
धरजो धीजो बधावो हिम्मत हूंस
छंटैला काळो बादळ कोरोना मनहूस
बावड़ैला हंसी-खुसी री बेळा
आस पांखड़ा मतना करजो भेळा
उकेरांला फेर सूं नूंवा मीठा गीत
मिल-जुल'र करांला सैयोग, हुवैला जीत।

◆◆

अबखाई अर औसर

खेल मंड्यो जबरो चौसर
अबखाई मांय आछो औसर
मिनख-मानखो घटकग्यो
मूळ मारग भटकग्यो
जीव मर रिया तड़प-तड़प
करै रुपियां खातर झौड़-झड़प

मरी आत्मा घट्यो ईमान
कोरोना काळ बण्यो बेईमान
लूट जमाखोरी नै काळाबाजारी
अै मिनख मार मोटा बौपारी
लाज करो थे बणो ना नुगरा
है पतियारो थे लोक कळजुग रा
दिया दान दातारी रो दागीणो पैरो
हुवैला चांदणो रंग आवैलो गैरो।

◆◆

सी-139, शास्त्री नगर, जोधपुर (राज.) मो. 9521784720

 ISSN : 2320-0995

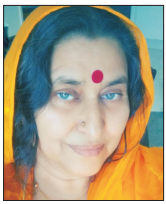

प्रमिला चारण

आंगण अब जोवैला बाट

रमिया सरवरियै री पाळ
बाबोसा रै द्वार
डागळियां री मेड़
आमलियां रै बाग
सहेल्यां रो साथ
आंगण अब जोवैला बाट
चौवटो सूनो पड़्यो....!

धीवड़ियां दोरी हुयी
दूजै घर जावती....
डूंगर-भाखर भेळा हुया
अब करैला मन री बात
चिड़कलियां दोरी हुयी
दूजै घर जावती....
नाळा-नाडिया ओढैला
दिखणी रो चीर
नैणां ढळकावैला नीर....

चिड़कलियां दोरी हुयी
दूजै घर जावती....
बतळावैला बाखळ-बार
सूनापण नैं धार
चिड़कलियां दोरी हुयी
दूजै घर जावती

तारां छाई झिलमिल रात
दिनां रै बाथां घात
रोवैला आधी रात
पूछैला आ बात
बणाई कुण आ रीतड़ली ?
ऊंडोड़ै काळजै रा उछास
उणरो जावै सत्यानास !
बणाई कुण आ रीतड़ली ?

जलमी बाबोसा री पोळ
लाडेसर इण आंगण री छांव
औ ई ओरण, औ ई गांव

सिधाई
दूजी ठौड़
हियै हूक लियां अणपार !

आभै रो रोयो जीव
धरा रो धूज्यो काळजो....

धरा ओढ लुआं रो
बळतो पोमचो
आंधी री पकड़ी आंगळी
जूना धाबळ रो धरियो भेख

आसीसां दीनी मोकळी
व्हैला सात जलम थारो सीर
पराई क्यूं व्है लाडली ?

नेवर बांधो बाईसा बाजणा
झांझर री दो झणकार
सिणगारो कसूंमल भेस
चुड़लो मजीठी चीरवां
सिधावो पिव रै देस
बधाओ बेल वंस री रात
धीवड़ियां रो अमर सुहाग
हमेसा रहसी राज....
आसीसां फळसी राज री।

◆◆

70, शिवराज निकेतन, वैशाली नगर, जयपुर (राज.) मो. 6376952449

डॉ. प्रियंका भट्ट

अनुभवां री लाठी

या अनुभवां री वा लाठी है
सगळां रै काम री साथी है

गेला मांय बै कतरा कांटा
हर बगत या म्हांनै बचावै है
सिखलावै है, बतळावै है
और टेम-टेम समझावै है।

पर मिनख अस्या पत्थर जिस्या
जे चतुर कागला बै मन रा।
अणी रा अनुभवां नैं व्यर्थ बताबै
रोज ठोकरां खावै है
पछै पाछेड़ सूं पछतावै है
आंख्यां खुलवा पे आवै है
तो ई ये वटवृक्ष रै जस्या-तस्या
सब दुख अपमान औ रंज भूल
गेला बतळाता जावै है
अर प्रेम लुटाता जावै है।

उठाया दोनूं हाथ

बै ऊपर उठाया दोनूं हाथ
जीवण रा समंदर में
डूबती थकी जिजीविषा
ऊपर-नीचै आता-जाता
हालातां सूं गोता लगाता
फेर भी
मन मांय धारयां
नूंवी आसा अर विश्वास
भलांई
व्है घणी ऊंडी-ऊंडी गैराई
पार करांगा
सब मुश्किल
पावांगा मंजिल
है यो
पूरो पाको
दृढ निश्चय, विश्वास
बै ऊपर उठाया दोनूं हाथ।

◆◆

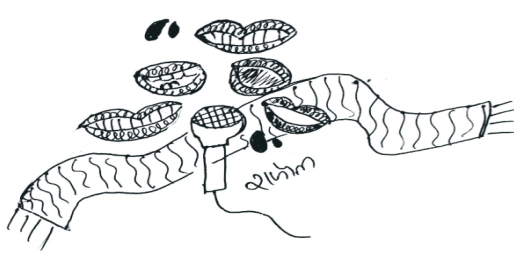

डी-7, हिरणमगरी, सेक्टर-5, उदयपुर (राज.) मो. 9468967674

 ISSN : 2320-0995

प्रियंका भारद्वाज

मुळक

आमण-दूमणी लुगाई री
मुळक
भोळावण में लाग्योड़ी
छैणी है
पत्थर माथै
जिकी देवै बैम
मूरत होवण रो।

मजूर

ईं भोम माथै
कर राख्यो है कब्जो
अर आभै रो भी
करै धणियाप
बण'र देवदूत
इक्का-दुक्का लोग
दूजै कानी
हाथां में हळ, कस्सी
अर माथै री पीड़ री पांड ऊंचायां
मजूर फिरै
भोम ढूंढतो
पण बीं खातर
नीं आभै में जग्यां है
ना भोम माथै।

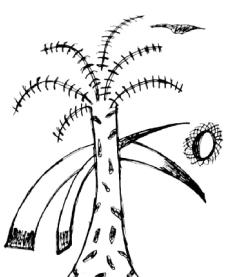

सरणार्थी कैंप

सरणार्थी कैंप में बैठ्या लोग
कुंआरी मां री बा औलाद है
जिणनैं भगवान
इण आस मांय गूंथै
कै कदैई तो बणसी
कोई ईसा मसीहो
जीको बांटसी धरती
सगळां में बराबर-बराबर

किसान अर मजूर

दिल्ली रै फुटपाथ माथै
बैठ्यो मजूर जद सुणी कै
किसान आवै धरणो देवण
उभाणां पगां भाज्यो
धरणै री जग्यां
पण चाणचके ई काळजै मांय
मच्यो घमसाण कै
बांनै मोड़ आऊं पाछा
ईं सूं पैलां कै
बांनै हांक देवै हाकम रा डंडा
बकरी-भेड़ ज्यूं, क्यूंकै
फुटपाथ माथै अब
जग्यां खाली कोनी।

◆◆

वीपीओ-मुंडा, जिला-हनुमानगढ़ (राज.) 335526 मो. 7357474289

बंशी यथार्थ

प्रीत रै आंगणै

आ थोड़ी बैठ बावळी!
घड़ी स्यात गुरबत करां
इण जूण री
अबखायां रै जाळां मांय
लारै छूटग्यो हेत
बीं रो हिसाब करां।

पराई निंदा री बातां
बाखळ सूं बारै करां
मिनखां रै हियै मांय
प्रीत-रीत रा अलेखूं रंग भरां

आ बैठ कन्नै
सांसा ज्यूं अेकमेक होय'र
जठै है अंधारो
बठै सबड़क च्यानणो करां

आपां दोन्यूं—
जवानी री थळी लांघ'र
बुढापै री
चौक माथै आय बैठग्या,
थूं चरावती रैयी
ढोर-डांगर
अर पाळती रैयी
टाबर-टींगर
अर म्हैं
आखी जूण रैयो परदेसां

म्हैं कदैई नीं देख्यो
थारो आरसी दांई
पळपळाट करतो जवानी रो
मूंडो
अर नैणां मांय काजळ कै
सुरमो,
कदैई नीं सुणी
थारी पाजेब री
मीठी-मीठी छण...छण...
चूड़्यां री खण...खण...

आ थोड़ी कन्नै सरक बावळी
बुढापै नैं देख-देख'र
नैणां सूं नैणां मिला'र
हाथ सूं हाथ थाम'र
होळै-होळै प्रीत रै आंगणै
उतरां।

दोजक

म्हैं दादी नैं कैयो—
'दादी!
थे दस-बारै उपराथळी
टाबर जामण
हाळो देख्यो
घणो दोजक।'

दादी बोली—
'बेटा,
उपराथळी
पड़ता काळ
कदैई छपनियो काळ
कदैई अठावनियो
घणो देख्यो लुखासणो
जांटी रा छोडा ई
धान मांय
पीस-पीस खाया
कठै हा घी-दूध
डांगर तो भूखा मरता मरग्या
जापै रै भानै सूं
थोड़ो आछो खाणनै मिलतो
औ
दोजक।

◆◆

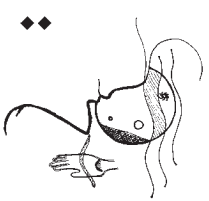

ग्राम पोस्ट-चाइया, तहसील-रावतसर, जिला-हनुमानगढ़ (राज.) मो. 9509590243

 ISSN : 2320-0995

भावना शर्मा

पूत भलांई लख कमाया होसी

मुळक ना सकै मानखो
जलम री गत बणाया होसी
मां-बाप री आसीस बिना
पूत भलांई लख कमाया होसी

चांद सरीखी चांदणी
सीतळ नेह उजास
चरण कमल रा दायरा
तूं मत भूलै करतार
इण रूंखां री छिंयां बिना
कीं बच्यो जिको तूं खोसी
मां-बाप री आसीस बिना
पूत भलांई लख कमाया होसी

जीवण री उजियाळी है
मां-बाप री हाजरी
नर-नाहर सम गरज उठै
सर पर छतर भारी
इण काजळ री कोर नैं छूतां
जम भी डरता होसी
मां-बाप री आसीस बिना
पूत भलांई लख कमाया होसी।

◆◆

1/505, रेम्बल रोड, लोहागल रोड, रामभवन रै साम्हीं, अजमेर (राज.) मो. 9251370370

मधु वैष्णव 'मान्या'

छाला

पगां रा छाला
आपाणै सागै चालैला
तूं मन रो नेह....
गैर जरूरी मत कर।

मधु.... तिरस प्रेम री
राखां जद... गांठ हिवड़ै
ज्हैरीली मत कर।
भावां रा रंग हजार
तूं बातां इंदरधनुषी मत कर...।

चिड़कली सांसां री
उड जावैला अेक दिन
तूं बातां...
ड्योढी पर मत कर।

◆◆

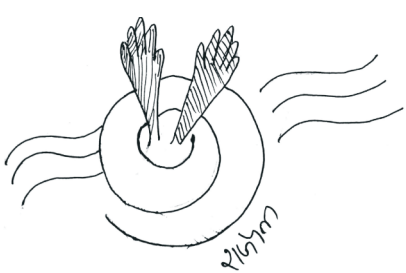

हरियल पान

मन हिंडोळा में
रमता रैवै
प्रीत री बूंदां रा
चाव हजार....।

काढण सूं निकळै कोनी
मधु
आंख्यां में जळ
प्रेम रा दीप हजार....।

धीरज री पाळ माथै
साजन, म्हारा जीव रा
पक रैया हरियल पान हजार।

◆◆

487-ए, श्रीरामनगर, आर.टी.ओ. ऑफिस रै कनै, भदवासिया, जोधपुर (राज.) मो. 7597194287

 ISSN : 2320-0995

मधुर परिहार

आंगणियै री चिड़कलियां

आंगणियै री चिड़कलियां
अबै नीं दीठै कोस पचास
बाटां जोय-जोय थाकगी
म्हारी बुझगी अब तो आस

सूरज सागै चक-चक करती
गोधुळी तांई आंगणै फिरती
डाळ-डाळ बा इयां फुदकती
जियां घर री होवै खास
पण आंगणियै री चिड़कलियां
अबै नीं दीठै कोस पचास

चीं-चीं चक-चक करती
बुणती सुपन हजार
स्यात पंख आयां पछै
बीं नैं आयो सघन विचार
आभा कानी जोवती
बीं नैं दीठ्यो घणो उजास
पण आंगणियै री चिड़कलियां
अबै नीं दीठै कोस पचास

खुद रो आभो सोधण खातर
इण आंगणियै नैं छोडगी
निंबड़ली, खेजड़ली अर
थळगट सूं नातो तोड़गी
गमती, घटती इणरी जात नैं
कोई बिचाळै स्यात
पण आंगणियै री चिड़कलियां
अबै नीं दीठै कोस पचास

फुदक-फुदक नै मांड पगलिया
सुभ करती संसार
झूठ, लोभ अर खोट बांरै
नीं हो औ व्यापार
मिनखां री मक्कारी बांरै
गळै री बणगी फांस
अबै आंगणियै री चिड़कलियां
नीं दीठै कोस पचास।

◆◆

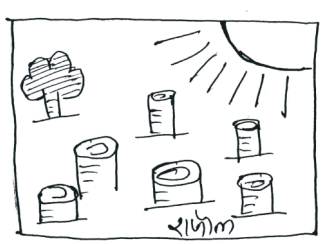

7, पंचवटी कॉलोनी, रातानाडा, जोधपुर 342001 मो. 9610678147

मयूरा मेहता

वीरां रो वीर

वीरां रो वीर महाराणा,
वीरां रो वीर महाराणा
हळदीघाटी रो वीर, महाराणा वीर।

नाम रहैगो अमर प्रताप थारो जमीं पर
वीरां रो वीर महाराणा,
हळदीघाटी रो वीर, महाराणा

आपणी नगरी रै खातिर,
सारो राजपाट ई त्याग्यो
घास री रोटी खाई,
पर मन में मोह न ज्याग्यो
वीरां रो वीर महाराणा,
हळदीघाटी रो वीर महाराणा

प्रेम हो अतरो मन में कै
जोड़्या हा बंधण केई सारा
चेतक री वफादारी सुणनै,
व्हैग्या अचरज ही सारा
वीरां रो वीर महाराणा,
हळदीघाटी रो वीर महाराणा

◆◆

19, सिद्धार्थ कॉम्पलेक्स, महावीर भवन रै कनै, सेक्टर-5, हिरण मगरी, उदयपुर मो. 8079014325

 ISSN : 2320-0995

मानसी शर्मा

सोच

अेक
आ जरूरी तो कोनी
कै जिको
थारै साथै रैवै
बो थारै बाबत
चोखो सोच राखै।

दो
म्हैं सोचूं
कै बारै जाय'र पढ़ूं
कीं बणूं
अर आपरै
मन री करूं

पण
पछै सिमट जाऊं
खुद रै भीतर
काछबै दांई।

तीन
म्हैं सोचूं कै उड जाऊं
किन्नै दांई आभै में
पण सोचूं
कै डोर सूं
अळगो हुवतां ई
के ठाह कठै जाय'र पड़ूं

लूटण आळा भौत है
अठै
पग-पग माथै।

चार
म्हैं सोचूं
कै घर सूं भौत ई दूर
जाय'र
पढ़ूं अर घूमूं

पछै
सेलफ्यां लेय'र
लगाऊं इंस्टाग्राम माथै

चिंतावां सूं कोसां दूर हुय जाऊं
अर
चलावती रैवूं
देर तांई
आपरो मोबाईल।

पांच
म्हैं सोचूं कै
पढाई रै साथै-साथै
करूं कोई काम
कमाऊं घणा सारा रुपिया
अर खरीदूं
भौत सारा
भांत-भांत रा गाभा

पछै
पैर'र इतराऊं
दरपण रै साम्हीं
अर बणाऊं
आपरी मनमरजी री
वीडियो क्लिपां
घणी सारी।
◆◆

10/22, आर.अेच.बी. कॉलोनी, हनुमानगढ़ संगम 335512 मो. 7733039443

मीनाक्षी आहुजा

महामारी रै दौर मांय

मिनख व्हैग्यो
साव नागो
आपदा नैं ई अवसर जाण
धावड़िया बण लूटै
दूजै मिनख नैं
कोई नकेल घालै इणरै
अर अेक
तळिया रगड़तो
निठल्लो बैठ्यो
बोट जोवै
ठालो बैठ'र
आस लेय'र
कै आवैली
ऊजळी परभात
पण खुद नैं नीं करै
कोई जुगत
मिनख नैं बचावण री
बस घुचरियो बण भूंसै
गुंभारियै मांय लुक्योड़ो
सूरज नैं माथो टेकणो चावै
पतरो बांचतो
सुभघड़ी नैं उडीकै
बूझै सगळां नैं
कद आवैला सतजुग रा राम
कद मिटसी औ कोहराम?
तीसरो मिनख
करै करमां री जुगत
अर लड़ै अेकलो ईज
कुण जाणै
चानण रो कतरो
ऊगतो दीसै
उणरै माथै।

अब थे ईज

भींत रै उण पार
बा भींत
जिकी खड़ी कीनी ही थे
म्हारै मन रै दुआर
म्हैं कदैई थांनै ओळमो
दियो ई कोनी
थे ईज लगाया म्हारै माथै
इल्जाम हजार
इण पगां मांय
आज भी पैरूं हूं
थांरै नांव रा बिछिया
कंइयां देवूं बिसार
म्हैं ईज गाया गीत
म्हैं ईज करी प्रीत
म्हैं राख्यो दिवलो
थे तो दिया बिसार।

◆◆

सी-10, पार्क रै कनै, मॉडल टाउन द्वितीय, सरकारी अस्पताळ रै लारै, श्रीगंगानगर (राज.) 335001
मो. 9413372488

 ISSN : 2320-0995

मीनाक्षी पारीक

बस! इत्तो ई चावै नारी

जद भी बारी आवै
प्रेम अर अपणायत री
तो चाणचकां ई
उज्जळ्या हो
आ जावै चित्त में
चितराम
राधा-कृष्ण री
सुंदर-सी जोड़ी रा।
जां पर नीं जाणै
कत्ता ही गीत
कथा-कहाण्यां
अर दूहा
लिख्या गया है आज तांई
पण जद बात आवै है
ईं सूं आगै बध'र
प्रेम रा बंधण में
बंधबा की, तो
हर लड़की चावै है
श्रीराम सो पति
जाकां हिरदै में
अेक ई नार
माता सीता ई रही
कन्नै या आंतरै
सदा वांका मन रा
खूणा-खूणा में
सीताजी रो ई वास रैवतो
पीछै चाहै
अश्वमेध जिग्य री बात हुवै
या आपरै म्हैल री।
अश्वमेध जिग्य हुयो
जद भी सोना री
सीता माता घड़ाई
अर आपरै कनै बैठायी।
हर लुगाई नैं चाह हुवै
पति श्रीराम सो
जिणरा हिरदा में
फगत अर फगत
आपरी लुगाई रो ठायो हुवै।
ज्यूं कै
पत्नी आपरा मन-मिंदर में
खुद रै भरतार री छवि
सजायां राखै
बस इत्तो ई चावै
अेक भारतीय नारी।
अर इण अेक सुपना रै
अेक इच्छा रै बदळै में
निछावर कर देवै
आपरो पूरो जीवण
आपरा भाव अर अस्तित्व।

◆◆

33 ओम नगर, सफेद मिंदर रै कनै, खातीपुरा, जयपुर (राज.) मो. 9351518100

डॉ. मीनाक्षी बोराणा

आथण

फेरूं बा ई आथण
ढळगी चौगान
नैणां भरग्यो नीर
मनड़ै भरग्या भाव
बा जिंदगाणी
बो ई कळकळो
छेहलो भरम
होमीज्योड़ा सुपना
पींजर तन
झींझोड़ जाग्यो
पण
भंवारा फंस्योड़ो
तांतो नीं टूट्यो।

बंधण

मारग रो छेहलो पड़ाव
डगर अबूझ
पण आस नीं छोडी
आभै रै आंगणियै रा
मुगत पांखी हां
रूढियां रै बंधणां
नीं बंधां
कुरीतियां आगळ
नीं झुकां
परछाई है साथण
अेकला ई
बधता चालां।

मानवी

रात रो बगत
सून्याड़ चौराहो
उण ठौड़ ऊभो
अेक मानवी
हाको कर'र
कैवै—
'म्हनैं मत मारो
म्हारो मरणो
थांरी जेबां नीं भरै
म्हैं फगत
करमठोक
गरीब-गुरबो
बगत री मार सूं अधमर्‌यो
अर
लोकतंतर रो रुखाळो
इण देस रो
अेक मानवी हूं।

◆◆

मंगल प्रांगण, मानजी रो हत्थो, राजस्थान पत्रिका ऑफिस रै कनै, पावटा बी-2 रोड, जोधपुर (राज.)
मो. 9509477255

मोनिका राज 'गोपा'

मरुनार

बा खेजड़ली रै रूंख-सी
आपरी जड़ां सीचण सारू
तिड़की, तिरसी मरुधरा री
कूख सूं खोज लावै
बूंदां जीवण री।

वा है सैनाणी आक-सी
बार-बार शीश
बाढीजण रै बाद भी
हेत-हेज अर सनेव रै बिना
देवै जलम हरप्रिय नैं
कै बिरख भी बण जावै इमरत।

बा घूंट-घूंट पी लेवै
तपतो बायरियो
जुगां-जुगां री अमिट तिरसी
खिलावै दाझती मरुभोम में
रोहिड़ै री राती आभा।

बो तो है—
रळियावणो रूप थार रौ
भुरटां रो शूळ है,
गोद है धोरां री।
सूखी पड़्योड़ी हथाळियां री
रेख में जम चुकी
राख सूं मांज्या करै बा पीड़ नैं
बळती लूआं री बांध डोरियां
हाथां रै पालणै में
झुलावै जीवण नैं।

बा आंख्यां रै पाणी सूं
भर देवै तिरसी धरती री
तपती गोद
औ पाळ दे-दे रोकै
खेतां में आस रो पाणी।

विस्वास रो मोड़ बंधाय
गांव बधावणो
बादळ बींद रो
आ तो है धोरां री धणियाणी
झणकती झांझर रा नेवर
है देह दाझतै कैरां री आब
तपती लूआं री ठाडी रात ज्यूं
पूनम रै चांद-सी
आ 'मरुनार' है...
बरसतै मरुथळ में मुळकती
सिंधू री बयार है।

◆◆

सिटी पुलिस चौकी रै कनै, गोपा चौक, जैसलमेर (राज.) 345001 मो. 8078695982

राजोल राजपुरोहित 'मुक्ता'

लापसी

चार पहियां रो म्हैं मालिक, रुतबां सूं बणाऊं लापसी
ठाठ-बाट री ओळखाण करातो, सारो गांव जीमाद्यूं लापसी....
मौसा बोलणियां नैं आज बता द्यूं, कंदोई झट बणादै लापसी
काळी मूंछ्यां रै दे ताव, सगळो नगर जीमा द्यूं लापसी...
इतरो हाको तो सूत्योड़ा शेर जगा देवै,
तीस मारखां चोर नैछो कियां राखसी...
घर में डाकू मंगळ गाया, बो बारै गावतो लापसी....
टक्कां रो सूंपड़ो साफ होयग्यो, बचगी कोरी लापसी....

भतूळियो अर मिनख

भतूळिया तूं चोखो
दीठै जैड़ो काम करै....
मिनख भतूळिया सूं भूंडो
मिनखपणो सरमसार करै....
मूंडै पर तो रस घोळै,
लारै कटारी घोंप दौड़ै
भतूळियां तूं चोखो
दीठै जैड़ा काम करै...
◆◆

नोखा रोड, पुराणी चूंगी चौकी रै साम्हीं, भीनासर (बीकानेर) राज. मो. 9414470611

 ISSN : 2320-0995

डॉ. लीला दीवान

म्हैं पाणी में ऊभी

औ हाको आयो—
गांव में पाणी आयो
म्हैं सुपना सूं जागी
आधी सूती, आधी जागी
म्हैं उण दिसा में भागी
जठासूं हाको आयो
औ कांई !
काल जठै धोरा ई धोरा हा
आज पाणी ई पाणी है
म्हैं पाछी भागी
जाणै सुपना सूं जागी
घर में घणो तो कदै हो कोनी
थोड़ा नैं समेटवा लागी
गांठड़ी मोटी घणी
छोटी करवा लागी
छोरा नैं काख में लियो
म्हैं चालवा लागी
औ कांई !
पाणी तो घरां तांई आयग्यो
धीरै-धीरै पाणी बधवा लाग्यो
पाणी घोड़ा तांई आग्यो
म्हैं पाणी में ऊभी
छोरो काख में धूजै
अंधारो होवा लाग्यो।
चिमनी करूं कियां ?
दीयापेटी भीजी
अंधारो और बधवा लाग्या
नानियो जोर सूं रोवा लागो
रोतां-रोतां जीभ
ताळवा रै चिपगी
कैवै तो कीं कोनी
नानिया रै आंख में आंसू कोनी
जीवण री जोत देखी है।
नानियो म्हनैं चूथवा लाग्यो
बारै काळियो भोंकवा लाग्यो
म्हैं जाणूं हूं
दोन्यां नैं भूख लागी है
पण म्हैं कांई करूं
म्हैं पाणी में ऊभी
पण म्हैं कांई करूं
म्हैं पाणी में ऊभी
◆◆

52-एच, शास्त्री नगर, जोधपुर (राज.) मो. 9460663280

विमला महरिया 'मौज'

ठाडी चिंत्या

लठ गड़ागड़ धूम धड़ाधड़
भाठा भिड़ाई सिर फुड़वाई
चुगली चाळा गाळम गाळ्यां
वाह रे माणस भली कमाई!
अपणा पराया भेद अजाण्या
स्याणप करतां खोट घड़ाई
बीच-बिचौला कुण बणै जद
ठाला बैठ्या करै लड़ाई!
बूढ-बडेरा हुया बापड़ा
कुण सुणै बै साची गाई
भलै-बुरै रो सपमपाटो
जूनी बातां लगै बुराई!
लोग-लुगाई दोन्यूं खोटा
सरम लाज नैं परै बगाई
पकड़ै गळा उठावै सोटा
टाबरियां री स्यामत आई!
हुयो जमारो रळमपळम अब
मिनखाचारो साख गमाई
धरम समूळो धूजण लाग्यो
सगळो ज्ञान अधर में भाई!
आप मरूधै औछा भागैं
पड़ै पल्लै न अेक भलाई
रामधणी कै लाको लागै
'मौज बाई' नैं चिंत्या खाई

◆◆

नैणां

ढुळक-ढुळक मनड़ै री पीड़ा
छळक-छळक छळक्या नैणां
अणबोल्या अणदीख्या बैणां
ऊंडो भेद उंडळक्या नैणां!
राता-राता घुळ रतनारा
कळप-कळप कर फूल्या नैणां
पीड़ पांवणी च्यार दिनां री
सुध जीवण री भूल्या नैणां!
कोरा-कोरा होग्या चिरमी
जाण जगत सूं रूठ्या नैणां
जड़ लीन्या कपाट निरखणां
निरख-निरख बिस टूट्या नैणां!
मतलब रै भायां रा हेता
हाटां तुलता देख्या नैणां
कुण अपणां अठै कूण पराया
भरम भायला देख्या नैणां
मायड़ री काळजिया कोरां
देखी बळती भोळा नैणां
कूख कबर ज्यूं ऊंडी देखी
जामण हत्यारण देखी नैणां
मन री पीड़ ढुळकती जावै
घणा मिजाजी किळवळ नैणां
कीच पड़्यौ पाप्यां रै हिरदै
'मौज बाई' रा निरमळ नैणां

◆◆

'श्याम कृपा'/62, वार्ड नं. 5, शिव कॉलोनी, मोदी लिंक रोड, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) 332311 मो. 9461541031

 ISSN : 2320-0995

श्यामा शर्मा

हर आवै छै

थुआर अर रकाण सूं
जाणी जावै छी रुत
सियाळै
काती को न्हाबो
ऊंदहाळै
आखातीज को मेळो
सावणी तीज
डूंगर में जाबो
बरखा को मौज लेबो
लुगायां जाणै अब
रुत कांई होवै छै
थुआर अर रकाण
संदै भूलगी
गळगी संदी रितुआं
बार थुआर
वांकी रकाण
लुगायां अब न्हं जाणै
◆◆

भरम

भरम रै छै चांद को
आग को, रेत को
छोरां को, अबखायां को
लोगां को, लुगायां को
कठी कुणकी, कठी कुणकी
सरम छै
आखी जिंदगाणी
भरम छै, भरम छै।

जिंदगाणी

जिंदगाणी में
कतना ही उतार-चढाव
आवै छै
कोस-कोस का भाटा
अर लोक-लोक का बरताव
आदमी खुद सूं
कदी जिंदगाणी सूं
लड़बो ई करै छै
अस्यां ई मनख की
जिंदगाणी कटै छै।
◆◆

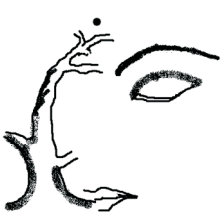

बी-422, आर.के. पुरम, कोटा (राज.) मो. 9413734544

डॉ. संजू श्रीमाली

पिछाण–अेक

अेक नान्हो हो अंकुर
जीवण री आस मांय
आपरी इकलंगी
नान्ही–सी डाळ पर
अेक–दो कूंपळां सागै
बतावै
आपरै जीवत रैवण रो
वजूद
गिगनार नापण री खिमता
माटी मांय हरी आपरी
जड़ सूं राखतो उम्मीद
बतावै
मानखै नैं बात
पिछाण जड़ां री ताण
हरमेस ऊपर बधण री ताकत

पिछाण–दो

जाणूं हूं
जितरा टाबर
उतरा हुवै घर
पण
कदैई औ नीं भूलणो कै
पिछाण तो बडेर ई हुवै

करतूत

म्हैं जाणूं हूं
थूं
सोध रैयो है
थारै टाबरपणै रै बेली नैं
पण
इब बो नीं रैयो
इण घर रै आंगण मांय
स्यात
थूं नीं भूल्यो
उण बेली रै हाथां मांय
हींडा बांध'र
हींडणो
या
बीं री ठंडी छिंयां मांय
जी भर'र
सूवणो
आज रा टाबर
कठै याद राखै
पुराणी यादां
थारै बेली नैं कटाय'र
बणाय लिया
नूंवै घर या
बांडा अर बारियां।

◆◆

सी–192 ए, चंद्रकला–विला, कांता खतूरिया कॉलोनी, बीकानेर मो. 9414193571

 ISSN : 2320-0995

सपना वर्मा

खसेरणी

लकड़ी रै भारियै-सी लुगायां
बळणो आपरी किस्मत मानै
चूल्है में डाई अर राख होई
आ ईज बात पिछाणै
पण होवै कई मजबूत
डंडकोरियो-सी
बांनै—
सागो देख नहीं बळणो आवै
आग देख नीं मरणो आवै
बै ईज लुगायां बणै खसेरणी
जिंदादिली रो करज चुकावै
आग सूं माटी
कदै आग सूं पाणी
कोयलो-कोयलो कटती जावै
किस्तां-किस्तां बळती जावै।

त्यौंहारी अर भीख

त्यौंहारी रो मतलब भीख नीं
दुआ होवै
सारां सूं मोटी बात कै
अेक आस होवै
जकी काम रै साथै
जुड़्योड़ी होवै
लुहारणी काकी आवै जद
त्यौंहारी लेण सूं पैलां
खुरचणो, कुड़छो, चींपियो
बठळ मूं काढ'र
साम्हीं धर देवै
अर बीं रै बदळै
त्यौंहारी ले जावै
कुंभारां रा घर सूं आवै तो
निआयी सूं पका'र
दीया, ढकणियां, गुल्लक
पगधोणियां सागै लावै
मेहतर दादो आता जद
कीं ल्यांवता तो कोनी
पण बै भी जिम्मेदारी निभावै
बीं सारू ई आवता
गांव में मर्‌योड़ा
कुतिया-मिन्निंयां
ढोर-डांगरां नैं घाल'र
हाडारोड़ी में बै ई न्हाखै
चाहै खळा काढ्या हो
या फेर तीज त्यौंहार
अेक उडीक रैवै
त्यूंहारी रै बहानै
सगळा जुड़्योड़ा रैवै।

◆◆

गांव-गंधेली, तहसील-रावतसर, जिला-हनुमानगढ़ (राज.) 335523 मो. 7219915312

सरोज देवल बीठू

मां

बळता खीरां ज्यूं
जद ई तपै माथो
याद आवै म्हनैं
उलटी हथाळी
माप लेवणो
पूरी पीड़ सीधां ई
ताव, तावड़ा ज्यूं
मत्तैई
जद ढळ जावतो हो मां!

अै औखद
नीं मिलिया करै
बैदां री पोथ्यां मांय मां!

मन-मेदनी मांय
कितरा रतन, मां!
हियै मांय अटक्या
कितरा मून, मां!

इण जीवण जूण री
अंतिम सांस री बगत
सगळा संसार रो
निरवाळो आणंद-समंद
निरांत सूं भेळो व्है जावै
आंख्यां री कोर माथै
अटक्योड़ी
आंसूड़ां री अेक बूंदड़ली मांय
अर ढुळक जावै
बा मोती झालर,
पीड़ अर मोह सूं नीं
करुणा रा अलख रूप ज्यूं

जीवण अर म्रित्यु रै बिचली
कांकड़
जमपाश नीं
बिना फांस अर कसक रा
मीठा पाणी तांई ले जाय

कोई अेक कोटर
कुटी, पंचवटी सूं
अलकनंदा रा
कल्याणी छंदां तांई, मां!

कथावां

कथावां
साची प्रीत री
उणरी रीत री

मेह में नाचता
बै मगन मोर है
मनमोवणा
चितचोर है

जिणरी पंखड़ी
देह त्याग्यां पछै ई
भळावण देय
आगली पीढी नैं
पूगती करीजै

जुगांजुग
संभाळ राखीजै
पोथी, पूजा अर
चंवर रै मिस...!

◆◆

एस-5, 'फतह हिल्स', सिरै मिंदर रोड, जालोर (राज.) मो. 7665377999

 ISSN : 2320-0995

सुंदर पारख

पीड़

पीड़ री
रोवण री आदत मिटगी
अमूजो लियां
आंख्यां री कोरां पर
सूख जावै...
पीड़
अंतस में रळगी

सूखती जड़ां

सूखती जड़ां
कांई काम री
जड़—
ऊगती पौध जलमावै
दरखत हुवै
डाळां-पानां
फळ-फूल छावै
बा ईज हरी जड़ काम री।
सूखती जड़ां
मत हुईज्यो
पनपता रहीज्यो
जन-मन रा हुकर
फळता रहणो ही
जीवण रो सार है।

राजस्थान रो धीणो

थाळां बैठ जीमणो—
रंज्यो-मंज्यो पुरसणो
अर मनवारां सूं धपाणो
कुण करै?
टेबलां मेलीजै
टोपिया अर बरतन
पलेटां-चम्मच-कांटा
रसोई नीं बणाई हुवै
अैसान करियो है—
कांटा चुभै
चम्मच मारै
अर गासिया?
अटकै—जद मन भटकै
टिब्बां-दर-टिब्बां
अे मावड़ी
जमारो क्यूं बदळ न्हाख्यो?
हियो बावै बाको।

◆◆

57-बी, बालीगंज सरक्यूलर रोड, थर्ड फ्लोर, कोलकाता-700019 मो. 9830083764

सुमन पड़िहार

रिवाज री बुगची

अेक रिवाज री
बुगची होवती

मिनखां रै आंखियां मांय
पाणी होवतो

जाणता हा सगळा
मोटै-छोटै रो कायदो
नीं कदैई रीसाणो होवतो
नीं करड़ा बोल होवता
जे होवता तो
मिनख पेट मोटो राखता

हेत अणमाप होवतो
भाई-भाई रो गांव
सगळो सगो होवतो

अबै बै बातां नीं रैयी
मिनख धुक-धुक नै
हेत-प्रेम मिटाय दियो
बोलो-बालो खुद में ईज
मिनख रमग्यो

बाड़-किंवाड़ ई पूछै
अबै कै कठै गया बै
पैलड़ा मिनख
जका जीवण नैं
जीवण बणाय राख्यो हो

कठै गया बै मायत
जका अकाळा सूं
जूझता थकां
हिम्मत नीं हारी
जीवण नैं पाछो पनपायो

कठै गई बा
रिवाज री बुगची!

◆◆

39-ए, दूसरी रोड, शक्ति नगर, पावटा, जोधपुर (राज.) मो. 8875005502

 ISSN : 2320-0995

डॉ. सुषमा सिंघवी

सवां बीच राजी हूं म्हैं

'ॐ नम: सिवाय'
सिव री माळा फेरूं हूं पण
सवोपासिका बणगी म्हैं,
सवां बीच राजी हूं म्हैं।
चेतन-रुखाळी नीं की पण
जड़ में ही भरमीजी म्हैं।

'प्राण देय भी धरती मां री,
धण-सुरक्षा' नैं भूली म्हैं
स्वारथ सूं खोदी अतरी कै,
खानां खाली कर दीनी म्हैं।
सत्त्व-भूत पृथ्वी मरगी बण,
मृत-भाटा रा भवन रहूं म्हैं।
सोना-रूपा-मृत-धातु पण,
सिणगारूं सरीर इतरूं म्हैं।
चेतन सूं तो लाड नहीं पण,
जड़-मृत वैभव बीच जीऊं म्हैं ?

कारखाना रा कैमिकल सूं
अणगिण वाहण रा धुआं सूं
हवा जीवती में ज्हैर घोळ अर
अे.सी. हीटर सूं कतल करूं म्हैं।
सिव रो नांव जपूं पण,
सिव सरीर नैं मारूं म्हैं।

पाणी भी तो सिव-मूरत पण,
कचरो, लासां नाख बिगाड़ूं म्हैं।
आग-सूरज-चांद नीं छोड्या,
सगळां रो सरूप निचोड़ूं म्हैं।
भूख-तिर-रोग अभाव में जीवै,
सिव-मूरत होतृ-जीव नीं पूजूं म्हैं।

पृथ्वी-जळ-तेज-वायु-गगन,
सूरज-चांद-हवण-कर्ता-प्राणी।
सिव री अै आठूं मूरत चेतन,
इणां री रुखाळ सूं ई जान बचाऊं म्हैं।

◆◆

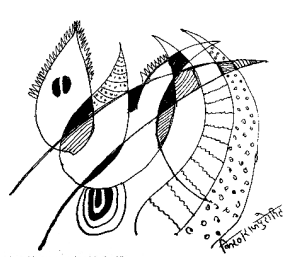

'जैन कुंज', फ्लैट नं. 2 डी, 1-गोपाल बाड़ी, जयपुर 302001 मो. 9414071430

अवन्तिका तूनवाल

औ जीवण जीणो पड़सी

जुग-जुग करणा पड़्या काज अर जुग-जुग ही करणा पड़सी
भाग साथ नीं देवै तो भी औ जीवण जीणो पड़सी

साच धरम री खातर मिनख,
सगळो जीवण जीवै दुख भोग
इणरो जो नीं करै सम्मान,
उणरै धोक लगावै लोग
दिवलो जोयो साच-धरम रो, उणरो साथ निभाणो पड़सी
भाग साथ नीं देवै तो भी औ जीवण जीणो पड़सी

पांच पूत अर किसन भतीजो,
कुंती पग-पग दुख झेल्या
भरी सभा मांय लुटी द्रौपदी,
भीष्म, विदुर धृतराष्ट्र छतां
होणी नैं कुण टाळ सक्यो, होणी तो होयां सरसी
भाग साथ नीं देवै तो भी औ जीवण जीणो पड़सी

अेक करै कर-कर मरजावै,
दूजो बिन मेहनत पा जावै
भाग भरोसै बैठ्यां कीकर,
जतन जीवण रा कर पावै
बिन मांग्या मोती मिल जावै, मांग्यां मान गमाणो पड़सी
भाग साथ नीं देवै तो भी औ जीवण जीणो पड़सी

◆◆

ग्राम पोस्ट-निराधनूं, तहसील-मळसीसर, जिला-झुंझुनूं (राज.) 331028 मो. 9002368022

आशा रानी जैन 'आशु'

सीख रो गीत

ताती-ताती मत खा रे मूंडो बळ जावगो
ठंडी करके खा जीवण साता में जावगो

बना बिचार्‌यां कांई न करणो, कैग्या छै बूढार
पाछै कदम मेलणो पैली मन में करो बिचार
सोच-समझ अर जो चालै मंजित नूंवी पावैगो
ताती-ताती मत खा रे....

ईं धरती पर तूं जद आयो तूं छो खाली हाथ
मालिक भर दी झोळी मांही घणी-घणी सौगात
औरां को जद भलो करैगो, तूं सुख पावैगो
ताती-ताती मत खा रे....

मन में धीरज राख बावळा, और कर्‌यां जा मैनत
भासा सूं हीरो हो ज्यागी, कोई दिनां या किस्मत
मैनत करबा वाळो जग में नाम कमावैगो
ताती-ताती मत खा रे....

कपट ईसका छळ नहीं करणा, मीठो राख ब्यौहार
मन सूं भाव दया का राखो, सब धरमां को सार
जश्या करम करैगो वश्या तूं फळ पावैगो
ताती-ताती मत खा रे....

◆◆

हेमंत जनरल स्टोर, राम मंदिर चोक, सुनेल, जिला-झालावाड़ (राज.) 326513 मो. 9660611441

चंदा पाराशर

क्यूं गुणगुणायो रे भंवरा

मंझ रात क्यूं गुणगुणायो रे भंवरा
मचळै है म्हारा अरमान कोरा कोरा
मंझ रात....

नींदां में हाल म्हूं तो सोई छी गहरी
तूं लांघ आयो रे आशा की देहरी
छम-छम सी पायल पाड़ोसण की बोलै
चंचळ हिरणिया सा मन मेरा डोलै
हालै रे देख नैणां रा कटोरा म्हारा
मंझ रात....

सूनी-सी रातां में उठगी रै झटकै
बिखरया-सा केश म्हारा कांधा में लटकै
बेरी या बेर जब बागां में फूलै
खिलती लता जब बागां में झूलै
हाल बेबसी रो मत डालै रै डेरा
मंझ रात....

चंचळ-सी रात बडी नटखट जवानी
झिलमिल उडै रे म्हारी चुनरिया धानी
प्यासा-सा होठ म्हारा होग्या गुलाबी
प्याला का प्याला भरी नैणां शराबी
रोळी-सा होग्या रे गाल गोरा-गोरा
मंझ रात....

पाणी में चांद दिखावै

यो कुण छै री म्हांनै पाणी में चांद दिखावै
दो पल म्हारै पास आवै री दो पल दूरो जावै

यो कुण छै री डूब-डूबकर उभरै है हिरदा में
परछाईं के जइयां रह-हर गुजरै है हिरदा में
काजळ सूं बातां करग्यो री आंख्यां धनक रचावै
यो कुण छै री म्हांनै पाणी में चांद दिखावै
दो पल म्हारै पास आवै री दो पल दूरो जावै

आंख मदभरी होठ रसीला, जीवन में रस भरग्यो
म्हारा खंडित ताजमहल नैं, यो कुण पूरो करग्यो
काजळ सूं बातां करग्यो, मनड़ै नैं हरसावै
यो कुण छै री म्हांनै पाणी में चांद दिखावै
दो पल म्हारै पास आवै री दो पल दूरो जावै

नम री पलक्यां सूं आंसूड़ा, टप-टप करता बरसै
तब जाकर म्हारा हिरदा में, गीत रागिनी हरसै
प्रणय प्रीत री बातां करग्यो, मनड़ा नैं हरसावे
यो कुण छै री म्हांनै पाणी में चांद दिखावै
दो पल म्हारै पास आवै री दो पल दूरो जावै

◆◆

मकान नं. 126, आश्रम रोड, महेश कॉलोनी, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राज.) 311021 मो. 8209095312

 ISSN : 2320-0995

नगेंद्र बाला बारेठ

मन में ले लूं सार

देख समय रा भाव नैं मन में ले तूं सार
जे कोई कहवै तो मानले की खेतां बोवै है कचनार
गर कोई कैवै कै आज छात पर बोल्यो हाथी आर
तो इण बात नैं मान जा अर कहदै कै हाथी हो कबूतर लार

भखभूरिया सा पांख है अर बीं पे सूंड लांबो
छीतरिया-सा कान है अर घण मोटो है मूंडो
बगत-बगत रो फेर है, और है कळजुगी बात
हाथी कबूतर अेक रूप में दीसै, आ बात है साच

बिरछां रो प्रेम

बिन बोल्यां ई औ बिरछ म्हांनै प्रेम की बात सिखावै है
रे मूरख तूं सपना में खोवै, ओ सोनलियो जलम गमावै है
इक-दूजा रै गळै लाग रैया, तो बण्या इक-दूजा रो सारो है
रे मन तूं कांई गुमान में जीवै, आ काया तो नश्वर है
तूं भी थारा कुटुंब सूं मेळ राखलै, आपस में भेळापो कर
नीं जाणै कद ई जाणो पड़जा, फेर कठै अै बातां है
है तो ओ बिरछ, पण संदेस प्रेम रो देवै है
सदा मानवता री छांव राखो, औ ई पाठ पढावै है।

◆◆

कृष्णा कॉलोनी, राजकीय विद्यालय रै कनै, सुशीलपुरा, अजमेर रोड, सोडाला (जयपुर) 302006
मो. 7838550985

प्रमिला शर्मा सनाढ्य

ओळ्यूं

पिया हो म्हांनै ओळ्यूं घणी आवै हो
परदेसी प्रीतम बेगा आवो म्हारोड़ै देस
सखियां म्हारी मोसा बोल बोलै हो
सुणो-सुणो पिया बेगा आवो म्हारोड़ै देस

सावण सुदी तीज बालम, सूनी-सूनी बीती हो
चौथ'र चंदा नैं भी म्हैं फीको-फीको देख्यो हो
रस भरया झूला संग मन म्हारो डोलै हो
झूलै रा हर झोटा साजन पिया-पिया बोलै हो
आंगणियै री फुलवाड़ी फाग मचावै हो
परदेसी प्रीतम बेगा आवो म्हारोड़ै देस

सुपनै में सासूजी री बेल बधाऊं हो
अपणै सांवरियै रा पगल्या दबाऊं हो
हिवड़ै रा जिवड़ा मिल मोद मनावां हो
दूधांधोई रातड़ली में रळ-मिल जावां हो
नणदल म्हारी भावज हेलो पाड़ै हो
सुणो-सुणो साजन कीकर बोलूं मनड़ै री बात।

काजळ टीकी मांग मैंदी गजरा सजाया हो
हिवड़ै में सतरंगी सुपना सजाया हो
हथेळ्यां री मैंदी बीच थांकी मूरत मांडी हो
चौबारै में छम-छम करती पायलड़ी झणकाऊं हो
नैणां रा झरोखा साजन अंसुवन सूं धोवूं हो
सुणो-सुणो पिया बेगा आवो म्हारोड़ै देस।

◆◆

भीलवाड़ा (उदयपुर) राज. मो. 6376868405

 ISSN : 2320-0995

प्रीतिमा 'पुलक'

अखबारां में

मनखपणां पे कालिख फरगी, मान डूबग्यो गारां में
कसी-कसी बातां मंडज्या छै, पढ देखो अखबारां में

तड़के-तड़के जाग जो होवै, नाम प्रभु का बोलां छां
राम-राम दुनियां सूं करता, अखबारां नैं खोलां छां
घणी तरक्की मलक में होरी, असी खबर भी आवै छै
नुई योजना कतनी चाली, सारी बात बतावै छै
कतणी मटगी कतणी बटगी, घूस का बाजारां में....

जो बेट्यां नै नाम कमायो, वांको ऊंचो नाम मंडै
नान्ही बायां का रगतां सूं, फेर भी यो अखबार भंडै
दंड देबा हाळा अब तो, अपराध्यां नैं पाळै छै
तिजोर्‌यां की कूंच्यां इब तो, चोरां कै हवालै छै
खटकै छै वू नंगोपण, जे दीखै इश्तिहारां में....

नीति अर नियम सब टूट्या, मरयादा भी टूटी छै
कलयुग का बेटा न लाजां, अपणी मां की लूटी छै
रुपिया-पीसा का फेरां में, जान घणी ही सस्ती छै
च्यारूंमेर लगै छै जाणै, गिद्धां की ही बस्ती छै
मनख्यां में उ करंट फैलग्यो, ज्यूं बिजळी का तारां में....

रूप धरै साधू-संतां को, घणा लुटेरा घूमै जी
म्हां कैवां जाणै नायक वै, नशा में संदा झूमै जी
संस्कारां की राह भूलग्या, लोग मति का मार्‌या छै
करमां का फैर छै देखो, कीटाणु सूं हार्‌या छै
कोरोना उत्पात मचा र्‌यो, मान का जग सारां में...

◆◆

'अध्यात्म', सी-1, कपिलवस्तु कॉलोनी, पाटन रोड, झालावाड़ (राज.) मो. 9928216828

पुष्पा शर्मा

भ्रूणहत्या

माई म्हैं तो अजन्मी हूं लाडली
म्हारो क्यूं घोटै तूं दम
क्यूं घोटै तूं दम माई म्हारी क्यूं घोटै तूं दम
माई म्हैं तो अजन्मी हूं लाडली
म्हारो क्यूं घोटै तूं दम

मत दीजै म्हनैं दत्त दायजो
मत खरचै तूं धन
पढ-लिख'र थारो बणूं सहारो
थोड़ो दैऽ दैऽऽ मन
माई म्हैं तो....

नारी जग में जन्मदायिनी
फिर क्यूं मिल रैयो दंड
म्हारै मरणै सूं हो जासी
दुनिया ही बदरंग
माई म्हैं तो...

मायड़ तूं तो भई रे बावळी
म्हैं तो थारो दरपण
दरपण थारो टूट गयो जद
भूल जासी प्रतिबिम्ब
माई म्हैं तो....

◆◆

प्लॉट नं. 867, महादेव पैलेस रै कनै, जैसलमेर (राज.) मो. 7877614070

 ISSN : 2320-0995

मंजु महिमा

घणो निराळो राजस्थान

अेक आडी है मीठा पाणी री झीलां,
अेक आडी है मोटो रेगिस्तान
घणो निराळो म्हारो राजस्थान

धरती रै धोरां चालै है, ऊंटां रा काफला
अरावळी री पहाड़ियां छाई आधा राजस्थान
घणो निराळो म्हारो राजस्थान

वीरां रो इतिहास अणी रो, विकास रो है वरतमान
दुनिया भर में पैठ है इणरी, अजब है इणरी शान
घणो निराळो म्हारो राजस्थान

सुनहरी धरती रो लहंगो इणरो, चूनड़ ओढी धाणी
झूम-झूम के नाचै सगळा, मीठी इणरी वाणी

बीकानेर है बोरलो इणरो, जयपुर-जोधपुर झुमका
कंठला में जड़ियो अजमेर, कोटा-उदयपुर चुड़ला
आखा देस में अद्‌भुत है इणरी स्यान
घणो निराळो म्हारो राजस्थान

'पाणी' को मोल यो जाणै, माथै गागर लेय'र भागै
कदी काळ, कदी खुसहाल, पाणी रै खातर हुयो कुरबान
अजब-गजब है इणरी स्यान
घणो निराळो म्हारो राजस्थान

◆◆

के-1002, ऑचार्ड, गोदरेज गार्डन सिटी, बी/अेच निरमा युनिवर्सिटी, जगतपुर, अहमदबाद मो. 7948910199

डॉ. रानी तंवर

चिड़कली उडबो चावै

लाडो पढबा नै मां सात समंदर पार जावैली
थारी कूख नैं उजाळ, जग में नाम पावैली
अेकली कदै न भेजूं लाडो, म्हारी बात मानैली
अेकली कदै न भेजूं लाडो....

थारी चिड़कली उडबो चावै, आकासां नैं छूबो चावै
पगल्यां री जंजीरां पग नै काट खावैली
लाडो पढबा नै मां....

नखरा नाज्यां बेटी पाळी, मूं जाणूं छै भोळी भाळी
कपटी छळी घणो संसार कोनी पार पावैली
लाडो पढबा नै मां....

सब समझै या पढी-लिखी छै, थारा बेटां सूं कद कम छै
बैरी निजरयां नैं तो चीर फोड़ डालैली
लाडो पढबा नै मां....

लाडो सुपणा सब तूं पूरा कर लै, पण म्हारा भी मन की सुण लै
मां भी छोड सब रुजगार थारै लार चालैली
लाडो पढबा नै मां....

लाडो मानै कोनी सात समंदर पार जावैली
न भेजूं अेकली, लाडो म्हारी बात मानैली

◆◆

प्रताप अपार्टमेंट, अेम.आई.जी.-बी, अेम.बी. 2, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर 302033 मो. 9462044337

रानी सोनी 'परी'

मारवाड़ी ओळमो

मांडो झोळी मावड़ली, मैं लेय ओळमो आई हूं
म्हनैं तूं कसूर बता दै, किसबिध हुई पराई हूं
अेक कूख ही अेकसो जापो, दरद अेकसो झेल्यो
म्हैं रमती क्यूं आंगणियै में, बीरो गोद्यां खेल्यो
दुभांत या क्यांकी राखी, के मां में परजाई हूं
म्हनैं तूं कसूर बता दै, किसबिध हुई पराई हूं
बाबलियो तो लाड लडायो, बीरो क्यूं घुरकायो
काची-सी उमरड़ी में, सगळो काम सिखायो
चूल्हो-चोको राखूंड में, सगळा पहर बिताई हूं
म्हनैं तूं कसूर बता दै, किसबिध हुई पराई हूं
सासू-सुसरा, जेठ-जिठाणी, सै कीं बातां मानी
छोटी नणद देवरियै के, कदै देखी कोनी कानी
के के बात बताऊं मायड़, के के दर्द छुपाई हूं
म्हनैं तूं कसूर बता दै, किसबिध हुई पराई हूं
जी की तो जेवड़ी कर दी, करयो काळजो भाटो
जो मिल्यो राजी हो खायो, के मीठो के खाटो
पीवरियै का गेला भूली, सासरियो अपणाई हूं
म्हनैं तूं कसूर बता दै, किसबिध हुई पराई हूं
डोली आई अरथी जासी, या ही सीख सिखाई तूं
मूंडै पर तो ताळो राखी, सारा फरज निभाई तूं
तेरी सारी बातां मानी, अब मान मान मुरझाई हूं
म्हनैं तूं कसूर बता दै, किसबिध हुई पराई हूं

◆◆

202 / ए, मानसरोवर कॉलोनी, कालवाड़ रोड, मेडिकल सेंटर कनै, झोंटवाड़ा, जयपुर 302012
मो. 9784528512

डॉ. रेनू सिरोया 'कुमुदिनी'

आयो बुढापो

आयो बैरी बुढापो यो दिन-रात सतावै है
हुयो हाड पिंजरा सो नहीं साथ निभावै है

आंख्यां ये करै झिलमिल हाथां में जोर नहीं
अबै चाल हुई लड़खड़ यादां कमजोर घणी
कानां सूं भी अब तो घणो ऊंचो सुणावै है

भण लिखनै छोरा भी अबै बाबू ये बणग्या
कोनी टेम मिलवा नैं जद सूं बै पनपग्या
घणा रोग पड़्या पाछै, जीणो नीं सुहावै है

है साथै सगळा ई पण फेरूं ई अकेला हां
छोरा-छोरी पोता सब नाता स्वारथ रा
हिवड़ै री कोण सुणै, आंख्यां ई भर आवै है

क्यूं भूल्या सगळा ही अेक दिन यो आवैला
जो करयो कुमुदिनी थे उणरो फळ पावैला
जद छळै आपणा ही वृद्धाश्रम खुल जावै है

आयो बैरी बुढापो यो दिन-रात सतावै है
हुयो हाड पिंजरा सो नहीं साथ निभावै है

◆◆

213/12, सिरोया मेडिकल, माया मिष्ठान रै लारै, अशोक नगर, उदयपुर (राज.) 313001 मो. 9782404115

 ISSN : 2320-0995

लता पुरोहित

परिवार नियोजन

अे भायां म्हारा सुणजो थांनै, बात कहूं म्हैं साची
म्हैं भी इणनैं अेक दाण ही, किताबां में बांची
यो मिनख जमारो खोटो, इणमें जनता सब है नाची
हरिया-भरिया दीखता खेतां में, घणा धान रा टोटा है
तो पण आपणा इणी देस में, घणा व्है रैया मोटा है
आपां मिल सब बात करांगा, ये कदी नीं व्हैगा काची
घर में थे जे चार जणा व्हो, तो रोटी खावो ताजा
थोड़ा में थे घणो समावो, सब रैवोला थे साजा
दो टाबर नैं जलम देयनै, रैइजो थे सब राजी
परिवार नियोजन में भाग ल्यो, सरकार री सुणजो बातां
'हम दो हमारे दो' सब कैईनै जाता
इण नियमां रा पाळण करां, कदी नीं रैवां संतापी।

बचपन री यादां

याद घणो बचपन आवै, कीं करनै पाछो लाऊं
वणी वगत री फिकर ई कोनी, किसतर हूं समझाऊं
घेरदार फ्रॉक पैरनै, फूंदी जोर सूं असी फराय
शाला में मस्ती करता, दो चोटियां तो ऊंची कराय
छुट्टी आधी में घरै जो आता, मन व्है तो पाछी जाऊं
मेळा देखण सौक घणो है, खेलकण्या वठै सूं लावां
शाला में सिनेमा रो दिन व्है, पैलां नांव वठै लिखावां
पिकनिक रो तो आणंद घणो थो, अंताक्षरी भी म्हैं खेलाऊं
भादो में संध्या मांडा मा, गोबर सोधनै सब लावां
तरै-तरै फूल लाइनै, कागडो ऊपर पूरी सजावां।

◆◆

3-अे, महर्षि रवीन्द्रनाथ टैगोर सोसाइटी, पी.टी. कॉलेज रै कनै, पालड़ी, अहमदाबाद-7 मो. 7016209415

विजयलक्ष्मी देथा

गीत कस्यां गाऊंला

गीत कस्यां गाऊंला रे, गीत कस्यां गाऊंला
मारकाट आज मची, धरती है रगत रची
हरियाळी कठै बची, गीत कस्यां गाऊंला

ज्ञान रो उजियार कठै रे, घोर अंधियार अठै
भ्रूणहत्या बलात्कार जठै, गीत कस्यां गाऊंला

बालकां पे जोर-जबरी रे, जीवण री गाडी थमरी
रोवै-बिलखै टाप-टापरी, गीत कस्यां गाऊंला

झूंपड़्यां में नित रोदण, महलां में मन्नै मोदण
यां खायां री क्यूं खोदण, गीत कस्यां गाऊंला

कांटा को ढेर बध्यो, सांसां में ज्हैर बध्यो
भायां बीचै बैर बध्यो, गीत कस्यां गाऊंला

रागां रो अंत हुयो, संत मन कुसंत हुयो
यो कुणसो पंथ हुयो, गीत कस्यां गाऊंला

पसरग्या कोरोना रा पांव, सिसक रह्या स्हैर-गांव
दुष्ट डाकी खेलै दांव, गीत कस्यां गाऊंला

ऊगतो क्यूं आंथ रह्यो, दुख यो किण भांत रह्यो
घर-घर घिर घात रह्यो, गीत कस्यां गाऊंला

◆◆

893, पूजा नगर, हिरणमगरी, सेक्टर नं. 4, उदयपुर (राज.) मो. 6377296681

 ISSN : 2320-0995

डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा

तूं क्यांनै तरसावै रे!

अैड़ो कोई दिन आवै, कानूड़ो मिलण नै आवै
सागै आवै स्यामा प्यारी, भाग नैं सराहूं रे!
जुगल मूरत प्यारी, स्याम छिब मतवाळी
देख्या ही लुभाऊं हूं तो, गुरु गुण गाऊं रे!
आरतो उतार लेवूं, मनड़ो ही वार देवूं
चरणां लिपट कर, हरख मनाऊं रे!
अैड़ी कोई घड़ी आवै, अैड़ो कोई पल आवै
जोऊं बैठी बाट हूं तो, कागला उडाऊं रे!

थांरी तो सूरत पर, अटक्यो है मन म्हारो
सुध ले ल्यो दासी री थे, किसन मुरारी रे!
जुगल छबि री सोभा, किण भांत कैऊं कान्हा
राधा राणी रूप पर, जाऊं बलिहारी रे!
फूटरो सरूप थांरो, आंख्या मोटी कजरारी
हाथां में मुरलिया, मुगट मोर धारी रे!
पीतांबर पैर लियो, गळ मोतियां री माळा
टीको तो लिलाड़ पर, सोवै गिरधारी रे!

प्यारा कान्हा तूं तो म्हारो माय-बाप
भाईबंध विद्या धन, बुध और सखा म्हारो रे!
तूं ही म्हारो साची प्रेमी, इण आखै जग मांही
थारै सूं संबंध नातो, नेह रिस्तो सारो रे!

थारै सागै जोड़्यो हेत, रीत प्रीत जाणूं नाही
थूं तो इण जगत री, रीत सूं ही न्यारो रे!
भगत बच्छल प्रभु! करुणा रा धाम हो थे
त्रिलोकी रो नाथ म्हांनै, लागै घणो प्यारो रे!

हिवड़ै में आस लागी, कानूड़ै सूं मिलण री
भूखी तीसी बाट जोऊं, कद कान्हो आवै रे!
मुरली री अणहद, कानां कद पड़ै म्हारै
कद म्हारो लाडेसर, बंसरी सुणावै रे!
गायां रो गुवाळ नंद लाल गिरधारी कान्ह
उण बिन म्हांनै कोई और ना सुहावै रे!
आज्या भगतां रा बेली, लाडला माखणचोर
काळजै री कोर अब, देर क्यूं लगावै रे?

थारै दरसण सारू, तरस रह्यो है जीव
आज्या म्हारा हेताळु, तूं क्यांनै तरसावै रे!
जमना किनारै कान्हा, कदंब री छियां हेठै
बंसरी री तान म्हांनै क्यूं ना सुणावै रे!
मनड़ै रो मोर कान्हा, तन्नै ही पुकारै नित
मदन मोहन कद दरस दिखावै रे!
चटपटी लाग रही, काळजै रै मांही कान्हा
कद म्हारो लाडेसर, हिवड़ै लगावै रे!

◆◆

राणी बाजार, बंगाली मिंदर रै कनै, बीकानेर (राजस्थान) 334001 मो. 8824016859

डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

मायड़ री पाती

(परदेस में परिणीता बेटी नैं संदेस)

मायड़ देय संदेसड़ा, ले बायरिया री ओट
कहिजो म्हारी धीय नैं, सुरति करै हिया में चोट

सुण पंछी पीड़ा माय री, कहिजै धीय नैं जाय
राम-लखण सा वीर थांरा, कई पण पीव न खाय

सूना ये बाई घर-आंगणा, थां बिन रह्यो न जाय
पंख वाळा बडभागी पंछी, म्हैं किणबिध मिलूं आय

बिणती ओ सूरजदेव सूं, करज्यो पूरण प्रकास
कहिजो म्हारी धीय नैं, मायड़ मिलवा री आस

कुण सुणै किणनैं कैवां, हाल लिख्या नीं जाय
ऊग्या सूरज सांमै ऊभी, आंख्यां झर-झर जाय

सासू ये बाई थारी सोवणी, ससुर देव अवतार
नणदल मीठी बोलणी, बाई ! नेह भर्‌या भरतार

मन री पीड़ यो जग नीं जाणै, मायड़ आखिर है मां
भावां रो संसार हिया में, होठां मुळकै है मां

◆◆

22, ब्रज विहार, धायबाई जी री बाड़ी, पुला (उदयपुर) राज. 313001 मो. 6378289196

 ISSN : 2320-0995

शकुंतला शर्मा

पीड़ अेक विरहण री

सावणियै री बरसै बदरिया, रिमझिम-रिमझिम
ठंडी पून चालरी मधरी, सतरंगी म्हारी उडी चुनरिया

थारै बिना औ क्यांको सावण, फीका सगळा तीज-तिंवार
आज हिंडोळो सूनो साव, बेरंगा म्हारा सगळा सिणगार

आज धारली मूरत आंख्यां में, म्हैं पूछूं थे क्यूं नीं आया
म्हनैं बतावो के काम अटकग्यो, पोळ्यां खाली-खाली आज

देखो लोर सावणियै रा, घणो सांतरो मौसम है
इण रुत में थे कठै बस्या हो, दाळ-चूरमा घणा अडीकै

रात बैरण लांबी होयगी, दिन में मनड़ो भटकै है
झिरमिर-झिरमिर बारै बरसै, टप टप टप टप आंसू बरसै

सुणल्यो जी साथीड़ा म्हारा, लारली बातां भूल ज्यावो थे
अे बदळी तूं जाकर कह दे, आ जोगण आंख्यां नीं झपकै

कठै गयो म्हारै हिवड़ै रो हार, कठै गयो म्हारो नौसर हार
कठै म्हारै चुड़लै रो सिणगार, कठै म्हारै चूनड़ रो भरतार

अब तो आ ज्याओ जी भरतार, अब आ ज्याओ जी भरतार
सावण की रुत है रंग-रंगीली, हिल-मिल रैवां जी भरतार

◆◆

24 (22-23), मोती नगर पश्चिम, प्रह्लाद मार्ग, अक्षरधाम रै कनै, अजमेर रोड, जयपुर मो. 9413336106

शोभा चंदर

क्यूं भेजी परदेस

क्यूं भेजी परदेस मावड़ी
म्हांनै क्यूं भेजी परदेस

खेल-खिलौणा, साथ सहेल्यां
ज्यां संग चार दिन भी न खेल्या
के छूट गयो अे म्हारो देस
मावड़ी म्हांनै क्यूं भेजी परदेस

कुण थपक्यां दे गोद सुआसी
कुण कांधा ले मेळो घुमासी
कुण सुळझासी म्हारा केश
मावड़ी म्हांनै क्यूं भेजी परदेस

म्हैं भी ही थारा पेट की जाई
क्यूं म्हांनै तूं जाणी पराई
मनड़ा पे लागी म्हारै ठेस
मावड़ी म्हांनै क्यूं भेजी परदेस

भूल गई कोयलड़ी गाणो
भूल गई चिड़ी चुगबो दाणो
आंसुड़ां री पाती रो संदेस
मावड़ी म्हांनै क्यूं भेजी परदेस

सुणल्यो म्हारी बात

म्हारा सायब जी, सुणल्यो थे म्हारी बात
सुणल्यो थे म्हारी बात
कद आओला थे, लिखद्यो म्हनैं
म्हारा सायब जी, सुणल्यो थे म्हारी बात
जद सूं थे परदेस पधारया
सगळा सुख भी संग ही सिधारया
म्हारा नैणां करै, रात्यूं बरसात
थे सुणल्यो म्हारी बात....
जद सावणियो म्हासूं लड़ै छै
बस थे जाणो गाज पड़ै छै
हिवड़ो पावै नहीं, चैन घड़ी स्यात
थे सुणल्यो म्हारी बात...
बासंती रुत जद मुस्कावै
मनड़ा मांय आस जगावै
पिवजी ल्यावैला, फूलां री सौगात
थे सुणल्यो म्हारी बात...
प्रीत को औ रंग छै मतवाळो
दिन-दिन गैरो होबा आळो
मन रा बागां का अे, हरखै पात-पात
थे सुणल्यो म्हारी बात...

◆◆

392, गैटोर रोड, ब्रह्मपुरी, जयपुर (राज.)

 ISSN : 2320-0995

स्नेहलता कचोरिया

अलबेलो मेवाड़

अलबेलो मेवाड़ देश म्हारो, प्यारो राजस्थान है
इण धरती नैं नमण करूं, यो वीरां रो जन्म स्थान है

राणी पद्मणी रतनसिंह, महलां री सोभा न्यारी ही
सुंदरता बैरण हो गई, आयो आंख्यां में पाणी है
कामलोलुप खिलजी देखो, जबर राणी रो रूप है
सुध-बुध सारी भाल गयो, बैरी बण आयो क्रूर है
अलबेलो मेवाड़....

इणी रूप रै कारण बो, छळ-बळ सारा काम लिया
राणी मनड़ै में घबराई, गोरा बादळ नैं याद किया
देख्यो जद सत जावण में है, राणी साचो प्रण कीन्हो
कूद गई जळती ज्वाला में, कर नाम अमर इतिहास में
अलबेलो मेवाड़...

सलूंबर री हाड़ा राणी, सारो जग पहचाणी है
शीश काटनै हाथ धर दियो, वीरांगणा अग्राणी है
चूड़ा सारा मोह छोडनै, रण दीन्ही टंकार है
जुध जीतनै आया, पण राणी री अमर सैनाणी है
अलबेलो मेवाड़....

पन्ना जैड़ी धाय मां अठै, अपणा लाल गंवाया है
राजवंश रै खातर जिण, आंसू आंख सुखाया है
बनवीर रै हाथ नीं लागी, उदय सिंह री पाती है
इण जननी रो जस गातां, आ जीभ म्हारी थाकी है
अलबेलो मेवाड़....

भामाशाह स्वामी भक्त नैं, कोई भूल न पावैगा
विपत्ति में जो साथ निभावै, साचो भक्त कहावैगा
संपत्ति सारी अर्पण कर दी, देश सेवा हित उपकारी
धन्य धन्य बीं जननी नैं, जो इसा देशभक्त जाया है
अलबेलो मेवाड़...

आन-बान हित राणा प्रताप, घोर जंगळा में भटक्या
राजमहल रा भोग छोडनै, घास री रोटी खाई ही
अकबर रै तो हाथ नीं आया, लोह चणा चबवाया है
मुगल वंश मन में पछतावै, धन्य या धरा महान है
अलबेलो मेवाड़....

चेतन तो घोड़ो हो, पण स्वामीभक्त महान हो
घायल पर घायल होयो, राख्यो स्वामी रो मान हो
शक्तिसिंह पछतावै हो, धिक्कार मनै मां जाया नैं
चरण पड़ूं इण चेतक रै, स्वामी री लाज बचाई है
अलबेलो मेवाड़ा....

अलबेलो मेवाड़ देश म्हारो, प्यारो राजस्थान है
इण धरती नैं नमण करूं, यो वीरां रो जन्म स्थान है

◆◆

वृन्दावन विहार कॉलोनी, बाईपास रोड, सलुम्बर (राज.) मो. 8890687837

सपना यशोवर्धन व्यास

म्हारो जैसाणो

ओ म्हारै जैसाणै स्हैर री बात निराळी
म्हारै जैसाणै री बोली तो शहद री प्याली
होड करै है हेम सूं वीं रा भाटा अर चट्टाण
किळकै कारीगरी कलमां सूं, मुळकै है पाषाण
नोमुज धोरांळी धरती री गाथावां पुराणी
अपणायत शीश देवै रैकारै में गाळी

चालै मारग झीणोड़ै, आ धणियाप न धारै है
भुजबळ माथै रखै भरोसो, अरि शीश उछाळै है
धरती अभिमानी आंटीली, लहू मांग सजावै है
जीवण जूझण में जाणै है, जौहर में न्हावै है
चामुंडा रूद्रोणी बीसहथी चितराळी
ओ म्हारी जैसाणै स्हैर री बात निराळी

पाणी काढै पाताळ फोड़, धोरां में उगावै धान
फळियां काचरियां उपजावै, खीज सोगरो शान
गगनां गूंजावै माडराग, राइको रणमल लोकगीत
झिझळियो, लाखो अर पणिहारी री अमर प्रीत
रंगां-चंगां, मरदंग मैफिलां घूमर गैहरां वाळी
ओ म्हारै जैसाणै स्हैर री बात निराळी

धरती जैसाण री दीवानी, आजादी री प्यारी
देखण आवै है दुनिया, जग में जाणी-पिछाणी
आंक्या नाम इतिहासां में, तलवारां रो पाणी
पग-पग माथै पाणीपत, चप्पे-चप्पे झांसी राणी
हळदीघाटी गळी-गळी रग-रग में रजवाणी
हर नर जायोड़ो लियानार्ड, थळियां थर्मोपाली
ओ म्हारै जैसाणी स्हैर री बात निराळी

दांतां आंगळी दिरावै, नक्काशी हस्तशिल्प कला
गिगनारां गळबाथां भरै कंचन वर्णा कोट किला
मुळकावै मूरत्यां मिंदर में, हद म्हैल मंडाण
कळियां चिटकी चट्टाणां में, पाषाणां में प्राण
बुरजां बंगलां गोखां झरोखां झूलणा जाळी
ओ म्हारै जैसाणी स्हैर री बात निराळी

पळ-पळ पळकै हैं कंचन ज्यूं जैसाणै रो पाषाण
रळ-रळ रळकै है रूपो जद छावै चांदणी रात
मरु री रजकण में हरखै हीरा कोहिनूर बरसात
मिनखां री मूंछां में मुळकै मरदाई रा क्रिपाण
किळ-किळ किळकै है कारीगरी रचै रागण्यां रास
महिमा मरुधर री गावण अग गंधर्व सुरग में खास
आ तो धरती है बुर्ज ननानू मेघाडंबर वाळी
म्हारै जैसाणै री बोली तो शहद री प्याली
ओ म्हारै जैसाणै स्हैर री बात निराळी
म्हारै जैसाण री शान बान तो जग जोवण वाळी।

◆◆

सर पदमपत सिंघानिया यूनिवर्सिटी, नेशनल हाई-वे 76, एफ.आर. 1/6, भटेवर, उदयपुर (राज.) 313601
मो. 9414269257

 ISSN : 2320-0995

सरोज कंवर

मारवाड़ री मीठी बोली

मारवाड़ री मीठी बोली, ज्यूं मिसरी संग घोळी सा
ऊंचा-ऊंचा महल-माळिया, खेलै आंख-मिचौळी सा

रूप निराळो इण धरती रो
नेह बताऊं इण धरती रो
घूंघट में निजरां है तिरछी, देखै सूरत भोळी सा

केसरिया जद बानो पहरै
दुस्मण नैं शमशीरां घेरै
शीश निसाणी दै क्षत्राणी, तिलक लगावै रोळी सा

खेजड़ली री छायां नीचै
देख गढां नैं आंख्यां मीचै
रंग-रंगीलो राजपुताणो, छवि साफ अर धोळी सा

अलगोजां खेतां में बाजै
रणभेरी रण मांही साजै
रंगमंच पर रण दिखलावै, अैड़ा है हमझोळी सा।

◆◆

204, जसवंत नगर, खातीपुरा, जयपुर (राज.) मो. 9461084859

डॉ. सुमन बिस्सा

राग बसंती

सावण में मेघ मल्हार चलै, काती में 'दीपक राग' सजै
फागण में राग बसंत जमै, मौसम खुद झूम-झूम गावै।

है नहीं धूजणी री धुक-धुक, डांफर रो कोप हुयो ढीलो
लदग्या अबै दिन सियाळै रा, मन महा मोद सूं भर छावै।

अणगिणत पुसब अर रंगां री छटा नैं जद तितल्यां निरखै
तो खुद रै पंखां रीझ्योड़ी, सगळी लजखाणी पड़ जावै।

रातीवासो ले पेड़ां में, दिन ऊगै जद चै'चाट करै
समवेत सुरां में यूं लागै, बगिया चिड़ियाघर बण छावै।

जागा पलटणिया धोरा तो, खुद में ही बड़ा घुमक्कड़ है
सैलाणी करुजां सूं मरू रा, सैलाणी धोरा बतियावै।

बायरियो परभाती गावै, आ धरा रास में रंग जावै
आभो बण जावै छैल, उमगतो मौसम जद बसंत आवै।

चंपा, गुलाब, चमेली सब, फुटरापणै में होड करै
क्यूं चूकै फिर केतकी, पलास, बै भी प्रतियोगी बण जावै।

नव कूंपळ री अगवाणी में, पेड़ां रा पीळा पात झरै
इण महा त्याग री गाथा रै, कीरत नैं खुद कुदरत गावै।

फूलां री सरगम बीच, बिखर जावै मौसम री मधुरी लय
तो धड़कन सूं स्पंदन तक, संगीत लहरियां भर जावै।

लहरां रै संग किरणां नाचै, तो मन भी कत्थक निरत करै
लय, ताल, सुरां री तिरवेणी, गळहार लियां आगै आवै।

◆◆

314-सी, तीसरी 'डी' रोड, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.) 342003 *मो. 9414215128*

 ISSN : 2320-0995

सुमन राठौड़ झाझड़

रंगीलो राजस्थान

अठै कण-कण गरबीलो, कांई करूं बखाण
रंग-रंगीलो म्हारो प्यारो राजस्थान
अठै मायड़ कोख सूं वीर सपूत निपजै
माटी रक्षार्थ शीश चढावण मिनख खपजै

अठै वीरांगना पन्ना स्वामीभक्त हुई
काळजै री कोर रो त्याग कर अमर हुई
मर्दानी हाडी शीश काट थाळ सजा दी
कर्तव्य निभावण अमिट निसाणी भेज दी

अठै पद्मण जौहर इतिहासां अमर हुयो
धरम अर शील बचावण जौहर जलम हुयो
अठै मीरां कृष्ण भक्ति अभिमान बण्यो
गोरा बादळ रक्त माटी परिधान बण्यो

अठै आन-बान-शान राजपूताना री
बैरी थर्राया है माटी बलिदानां री
अठै जोधाणो-बीकाणो घणो सुहाणो
धोरां री धरती जैसाण गजब ठिकाणो

अठै मिलाप अर अपणायत रो भाव मिलै
मान-सम्मान प्रेम भाव देख हिवड़ो खिलै
अठै धरती रै कण-कण में सोनो उपजै
मोठ बाजरी अर ग्वार धोरा में निपजै

◆◆

ग्राम पोस्ट- झाझड़ (झुंझुनूं) राजस्थान

आशा पांडेय ओझा

अेक

घोर अंधारो च्यारां कानी
अजब निजारो च्यारां कानी

पसर गयो रे बैर भरूंट्यो
थारो-म्हारो च्यारां कानी

मीठी फसलां बीती बातां
पाणी खारो च्यारां कानी

जूणां काटै लोग-लुगाई
सांसां भारी च्यारां कानी

छायां वाळा रूंख कट्या सब
चाल्यो आरो च्यारां कानी

ठीमर ठावा लोग कठै अब
अकलां गारो च्यारां कानी

निजरां लागी किणरी 'आशा'
जोय! उतारो च्यारां कानी

◆◆

दो

नैणां रा अै घाट भंवर जी
जोवै थांरी बाट भंवर जी

कूं-कूं केसर आळी थाळी
चंदन आळा पाट भंवर जी

क्यांरा पैरण क्यांरा ओढण
थां बिन कैड़ा ठाट भंवर जी

रेशम लागै लट्ठा जैड़ो
मखमल लागै टाट भंवर जी

कांकड़ जैड़ी सेजां लागै
थोर सरीखी खाट भंवर जी

भूल्या किसबिध म्हांनै कैवो
बणग्या कांई लाट भंवर जी

खूट रही रे सांस री सीसी
आओ अब भन्नाट भंवर जी

◆◆

ए-603, सिल्वर स्कवायर अपार्टमेंट, न्यू विद्यानगर, बी.एस.एन.एल. ऑफिस रोड, हिरण मगरी सेक्टर-3, उदयपुर (राज.) 313002
मो. 8955697416

 ISSN : 2320-0995

उर्मिला देवी 'उर्मि'

हर घड़ी हतास क्यूं

झूठा सरोकार व्हैग्या, रिश्ता तार-तार व्हैग्या
संवेदन सूं खाली आज, मिनख दीखै है क्यूं?

कोरी चमक-दमक में ही मानै है बडापणो
दूजां री परवा आज, कम ही दीखै है क्यूं?

बारे दीखै ताम-झाम, मन में है मैलड़ भर्‌यो
जका लागै घणा नैड़ा, बै ई घणा ठगै है क्यूं?

पूछै कुण दुखी जीवां नैं, आंसू ढळकाता नैणां नैं
ढोंग अर छळावा ई, च्यारूं कानी बधै है क्यूं?

खेतां में जका काम करै, धान रा भंडार भरै
बै ही अन्नदाता दीखै, हर घड़ी हतास क्यूं?

बेट्यां री लाज जठै लूटीजती दीखै बठै
बेट्यां नैं पढाबा सारू, नारा लागै है क्यूं?

देस रा नेतावां नैं जिम्मेवारी लागै जे मुस्कल
फेर बै सत्ता रो लोभ, जल्दी-सी छोडै नीं क्यूं?

◆◆

अनुग्रह, तरुण उद्यान रै कनै, गोळ चौक, रोहिणीपुरम्, रायपुर (छत्तीसगढ़) 492010 मो. 9424212670

डॉ. तारा दीक्षित

व्है मन घणो उचाट

आवै भी नीं है आऊं, संपावा रो कायदो
व्है मन घणो ऊचाट, तो हूनर सूं रोवीजै

आंख्यां री आ जुबान होवै है किण खातर
व्है अेरै-मेरै पैरां तो, निजरां सूं बोलीजै

आंख्यां रो है गुनो, यो कांई दोष हेत रो
हिया रो हेत, हेत सूं हिया में राखीजै

घर में घुसनै रैवा रो बण्यो है कायदो
मन व्है बातचीत रो, मोबाइल सूं करीजै

कियां सेवै मिनख, काल बायरो वसै
म्हैं शरण हूं करतार, बेड़ो पार करीजै

है कण-कण में वास थारो, आ साची बात छै
बिलखता रा भेळु, थां बिन कुण वावीजै

आवै भी नीं है आऊं, संपावा रो कायदो
व्है मन घणो ऊचाट, तो हूनर सूं रोवीजै

◆◆

श्रीनिवास, मकान नं. 23, लक्ष्मीनारायण नगर, सविना, उदयपुर (राज.) 313002 मो. 9829595633

 ISSN : 2320-0995

दीपा परिहार 'दीप्ति'

अेक

च्यारूं कानी अैड़ो खाको व्है जावैला
परंपरा फाटोड़ो वागो व्है जावैला

किस्मत थांरी चोखी लिख्योड़ी व्हैला तो
राजाजी रै गढ रो पागो व्है जावैला

मर जावैला जिण दिन हिवड़ै रो हेत जठै
उणरो जीवण टूटो धागो व्है जावैला

जोड़ण-तोड़ण रो जतन करै जीवां जितरै
मरियां पाछै तोड़ण तागो व्है जावैला

विपदा पड़ियां ई आदम तो परखीजैला
भाई सूं भाई भी आगो व्है जावैला

झूठी रीतां सूं चालणियां नैं देखां जद
सीधो चालण वाळो बांको व्है जावैला

नाजोगी करतूतां वाळा चोखा कींकर
साची साम्हीं दीपा नागो व्है जावैला

दो

भूख सूं यूं लोग सगळा मर जावै
रुपिया जद सब उणां रा हर जावै

आज विपदा देख चारूं कानी री
लोग कोरोना हुवै तो डर जावै

योजना सरकार री आवै तद ही
भ्रष्टाचारी उणां नैं चर जावै

जद ठिकाणो छूट जावै स्हैरां सूं
आपरै ही गांव रैवण घर जावै

आज बीमारी दिखै सगळा देसां
कुण बचावै मौत मूंडै नर जावै

स्हैर अब खाली हुया कोरोना सूं
वै कमावण नै किसां रै दर जावै

साच रो खाली घड़ो पड़ियो देखो
ठाम दीपा झूठ सूं ही भर जावै

◆◆

3 क 19, मधुबन हाउसिंग बोर्ड, बासनी, जोधपुर (राज.) 342005 मो. 8386885331

डॉ. उषाकिरण सोनी

निज रा करम सुधार

करमां सारू मिनख नैं, मिली जूण घरबार।
करम मिलासी राम सूं, निज रा करम सुधार।।

कासी-मथुरा सब कर्‌या, हुयो न मांय उजास।
राग बात नैं प्रेम तेल में, भिजो'र दिवलो चास।।

मैं-मैं करतो फिर रह्यो, बो न मिलावै हाथ।
जद तूं मैं नैं छोडसी, मिल जासी साख्यात।।

क्यूं तूं पायो जलम है अर क्यूं मिल्यो संसार।
जे तूं कारण खोज लै, तो होसी बेड़ो पार।।

मिली मिनख री जूण है, तो मिनखाचारो राख।
सगळां सागै भाईचारो ई, भरसी तेरी साख।।

आयो कोरोना काळ बण, लियां हाथ जमफांस।
जात-धरम पूछ्या बिना, काठी करै उसांस।।

रंग-रूप, धन-ज्ञान रा, बो नहीं राखै ध्यान।
कोरोना री निजर में, सगळा हुया समान।।

दादोजी कहता हा सदा, अतिथि हुवै भगवान।
ईं कोरोना रै काळ में, है दुस्मण सो मेहमान।।

कामकाज सब ठप हुया, बंद है हाट-बाजार।
पांख-पंखेरू मून सब, रोवै मिनख-संसार।।

संक्रामक रोग तिसणा सूं, हु र्‌यो ग्रसित संसार।
रामनाम री ओषधी लै, ओ रोग जायगो हार।।

◆◆

ज्ञान फाउंडेशन परिसर, वार्ड नं. 10, भभूताजी बास, राजलदेसर, जिला-चूरू (राज.) मो. 9929181326

 ISSN : 2320-0995

छैल कंवर चारण 'हरिप्रिया'

कळप

कर-कर मन में मोद नैं, गाढो कर-कर गाढ।
पाळ पोष मोटा किया, जद तक छैली दाढ।।

जिण दिन आई मूंछ नै, दाढी वाळा बाल।
पूठ पिछाड़ै निरखता, पूत तमींणी चाल।।

देख सवायो आप सूं, दूणी छाती कीन्ह।
काज सुधारण कारणै, झूठ गवाही दीन्ह।।

आस-पास हठ आपरी, रख दी सब हेठीह।
तन मन धन वारत हुआ, खुद सुख सूं छेटीह।।

सूरज सोहन ऊगसी, घर आसी विरदाळ।
छम-डम झांझर बाजसी, खूब बजास्यूं थाळ।।

होई कमर जद दोवड़ी, निजरां निठगी मीट।
माणस हुयग्यो दूमणो, ओछी पड़गी तीठ।।

जद सूं मांचो ढाळियो, ड्योढी वाळी साळ।
तरस गयो हुंकार नैं, मिनखां पड़ग्यो काळ।

पूत गयो परदेस में, धीवड़ गी सुसराल।
मुसकल दोन्यूं टेम री, कीकर आवै थाळ।।

लूखी-सूखी जीम द्यूं, काया नैं भाड़ोह।
सीरा-लपसी जीमस्यूं, मन लेवै आड़ोह।।

चूल्हो कुण सिळगावसी, कर ठीकर आछाह।
वापरगो सो जीम ल्यो, काचाह नै पाकाह।।

जद घर आयो डीकरो, तद ही घर में राड़।
दोस देय अळगो हुवो, लै खरचां री आड़।।

नीव लगी महलां उठी, झूंपी अठी हमेस।
उठीज रेशम घासिया, उठीज फाटा खेस।।

ना तीरथ ना धाम च्यार, ना घूम्या परदेस।
आया ज्यूं ही होयग्या, जा अमरापुर पेस।।

अब लग घर री बात ही, अब पूगी बारैह।
मिनखां मोटो बाजणो, क्यूं रैवां लारैह।।

इखबारां में सोक रा, संदेसा छपवाय।
सीरा लपसी गांव रा, गिंडकड़ा तक खाय।।

मोल मोलावै मोकळा, देवै धरमादेह।
काग जीमावै कूकता, कूड़ा ही डाडैह।।

◆◆

आर-18, सुशांत लोक, न्यू पाली रोड, बासणी बाघेला, जोधपुर (राज.) मो. 8058421711

तारा प्रजापत 'प्रीत'

करलां मन री बात

आओ कदै सांझ ढळै, तारां छाई रात।
हाथ आपरै हाथ में, करलां मन री बात।।

बरस बिता'र आई है, सातू वाळी तीज।
साजन घर थे आवजो, चांद दिखायै दीज।।

नैणां री पिव जोत थे, काळजियै री कोर।
बाटा थांरी जोवती, हिवड़ै नाचै मोर।।

माथै ऊपर गागरी, पाणी भरवा जाय।
निरखत छटा सुहावणी, मनड़ै हरखित थाय।।

बाट पिव री जोवती, मनड़ै हुवै अधीर।
सावण बरसत बादळी, आंख्यां बरसै नीर।।

ओळ्यूं आवै सायबा, मनड़ो रैवै उदास।
आंगळ्यां पे दिन गिणुं, पिया मिलण री आस।।

राधा रै हिवड़ै बसै, कानूड़ै री प्रीत।
कान्ह बजावै बांसुरी, सखियां गावै गीत।।

काणो घूंघट काढनै, देख रही हर ठांव।
ताळ-तळैया बावड़ी, म्हारो प्यारो गांव।।

निरखण लागी काच में, गोरी निज सिणगार।
झुमकी पैरी काम में, गळै नवलखो हार।।

तलवारां री धार है, थारा नैण कटार।
हिवड़ै नैं घायल करै, जद-जद करता वार।।

सदा आज में जीवणो, नाम काल रो काळ।
जाणो पड़सी छोडनै, प्रीत न हिवड़ै पाळ।।

◆◆

प्लॉट नं. 1, गायत्री विहार, खादी भंडार रै लारै, भास्कर सर्किल, रातानाडा, जोधपुर (राज.) 342001
मो. 9413111462

 ISSN : 2320-0995

मान कंवर 'मैना'

श्रृंगार रस रा दूहा

चंदा सरीखो मुखड़ो, पुहप कियो सिणगार।
बाटां जोऊं बालमा, पंथ रैयी बुहार।।

पिव परदेसां बस गया, सखी! लिखो संदेस।
कद आवोला सायबा, प्यारी धण रै देस।।

पिव परणावो भेजियो, बांचूं बारम्बार।
कद आवैला सायबा, लिख्यो नहीं इक बार।।

सेजां बैठी गोरड़ी, दिवलो लियो जुपाय।
आओ म्हारा सायबा, हिवड़ो ल्यो न लगाय।।

सिर पर चूंदड़ सोवणी, रखड़ी साजै जोर।
हाथां चुड़लो गोखरू, पैर'र बैठी गौर।।

मनड़ै सूं मनड़ो मिलै, बंधै प्रीत री डोर।
जीवण पूरो बदळ दै, चुटकी भर सिंदूर।।

आंख्यां जाणै मद भरी, हिरणी जैड़ी चाल।
रूप सायधण निरखतां, सायब हुया निहाल।।

गोखै ऊभी गोरजा, पिव री जोवै बाट
आवै म्हारा सायबा, ढाळूं हिंगळू खाट।।

बैठी गोरी अणमणी, यूं उदासी अपार।
कद आवोला सायबा, थाकी पंथ निहार।।

पीळो ओढ्यो प्रेम सूं, कर सोळा सिणगार।
बेगा आवो सायबा, भव-भव रा भरतार।।

माथै साफो सोवणो, सिरपेच जोरदार।
लागै सायब फूटरा, मूंछ्या रोबदार।।

◆◆

गांव भवानीपुरा, पोस्ट-चौमूं पुरोहितान, वाया-खाटूश्यामजी, जिला-सीकर (राज.) मो. 9950438717

दूहा

डॉ. सुशीला शील

शृंगार रा दूहा

धक-धक करतो काळजो, धक रिह्यो दिन-रात।
टप-टप टपकै नैण सै, बोलै सगळी बात।।

फड़कै बायीं आंखड़ी, छाजै बोल्या काग।
पिवजी आया आंगणै, आज हुई धिन्नभाग।।

कड़-कड़ कड़कै बीजळी, झर-झर बरसै मेह।
थर-थर कांपूं अेकली, प्रीत आवो गेह।।

मैं गुणवंती सांवळी, अळगा रै भरतार।
मन री बात न बूझता, अैड़ा निपट गंवार।।

बेगा-बेगा काम कर, मिलण पिया सूं आज।
सास-नणद रोक्यां खड़ी, कुण जावै किण काज।।

प्रीतम की बातां लगै, ज्यूं लाडू री कोर।
कण-कण पागी प्रेम सूं, हिवड़ो हुयो विभोर।।

चुड़लो बिंदी चूनरी, नैणां सुरमो सार।
पिया मिलण नै मैं चली, सज सोळा सिणगार।।

◆◆

कहावतां रा दूहा

गुणी ओगुणी लोग री, दसा आप दरसाय।
आम लुळै नीचो झुकै, अरंड अकासां जाय।।

थे महलां, म्हां झूंपड़ी, राजनीति री खोट।
ठावां-ठावां टोपला, बाकी नैं लंगोट।।

कोर कळेजां जाणियो, आंख्यां करच्या न दूर।
सासू थारी लाडली, म्हारै घरां रो नूर।।

कळजुग री औलाद अे, है अतरी हुसियार।
दो रोटी ना जीवतां, मरच्यां पछै ज्यूंणार।।

जद जाऊं घर-ब्हारनै, हियो धरावै धीर।
मां थारा आशीष ज्यूं, कामधेनु रो छीर।।

मंजिल को बेरो नहीं, थक्या-थक्सा सा पांव।
घणो सतावै तावड़ा, मां तूं बड़ की छांव।।

प्रीतम दोरी ही निभै, थारी म्हारी प्रीत।
हूं दीवाळी गाऊं जद, थां होळी रा गीत।।

◆◆

2 / एल , 298, इंदिरा गांधी नगर, जगतपुरा, जयपुर (राज.) मो. 9828896508

ISSN : 2320-0995

डॉ. साधना जोशी 'प्रधान'

चरूंठिया

अेक

नाच्या चढ़कर टूंकळी, पत्तो मद में चूर।
आयो उडतो बायरो, लेग्यो कोसां दूर।
लेग्यो कोसां दूर, धूळ में रळ कुरळायो।
छेकड़ पड़्यो उजाड़, याद निज बिरवो आयो।
कहत 'साधना' साच, भाग नीं कोई बांच्यो।
छिन में पलटी खाय, अणूतो क्यूं थूं नाच्यो।।

दो

निंदा में रस मोकळो, चुगली इमरत पान
परनिंदा रस पीवतां, होवै राजी झ्यांन।
होवै राजी झ्यांन, करै नित थूक बिलोई।
झूठी लोदर घाल, बैठज्या छोड रसोई।
कहत 'साधना' साच, हथाई राखै जिंदा।
सै स्यूं सोरो काम, डावड़ी करणो निंदा।।

तीन

घर पड़्यो है सांकड़ो, अठै कठै इब ठौड़।
आयो बेटो बाप नैं, बिरद आसरम छोड़।
बिरद आसरम छोड, नचींतो होग्यो भायो।
पण भूल्यो आ बात, बगत थारो भी आयो।
कहत 'साधना' साच, निकळग्यो पूत कुपातर।
इण सूं चोखो बांझ, जणीता होवै बे-घर।।

चार

चौबारो घर आंगणो, उजड़्या हरियल खेत।
छोड गया निज गांव नैं, स्हैरां सूं कर हेत।
स्हैरां सूं कर हेत, भूलग्या रीत पुराणी।
खोई कुल-पैचाण, बदळग्यो खाणो-पाणी।
कहत 'साधना' साच, कठै है भाईचारो।
जात-न्यात तो दूर, उडीकै घर चौबारो।।

पांच

काया ढळती छांव है, सुणलै आतम टेर।
मूंडो निरखै बावळी, मन री काळख हेर।
मन काळख हेर, मांज मैलो मन-दरपण।
दोस हियै रा सैंग, राम नैं कर दै अरपण।
कहत 'साधना' साच, रूप औ थोथी माया।
दो दिन जोबन-धूप, छांव है ढळती काया।।

छह

पीस्सो, रुतबो डांग लै, बणजा खुद सरदार।
निरबळ रो सोसण करै, तागत है बदकार।।
तागत है बदकार, मिनख नैं भूत बणा दै।
मिनखपणो जा भूल, पाप रै गेल लगा दै।
कहत 'साधना' साच, जबर सोसण रो किस्सो।
अनाचार रो मूळ, जगद में होवै पीस्सो।।

वंदे मातरम् अपार्टमेंट, कोठारी रोड, सुजानगढ़ (चूरू) राज. 331507 मो. 9413076275

हाइकु

डॉ. अनिता जैन 'विपुला'

अेक
देखूं मन सूं
परखूं हिवड़ै सूं
जीवूं आत्मा सूं

दो
प्रेम निराळो
लागै सब फूठरो
हियै उजाळो

तीन
प्रेम सौरम
ज्यूं भीनी कस्तूरी
पावै स्व डूबै

चार
प्रेम भळक
अंतस रो उजाळो
रोक्यां नीं रुकै

पांच
मौन निगळ
करोध आग उगळ
अब पिछाण

छह
कैवै हां मौन
सबद सूं तीखो यो
कचोटै मन

सात
तड़प हरो
आकंठ प्रीत करो
सून्य नैं भरो

आठ
मिलणो चावै
कियां देखै आतम
हटै तो तम

नौ
काल न मुड़्यो
काल रा मोहताज
तो जियो आज

दस
गुरु निखारै
कोयला हीरो बणै
कोई नीं जाणै

इग्यारा
आंख्यां देख
मन ई पिछाणै
ईस जाणै

बारह
पिया री याद
बांसुरी बेसरी क्यूं
गळो रुंधग्यो

तेरह
भाग हूं थारो
करम लारै चालूं
सपना पाळूं

चवदै
जीवन जियो
विष-अमृत पियो
अर्पण करो

◆◆

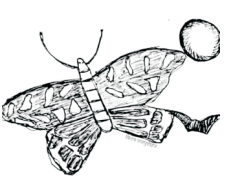

फ्लेट नं. 301, राधेकृष्णा अपार्टमेंट, कृष्णा विहार, न्यू विद्या नगर, सेक्टर-4, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)
मो. 9829646220

 ISSN : 2320-0995

चित्रा शर्मा 'काप्रेनी'

अेक
चोखा काम को
चोखो नतीजो आवै
या साची खुशी

दो
मनख्यां में मेळ
अेक डोर सूं गूंथ्या
कुटम खुश

तीन
हरया नोटां में
गाडी घोड़ो बंगलो
नक्कटी खुश्यां

चार
मन को खेत
मन ई करै खेती
हासल खुशी

पांच
लक्ता गहणां
डीलड़ा की शोभा छै
खुशी कोई ना

छह
हार बा पैली
दगदगो मन को
हरा ई दे छै

सात
रास नै सांप
काळज्यो मान ले छै
दगदगा में

आठ
आछो मनख
दगदगा की मारया
नकाम को छै

नौ
मन की बातां
ठम जावै ज्यां की ज्यां
दगदगा सूं

दस
आंख्यां फाटी
रूंम-रूंम कांपग्यो
यो दगदगो

◆◆

सी.अे.डी. कॉलोनी, कोटा (राजस्थान) मो. 7976915526

डॉ. जेबा रशीद

राजस्थानी री सांवठी छिंयां में पढ़ूं म्हारै जीवण-पोथी रा पाना

*म्हैं सोच्यो, मोटी बैन ममतामयी **आनंद कौर व्यास** जी सूं बंतळ कर'र ग्यान रा मोतियां सूं धोबो भरलूं। आपरो महिला लेखन में चावो-ठावो अर अंजसजोग नांव है। बीकानेर स्हैर रा आनंद कौर व्यास आपरी कलम री निकेवळी कोरणी सूं साहित्य जगत में ठावी ठौड़ थरपाई। अेक छोटी-सी भेंट कर आपां बतियावां... उणां सूं। आम्हीं-साम्हीं बैठ्या तो सवालां रो सिलसिलो चाल पड़्यो—*

*** आपरी साहित्यिक जात्रा कद अर कियां सरू हुयी ? लेखन री प्रेरणा कठै सूं मिली ?**

—जे बालपणै मांय आछो, ओपतो अर असरदार वातावरण मिलै तो बालक री जिग्यासा तिरपत होय सकै। अबोध बालपणै री काची माटी माथै जिका मंडाण मंड जावै, बै जीवण भर साथ निभावै। साहित्यिक जात्रा सूं पेलां जीवण री सरुआती जात्रा रो विवरण देवणो जरूरी है, जिकै सूं ठाह लागै कै जीवण रै पड़ावां नैं पार करतां-करतां साहित्यिक रुझाण कियां बण्यो। पैलो चरण नानीजी सूं सुण्योड़ी कहाणियां रो है। म्हनैं इसी कहाणियां सुणणै री घणी इच्छा रैवती, जिकी में उण बगत रै जींवतै-जागतै चरितरां री बात हुवै। म्हारो सवालिया बालमन जाणणै सारू बेचैन होय जावतो कै यूं क्यूं होयो ? म्हैं सवाल खोद-खोद'र पूछती रैवती। अणजाणै में ई साहित्यिक झुकाव होय रैयो हो।

म्हारै पिताजी री बदळी मेड़ता सिटी हुयी। म्हैं मौको मिलतां ई मिंदर में जावती। मिंदर में मीरां रै जीवण माथै भासण हुया करता हा। म्हारो सवालियो मन पूछतो—मीरां इतरी अबखायां रै बावजूद आगै कियां बधी! अबखायां भचीड़ा खांवतै कांई कोई मिनख आगै बध सकै ? अणजाणै में साहित्य रा संस्कार पड़ रैया हा। पैलां मेड़ता में अर पछै नावां री मिडिल स्कूल रै पुस्तकालयां में जित्ती पुस्तकां ही उणां मांय सूं म्हैं सगळी टाळवीं पुस्तकां पढली, जियां प्रेमचंद री लगैटगै सगळी कहाणियां अर उपन्यास, नाती लेखकां री कहाणियां, पत्रिकावां आद पढता। चतुरसेन शास्त्री, गुरुदत्त, रवीन्द्रनाथ टैगोर री काबुलीवाला कहाणी, पंचतंत्र री कहाणियां, बाल साहित्य री पत्रिकावां—चंदा मामा, सारिका, जातक-कथावां, बाल रामायण, बाल महाभारत, चित्रकथावां आद। इण बिचाळै म्हैं म्हारी छोटी-छोटी कहाणियां लिख'र म्हारै छोटै भाई अर सहेलियां नैं सुणावण लागगी। साहित्य रा सरुआती सांतरा संस्कार पड़ रैया हा।

---

*जेबा रशीद : **151, चौपासनी चुंगी चौकी रै लारै, जोधपुर (राज.) 342008** मो. 9829332268*
*आनंद कौर व्यास : **एस-43, आशियाना, अमर बाग, कृष्णा कुंज, कुड़ी हॉस्पिटल रै साम्हीं, जोधपुर** मो. 8875637761*

आगलो पड़ाव ब्यांव रै बाद रो हो। म्हारा पति राजस्थान रा नामी कवि गिणीजता। उण बगत बीकानेर में खूब कवि-सम्मेलन हुया करता। घर में दोनां रै बीच साहित्य रो वातावरण हो जिणरो असर भी पड़णो जरूरी हो। बाद में तो घणाई दूजा प्रभाव पड़्या। बै आपरै आगै रा सवालां रै जबाब में बताऊंली।

*** आप आपरै लेखन रै आगै कुणसी अबखायां सूं रूबरू हुया, जिणां रो सामनो करतां-करतां फैसलो लियो अर सिरै लेखिका बण सक्या।**

—अबखायां कोई अेक-दो हुवै तो गिणाऊं। केई अबखायां तो लेखन रै सीगै में आमतौर सूं महिलावां झेलती ई रैयी है। म्हनैं भी इणां सूं बाथेड़ा करणा पड़्या। 1955 में ब्यांव रै पछै जद अगलै साल सासरै में पग मेल्या तो यूं लाग्यो, जाणै माइकै रा दिनां सूं साव अलायदो वातावरण हो। छोटी अवस्था में गिरस्थी रो भार पड़ग्यो। छोटी-सी तणखा में गुजारो करणो, पांच जणा री जिम्मेदारी निभाणी, घर में कोई उछाव बधावणियो नीं, किणी तरै सूं गीर गट्टा सूं गिरस्थी धरम निभायो। लेखन री हूंस मगसी पड़ण लागी। फेरूं जल्दी-जल्दी टाबर हुवण सूं (1958 सूं 1963 तांई चार टाबर) इसो लखावण लागग्यो, जाणै अबै लेखन रो धरम कोनी निभ सकै। लिख भी लूं तो दिखाऊं किणनै, छपाऊं कियां? दूर-दूर तांई कोई सायरो नीं हो। घर में तानाकसी भी चालू रैवती। पण खैर, जीवण गाडी तो आगै गुड़कावणी ईज ही। 1959 में म्हारै पति री बदळी पैलां बिचून, फेर सोजत रोड होयगी। इण सारू फेरूं 1966-67 तांई लेखन रो काम ठप्प सो ई रैयो। इण बिचाळै म्हैं 1968 सूं लेय'र 1974 तांई दसवीं सूं अेम.अे. तांई री परीक्षावां प्राइवेट विद्यार्थी रै रूप में पास करी। अबखायां रै बिचाळै म्हैं हिम्मत कोनी हारी। म्हारै जीवण में जिका बेला बीतिया हा, उण घरबीती अर कीं लोगां रै दुख-दरद री परबीती नैं दरसावण वाळा दो उपन्यास हिंदी में लिख्या। काळा बादळां में बीजळी रा पळका पड़ै जियां म्हारो हौसलो बधावण रो पेलो काम तो म्हारा पति श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद' ई करयो। पण भागजोग सूं म्हनैं तीन जगां रो इसो सायरो मिल्यो कै म्हैं सगळी बाधावां नैं पार कर'र म्हारै लेखन नैं परवान चढावण लागगी। म्हारै उपन्यास नैं पूरी तरियां पढ'र चावा-ठावा साहित्यकार नन्दकिशोर आचार्य अर गौरीशंकर 'अरुण' कैयो कै औ उपन्यास घणो सांतरो है, इणनैं छपावणो ई चाईजै। नन्दकिशोर आचार्य म्हारै पैलै उपन्यास रो नांव राख्यो—'कटते कगार' अर दूसरे रो नांव 'कल का कुहरा'। अबै समस्या छपावण री ही। भाग रा धक्का तो घणाई खाया। पण भाग बेच्योड़ो थोड़ै ई हो। बीकानेर रा प्रकाशक श्री कृष्ण जनसेवी उपन्यासां री पांडुलिपियां पढ'र इत्ता खुश हुया कै बिना कीं लियां-दियां म्हारै दोनूं उपन्यासां नें छपाया, दस दूजी पोथ्यां (सगळी हिंदी में) छपाई, मानदेय भी दियो। सगळी जग्यां पैलो उपन्यास तो छपतां ई इत्तो चावो हुयग्यो कै च्यारूंमेर उणरी बडाई होयगी। बसंती पंत आपरो लघु शोध प्रबंध लिख्यो। नांव हो—'हिंदी उपन्यास, रचना विधान और शिल्प'। पोथी में दस उपन्यासकारां रा उपन्यासां रै सागै म्हारो चर्चित उपन्यास भी भेळो हो। म्हारै उपन्यास री धपटवीं चरचा हुयी। दोनूं उपन्यास 'कल का कुहरा' अर 'कटते कगार' नैं डॉ. सुमन बिस्सा आपरै शोध प्रबंध 'हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी-चित्रण' में सामल करया, जिणमें देश भर री 70 चर्चित महिला उपन्यासकार सामल ही। जाहिर है उण शोध-प्रबंध री खासा चरचा हुयी।

*** आपरी लेखनी मतलब रचनावां रो खास विसय यानी केंद्रीय बोध कांई रैवै ? आपरी पोथ्यां किण विधावां में छपी अर कुणसी विधावां आपनैं पसंद है ?**

—इण सवाल रो थोड़ो ब्हौत उत्तर तो पैलां आय चुक्यो है, पण जठै तांई पसंद वाळी विधावां रो सवाल है वै है कहाणियां अर उपन्यास। इण रा खास कारण है : कहाणियां सारू म्हारो कैवणो है—जीवण बणतै-बिगड़तै सुपनां रो मायाजाळ है। म्हैं अलेखूं काचा झाग अर कुंवारा सुपना नैं जीवण री करड़ी चट्टाण माथै टूटतां देख्या है। म्हारै साम्हीं मुरझाया सुपनां रा जाणै कित्ता दरसाव आया, इणरो कोई ठाह-ठिकाणो कोनी। बस, अै दरसाव ई म्हनैं कहाणियां लिखणै रो हौसलो दियो। कहाणियां रो कच्चो माल तो च्यारूंमेर बिखर्‌योड़ो ईज है। आज रो परिवेस, मिनख री मांदी मानसिकता माथै लगोलग हुवणिया अन्याय अर अत्याचार म्हारा कथानक बण्या। उपन्यास में म्हारी चेष्टा रैवै कै उणमें घटनाक्रम जीवण रै ओळै-दोळै घूमै। अनुभवां री गैराई सूं सिरजै, परिवेस रै जथारथ सूं आंख सूं आंख मिलाय'र बंतळ करै, पसर्‌योड़ै सरणाटै नैं भांग'र मिनख री मांयली ताकत नैं वाणी देवै। सबदां रा चितराम तो महताऊ है ई, पण मून रा चितराम तो उणां सूं ई बेसी वाचाल हुया करै। मून रै महालोक री जातरा म्हारै इण उपन्यास में है। म्हारी राजस्थानी रचनावां ई दो विधावां में ई छपी है, जियां दो कहाणी संग्रै 'वै सुपना अै चितराम' अर 'मोल मिनखाचारै रो' अर अेक उपन्यास 'मून रा चितराम'।

*** राजस्थानी लेखन सूं झुकाव रा खास कारण ?**

—पैलो कारण तो औ है कै राजस्थानी आपणी मातभासा है। महाराष्ट्र, पंजाब, बंगाल, तमिलनाडु, आंधप्रदेश, कर्नाटक अर उड़ीसा आद में बडा-बडा लेखक गीरबै रै सागै आप-आपरी मातभासा में लिखै, नाम कमावै, पुरस्कार मिलै तो फेरूं आपां लारै क्यूं रैवां ! 1973 तांई तो म्हारी घणकरी रचनावां हिंदी में ही, पण 1973 में अेक निश्चित पड़ाव साम्हीं आयो। म्हारी कहाणियां रो प्रसारण आकाशवाणी केंद्र सूं होवण लागग्यो। म्हारी कहाणियां री भासा री मरोड़-मठोठ, मिजाज अर मिठास देख'र आकाशवाणी रा उद्‌घोषक यशपालसिंह राठौड़ अर गुलाब कौर कैयो, ''आनंद कौर जी, आप इत्ती फूटरी कहाणियां लिख रैया हो। भासा में जोधपुर री बोली रो मिठास है तो आप राजस्थानी में क्यूं नीं लिखो ? अरे, हिंदी में तो मोकळी लेखिकावां है, पण राजस्थानी में ब्हौत कम आगै आय रेयी है। 1973 री इण घटणा रै बाद आज तांई यानी 48 बरस सूं ऊपर म्हैं राजस्थानी में रचनावां लिखी। राजस्थानी पत्रिकावां में छपी। राजस्थान अर राजस्थान रै बारे री कोई राजस्थानी पत्रिका इसी नीं है जिकी में म्हारी कहाणी नीं छपी हुवै। आकाशवाणी वाळा म्हनैं बीकानेर रै बडा-बडा लेखकां रै सागै जोड़ता रैया, जिणमें अन्नाराम सुदामा, मालीराम शर्मा, चंद्रदान चारण सरीखा लेखक हा। म्हारी किताबां छपी अर पुरस्कारां री झड़ी लागगी। राजस्थानी में म्हनैं अै पांच पुरस्कार मिल्या—1. सांवर दइया पैली पोथी पुरस्कार, 2. गोदावरी देवी सरावगी पुरस्कार, 3. टैस्सीओरी पुरस्कार, 4. करणी माता पुरस्कार, 5. भीलवाड़ा री राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था सूं साहित्यांचल पुरस्कार। म्हारी कहाणियां सांतरी अर सांवठी ही। म्हारो नांव बडी-बडी लेखिकावां रै बिचाळै आवण लागग्यो जियां लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, सुखदा कच्छवाहा, पुष्पलता कश्यप, चांदकौर जोशी, जेबा रशीद, बसंती पंवार, माधुरी मधु, कुसुम मेघवाळ, कृष्णा भटनागर आद। म्हारा कथानक साव नूंवा हा। पुराणा बोदा कथानकां रो कोई दोहराव कोनी हो। म्हैं नूंवा

विसय, नूंवो मुहावरो अपणायो। भासा, कथ्य अर शिलप री तासीर बदळी अर नारी मनोविग्यान रा अछूता विसयां माथै कलम चलाई। जियां नारी जीवण री अबखायी, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, भौतिकता रा भंवरजाळ, समाज में व्याप्त भिस्टवाड़ो, काळो धन अर राजनीतिक विसंगतियां आद। उपन्यास : लारला सौ बरसां में जठै पुरुष लेखकां रा डेढ सौ सूं ई बत्ता उपन्यास छप्या बठै महिलावां रा मुस्किल सूं दस-बारह उपन्यास ई साम्हीं आया। लेखिकावां बै ईज ही जिकी कहाणियां में पैलां ई नांव उजागर कर चुकी ही, जियां बसंती पंवार (सौगंध), सुखदा कच्छावा (मिट्ठू), कमला कमलेश (राधा), जेबा रशीद (नेह रो नातो), मनीषा आर्य सोनी (आठवीं कुण), रितु प्रिया रा खुद दो उपन्यास, संतोष चौधरी (रात पछै परभात) अर रेणुका व्यास 'नीलम' (धिंगाणै धणियाप) आद। इणसूं म्हारै मन में आयो कै म्हनैं कोई राजस्थानी में टणको उपन्यास लिखणो चाईजै अर बो उपन्यास है—'मून रा चितराम'।

*** राजस्थानी लेखन में लेखिकावां रो कांई दखल मानो ?**

—आज री राजस्थानी लेखिकावां सगळी रचनात्मक विधावां में कलम चलाय रैयी है, जियां कविता, कहाणी, लघुकथा, उपन्यास, व्यंग्य, सबद चितराम, संस्मरण, डायरी, निबंध, समीक्षा अर जात्रा वृत्तांत आद। राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति श्रीडूंगरगढ महिला लेखिकावां माथै जिको विशेषांक निकाळ रैयी है उणमें 100 सूं बेसी लेखिकावां है—कारण प्रकाशन री पैलां सूं ज्यादा सुविधावां, दूसरी अकादमियां अर दूजी संस्थावां कानी सूं पोथ्यां रो प्रकाशन, प्रोत्साहन, पुरस्कार, सोशल मीडिया में देशभर में प्रचार री सुविधावां आद।

*** आमतौर पर औ ओळमो दियो जावै कै घणकरी महिला लेखन पर भासा, शिल्प, विसै रै स्तर माथै लेखिकावां ट्रीटमेंट में नवाचार में चुनौती सूं बचै। इण प्रसंग में आप खुद रै लेखन नैं कियां देखो ?**

—आपरौ औ कैवणो सही है कै घणकरी लेखिकावां भासा, कथ्य, शिल्प, नवाचार री चुनौतियां सूं बचती रैयी है, कारण बांरो रचना संसार अभिधा रो है, विवरण देवण रो है, जियां-तियां पुराणै ढंगढाळै री पोथ्यां निकाळण रो है। इसी लेखिकावां भीड़ तो बधाय सकै, पण गुणात्मकता रै स्तर माथै ओछी पड़ जावै। बै दूजी भासावां रै साहित्य नैं नीं तो पढै अर नीं उणां री विशेषतावां सूं रूबरू हुवै। इसी लेखिकावां लेखन नैं कोरो कामचलाऊ धंधो मानै। लेखिकावां नैं खुद रै लेखन माथै नूंवै सिरै सूं सोचणो पड़ैला। नूंवी चुनौतियां सारू कथ्य रो सांतरो चयन, इचरज करणै सारू विसय सामग्री रो निरवाह, नूंवी शैलियां, प्रतीकां, बिंबां रो प्रयोग, आपरै लेखन री झीणी पड़ताळ, उपमावां री निरवाळी छटा, जुगबोध सूं जुड़्योड़ी व्यंजनावां, लोकजीवण रा दरसाव, ओपती रंजक भासा, कसावट, व्यंजना माथै जोर आद। जठै तांई म्हारै लेखन रो सवाल है, म्हैं आं सगळी बातां माथै पूरो ध्यान दियो है। म्हारी रचनावां विचार-प्रधान है। म्हैं लिखण री भूख रै चालतै कोनी लिखूं। आज रै जुगबोध री सच्चाई नैं बखाणूं, दूजी भासावां रै साहित्य नैं पढण री चेस्टा राखूं। बांरी तुलना में म्हारै लेखन री तपास राखूं अर आज रै समय रा सवालां सूं भचभेड़ा करूं, बदळाव नैं अंगेजूं। म्हारी रचनावां नैं देख-पढ'र आप खुद निरणै कर सको कै म्हारो औ कथन कित्ती हद तांई सही है।

*** 21वीं सदी में राजस्थानी साहित्य री लेखिकावां री गिणत बधी है। खासकर कहाणी अर उपन्यास रै पेटै। आप इण विसय में कांई सोचो ?**

—इण सवाल रौ उथळो पैलड़ा सवालां मांय आय चुक्यो है। गिणत बधण रा कारण भी उण उत्तर है। हां, म्हारी सोच है कै कोरी भीड़ बधावण सूं आज रै जुग री चुनौतियां रो सामनो नीं करयो जाय सकै, गुणात्मकता जरूरी है।

*** आज राजस्थानी में महिला लेखन री कांई स्थिति है, इणरी चुनौतियां कांई ?**

—राजस्थानी में संख्यात्मक रूप सूं घणकरो काम हुयो है पण गुणात्मकता री ओजूं दरकार है। इण सारू खेचळ करणी पड़ैला। कविता, कहाणियां आद तो घणी ई लिखीजी है, उपन्यास साव कमती लिखीज्या है। जिण विधावां माथै घणकरो जोर दियो जावणो चाईजै, बै है—डायरी विधा, साक्षात्कार, संवाद, आलोचना, रिपोर्ताज, अनुवाद, आछा आधुनिक नाटक, शोध अर आंकलन अर अैड़ा ईज कीं दूजा विसय। औ चुनौतीपरक काम है। घर-गिरस्थी रा जंजाळ, पग-पग माथै रुकावटां, आर्थिक रूप सूं दूजां माथै निरभरता, खुद रै बूतै प्रकाशन करण री असमरथता, साहित्य में फैल्योड़ै छळ-कपट, महिलावां नैं आगै बधण सूं रोकै। सागै ई उणां में वैग्यानिक सोच रो अभाव है, खुली बात नैं कैवण री झिझक है अर देस भर रै आछै साहित्य नें पढण रो अभाव है।

*** महिला लेखन माथै पत्र-पत्रिकावां, न्यारा अंक, विसेसांक केंद्रित करती आयी है। इण तरै रा प्रयासां री जरूरत क्यूं पड़ै? अर इणरो कोई लाभी भी हुवै कै नीं ?**

—पत्र-पत्रिकावां रा सामान्य अंकां में महिला लेखन नैं कम ठौड़ मिलै। ज्यादातर ठौड़ पुरुष लेखकां रै सीगै में ई जाया करै। महिलावां नैं ज्यादातर भागीदारी मिलै, इण सारू पत्रिकावां विसेसांक निकाळै। औ स्वागत करणै लायक काम है। पण इणमें भी सावधानी जरूरी है। विसेसांक जे सामान्य रूप सूं महिलावां माथै केंद्रित हुवै यानी उणमें सब तरै री रचनावां छपै तो ज्यादातर कविता, कहाणी अर लघुकथावां आद ई छाय जावेला, जरूरत उपेक्षित विधावां नैं ठौड़ देवण री है।

*** भासा, शिल्प, बिंब रै स्तर माथै राजस्थानी लेखिकावां सारू कोई खास संदेस ?**

—संदेस देवण री मसीहाई मुद्रा म्हारै कनै कोनी। लगोलग पचास बरसां सूं बेसी सिरजणा करणै रै बावजूद म्हनैं लखावै कै म्हारै मांय अजै अधूरोपण है, हर हमेस पूरणता री तलास करूं। इण सारू युवा लेखिकावां नैं सलाह है कै बै आपरै खुद रै लेखन सूं आतममुगध नीं हुवै। हरेक क्षेत्र में नवाचार करै यानी भासा रो नूंवो रचाव, ताजा उपमावां, तुलनावां अर मौलिक कल्पनावां माथै जोर देवै। नूंवै सूं नूंवा बिंब अर प्रतीक रचै अर रूड़ी कल्पना रै सागै मौलिक सिरजण करै। खुद नैं जल्दी संतुष्ट मान'र सिरजण री साख नैं नईं बिगाड़ै। इण हिंदी कहावत नैं पढ'र सीख लेवण री चेस्टा करणी चाईजै—रात के राही थक मत जाना, सुबह की मंजिल दूर नहीं है। राजस्थान रा आछा लेखकां-लेखिकावां रै साहित्य रै सागै देस भर री दूजी भासावां रा ताजा-तरीन साहित्य नैं पढै, नूंवा कथानक अर चुनौतीपूर्ण घटनावां चुणै, पाठकां माथै पूरो पतियारो राखै अर सवाल उठावण री खिमता राखै। नूंवै सिरजण नैं अपणावै अर अभिधा री जग्यां व्यंजना माथै जोर देवै। सगळी उदीयमान अर ऊरमावान लेखिकावां नैं सुभकामनावां।

◆◆

राजस्थली रै 45 बरस री अणथक यात्रा रै मौकै
महिला लेखन अंक सारु हियैतणी बधाई

अमलगामाट्रेड कॉरपोरेशन

30/31, कलाकार स्ट्रीट,कोलकता – 7

Branch

महावीर स्थान, सिलीगुड़ी, दार्जीलिंग
(पश्चिम बंगाल)

सिद्धार्थ प्लाजा

(पारख कटला), श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान)

रेखा सर्विस सेन्टर

(के.एस.के.)
कालू रोड़, गुसांईसर बड़ा, तहसील– श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान)

शुभेच्छु
विजय सिंह पारख
मो. : 9413074666

माँ थारी छींया घणी ही, ना चाईजै आकास
थारी छिब रै साम्हीं मगसो, सूरज रो आभास।

जन्म :
12.12.1938

निर्वाण :
3.2.2021

श्रीमती कलावती आर्य

एम. ए. हिंदी, बी. एड.
(सेवानिवृत्त उप जिला शिक्षा अधिकारी)
धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहर लाल आर्य

भूतपूर्व गाईड कैप्टन, समाज री पैली शिक्षा अधिकारी अर अखिल भारतीय श्री ब्राह्मण स्वर्णकार महासभा रै महिला प्रकोष्ठ री पैलड़ी अध्यक्ष। सामाजिक सरोकारां मे योगदान। चावा वक्ता। लोक संस्कृति अर लोकगीतों री लूंठी साधिका।

माँ रै भणन री हटौटी वांनै लूगाई जूण सूं अलायदी एक व्यक्तित्व रै रूप मांय समाज में थरपायो। जद घर-द्वार सूं बारै रो संसार एक भोळी-ढाळी लुगाई खातर एक इचरज हूंवतो हो, उण बगत समाज रै सागी काण कायदै सागै आपरो शिक्षा रै वास्तै घर सूं व्हीर हूवणो आज री पीढी रो मारग सौरो करण री पैलड़ी खेचळ गिणी जा सकै। जिती तरै री अबखायां पढी-सुणी-समझी, वां सगळी बातां नै घूंघट री ओट सूं कड़खै मेलती आपरी शिक्षा-यात्रा लगोलग आगीनै बधती रैयी अर समाज री बावनी सोच रा भोथरा भाटा रेत मांय रळता रैया।

घूंघट नै परचम बणावण री कैबत नै आप सांगोपांग जूण मांय उतारता रैया अर एक पूरै-सूरै पढ्यै-लिख्यै कड़ूंबै री धणियाणी बण'र जगत सूं व्हीर हुया। आपरी लगन अर निष्काम हूंस नैं लखदाद अर हीयै सूं सिलाम।

संस्कारां री अंवेर

पुत्री-दामाद : मनीषा आर्य सोनी-मधुसूदन सोनी (अधिकारी SBI)
मनस्विनी, मानस दोहिती-दोहिता अर सगळो आर्य परिवार।

महावीर माली, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (राज.)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com